गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

आज़ादी का अमृत महोत्सव

वार्षिक प्रतिवेदन
2020-2021

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

M. K. Gandhi

वार्षिक प्रतिवेदन

2020-2021

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

अनु□म

1.	प्राक्कथन	3
2.	परिचय	5
3.	समिति की संरचना	14
4.	कार्यक्रमों की समयरेखा	15
5.	महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि	37
6.	महत्वपूर्ण पहल	42
7.	अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम (गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति अंतरराष्ट्रीय गांधी अध्ययन एवं शांति शोध केन्द्र)	54
8.	मध्यस्थता पर संवाद (गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति अंतरराष्ट्रीय गांधी अध्ययन एवं शांति शोध केन्द्र)	76
9.	ओरिएंटेशन कार्यक्रम	80
10.	बच्चों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम	87
11.	युवाओं के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम	92
12.	व्याख्यान/चर्चा/संवाद/सेमिनार/सम्मेलन	100
13.	पूर्वोत्तर में कार्यक्रम	120
14.	विशेष कार्यक्रम	124
15.	सृजन और कोविड–19 पहल	135
16.	तिहाड़ में कार्यक्रम	143
17.	हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम	147
18.	विविध कार्यक्रम	150
19.	पुस्तकालय, प्रकाशन और प्रलेखन	162
20.	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति में आगंतुक	167
21.	मीडिया में	171

प्रस्तावना

"क्या मानवजाति सचेतन रूप से प्रेम के नियम का पालन करेगी, मैं नहीं जानता। लेकिन इससे हमें परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। नियम अपना काम करेगा, जैसे गुरुत्वाकर्षण का नियम अपना काम करता है, चाहे हम इसे स्वीकार करें या नहीं। और जिस तरह एक वैज्ञानिक प्रकृति के नियमों के विभिन्न अनुप्रयोगों से अद्भुत काम करता है। उसी तरह एक आदमी, जो वैज्ञानिक सटीकता के साथ प्रेम के नियम को लागू करता है, अधिक से अधिक चमत्कार कर सकता है। – महात्मा गांधी, यंग इंडिया, 1 अक्तूबर, 1931"

आज जब दुनिया कोरोना वायरस महामारी के संकट से जूझ रही है, ऐसे में मनुष्य को पहले से कहीं अधिक संघर्षों और विवादों की निरर्थकता का एहसास करने की आवश्यकता है। इन सब निरर्थक चीजों की बजाय, मानव को प्यार, स्नेह और एकजुटता को बढ़ावा देने में अपनी ऊर्जा लगाने की ज़रूरत है। वायरस ने सिखाया है कि सौहार्दपूर्ण सह–अस्तित्व के लिए एक–दूसरे की चिंता और गहरे सम्बन्धों की आवश्यकता है। भाईचारे और आपसी प्रेम की गहरी भावना समय की मांग है। महात्मा गांधी इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं, "भाईचारा कोई व्यापारिक मामला नहीं है, और मेरा दर्शन, मेरा धर्म मुझे सिखाता है कि भाईचारा केवल मानव जाति तक ही सीमित नहीं है। यानी अगर हमने वास्तव में भाईचारे की भावना को आत्मसात किया है, तो यह जानवरों जैसे निचले स्तर तक फैली हुई है।" (15 अगस्त, 1925, अमृत बाजार पत्रिका)।

इस वर्ष, महामारी के बीच, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने भाईचारे, परस्पर प्रेम और मानवीय एकता की भावना को बढ़ावा देने और प्रोत्साहित करने का सटीक प्रयास किया। न केवल देश में, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी विभिन्न समूहों और संस्थानों तक पहुंचकर, समिति ने महात्मा गांधी के शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के संदेश को फैलाने के लिए चिकित्सकों, विद्वानों, छात्रों और शिक्षाविदों को एक साथ लाने का प्रयास किया।

कलाकार : श्रीमती हेना चक्रवर्ती

समिति ने वर्ष भर में अपने कार्यक्रमों को नए स्तरों तक विस्तारित करने में सफलता हासिल की, जिसमें विभिन्न महाद्वीपों के प्रमुख अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों, विश्वविद्यालयों/शैक्षणिक संस्थानों और विभिन्न प्रकार के संगठनों को शामिल किया गया। कोविड प्रतिबंधों के कारण, आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए, हमने अपने सभी कार्यक्रमों को डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से आयोजित किया। इसने हमारे सामने नए अवसर प्रदान किए।

'अहिंसक संघार' पर हमारा पाठ्यक्रम जिसे हमने लॉकडाउन अवधि के दौरान शुरू किया था, अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख आकर्षण का केन्द्र बन चुका है। हमने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के साथ हाथ मिलाया और हमारे पाठ्यक्रम को सीबीएसई की वेबसाइट पर जगह मिली। इसे **MyGov** प्लेटफॉर्म में भी प्रदर्शित किया गया है। इसके अलावा विभिन्न भारतीय भाषाओं में इसका अनुवाद हो रहा है।

वर्ष के दौरान, हमने एक अंतरराष्ट्रीय ई–संवाद श्रृंखला भी शुरू की, जहां हम गांधीवादी दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर बात करने वाले वैश्विक मान्यता प्राप्त शांति अध्येताओं को आमंत्रित करते हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण पहल 'मध्यस्थता पर संवाद' थी, जहां मध्यस्थता की भावना को बढ़ावा देने के लिए, हमने दुनिया भर के विशेषज्ञों को मध्यस्थता के विभिन्न आयामों पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित किया।

एक अन्य पाठ्यक्रम जिसे समिति ने इस वर्ष आरम्भ किया वह था 'विद्यालयों में संघर्ष समाधान की रणनीतियाँ'। शिक्षकों के लिए लक्षित,

दुनिया कोरोनावायरस महामारी के संकट से जूझ रही है, ऐसे में मनुष्य को पहले से कहीं अधिक संघर्षों और विवादों की निरर्थकता का एहसास करने की आवश्यकता है। इसके बजाय, उन्हें प्रेम, स्नेह और एकजुटता को बढ़ावा देने में अपनी जा लगाने की जरूरत है। वायरस ने हमें सिखाया है कि सौहार्दपूर्ण सह–अस्तित्व के लिए एक–दूसरे की चिंता और सम्बन्धों की गहराई की आवश्यकता है। भाईचारे और सौहार्द की गहरी भावना समय की मांग है।

यह पाठ्यक्रम इस बात पर केन्द्रित है कि शांति विद्यालयों को कैसे बढ़ावा दिया जाए। समिति ने इस वर्ष माइंडफुलनेस प्रशिक्षण पर एक पाठ्यक्रम भी शुरू किया। इसके अलावा, हमने 'पीयर मीडिएशन' पर स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों के लिए एक बड़ा कार्यक्रम शुरू किया।

हमने महात्मा गांधी के दर्शन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण विषयों पर कई ई–कार्यशालाएं आयोजित कीं। इनमें मानव अंतर्सम्बन्ध, मानव एकजुटता, गांधीवादी नैतिकता, सहकर्मी मध्यस्थता, स्वयंसेवीवाद, संघर्ष क्षमता, स्वास्थ्य और मानसिक कल्याण व संघर्ष समाधान पर आयोजित ई–कार्यशालाएं शामिल हैं।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति उन सभी के साथ सहानुभूति रखती है, जिन्होंने महामारी के दौरान अपने प्रियजनों को खो दिया। यह वर्ष और जब तक कोविड–19 का खतरा बना रहेगा, पूरी मानव जाति के लिए चुनौतीपूर्ण समय साबित होने जा रहा है।

महामारी ने हमें अलग तरह से सोचने और नए विचारों को सृजित करने व अपने कार्यक्रमों को नए आयाम देने का अवसर प्रदान किया। समिति की इकाई 'सृजन' खादी के मास्क बनाने में विशेष रूप से सक्रिय रही है। यहाँ निर्मित खादी मास्कों को देश के विभिन्न हिस्सों में हजारों लोगों तक पहुंचाया गया।

COVID–19 महामारी से पीड़ित लोगों तक पहुँचने के लिए, समिति ने ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन के सहयोग से देश के विभिन्न हिस्सों में कोविड सुरक्षा किट भेजीं। इसके अलावा विभिन्न जगहों में नियमित स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से कोरोना वायरस पर जागरूकता पैदा की गई। डॉक्टरों और लैब तकनीशियनों की टीम के साथ कोविड–19 परीक्षण शिविरों के माध्यम से दिल्ली में अधिकाधिक लोगों को राहत प्रदान की गई।

भाईचारा कोई व्यापारिक मामला नहीं है। और मेरा दर्शन, मेरा धर्म मुझे सिखाता है कि भाईचारा केवल मानव जाति तक ही सीमित नहीं है, अर्थात अगर हमने वास्तव में भाईचारे की भावना को आत्मसात किया है, तो यह जानवरों तक में भी फैली हुई है।" हअगस्त 15, 1925, अमृत बाजार पत्रिका ।

मोहनदास करमचंद गांधी

कोविड के दौरान हम सभी ने जो सीखा है, उसके लिए हम उन सभी लोगों के आभारी हैं जो महामारी से प्रभावित लोगों की मदद करने के लिए हमारे साथ विनम्र तरीके से खड़े हुए। आज यह आवश्यक है कि हम सही अर्थों में वक्त को समझें और महात्मा द्वारा प्रतिपादित मानव अंतर्सम्बन्ध और अहिंसक समाज के आदर्शों को व्यवहार में लाएं।

समिति शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के विचारों को बढ़ावा देने और समाज के सभी वर्गों के बीच इन्हें प्रसारित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

दीपंकर श्री ज्ञान
निदेशक

परिचय

गांधी स्मृति संग्रहालय का एक दृश्य।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समितिः एक रूपरेखा

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति का गठन 1984 में राजघाट स्थित गांधी दर्शन एवं 5, तीस जनवरी मार्ग स्थित गांधी स्मृति के विलय द्वारा 1984 में एक स्वायत्त निकाय के रूप में हुआ था और यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के रचनात्मक सुझाव और वित्तीय सहायता के तहत कार्यशील है।

भारत के प्रधानमंत्री इसके अध्यक्ष हैं और इसके पास वरिष्ठ गांधीवादियों एवं सरकार के विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों का एक मनोनीत निकाय है जो इसे इसकी गतिविधियों के लिए दिशानिर्देश देते हैं। समिति का मूलभूत उद्देश्य और लक्ष्य विभिन्न सामाजिक–शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिये महात्मा गांधी के जीवन, मिशन एवं विचारों को प्रचारित करना है।

समिति के दो परिसर हैं:

एक गांधी स्मृति

5, तीस जनवरी मार्ग, नई दिल्ली के पुराने बिड़ला भवन पर स्थित गांधी स्मृति वह पवित्र स्थल है जहां महात्मा गांधी ने अपने नश्वर शरीर का 30 जनवरी, 1948 को त्याग किया था। महात्मा गांधी इस घर में 9 सितंबर, 1947 से 30 जनवरी, 1948 तक रहे थे। इस भवन में उनके जीवन के अंतिम 144 दिनों की स्मृतियां संजोई हुई हैं। पुराने बिड़ला भवन को भारत सरकार ने 1971 में अधिग्रहित कर लिया और इसे राष्ट्रपिता के राष्ट्रीय स्मारक के रूप में परिवर्तित कर दिया जिसे 15 अगस्त 1973 को आम जनता के लिए खोल दिया गया।

यहां जो जगह संरक्षित है उनमें वह कमरा, जिसमें गांधी जी रहते थे और वह प्रार्थना मैदान जहां आम जनसभा होती थी, शामिल हैं। इसी स्थान पर गांधी जी हत्यारे की गोलियों के शिकार हुए। भवन और परिदृश्य को उसी प्रकार संरक्षित रखा गया है जिस प्रकार वे उन दिनों थे।

इस स्मारक की संरचना में शामिल हैं :

(1) महात्मा गांधी और उनके उन महान आदर्शों, जिनका वे प्रतिनिधित्व करते थे, की याद को बनाये रखने के लिए दृश्यात्मक पहलू

(2) जीवन के कुछ खास मूल्यों, जिन्होंने गांधी को महात्मा बनाया, पर ध्यान केंद्रित करने के लिए शैक्षणिक पहलू और

(3) सेवा से संबंधित गतिविधियां।

संग्रहालय में जो चीजें प्रदर्शित की गई हैं, उनमें गांधी जी ने जितने वर्ष यहां व्यतीत किए हैं उनसे संबंधित तस्वीरें, वस्तुशिल्प, चित्र, भित्तिचित्र, शिलालेख और स्मृति चिन्ह शामिल हैं। गांधी जी की कुछ व्यक्तिगत जरूरत की चीज़ों को भी बहुत संभाल कर यहां संरक्षित किया गया है।

इसका प्रवेश द्वार भी बहुत ऐतिहासिक महत्व का है क्योंकि इसी द्वार के शीर्ष से प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने दुनिया को महात्मा गांधी की मृत्यु हो जाने की सूचना दी थी '...हमारे जीवन से प्रकाश चला गया है और हर जगह अंधेरा छा गया है...'

महात्मा गांधी की एक आदमकद प्रतिमा जिसमें खगोल से निकलते हुए एक

लड़का और एक लड़की अपने हाथों में एक कबूतर को थाम कर उनकी बगल में दोनों तरफ खड़े हुए हैं, जो गरीबों और वंचितों के लिए उनकी सार्वभौमिक चिंता को दर्शाती है, गांधी स्मृति के मुख्य प्रवेश स्थल पर आगंतुकों का स्वागत करती है। यह विख्यात मूर्तिकार श्री राम सुतार की कृति है। मूर्ति के निचले हिस्से पर बापू का कथन उल्लिखित है, 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।'

जहां राष्ट्रपिता की हत्या हुई थी, वहां एक शहीद स्तंभ बनाया गया है। यह महात्मा गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति: एक रूपरेखा गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति का गठन 1984 में राजघाट स्थित गांधी दर्शन एवं 5, तीस जनवरी मार्ग स्थित गांधी स्मृति के विलय द्वारा 1984 में एक स्वायत्त निकाय के रूप

गांधी स्मृति में प्रार्थना मैदान का एक दृश्य। महात्मा गांधी की अंतिम यात्रा का संकेत देने वाले पदचिन्ह।

में हुआ था और यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के रचनात्मक सुझाव और वित्तीय सहायता के तहत कार्यशील है।

भारत के प्रधानमंत्री इसके अध्यक्ष हैं और इसके पास वरिष्ठ गांधीवादियों एवं सरकार के विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों का एक मनोनीत निकाय है जो इसे इसकी गतिविधियों के लिए दिशानिर्देश देते हैं। समिति का मूलभूत उद्देश्य और लक्ष्य विभिन्न सामाजिक–शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिये महात्मा गांधी के जीवन, मिशन एवं विचारों को प्रचारित करना है।

समिति के दो परिसर हैं:

हृदय गांधी स्मृति

5, तीस जनवरी मार्ग, नई दिल्ली के पुराने बिड़ला भवन पर स्थित गांधी स्मृति वह पवित्र स्थल है जहां महात्मा गांधी ने अपने नश्वर शरीर का 30 जनवरी, 1948 को त्याग किया था। महात्मा गांधी इस घर में 9 सितम्बर, 1947 से 30 जनवरी, 1948 तक रहे थे। इस भवन में उनके जीवन के अंतिम 144 दिनों की स्मृतियां संजोई हुई हैं। पुराने बिड़ला भवन को भारत सरकार ने 1971 में अधिग्रहित कर लिया और इसे राष्ट्रपिता के राष्ट्रीय स्मारक के रूप में परिवर्तित कर दिया जिसे 15 अगस्त 1973 को आम जनता के लिए खोल दिया गया।

यहां जो जगह संरक्षित हैं उनमें वह कमरा, जिसमें गांधी जी रहते थे और वह प्रार्थना मैदान जहां आम जनसभा होती थी, शामिल हैं। इसी स्थान पर गांधी जी हत्यारे की गोलियों के शिकार हुए। भवन और परिदृश्य को उसी प्रकार संरक्षित रखा गया है जिस प्रकार वे उन दिनों थे।

इस स्मारक की संरचना में शामिल हैं :

(1) महात्मा गांधी और उनके उन महान आदर्शों, जिनका वे प्रतिनिधित्व करते थे, की याद को बनाये रखने के लिए दृश्यात्मक पहलू

(2) जीवन के कुछ खास मूल्यों, जिन्होंने गांधी को महात्मा बनाया, पर ध्यान केंद्रित करने के लिए शैक्षणिक पहलू और

(3) सेवा से संबंधित गतिविधियां।

संग्रहालय में जो चीजें प्रदर्शित की गई हैं, उनमें गांधी जी ने जितने वर्ष यहां व्यतीत किए हैं उनसे संबंधित तस्वीरें, वस्तुशिल्प, चित्र, लिपिचित्र, शिलालेख और स्मृति चिन्ह शामिल हैं। गांधी जी की कुछ व्यक्तिगत जरूरत की चीज़ों को भी बहुत संभाल कर यहां संरक्षित किया गया है।

इसका प्रवेश द्वार भी बहुत ऐतिहासिक महत्व का है क्योंकि इसी द्वार के शीर्ष से प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने दुनिया को महात्मा गांधी की मृत्यु हो जाने की सूचना दी थी '...हमारे जीवन से प्रकाश चला गया है और हर जगह अंधेरा छा गया है...'

महात्मा गांधी की एक आदमकद प्रतिमा जिसमें खगोल से निकलते हुए एक लड़का और एक लड़की अपने हाथों में एक कबूतर को थाम कर उनकी बगल में दोनों तरफ खड़े हुए हैं, जो गरीबों और वंचितों के लिए उनकी सार्वभौमिक चिंता

गांधी स्मृति में महात्मा गांधी का कमरा।

को दर्शाती है, गांधी स्मृति के मुख्य प्रवेश स्थल पर आगंतुकों का स्वागत करती है। यह विख्यात मूर्तिकार श्री राम सुतार की कृति है। मूर्ति के निचले हिस्से पर बापू का कथन उल्लिखित है, 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।'

जहां राष्ट्रपिता की हत्या हुई थी, वहां एक शहीद स्तम्भ बनाया गया है। यह महात्मा गांधी की शहादत की याद दिलाता है तथा उन सभी कष्टों और कुर्बानियों के मूर्त रूप का स्मरण करता है जो भारत की स्वतंत्रता की लम्बी लड़ाई की विशेषता रही है।

स्तम्भ के चारों तरफ श्रद्धालुओं के लिए एक श्रद्धापूर्ण परिक्रमा करने के लिए पत्थर का एक विस्तृत मार्ग बनाया है। स्तंभ के सामने एक चौड़ी जगह बनाई गई है जिस पर श्रद्धांजलि अर्पित कर सकें। स्तंभ के निकट निचले मैदान पर गुरूदेव टैगोर के शब्द हैं, 'वह प्रत्येक झोंपड़ी की देहरी पर रूके थे।'

प्रार्थना स्थल के केन्द्र में एक मण्डप है जिसकी दीवारों पर भारत की सांस्कृतिक यात्रा की अनवरतता, दुनिया के साथ उसके सम्बन्ध एवं एक 'सार्वभौमिक व्यक्ति' के रूप में महात्मा गांधी के उद्‌भव और उनके व्यक्तित्व में सन्निहित मानव जीवन की सभी दैवीय चीजों का चित्रण करते भित्तिचित्र हैं ठीक वैसा ही जैसा कि उन्होंने कहा: 'मेरी भौतिक आवश्यकताओं के लिए मेरा गांव मेरी दुनिया है लेकिन मेरी आध्यात्मिक ज़रूरतों के लिए सम्पूर्ण दुनिया मेरा गांव है।'

मंडप के बाहर लाल बलुशाही पत्थर से निर्मित एक बेंच है, जिस पर महात्मा गांधी प्रार्थना के दौरान या विशाल जनसमूह से, जो उन कष्टकारी दिनों में उनसे सलाह लेने और शांति पाने के लिए पुराने बिड़ला भवन के लॉन में एकत्र होते थे, बातचीत के दौरान बैठा करते थे।

हरी घास का मैदान प्रार्थना स्थल की मुख्य विशेषता है जो सफेद फूलों की सजावटपूर्ण परिधि से चारों तरफ से घिरा हुआ है। स्मारक स्थल के प्रवेश के दाहिने लॉन के निकट खुदा हुआ है 'गांधीजी के सपनों का भारत।' प्रार्थना स्थल के निकट के घुमावदार मार्ग पर अल्बर्ट आइंस्टीन के शब्द लिखे हुए है "आने वाली पीढ़ियां मुश्किल से यकीन करेंगी....।" घुमावदार मार्ग के केन्द्र में विख्यात कलाकार शंख चौधरी की कांसे में एक कृति है जो गांधी जी द्वारा अपने बलिदान से जलाई गई 'शाश्वत शिखा' का प्रतीक है।

गांधी स्मृति में गांधी जी के कमरे को ठीक उसी प्रकार रखा गया है जैसा यह उनकी हत्या के दिन था। उनकी सारी चीज़ें, उनका चश्मा, टहलने की छड़ी, एक चाकू, कांटा और चम्मच, वह खुरदुरा पत्थर जिसका इस्तेमाल वह साबुन की जगह करते थे, प्रदर्शन के लिए रखी गई हैं। उनका बिस्तर फर्श पर बिछी एक चटाई पर था जो सफेद और सादा था जिसकी बगल में लकड़ी की एक नीची तख्ती रखी रहती थी। भगवद् गीता की एक पुरानी और उनके द्वारा उपयोग में आ चुकी एक प्रति भी रखी हुई हैं।

पूरे भवन को अब विभिन्न खंडों में विभाजित कर दिया गया है। भवन के मुख्य प्रवेश के दोनों तरफ महात्मा द्वारा रचित 'ए सर्वेंट्स प्रेयर यानी एक सेवक की प्रार्थना', और उनका शाश्वत–संदेश उनका जन्तर प्रदर्शित किया गया है।

मोहनदास करमचंद गांधी के महात्मा गांधी के रूप में क्रमिक विकास का चित्रण सरल व्याख्यान के साथ श्वेत–श्याम चित्रों की एक पट्टी के जरिये किया गया है। दक्षिणी हिस्से में एक सभागार और एक समिति कक्ष भी है।

इसके अतिरिक्त, प्रदर्शनी का समायोजन इस प्रकार किया गया है कि दक्षिणी हिस्सा मोहनदास करमचंद गांधी नामक एक बालक की जीवन यात्रा और उसके क्रमिक विकास और किस प्रकार अपने 'सत्य के प्रयोगों' के जरिये उसने भारत और मानवता के उद्धार का नेतृत्व किया, का सरल चित्रण दर्शाता है।

महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती पर उन्हें श्रद्धांजलि देने हेतु संग्रहालय में डिजिटल प्रदर्शनी भी स्थापित की गई है। इस प्रदर्शनी में महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत के स्वतंत्रता संघर्ष का इतिहास दर्शाया गया है। यहां स्थापित 'वैष्णव जन तो' का पैनल आगंतुकों के आकर्षण का विशेष केन्द्र है। इस पैनल में महात्मा गांधी के प्रिय भजन वैष्णव जन को विश्व के विभिन्न कलाकारों ने अपनी आवाज दी है। यह पहल माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से विदेश मंत्रालय, भारत सरकार ने की है, जिसमें

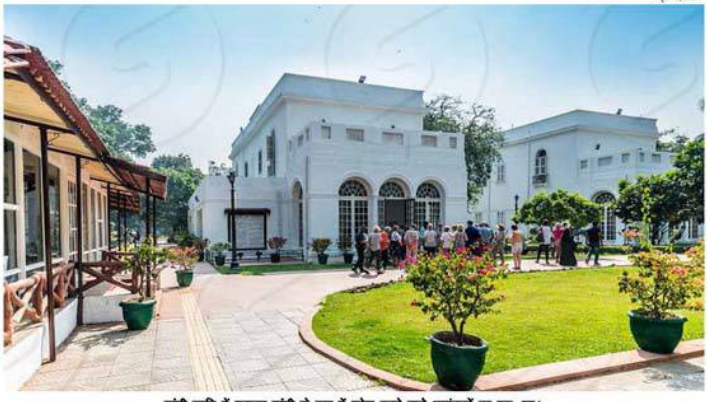

गांधी स्मृति में महात्मा गांधी के कक्ष में प्रवेश करने वाले आगंतुकों का एक दृश्य।

विश्व के 124 देशों के लोगों ने इस भजन को अपनी मूल भाषा में गाया है।

दक्षिण खण्ड में लगी प्रदर्शनी में उस बच्चे, जिसे मोहनदास करमचंद गांधी के नाम से हम जानते हैं का सफर और उनके उभार का वर्णन किया गया है, साथ ही यह दर्शाया गया है कि कैसे उन्होंने 'सत्य के साथ अपने प्रयोग' के माध्यम से भारत और मानवता का नेतृत्व किया।

उत्तरी हिस्से में पांच विभिन्न खण्ड हैं। पहला खण्ड, उस कमरे की ओर जाने वाली एक गैलरी है जिसमें गांधीजी ने अपने जीवन के अन्तिम 144 दिन व्यतीत किए। यह खण्ड शान्ति और शहादत की उनकी यात्रा को समर्पित है। इसके आगे दूसरा खण्ड है, यह एक अन्य कक्ष है जिसमें उनके जीवन के अन्तिम 48 घंटों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है जिसकी परिणति उनकी शहादत में हुई। इस खण्ड में एक सभागार भी है जिसमें महात्मा गांधी पर आधारित फिल्में दिखाने की सुविधाएँ मौजूद हैं।

उत्तरी हिस्से का तीसरा खण्ड 'गांधीजी के सपनों का भारत' और उन नियमों और सिद्धांतों को प्रदर्शित करता है जो इस सपने को साकार करने के लिए भावी पीढ़ियों के लिए वे अपनी विरासत के रूप में छोड़ कर गए हैं–18 सूत्री रचनात्मक कार्यक्रम। गांधीजी दुनिया के सामने वैज्ञानिक सुस्पष्टता के साथ भारत को विकास के एक मॉडल के रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे। उनकी जीवन यात्रा समाप्त हो चुकी–राष्ट्रपिता दुनिया से चले गए हैं, लेकिन उनकी धरोहर अभी भी शेष है, और सबसे बढ़कर, एक अधूरा सपना एक चुनौती के रूप में हमारे सामने है और यह है 'उनके सपनों के भारत का निर्माण करना।'

चौथे खण्ड सुनना में कुल मिलाकर 28 आहाते/पहियाँ हैं। इस खण्ड में त्रिआयामी लघुचित्र स्थित हैं। इनमें महात्मा गांधी के जीवन की, उनके बचपन से शहादत तक की महत्वपूर्ण घटनाओं का चित्रण है। श्रीमती सुशीला रजनी पटेल द्वारा सृजित संग्रहालय का यह हिस्सा एक समृद्ध अनुभव प्रदान करता है।

पाँचवें खण्ड सन्नति, गांधी स्मृति साहित्य केन्द्र में एक छत के नीचे उपलब्ध गांधी साहित्य एवं अन्य सम्बन्धित पुस्तकों का एक विशाल संकलन है। एक विशेष खण्ड इसका व्याख्यान करने को समर्पित है कि किस प्रकार दुनिया महात्मा गांधी का सम्मान करती है।

पहले हिस्से में महात्मा गांधी के शानदार जीवन को कलाकारों की नज़रों से प्रदर्शित किया गया है। दूसरा हिस्सा गांधी द्वारा स्वयं पर की गई चर्चा है।

दीर्घ के मध्य में, लोगों को 2 मि. 30 सेकेंड के एक मल्टीमीडिया एनीमेशन के द्वारा समावेशित, आत्मलीन और महात्मा गांधी की उपस्थिति का अहसास कराया जाता है जिसमें उनके बलिदान की दिशा में राष्ट्रपिता की अन्तिम यात्रा का वर्णन है। इसे विख्यात गायक कुमार गंधर्व के गायन द्वारा चित्रित किया गया है।

गांधी स्मृति परिसर में बने परगोला में सामयिक प्रदर्शनियाँ लगाई जाती हैं तथा अभी इसमें राष्ट्रीय अभिलेखागार द्वारा निर्मित विशेष प्रदर्शनी 'मोहन से महात्मा' प्रदर्शित है जिसको वरिष्ठ गांधीजन श्री अनुपम मिश्र के मार्ग. निर्देशन में तैयार किया गया है। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन गांधी जयन्ती, 2 अक्तूबर, 2015 को माननीय संस्कृति मंत्री तथा समिति के उपाध्यक्ष डॉ. महेश शर्मा द्वारा किया गया।

अपनी यात्रा के दौरान आगंतुक एक भव्य 'विश्व शान्ति घंटे' का भी दर्शन करते हैं। इस स्थान पर 31 जनवरी, 1948 को राष्ट्रपिता के भौतिक अवशेष हज़ारों लोगों द्वारा श्रद्धांजलि दिए जाने के लिए रखे गए थे। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने गांधी स्मृति को यह विश्व शान्ति घंटा भेंट स्वरूप दिया था। विदेश मंत्रालय को शान्ति घंटा इंडोनेशिया की विश्व शान्ति घंटा समिति से प्राप्त हुआ था और इसका उद्घाटन 11 सितम्बर, 2006 को सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित एक विशेष समारोह में किया गया था। यह विश्व को दुनिया भर के शांतिदूतों द्वारा किए गए बेशुमार संघर्षों की याद दिलाता है और एक दूसरे के साथ शान्ति के साथ सद्भावपूर्ण तरीके से जीने का संदेश देता है।

यहां से आगंतुकों को उस कक्ष में ले जाया जाता है जहां बापू जी ने अपने जीवन के अन्तिम 144 दिन व्यतीत किए। जब वे इस कक्ष से बाहर आते हैं तब वे फोटो प्रदर्शनी जिसके साथ–साथ प्रत्यक्षदर्शियों की आखों देखी घटनाओं के विवरण भी शामिल होते है, के माध्यम से इन 144 दिनों के इतिहास से परिचित हो चुके होते हैं।

गांधी स्मृति संग्रहालय के अंदर प्रदर्शनी गैलरी का एक .दृय।

गांधी स्मृति में सृजन, खादी, कुटीर उद्योग एवं ग्रामीण विकास पर गांधीवादी दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है।

गांधी स्मृति में शहीद स्तम्भ के निकट कीर्ति मंडप पंडाल, जिसका नाम विख्यात सरोद वादक उस्ताद अमजद अली खान ने रखा है, के पास बड़े कार्यक्रमों के लिए 500 भागीदारों को समायोजित करने की क्षमता है।

तस्वीर में वह दरवाजा दिखाई दे रहा है जिससे महात्मा गांधी 30 जनवरी 1948 के शाम को प्रार्थना के लिए आखिरी बार निकले थे।

2005 में संग्रहालय में 'शाश्वत गांधी' शीर्षक की एक मल्टीमीडिया प्रदर्शनी जोड़ी गई जो भवन की पहली मंजिल पर स्थित है। इसमें अत्याधुनिक इलैक्ट्रॉनिक हार्डवेयर एवं नवीन मीडिया का उपयोग किया है जिससे कि गांधीजी के जीवन एवं दर्शन को जीवंत बनाया जा सके। दृष्टिकोण ऐतिहासिक एवं व्याख्यात्मक दोनों ही प्रकार का रहा है। 21वीं सदी की प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करती यह प्रदर्शनी गांधीवादी विचारों को रेखांकित करती है– सच के सिद्धांतों के प्रति सत्याग्रही की प्रतिबद्धता। फाइबर शीशे से निर्मित बा एवं बापू के दो प्रतिमाएं, जो थाईलैंड के दंपत्ति श्री डेचा सैसोमबून एवं श्रीमती विपा सैसोमबून की कृतियां है, को भी मल्टी–मीडिया संग्रहालय में रखा गया है।

ये सभी तत्व गांधी स्मृति को एक सम्पूर्ण संग्रहालय बनाते हैं।

गांधी स्मृति में शाश्वत गांधी संग्रहालय में प्रदर्शित चरखा और उसके महत्व पर आधारित प्रदर्शनी को देखने में तल्लीन विभिन्न स्कूलों के बच्चे।

राजघाट स्थित गांधी दर्शन परिसर का एक दृश्य।

गांधी दर्शन, राजघाट में महात्मा गांधी और उनके जीवन पर आधारित मेरा जीवन ही मेरा संदेश है प्रदर्शनी का एक दृश्य।

ख गांधी दर्शनः राजघाट

दूसरा परिसर राजघाट पर महात्मा गांधी समाधि के निकट स्थित है।

महात्मा गांधी की शहादत के 21 वर्षों के बाद पूरी दुनिया ने 1969 में उनकी जन्म शताब्दी को उस प्रकार मनाना शुरू किया जो शांति के यात्री के अनुरूप है। उसके बाद महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी मनाने के लिए 36 एकड़ में फैला परिसर अस्तित्व में आया। भारत के 13 राज्यों एवं सात दूसरे देशों ने गांधी दर्शन अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी का सृजन किया। प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य गांधी के संदेश और आधुनिक विश्व की पृष्ठभूमि में सत्य एवं अहिंसा के सिद्धांत तथा जिस प्रकार इसने राष्ट्र के जीवन को तथा आधुनिक विश्व को प्रभावित किया है, उसकी व्याख्या करना है।

आज गांधी दर्शन में दो प्रदर्शनियों के मंडप है "मेरा जीवन ही मेरा संदेश" और मिट्टी मॉडल से निर्मित "स्वतंत्रता संग्राम"।

मेरा जीवन ही मेरा संदेश शीर्षक की पहली दीर्घा में दीवारों पर सैकड़ों पुरालेखीय चित्र संक्षिप्त व्याख्याओं के साथ लगाए गए हैं। इनमें से कुछ तस्वीरों में एक बच्चे एवं एक युवा व्यक्ति के रूप में गांधी जी की दुर्लभ तस्वीरें हैं। एक अनुकृति उस घर की भी है जिसमें उनका जन्म हुआ था तथा सेना का वास्तविक वाहन भी है जिसमें उनके पार्थिव शरीर को अंत्येष्टि स्थल तक ले जाया गया था, जिसे अब राजघाट के नाम से जाना जाता है।

इसके अतिरिक्त, आगन्तुक गांधीजी के स्कूल की रिपोर्ट कार्ड, अखबारों की कतरन तथा कार्टून जो समसामयिक रिपोर्ट एवं उनकी गतिविधियों की समीक्षाओं को प्रदर्शित करती हैं, गांधीजी एवं लियो टॉल्सटॉय के बीच पत्रों का आदान–प्रदान, उनकी पत्नी तथा बच्चों की तस्वीरों एवं अन्य दिलचस्प सामग्रियां भी देख सकते है।

इस प्रदर्शनी में गांधीजी की हत्या के बाद दुनिया भर के देशों में आने वाले वर्षों में जारी किए गए स्मारक टिकटों को प्रदर्शित किया गया है; दूसरी प्रदर्शनी में पत्रों को प्रदर्शित किया गया है जो उन्हें भेजे गए थे। विशेष रूप से ये पत्र दर्शाते हैं कि एक साधारण गुजराती वकील ने अपने जीवन काल में कितनी व्यापक प्रसिद्धि पाई।

उदाहरण के लिए, एक पत्र 'गांधीजीः वे चाहे जहां भी हों' को संबोधित किया गया है; दूसरे पत्र मे जो न्यूयॉर्क से पोस्ट किया गया था लिफाफे पर केवल गांधीजी का रेखाचित्र यानि स्केच भर था।

संक्षेप में, 274 पट्टिकाओं के साथ इस मंडप में निम्नलिखित हैः

1) पट्टिका संख्या 1 से 273 में गांधी जी के जन्म से लेकर हत्या तक की तस्वीरें हैं, जिनकी संख्या लगभग 1600 हैं।
2) पट्टिका संख्या 274 में महात्मा गांधी के जन्म शताब्दी वर्ष पर जारी की गई विभिन्न देशों के 75 टिकट हैं।
3) नमक सत्याग्रह के दौरान उपयोग में लाई गई नौका एवं तख्ती तथा बंदूक वाहन जिसमें महात्मा गांधी के पार्थिव अवशेष को बिड़ला भवन से राजघाट तक ले जाया गया, भी यहां रखा गया है।
4) यहां पर अनुकृतियां हैः
   - गुजरात के पोरबंदर में गांधी जी का घर
   - साबरमती आश्रम
   - यरवदा जेल।

समिति के पूर्व अभिरक्षक स्वर्गीय श्री अनिल सेनगुप्ता द्वारा संयोजित, निर्मित भारत के स्वाधीनता संग्राम पर आधारित चिकनी

महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर, महात्मा गांधी के जीवन चरित पर आधारित डोम थियेटर में 360° वीडियो–इमर्सिव अनुभव से युक्त डिजिटल प्रदर्शनी, जिसका उद्घाटन 8 नवम्बर, 2020 को गांधी दर्शन राजघाट में किया गया।

मिट्टी के पटल।

1994 में, गांधीजी की 125वीं जन्म शताब्दी के दौरान, राष्ट्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव ने औपचारिक रूप से राजघाट स्थित गांधी दर्शन में अंतरराष्ट्रीय गांधीवादी अध्ययन केन्द्र की स्थापना करने की घोषणा की। 30 जनवरी, 2000 को राष्ट्रपति के. आर. नारायणन ने प्रधानमंत्री तथा समिति के अध्यक्ष, श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं कई अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में परिसर में अंतरराष्ट्रीय गांधीवादी अध्ययन एवं शांति अनुसंधान केन्द्र के स्थापना की घोषणा करते हुए एक स्तम्भ का अनावरण किया।

महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर पर उनके जीवन, उनके संघर्ष, उनके दृष्टिकोण और मोहनदास से "महात्मा" तक की यात्रा को प्रदर्शित करने वाली एक इंटरैक्टिव डिजिटल प्रदर्शनी, जिसमें मल्टीयूजर एंगेजमेंट के लिए स्मार्ट इंटरफेस की सुविधा है, की स्थापना की गयी है। इसके अतिरिक्त 360° वीडियो–इमर्सिव अनुभव से युक्त एक डोम थियेटर भी बनाया गया है। इसमें महात्मा गांधी के जीवन पर 10 मिनट की अवधि की चार फिल्में (हिंदी और अंग्रेजी दोनों संस्करण) क्रमशः मोहन से महात्मा, अंतिम चरणय फ्रीडम फ्रॉम फियर एंड गांधी फॉर एवर और चारों की एक संयुक्त फिल्म का निर्माण और प्रदर्शन किया गया है।

इसका उद्घाटन माननीय संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं उपाध्यक्ष गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति श्री प्रहलाद सिंह पटेल के साथ माननीय विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्री डॉ. हर्षवर्धन द्वारा 6 नवम्बर, 2020 को गांधी दर्शन राजघाट में किया गया।

ढांचागत सुविधाएं :

गांधी दर्शन, राजघाट पर उपलब्ध सुविधाएं

- गांधीजी द्वारा और उन पर लिखी हुई तथा संबंधित विषयों पर 15000 किताबों के साथ एक पुस्तकालय तथा दस्तावेजीकरण केन्द्र।
- 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' प्रदर्शनी मंडप।
- सभी सुविधाओं से सुसज्जित सम्मेलन, संगोष्ठी एवं भाषण कक्ष।
- प्रवासी विद्वानों के लिए अंतरराष्ट्रीय छात्रावास।
- महात्मा गांधी से सम्बन्धित स्थायी चित्र एवं किताबें।
- 100 व्यक्तियों को समायोजित करने की सुविधाओं के साथ शयनागार।
- प्रकाशन विभागः किताबों के साथ यह पत्रिका तथा एक समाचार पत्रिका का भी प्रकाशन करता है।
- चित्र इकाई।
- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की बड़ी बैठकों के लिए शिविर की सुविधा।
- सम्पर्क कार्यक्रमों के लिए खुली जगह।

समिति के उद्देश्य हैं:

1. गांधीवादी आदर्शों एवं दर्शन को बढ़ावा देने के लिए गतिविधियों की योजना बनाना एवं उन्हें आयोजित करना।
2. संग्रहालय से संबंधित मानक मानदंडों के अनुरूप गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति को खुला रखना तथा आगंतुकों को अधिकतम सुविधाएं प्रदान करने के लिए रखरखाव करना।
3. गांधी स्मृति संग्रहालय एवं गांधी दर्शन प्रदर्शनी दोनों में ही श्रोता विकास एवं संग्रहालय प्रबंधन संरचना को बढ़ावा देना।
4. प्रदर्शनी, फिल्मों, गांधीयाना, पोस्टरों एवं कला, संस्कृति एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न रूपों जैसे शैक्षणिक माध्यमों के जरिये महात्मा गांधी के जीवन एवं संदेश के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए कदमों को बढ़ावा देना।
5. दुर्लभ पुस्तकों, साहित्य, चित्रों, फिल्मों एवं दस्तावेज आदि समेत किताबों के पुस्तकालय को विकसित एवं संरक्षित करना।
6. महात्मा गांधी के महत्वपूर्ण स्मृति चिन्हों को एकत्रित, संरक्षित एवं प्रदर्शित करना।

1930 के ऐतिहासिक दांडी मार्च के दौरान महात्मा गांधी द्वारा इस्तेमाल की गई नाव।

संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त सचिव श्रीमती निरुपमा कोटरू, समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के साथ गांधी दर्शन में महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी का दौरा करती हुईं।

7. गांधीवादी कार्य एवं समाज की बेहतरी के लिए स्वयंसेवकवाद को बढ़ावा देना।
8. महात्मा गांधी के दर्शन एवं आदर्शों से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों के जरिये अंतिमजनों को अधिकार संपन्न बनाने का फोकस करना।
9. गांधीवादी मूल्यों एवं कार्यों को ग्रहण करने के लिए बच्चों, युवाओं, महिलाओं तथा अन्य समूहों की क्षमताओं का विकास करना जिससे कि गांधीवादी दर्शन को व्यावहारिक रूप से लागू करने के जरिये व्यवहारगत बदलाव/विकास लाया जा सके।
10. जरूरत के अनुरूप गांधी दर्शन एवं गांधी स्मृति के दोनों परिसरों तथा वहां की सभी चल एवं अचल संपत्तियों की पुर्नबहाली, सुरक्षा एवं प्रबंधन।
11. महात्मा गांधी के बारे में एवं जिन मूल्यों को उन्होंने प्रचारित किया, उसके बारे में लोगों के विभिन्न वर्गों की जानकारी बढ़ाने के लिए पत्रिकाओं का प्रकाशन।
12. समसामयिक मुद्दों के संदर्भ में गांधीवादी दर्शन पर अंतःविषय अनुसंधान का संचालन।
13. शिक्षा पर गांधीवादी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना एवं उनका संवर्द्धन करना तथा शांति, पारिस्थितिकी सुरक्षा, समानता और न्याय के लिए शिक्षा को सुगम बनाना।
14. महात्मा गांधी एवं गांधीवादी दर्शन की बेहतर एवं गहरी समझ के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा शैक्षणिक संस्थानों के साथ व्यापक तरीके से काम करना।
15. गांधीवादी रचनात्मक कार्य के एक हिस्से के रूप में व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं अन्य आजीविका पहलों के जरिये समाज के कमज़ोर वर्गों को अधिकार संपन्न बनाना।
16. समाज की चुनौतिपूर्ण समस्याओं पर विचार करना एवं उन्हें दूर करने के लिए कार्य करना।
17. सामूहिक जीवन, सामूहिक काम, शांति एवं अहिंसा की संस्कृति के लिए काम करने के लिए विभिन्न हितधारकों को शामिल करना।
18. खासकर सुदूर क्षेत्रों में महात्मा गांधी के जीवन एवं संदेश को पहुंचाना।
19. ऐसी अन्य गतिविधियां शुरू करना तथा सभी पूर्ववर्ती शासनादेशों को पूरा करना और उपरोक्त उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अन्य संस्थानों के साथ सहयोग करना।

समिति की संरचना

शासी निकाय

अध्यक्ष

माननीय प्रधानमंत्री

उपाध्यक्ष

श्री प्रहलाद सिंह पटेल, माननीय संस्कृति मंत्री

सदस्य

प्रभारी मंत्री, संस्कृति मंत्रालय
दिल्ली के उपराज्यपाल
दिल्ली के मेयर
श्री लक्ष्मीदास
श्री शंकर कुमार सान्याल
श्री नारायण भाई भट्टाचार्जी
डॉ. हर्षवर्धन कामराह
सुश्री निलिमा वर्धन
डॉ. सुपर्णा गुप्तु
सचिव, संस्कृति मंत्रालय
प्रधानमंत्री के सूचना सलाहकार
प्रमुख इंजीनियर, सीपीडब्ल्यूडी
सचिव (व्यय), वित्त मंत्रालय
सचिव, शहरी विकास मंत्रालय
दिल्ली के आयुक्त, दिल्ली नगर निगम
अध्यक्ष/प्रशासक, नई दिल्ली पालिका समिति

सदस्य सचिव

संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय

कार्यकारी समिति

अध्यक्ष,

श्री प्रहलाद सिंह पटेल

सदस्य

श्री लक्ष्मीदास
श्री शंकर कुमार सान्याल
सुश्री रजनी बख्शी

सदस्य सचिव

संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

निदेशक

श्री दीपंकर श्री ज्ञान (झा.प्र.से)

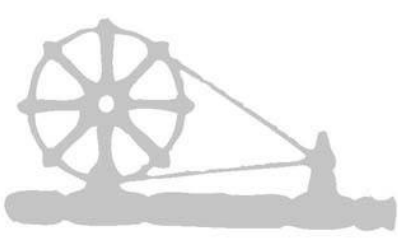

कार्य□मों की समयरेखा

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति
वर्ष 2020–2021 के दौरान की गई गतिविधियां हमार्च 2021 तक

□म संख्या	अप्रैल 2020 से जनवरी 2021 तक स्वीकृत कार्य□म	कार्य□म की तिथि	स्थान	कार्य□म विवरण
1	अहिंसा संघार पर ऑनलाइन नुक्त प्रमाणन कार्यक्रम की शुरुआत	2 अप्रैल, 2020	नई दिल्ली	समिति ने 2 अप्रैल, 2020 को शिक्षकों, विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों और विभिन्न सेवाओं के लोगों के लिए अहिंसा संघार पर एक ऑनलाइन मुक्त प्रमाणन कार्यक्रम शुरू किया। तीन मॉड्यूल में विभाजन किए गए पाठ्यक्रम ने अहिंसक संघर्ष प्रक्रिया के सिद्धांत और व्यवहार योगों की एक महत्वपूर्ण समझ प्रदान की। पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों से अपेक्षा की जाती है कि वे प्रश्न–उत्तर प्रारूप में अपनी समझ लिखकर उत्तर दें।
2	कस्तूरबा गांधी को उनकी 151वीं जयन्ती पर श्रद्धांजलि	11 अप्रैल, 2020	नई दिल्ली	माननीय संस्कृति मंत्री और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति (जीएसडीएस) के उपाध्यक्ष श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने सोशल मीडिया पर कस्तूरबा गांधी को निम्नलिखित ट्वीट कर श्रद्धांजलि दी। "मातृशक्ति की मिसाल, जिन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर किया और जो साधना एवं त्याग की प्रतिमूर्ति हैं, ऐसी महान स्वतंत्रता सेनानी श्रीमती कस्तूरबा गांधीजी की जयंती पर उन्हें कोटि कोटि नमन' समिति ने भी 11 अप्रैल, 2020 को बा को उनकी 151वीं जयन्ती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।
3	जलियांवाला बाग शहीदों को श्रद्धांजलि	13 अप्रैल, 2020	नई दिल्ली	समिति ने 13 अप्रैल, 1919 को हुए नरसंहार के 101 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में जलियांवाला बाग के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर जलियांवाला बाग स्मारक का एक कोलाज, जिसमें कार्यक्रम की स्मृति की तस्वीरें हैं, ट्वीट किया गया। इस अवसर पर, निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 10 अप्रैल, 1919 को रौलेट एक्ट के विरोध में पंजाब जाते समय पलवल हरियाणा में गांधीजी की गिरफ्तारी की घटना का भी स्मरण किया। यह गांधीजी की प्रथम राजनीतिक गिरफ्तारी थी।
4	डॉ. बी. आर. अम्बेडकर को उनकी 129वीं जयन्ती पर श्रद्धांजलि	14 अप्रैल, 2020	नई दिल्ली	14 अप्रैल, 2020 को भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की 129वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। समिति के कार्यकर्ताओं ने वीडियो और ऑडियो संदेशों के माध्यम से डॉ. अम्बेडकर पर अपने विचार साझा किए। इन संदेशों का विषय बाबा साहब के अपने शब्दों में से लिया गया था। "यदि आप एक सम्मानजनक जीवन जीने में विश्वास करते हैं, तो आप स्वयं की सहायता में विश्वास करते हैं जो सबसे अच्छी मदद है"। इससे पूर्व माननीय संस्कृति मंत्री और समिति के उपाध्यक्ष श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने नई दिल्ली स्थित अपने आवास पर डॉ. बी. आर. अम्बेडकर को उनके चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।
5	लॉकडाउन के दौरान किये जाने वाले कार्यक्रमों पर चर्चा के लिए ऑनलाइन बैठक	14 अप्रैल, 2020	नई दिल्ली	समिति निदेशक, श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने COVID–19 महामारी के कारण लॉकडाउन के मद्देनजर ऑनलाइन कार्यक्रमों के आयोजन की संभावना पर चर्चा करने के लिए एक ऑनलाइन बैठक आयोजित की। विभिन्न मुद्दों पर वेबिनार के माध्यम से वरिष्ठ संस्थान व्यक्तियों को शामिल करने पर चर्चा की गई। साथ ही व्यापक दर्शकों तक पहुंचने के लिए विभिन्न विषयों पर ऑडियो/वीडियो फाइलें अपलोड करने का भी सुझाव दिया गया।
6	चंपारण सत्याग्रह पर ऑनलाइन व्याख्यान और कहानियों के माध्यम से चम्पारण का पुनरोद्गम	15–20 अप्रैल, 2020	नई दिल्ली	1917 के ऐतिहासिक चंपारण सत्याग्रह को फिर से जीवंत करने के लिए, समिति ने चंपारण आन्दोलन की घटनाओं के माध्यम से कहानी कहने की एक ऑनलाइन वेब श्रृंखला शुरू की, जहां एक गरीब किसान राजकुमार शुक्ला ने वकील गांधी को सत्याग्रह का प्रयोग करने के लिए एक मंच प्रदान किया। एपिसोड की रिकॉर्डिंग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के गांधी चेयर के जीन प्रो मनोज कुमार के चंपारण सत्याग्रह पर व्याख्यान के साथ शुरू हुई। जीएसडीएस की सुश्री मानसी ने चंपारण सत्याग्रह की कहानी छह एपिसोड के माध्यम से स्टोरी टेलिंग रूप में सुनाई।

7	पृथ्वी दिवस के अवसर पर ऑनलाइन व्याख्यान	22 अप्रैल 2020	नई दिल्ली	22 अप्रैल, 2020 को पृथ्वी दिवस के अवसर पर समिति ने ऑन–लाइन व्याख्यान श्रृंखला के तहत हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष और समिति के कार्यकारिणी सदस्य श्री लक्ष्मी दास को महामारी, पृथ्वी और महात्मा गांधी विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया।
8	चंपारण सत्याग्रह पर ऑनलाइन व्याख्यान	27 अप्रैल, 2020	नई दिल्ली	समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 27 अप्रैल, 2020 को चंपारण सत्याग्रह के इतिहास पर एक इंटरैक्टिव लाइव ऑनलाइन व्याख्यान को संबोधित किया। ऑनलाइन व्याख्यान राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा आयोजित किया गया था। श्री प्रियांक कानूनगो ने चर्चा का संचालन किया।
9	निर्माण मजदूरों को भोजन का वितरण	28 अप्रैल, 2020	नई दिल्ली	समिति ने 28 अप्रैल, 2020 को गाँधी दर्शन परिसर में काम कर रहे निर्माण मजदूरों को बिस्कुट और स्नैक्स के पैकेट वितरित किए। श्री विवेक, श्री राकेश, श्री पंकज चौबे, श्री धर्मराज ने इन पैकेटों को वितरित किया, जो केन्द्रीय कारागार तिहाड़ द्वारा प्रदान किया गया था।
10	एकजुटता, अहिंसक संचार और कोरोनावायरस पर ऑनलाइन व्याख्यान	20 अप्रैल, 2020	मध्य प्रदेश	समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय जबलपुर के छात्रों के लिए "एकजुटता, अहिंसक संचार और कोरोनावायरस" पर एक ऑनलाइन व्याख्यान दिया। यह कोविड–19 के कारण लॉकडाउन की अवधि के दौरान समिति द्वारा शुरू की गई ऑनलाइन 'व्याख्यान श्रृंखला' का हिस्सा है। समिति के कार्यक्रमों के बारे में बोलते हुए, डॉ कुण्डू ने समिति द्वारा न्यायपालिका के साथ की गई पहलों पर प्रकाश डाला।
11	"शांति की संस्कृति के लिए प्रभावी संवाद की आवश्यकता" पर वेबिनार	2 मई, 2020	नई दिल्ली	समिति ने ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला के तहत "शांति की संस्कृति के लिए प्रभावी संवाद की आवश्यकता" पर एक वेबिनार का आयोजन किया। प्रख्यात गांधीवादी विद्वान और विचारक प्रो. एन राधाकृष्णन और यूनेस्को चेयर फॉर पीस रिसर्च, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के अध्यक्ष और प्रख्यात अकादमिक प्रो. प्रियंकर उपाध्याय,प्रमुख वक्ता थे। तकनीकी सहायता 'डिजिटल इंडिया' द्वारा प्रदान की गई थी। वेबिनार में लगभग 137 प्रतिभागियों ने भाग लिया। वेबिनार ने संवाद की संस्कृति की स्थापना के लिए दैनिक जीवन में शांति पद्धतियों के अनुप्रयोग पर चर्चा की, जिसका उल्लेख 'वेद' और 'उपनिषद' में भी है। इसके अतिरिक्त परम पूज्य दलाई लामा से लेकर स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, दैसाकू इकेदा और अन्य प्रमुख शांति और अहिंसा के अभ्यासकर्ताओं के जीवन भर की शिक्षाओं और मिशन पर चर्चा की गयी।
12	गांधी स्मृति और गांधी दर्शन में स्वच्छता अभियान	4–5 मई, 2020	नई दिल्ली	तालाबंदी के दौरान, क्रमशः तीस जनवरी लेन स्थित गांधी स्मृति एवं राजघाट स्थित गांधी दर्शन परिसर में रहने वाले स्टाफ सदस्यों ने 4–5 मई, 2020 को पूरे परिसर की सफाई करके बड़े पैमाने पर सफाई अभियान शुरू किया। समिति के श्री नरेन्द्र के नेतृत्व में गांधी स्मृति में सदस्यों ने पूरे परिसर की सफाई की। गांधी दर्शन में इस पहल का नेतृत्व श्री मोहित मोहन ने किया। गांधी दर्शन में सदस्यों द्वारा सार्वजनिक स्थानों और वाहनों को सेनिटाइज व कीटाणुरहित करने का कार्य भी किया गया।
13	कोविड योद्धाओं का आभार	5 मई, 2020	नई दिल्ली	समिति ने मई 2020 के दौरान अपने ट्वीटर हैंडल और यू–ट्यूब चैनल के माध्यम से कोविड योद्धाओं का आभार व्यक्त किया। इस प्रयास में समिति सदस्यों द्वारा मास्क बनाने, जरूरतमंद लोगों को भोजन वितरित करने गली के जानवरों को खिलाने के लिए किए गए कार्यों को भी प्रदर्शित किया। समिति की पहल पर हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में हिमालयन बौद्ध स्कूल के शिक्षकों और स्वयंसेवकों द्वारा स्कूल की प्रिंसिपल सुश्री पालकी ठाकुर के नेतृत्व में लगभग 500 मास्क बनाए गए, जिसे बाद में जरूरतमंदों को वितरण के लिए मनाली के एसडीएम को सौंप दिया गया।
14	दिल्ली में पांच जगहों पर मास्क बनाना शुरू	6 मई, 2020	नई दिल्ली	एम्स और सीआरपीएफ के डॉक्टरों द्वारा संचालित हेल्दी एजिंग इंडिया (एचएआई) के सहयोग से समिति ने दिल्ली में पांच अलग–अलग जगहों पर निःशुल्क वितरण के लिए मास्क बनाना शुरू किया। इस कार्य में मदद करते हुए समिति निदेशक श्री दीपांकर श्री ज्ञान के नेतृत्व में स्टाफ के कुछ सदस्यों ने 6 मई, 2020 को गांधी दर्शन में एचएआई के सदस्यों को खादी और सूती कपड़े के रोल सौंपे।

15	गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर को श्रद्धांजलि	7 मई, 2020	नई दिल्ली	समिति ने नोबेल पुरस्कार विजेता गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर को उनकी 159वीं जयंती पर 7 मई, 2020 को प्रख्यात गांधीवादी विचारक और शिक्षाविद श्री भगवान सिंह द्वारा ऑनलाइन व्याख्यान के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके अलावा, नारायण भाई देसाई द्वारा लिखित एक गीत "मा भारती के स्नेहभाव भीगे..." की प्रस्तुति के माध्यम से गुरुदेव को संगीतमयी श्रद्धांजलि भी दी गयी। कवि टैगोर और कर्मयोगी महात्मा गांधी के आपसी सम्मान पर आधारित यह गीत पहले गांधी स्मृति में सर्वधर्म प्रार्थना के दौरान लगभग 500 बच्चों द्वारा गाया गया था। इस कार्यक्रम को यू–ट्यूब चैनल पर अपलोड किया गया था।
16	लॉकडाउन के बाद के कार्यक्रमों पर बैठक	13 मई, 2020	नई दिल्ली	समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 13 मई, 2020 को एक ऑनलाइन बैठक बुलाई, जिसमें समिति द्वारा तालाबंदी के बाद की जाने वाली पहल पर चर्चा की गई। निदेशक ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को आगे बढ़ाने के संकल्प पर चर्चा की उन्होंने इसे अर्थव्यवस्था के पुनरोद्धार की अवधारणा बताते हुए जे सी कुमारप्पा की स्वायी अर्थव्यवस्था का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक में आत्मनिर्भरता के उत्तर मिल सकते हैं जिन्हें आज के संदर्भ में अच्छी तरह से संशोधित किया जा सकता है।
17	अहिंसक संचार पर वेबिनार – तत्व और अनुप्रयोग	15 मई, 2020	मंगलायतन विश्वविद्यालय (एमयू), अलीगढ़	समिति ने मंगलायतन विश्वविद्यालय (एमयू), अलीगढ़ के सहयोग से 15 मई, 2020 को "अहिंसक संचार–तत्व और अनुप्रयोग" पर एक वेबिनार का आयोजन किया। इस वेबिनार में प्रमुख वक्ताओं में शामिल थे: प्रो. शिवाजी सरकार, डीन और निदेशक मंगलायतन विश्वविद्यालयय श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक समिति डॉ. वेदाभ्यास कुण्डु, कार्यक्रम अधिकारी समिति और डॉ. धीरज जुमार गर्ग, सयुक्त निदेशक एम. यू.। वेबिनार में लगभग 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
18	अहिंसक संचार पर वेबिनार	16 मई, 2020	नई दिल्ली	समिति ने 'वेबिनार सीरीज: कोविड–19 आउटब्रेक' के तहत 16 मई, 2020 को 'अहिंसक संचार' पर एक वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार का आयोजन ब्लू बेल्स ग्रुप ऑफ स्कूल्स, गुरुग्राम के सहयोग से किया गया था। कार्यशाला में मुख्य वक्ता समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डु थे। इसका संचालन समिति की सुश्री मानसी ने किया। इस वेबिनार में 78 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
19	अहिंसक संचार के उपयोग से लॉकडाउन के दौरान सम्बन्ध प्रबंधन	22 मई, 2020	नई दिल्ली	अहिंसक संचार संबंधों और तनाव प्रबंधन के मुद्दों से उभरने वाली चुनौतियों से लड़ने के लिए व्यक्तियों की रणनीतियों की पेशकश करता है जो कोविड–19 संकट से प्रभावित होते हैं। ऐसे समय में जब कोरोनावायरस के कारण लॉकडाउन है, कई लोग लगातार अपने आसपास रहने वालों के साथ संबंधों में टकराव और तनाव का अनुभव कर रहे हैं। 22 मई, 2020 को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और दिल्ली मेट्रोपॉलिटन एजुकेशन द्वारा आयोजित एक वेबिनार में ऐसी स्थितियों में अहिंसक संचार के महत्व पर चर्चा की गई। इस वेबिनार में 183 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
20	महामारी के दौरान प्रतिरक्षा को मजबूत करना	23 मई 2020	नई दिल्ली	अच्छी प्रतिरक्षा सबसे आवश्यक महत्वपूर्ण उपाय है जो हमारे जीवन में किसी भी प्रकार के वायरस से लड़ने के लिए आवश्यक है। कोविड –19 महामारी ने पहले से कहीं अधिक प्रतिरक्षा प्रणाली की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया है। अच्छी प्रतिरक्षा प्रणाली के महत्व और मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली को विकसित करने के तरीके पर 23 मई, 2020 को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा आयोजित "वैकल्पिक चिकित्सा के साथ प्रतिरक्षा और स्वास्थ्य को बनाए रखना" विषय पर ऑनलाइन वेबिनार में चर्चा की गई थी। वेबिनार में स्वास्थ्य विशेषज्ञों, छात्रों, प्रशिक्षुओं, शिक्षाविदों, योगाभ्यासों और समिति स्टाफ सदस्यों सहित 80 सदस्य शामिल थे।

21	जिला प्रशासन धौलपुर को समिति–लुपिन सृजन केंद्र से मिले 70000 मास्क	मई 2020	धौलपुर राजस्थान	कोविड–19 महामारी के इस समय में मास्क बनाने की समिति की पहल के तहत समिति–ल्यूपिन सृजन प्रशिक्षण–सह–उत्पादन केन्द्र से जिला प्रशासन धौलपुर को 70000 मास्क प्राप्त हुए। मई माह में गरीबों और जरूरतमंदों को निःशुल्क वितरण के लिए डीएम को मास्क सौंपे गए। यह कार्य ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर फाउण्डेशन के कार्यकारी निदेशक श्री सीता राम गुप्ता की देखरेख में किया गया है। महामारी और तालाबंदी के बाद से केन्द्र मास्क का उत्पादन कर रहा है और इसे आशाओं के इलाकों, टाउनशिप, आंगनवाड़ियों, स्कूलों आदि में जरूरतमंदों को वितरित कर रहा है। महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर राजस्थान के धरतीपुर, धौलपुर में समिति द्वारा ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर फाउण्डेशन के सहयोग से सृजन परिधान उत्पादन सिलाई और प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गई थी।
22	समस्या आधारित पत्रकारिता से समाधान आधारित पत्रकारिता की ओर जाने की जरूरत : के. जी. सुरेश	27 मई, 2020	नई दिल्ली	वरिष्ठ पत्रकार, स्तम्भकार, शिक्षाविद और भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक, प्रो. के. जी. सुरेश ने समस्या–आधारित पत्रकारिता से समाधान–आधारित पत्रकारिता में स्थानांतरित होने की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने मीडिया शिक्षा में ऐसे पाठ्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने का भी प्रस्ताव रखा। प्रो. सुरेश 27 मई, 2020 को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सहयोग से दिल्ली पत्रकार संघ द्वारा आयोजित "अहिंसक संचार" (एनवीसी) पर एक वेबिनार में बोल रहे थे। दिल्ली पत्रकार संघ (इंडिया) ने एनवीसी पर चर्चा को पूरे देश में ले जाने का प्रस्ताव रखा।
23	संयुक्त सचिव ने समिति संग्रहालयों का किया दौरा	27 और 29 मई, 2020	नई दिल्ली	भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की सचिव श्रीमती निरुपमा कोटरू ने 27 मई, 2020 को गांधी स्मृति संग्रहालय का दौरा किया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने संयुक्त सचिव को गांधी स्मृति में डिजिटल इंस्टॉलेशन के बारे में जानकारी दी। इसके अलावा 29 मई, 2020 को श्रीमती कोटरू ने गांधी दर्शन प्रदर्शनी "मेरा जीवन ही मेरा संदेश है" के साथ–साथ गांधी की 150वीं जयन्ती पर समिति द्वारा डीएसटी के सहयोग से स्थापित डिजिटल ज़ोन का दौरा किया । समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने उन्हें डिजिटल इंस्टॉलेशन और फोटोग्राफिक प्रदर्शनी के बारे में बताया, जिसने श्रीमती कोटरू को बहुत आकर्षित किया। दौरे के दौरान समिति स्टाफ सहित डीएसटी के अधिकारी मौजूद रहे।
24	ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव श्री एन एन सिन्हा ने झारखण्ड प्रशासन को दी जाने वाली कोविड–19 किट को झण्डी दिखाकर रवाना किया	29 मई, 2020	नई दिल्ली	**COVID–19 के खिलाफ अपनी लड़ाई में, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति नई दिल्ली और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर एसोसिएशन, राजस्थान ने 29 मई, 2020 को आदिवासी जिले खूंटी को 200 पीपीई किट, 50 थर्मामीटर, 10,000 NITRILE GLOVES, 11000 मास्क और 500 फेस शील्ड भेजे।** इस खेप को श्री एन. एन. सिन्हा, आईएएस, सचिव, ग्रामीण विकास, भारत सरकार ने कृषि भवन में हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, और श्री सीता राम गुप्ता, सीईओ ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर संगठन भी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि समिति और ल्यूपिन, कोविड महामारी के बाद से नियमित रूप से विभिन्न संगठनों, सरकारी विभागों और गरीब और जरू. रतमंद लोगों को मास्क और उपरोक्त सामग्री की निशुल्क आपूर्ति कर रहे हैं।
25	32वें विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर वेबिनार	31 मई, 2020	नई दिल्ली	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के जराचिकित्सा विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रसून चटर्जी ने कहा, "व्यसन पलायनवाद का एक रूप है और कब्ज, अवसाद, चिंता या मानसिक तनाव जैसे किसी भी लक्षण का तंबाकू चबाने से कोई संबंध नहीं है।" डॉ. चटर्जी 32वें विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर समिति द्वारा आयोजित एक वेबिनार को संबोधित कर रहे थे।
26	केंद्रीय विश्वविद्यालय दक्षिण बिहार के मीडिया विभाग में पाठ्यक्रम का हिस्सा होगा अहिंसक संचार.	28 मई, 2020	बिहार	समिति ने दक्षिण बिहार के केंद्रीय विश्वविद्यालय के जनसंचार और मीडिया विभाग के सहयोग से 28 मई, 2020 को "अहिंसक संचार" पर वेबिनार का आयोजन किया। वक्ताओं में श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक समिति, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी और प्रो. आतिश पाराशर शामिल थे। वेबिनार में लगभग 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विश्वविद्यालय ने जनसंचार विभाग में अहिंसक संचार को नए विषय के रूप में पाठ्यक्रम में शामिल करने का निर्णय लिया है। सत्र की अध्यक्षता प्रो. आतिश पाराशर ने की।

27	अहिंसक संचार के माध्यम से स्वयंसेवा को बढ़ावा देना	30 मई, 2020	पी. एस. जी. कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंसेज, कोयंबटूर	समाज में स्वैच्छिकता और परोपकारिता को बढ़ावा देने की एक महत्वपूर्ण रणनीति अहिंसक संचार का उपयोग है। 30 मई, 2020 को पीएसजी कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंसेज, कोयंबटूर, तमिलनाडु के सहयोग से गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा आयोजित एक वेबिनार में यह रेखांकित किया गया था कि प्रभावी स्वयंसेवावाद के लिए संबंध विकास और संबंध बनाने की आवश्यकता है। इसका विषय था– "अहिंसक संचार का उपयोग करके स्वयंसेवीवाद को बढ़ावा देना: एक बेहतर दुनिया के लिए सभी स्वयंसेवक बनें" वेबिनार में लगभग 100 छात्रों और शिक्षकों ने भाग लिया।
28	अहिंसक संचार का उपयोग करके कक्षा के विवादों का प्रबन्धन– एक राष्ट्रीय वेबिनार	1 जून, 2020	शिक्षा विभाग, लेडी इरविन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय	समिति ने शिक्षा विभाग, लेडी इरविन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से 1 जून, 2020 को "अहिंसक संचार के उपयोग से कक्षा संघर्षों का प्रबन्धन" विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार में मुख्य वक्ता समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान और कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू थे। वेबिनार की आयोजन समिति के सदस्यों में डॉ. रेणु मालवी, सुश्री राशि दुबे मिश्रा, डॉ विनोद कुमार कालरा, डॉ सूरज कुमार और डॉ स्तुति श्रीवास्तव शामिल थे। वेबिनार में 155 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया ।
29	सामुदायिक स्वयंसेवकों को बढ़ावा देने पर वेबिनार: कोविड–19 के दौर में समाज सेवा	5 जून, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली	'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर समिति ने 5 जून, 2020 को 'सामुदायिक स्वयंसेवकों को बढ़ावा: कोविड–19 के दौर में समाज सेवा' पर वेबिनार का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में उत्तराखण्ड, कानपुर, उत्तर प्रदेश, असम, मणिपुर, इंदौर, पश्चिम बंगाल, बिहार और नई दिल्ली से लगभग 46 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कोविड योद्धाओं ने कोविड–19 के दौरान अपने–अपने क्षेत्रों में की गई पहलों को साझा किया। चर्चा के दौरान सुश्री प्रेरणा ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया।
30	समिति के पूर्व कर्मचारी श्री ख्याली राम को श्रद्धांजलि	5 जून, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के पूर्व कर्मचारी श्री ख्याली राम का 5 जून, 2020 को उत्तराखंड के हल्द्वानी में उनके गृहनगर में निधन हो गया। वह वर्ष 1969 में समिति में शामिल हुए और 1998 में एक वरिष्ठ परिचारक (चपरासी) के रूप में सेवानिवृत्त हुए। समिति निदेशक श्री दीपांकर श्री ज्ञान के नेतृत्व में समिति ने दिवंगत आत्मा के सम्मान में आयोजित एक ऑनलाइन शोक सभा में स्वर्गीय श्री ख्याली राम को श्रद्धांजलि अर्पित की। समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला, पूर्व लाइब्रेरियन श्रीमती शास्वती झालानी ने भी श्री ख्याली राम से जुड़ी स्मृतियाँ साझा कीं।
31	कक्षा में संघर्ष समाधान की रणनीतियाँ, ई–कार्यशाला	9–10 जून, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा 9–10 जून, 2020 को देश भर के विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के छात्रों और शिक्षकों के लिए "कक्षा में संघर्ष समाधान की रणनीतियाँ" पर दो दिवसीय ई–कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ. साजिया मंसूरी, सहायक प्रोफेसर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक समिति डॉ. वेदाव्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी, वेबिनार के प्रमुख वक्ताओं में से एक थे। वेबिनार ने कक्षाओं में प्रभावी उपाय करने और स्वस्थ वातावरण के लिए छात्रों के साथ शांति और संबंध बनाने की संस्कृति स्थापित करने की आवश्यकता को रेखांकित किया। दो दिवसीय ई–कार्यशाला में 45 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
32	प्रतिशोध से लेकर पुनर्स्थापनात्मक व्यवहार तक– अहिंसक संचार का उपयोग करके कक्षा के संघर्षों का प्रबन्धन करना	12 जून, 2020	भारतीय विद्या भवन का मेहता विद्यालय, नई दिल्ली	समिति ने भारतीय विद्या भवन के मेहता विद्यालय नई दिल्ली के सहयोग से 12 जून, 2020 को "प्रतिशोध से लेकर पुनर्स्थापनात्मक व्यवहार तक – अहिंसक संचार के उपयोग से कक्षा संघर्षों का प्रबन्धन" पर एक वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार के प्रमुख वक्ताओं में समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, डॉ. (श्रीमती) अंजू टंडन, प्रिंसिपल, बीवीबीएमवी और कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू शामिल थे। इस कार्यक्रम में भारतीय विद्या भवन के एनएससीबी विद्यानिकेतन हल्दिया, बैंगलोर, हैदराबाद दिल्ली, एनसीआर के 100 से अधिक प्रतिभागी उपस्थित थे।

33	दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्या योजना (डीडीयू–जीकेवाई) पर बैठक	13 जून 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली	समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने ग्रामीण विकास मंत्रालय के तत्वाधान में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा स्वीकृत दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना (डीडीयू–जीकेवाई) के कामकाज पर विमर्श हेतु ऑनलाइन बैठक बुलाई। 13 जून, 2020 को आयोजित इस वर्चुअल बैठक में कारीगर पंचायत के श्री बसंत सिंह, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डु, पूर्व प्रशासनिक अधिकारी श्री एस. ए. जमाल, कार्यक्रम कार्यकारी श्री राजदीप पाठक, सुश्री पूजा सिंह, श्री चंदन गुप्ता, श्री मुकुंद मिलिंद, सुश्री रूबी मिश्रा, परियोजना प्रमुख श्री बिश्वजीत सिंह, "सुश्री कनक कौशिक और सुश्री प्रेरणा जिंदल, उपस्थित थे।
34	कक्षाओं में संघर्ष समाधान की रणनीतियों पर ई–कार्यशाला: एक अन्वेषण	16–17 जून, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली	समिति ने 16–17 जून, 2020 को "कक्षाओं में संघर्ष समाधान की रणनीतियाँ" विषय पर दूसरी ई–कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें वक्ता के रूप में समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की सहायक प्रोफेसर डॉ शाजिया मंसूरी, और कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डु मुख्य वक्ता के रूप में। दो दिवसीय ई–कार्यशाला में 45 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
35	योग और ध्यान के माध्यम से प्रतिरक्षा में वृद्धि	21 जून, 2020	पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय	छठे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर समिति ने दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य) के योग क्लब के सहयोग से एक्यू योग पर ऑनलाइन व्याख्यान–सह–प्रदर्शन आयोजित किया इसमें श्वास विज्ञान पर सुश्री अनुराधा मेहरा ने व्याख्यान दिया।
36	सूर्य नमस्कार पर आभासी अभियान के माध्यम से पहल	21 जून, 2020	हेल्थ फिटनेस ट्रस्ट, नई दिल्ली	समिति ने आयुष मंत्रालय के स्वायत्त निकाय, अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान और हेल्थ फिटनेस ट्रस्ट के सहयोग से 'सूर्य नमस्कार आभासी प्रशिक्षण श्रृंखला' का आयोजन किया इसमें शामिल होने के लिए विभिन्न राज्यों के प्रतिभागियों को आमंत्रित किया गया। छठे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 1 से 21 जून, 2020 तक हुए इस कार्यक्रम में न केवल भारतीय राज्यों, अपितु जर्मनी, दोहा, कतर, लंदन, फिलाडेल्फिया से भी प्रतिभागियों की अच्छी प्रतिक्रिया देखी गई। एशियाई मैराथन चैंपियन, डॉ सुनीता गोदारा ने इस अभियान की शुरुआत की इस वर्ष के अभियान की टैग लाइन 21 को 21 बार सूर्य नमस्कार@**home** थी। जिसके माध्यम से 'सूर्य नमस्कार' करने वाले प्रतिभागियों की बड़ी संख्या में वीडियो और तस्वीरें साझा की गईं।
37	संस्कृति मंत्रालय के सचिव द्वारा महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि	22 जून, 2020	नई दिल्ली	सचिव संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार श्री आनंद कुमार, आईएएस ने 22 जून, 2020 को गांधी स्मृति का दौरा कर, वहां स्थित शहीद स्तंभ पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री आनंद कुमार ने गांधी स्मृति संग्रहालय और डिजिटल प्रदर्शनी का भी दौरा किया। इस अवसर पर संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त सचिव सुश्री निरुपमा कोटरू भी उपस्थित थीं। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने उन्हें समिति और संग्रहालय के कामकाज के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के सदस्य भी उपस्थित थे।
38	गांधी दर्शन से कोविड–19 सुरक्षा किट को झंडी दिखाकर रवाना किया गया	26 जून, 2020	नई दिल्ली	जीएसबीएस और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन ने संयुक्त रूप से 26 जून, 2020 को बेगूसराय और बेतिया में **COVID**–19 सुरक्षा किट भेजी। इस किट में 250 पीपीई किट 50 आईआर थर्मामीटरय 1000 फेस शील्ड, 200 एन–95 मास्क शामिल थे। किट को ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन के सीईओ श्री सीता राम गुप्ता और समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने गाँधी दर्शन से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।
39	सशक्त गांव–सशक्त राष्ट्र पर वेबिनार	26 जून, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली	राष्ट्रीय स्वयं सेवक के अखिल भारतीय मुख्य समन्वयक श्री रामलालजी ने कहा, "हमें अपने गांवों, अपने ग्रामीणों को उनकी संस्कृति, उनकी आत्मनिर्भर पद्धतियों और उनकी पारम्परिक प्रणालियों में उनके विश्वास के लिए धन्यवाद देना है। जो इस महामारी के दौरान वरदान साबित हुए हैं।" उन्होंने 26 जून, 2020 को कोविड–19 और वर्तमान परिदृश्य के आलोक में समिति द्वारा आयोजित "सशक्त गांव–सशक्त राष्ट्र" पर वेबिनार को सम्बोधित करते हुए ये बात कही।
40	संकल्प पर्व के तहत पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित	28 जून, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	संकल्प पर्व के दौरान समिति के कर्मचारियों ने वृक्षारोपण अभियान में भाग लिया।

41	महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज संबंधी दृष्टिकोण पर वेबिनार	7 जून, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	कार्यक्रम में बिहार, दिल्ली, झारखण्ड, कानपुर, पंजाब के लगभग 55 प्रतिभागियों ने भाग लिया। जिनमें वरिष्ठ पत्रकार, सामाजिक विचारक, छात्र, शोधार्थी शामिल थे। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) के अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय ने मुख्य भाषण दिया।
42	सतत् जीवन शैली और अहिंसक संचार पर ई–कार्यशाला	8–9 जून, 2020	स्टेट बाल भवन, असम	दो दिवसीय इस कार्यशाला में प्रतिभागियों के साथ कई इंटरैक्टिव सत्र हुए। जिनमें उन्हें अहिंसक संचार (एनवीसी) की विभिन्न अवधारणाओं के बारे में जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त वर्तमान समय और परिदृश्य में जब पूरी दुनिया **COVID**–19 महामारी की चपेट में है, पारस्परिक सह–अस्तित्व का महत्व और इसकी आवश्यकता पर भी विमर्श किया गया। समिति के पूर्वोत्तर समन्वयक श्री गुलशन गुप्ता, परियोजना समन्वयक सृजन केन्द्र सुश्री प्रेरणा जिंदल, ने कार्यक्रम का समन्वय किया। इस अवसर पर सुश्री बिंजुगोनी दास, अध्यक्ष राज्य बाल भवन, असम, सुश्री कविता भट्टाचार्जी और अन्य उपस्थित थे।
43	हमारे दैनिक जीवन में अहिंसक संचार पर वेबिनार	11 जून, 2020	स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन, औरो यूनिवर्सिटी सूरत, गुजरात	इस वेबिनार में 52 प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक समिति और डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी, प्रो. श्याम पारेख, डीन, जनसंचार विभाग, औरो विश्वविद्यालय इस अवसर पर उपस्थित थे। प्रो. सयंतनी रॉय असिस्टेंट प्रोफेसर, जनसंचार विभाग औरो यूनिवर्सिटी ने सत्र का संचालन किया।
44	'संघर्ष समाधान, वार्ता और मध्यस्थता में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी' पर अंतरराष्ट्रीय ई–संवाद	13 जून, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति द्वारा 13 जून, 2020 को "संघर्ष समाधान, वार्ता और मध्यस्थता में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी" पर अंतर्राष्ट्रीय ई–संवाद का आयोजन किया गया था। डॉ विद्या जैन, पूर्व एसजी एपीपीआरए और संयोजक, अहिंसा आयोग, आईपीआरए (अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संघ), डॉ. बर्नेडेट मुथिएन, दक्षिण अफ्रीका में सहायक, शोधकर्ता और कवि व अफ्रीकी शांति अनुसंधान संघ के संस्थापक, प्रो. मैट मेयर, सह–महासचिव, आईपीआरए प्रो. जेनेट गर्सन, (पीस एजुकेटर) शिक्षा निदेशक, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑन पीस एजुकेशन और सुश्री दीना लखहल, प्रोग्राम ऑफिसर, ग्लोबल नेटवर्क ऑफ वूमेन पीस–बिल्डर्स प्रमुख वक्ता थे।
45	"वैश्विक पर्यावरण संकट से लड़ने के लिए आज मानव परस्पर निर्भरता क्यों मायने रखती है" विषय पर ई–सम्मेलन	20 जून, 2020	नोबल इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी (यूएसए)	इस ई–सम्मेलन का उद्घाटन समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने किया। संसाधन व्यक्तियों में पद्मश्री श्री अशोक भगत, संस्थापक सचिव विकास भारती बिशुनपुर, झारखण्ड प्रो. डॉ. रोजर हैंसेल, अध्यक्ष नोबल इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी (यूएसए), प्रो. डॉ. बिस्वजीत (बॉब) गांगुली, चांसलर और सीईओ नोबल इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी (यूएसए), नोबल इंस्टीट्यूशन फॉर एनवायरनमेंट पीस (कनाडा) के अध्यक्ष और सीईओ व प्रोफेसर डॉ. मारिओ रेडी, डीन ऑफ स्टडीज, एनआईयू, यूएसए थे। चर्चा में दुनिया भर से 60 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। सत्र का संचालन समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने किया।
46	मानसिक और शारीरिक कल्याण की ओर" विषय पर वेबिनार	21 जून, 2020	ग्लोबल रेनबो फाउण्डेशन मॉरीशस	वेबिनार की शुरुआत श्री दीपंकर श्री ज्ञान के सम्बोधन के साथ हुई, जिन्होंने कहा कि योग व्यक्ति के समग्र विकास को सक्षम बनाता है, उन्होंने कहा, "योग भारत में एक संस्कृति और परंपरा है, एक परंपरा जो 5000 साल से अधिक पुरानी है।"वेबिनार में 55 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
47	युवाओं, बच्चों, महिलाओं, के लिए "माइंडफुलनेस: ए. वे. टुवर्ड्स बैलेंस एंड हारमनी" पर पाठ्यक्रम का शुभारम्भ	1 जुलाई 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति ने धर्माचार्य श्री शांतम सेठ (माइंडफुलनेस टीचर, अहिंसा ट्रस्ट) के साथ "माइंडफुलनेस: ए. वे. टुवर्ड्स ओर बैलेंस एंड हार्मनी" पर एक चर्चा का आयोजन किया। सिस्टर रमा (वरिष्ठ राजयोगी संकाय, ब्रह्म कुमारियाँ), श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक समिति डॉ. वेदाभ्यास कुंडू, कार्यक्रम अधिकारी, समिति और सुश्री कनक कौशिक, पाठ्यक्रम प्रभारी, कार्यक्रम में उपस्थित थे। वेबिनार में "माइंडफुलनेस: ए. वे. टुवर्ड्स बैलेंस एंड हार्मनी" पर पाठ्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। यह पाठ्यक्रम युवाओं, बच्चों, महिलाओं, जेल के कैदियों के लिए तैयार किया गया है। कार्यक्रम में 89 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
48	प्रभावी स्वयंसेवा के लिए कौशल विकास	7–8 जुलाई, 2020	भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय सोनीपत, हरियाणा	समिति ने भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय सोनीपत, हरियाणा सरकार के छात्र कल्याण विभाग के सहयोग से 7–8 जुलाई, 2020 को प्रभावी स्वयंसेवा के लिए कौशल विकास पर एक ई–कार्यशाला का आयोजन किया। इस अवसर पर कुलपति, प्रो. सुषमा यादव कार्यक्रम की संरक्षक थीं। विशिष्ट वक्ताओं में श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक समिति डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी समिति श्री गुलशन गुप्ता, पूर्वोत्तर समन्वयक शामिल थे ।

49	"प्रतिशोध से लेकर पुनर्स्थापनात्मक व्यवहार तक – अहिंसक संचार के उपयोग से संघर्षों का प्रबन्धन" विषय पर वेबिनार	11 जुलाई, 2020	राष्ट्र शक्ति विद्यालय हस्तसाल नई दिल्ली	राष्ट्र शक्ति विद्यालय हस्तसाल नई दिल्ली के 250 प्रतिभागियों ने "प्रतिशोध से पुनर्स्थापन प्रथाओं तक–अहिंसक संचार के उपयोग से कक्षा संघर्षों का प्रबन्धन" विषय पर एक वेबिनार में भाग लिया, जिसमें तत्वों, संघर्ष समाधान की रणनीतियों और कक्षा में एकता रखने जैसे विषयों पर डॉ. वेदाम्यास कुन्डू, कार्यक्रम अधिकारी द्वारा चर्चा की गई।
50	11वां प्रभाष जोशी स्मृति व्याख्यान	12 जुलाई, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति व प्रभाष परम्परा न्यास	पद्मश्री डॉ. अभय बंग ने 12 जुलाई, 2020 को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और प्रभाष परम्परा न्यास द्वारा जनसत्ता के संस्थापक सम्पादक प्रभाष जोशी के जन्मदिन पर आयोजित प्रभाष प्रसंग में 11वां प्रभाष जोशी स्मृति व्याख्यान दिया। विषय था– "गांधी आज होते तो क्या करते"।
51	फिजियोथेरेपी के माध्यम से स्ट्रोक के मरीजों में न्यूरो पुनर्वास और कल्याण	15 जुलाई, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति द्वारा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में न्यूरोलॉजी विभाग के फिजियोथेरेपिस्ट डॉ राहुल शर्मा के साथ 15 जुलाई, 2020 को "स्ट्रोक मरीजों में फिजियोथेरेपी के माध्यम से न्यूरो पुनर्वास और कल्याण" पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया था। प्राकृतिक चिकित्सक डॉ अमन कांडा, और बनारसीदास चांदीवाला इंस्टीट्यूट ऑफ फिजियोथेरेपी के फिजियोथेरेपी के छात्रों सहित 67 प्रतिभागियों ने वेबिनार में भाग लिया।
52	"माइंडफुलनेसः ए वे टुवर्ड्स बैलेंस एंड हारमनी"	16 जुलाई, 2020	केएमएस कॉन्वेंट स्कूल, नई दिल्ली	केएमएस कॉन्वेंट स्कूल, नई दिल्ली के सहयोग से "माइंडफुलनेसः ए वे टुवर्ड्स बैलेंस एंड हार्मनी" पर 16 जुलाई, 2020 को वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार में ब्रह्माकुमारीज की सिस्टर विधात्री की भव्य उपस्थिति थी। सुश्री सोनिया सैनी प्रिंसिपल–केएमएस कॉन्वेंट स्कूल, डॉ वेदाम्यास कुंडू कार्यक्रम अधिकारी, समिति, श्री राजदीप पाठक कार्यक्रम कार्यकारी, समिति और सुश्री कनक कौशिक (पाठ्यक्रम प्रभारी–माइंडफुलनेस) ने कार्यक्रम में शिरकत की।
53	कारीगरी और समृद्ध ग्राम्य–जीवन	17 जुलाई, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति द्वारा 17 जुलाई, 2020 को आयोजित "कारीगरी और समृद्धि ग्राम्य–जीवन विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया। हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष और समिति के कार्यकारिणी सदस्य श्री लक्ष्मी दास ने 86 प्रतिभागियों की सभा को सम्बोधित किया।
54	सोशल मीडिया के उपयोग पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम	19 जुलाई, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति द्वारा 19 जुलाई, 2020 को अपने स्टाफ सदस्यों के लिए सोशल मीडिया के उपयोग पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।श्री पंकज शर्मा, तकनीकी सहयोगी जीएसडीएस ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया।
55	तमिल में "अहिंसक संचार" पर वर्चुअल ऑनलाइन पाठ्यक्रम का शुभारम्भ	20 जुलाई, 2020	पीएसजी कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोयंबटूर	श्रीमती निरुपमा कोटरू, संयुक्त सचिव संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने 20 जुलाई को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सहयोग से पीएसजी कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोयंबटूर द्वारा अनुवादित तमिल भाषा में "अहिंसक संचार" पर वर्चुअल ऑन–लाइन पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया।
56	शिक्षकों & व्याख्याताओं के लिए "कक्षाओं में संघर्ष समाधान पर रणनीतियाँ एक अन्वेषण" पर दो दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला	22–23 जुलाई, 2020	शिक्षा विभाग कारगिल, लद्दाख	माननीय सीईसी एलएएचडीसी कारगिल श्री फिरोज अहमद खान ने ऑनलाइन कार्यशाला का उद्घाटन किया और शिक्षकों, और शिक्षा शोधकर्ताओं के लिए "शांतिपूर्ण स्कूलों के लिए संघर्ष समाधान की रणनीतियां" पर एक निशुल्क ऑनलाइन पाठ्यक्रम भी शुरू किया। संसाधन व्यक्ति के रूप में एनएएमयू की प्रो. डॉ. शाजिया मंसूरी के साथ डॉ. वेदाम्यास कुन्डू कार्यक्रम अधिकारी समिति भी उपस्थित थे।
57	वेबिनार पर "प्रतिशोध से लेकर सुधारात्मक व्यवहार तक – अहिंसक संचार के उपयोग से कक्षा के संघर्षों का प्रबन्धन"	27 जुलाई, 2020	जीएसडीएस और गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ एजुकेशन, क्लस्टर यूनिवर्सिटी, श्रीनगर	समिति ने गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ एजुकेशन, इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज इन एजुकेशन (IASE), क्लस्टर यूनिवर्सिटी, श्रीनगर के सहयोग से 27 जुलाई, 2020 को "प्रतिशोध से लेकर पुनर्स्थापनात्मक प्रथाओं तक–अहिंसक संचार के उपयोग से कक्षा संघर्षों का प्रबन्धन" विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया। 205 प्रतिभागियों ने वेबिनार में भाग लिया और अहिंसक संचार तकनीकों का उपयोग करने के विभिन्न पहलुओं और रणनीतियों पर चर्चा की।

58	संकल्प पर्व को चिह्नित करने के लिए रामरोह	6 जुलाई, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	संकल्प पर्व के उपलक्ष्य में आयोजित पौधारोपण समारोह में समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू और शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला ने गांधी दर्शन में बरगद और नीम के पेड़ लगाए। हाउस कीपिंग स्टाफ, स्वयंसेवकों ने भी अपने–अपने घरों में पौधे रोपें। समिति ने सोशल मीडिया में संकल्प पर्व के दौरान गतिविधियों को नियमित रूप से अपडेट किया।
59	छत्तीसगढ़ के रायपुर व महासमुंद में कोविड–19 सुरक्षा किट भेजी	9 जुलाई, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ओर्गेईजेशन	9 जुलाई, 2020 को कोविड–19 सुरक्षा किट जिसमें 300 पीपीई किट, 7500 कॉटन मास्क, 300 फेस शील्ड, 3000 जोड़ी दस्ताने, 250 पीस गॉगल्स, आईआर थर्मामीटर के 30 पीस और ऑक्सीमीटर के 15 पीस छत्तीसगढ़ के रायपुर और महासमुंद भेजे गए थे।
60	मध्य प्रदेश के दमोह में भेजी गई कोविड–19 सुरक्षा किट	17 जुलाई, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ओर्गेईजेशन	17 जुलाई, 2020 को 50 यौशेबल पीपीई किटय 10 डिस्पोजेबल पीपीई किट, 200 फेस शील्ड, 20 एन–95 मास्क, 2000 जोड़ी हैंड ग्लव्स और 3000 कॉटन मास्क दमोह, मध्य प्रदेश भेजे गए।
61	उत्तर प्रदेश के सोनभद्र भेजी गई कोविड–19 सुरक्षा किट	21 जुलाई, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ओर्गेईजेशन	21 जुलाई, 2020 को धोने योग्य पीपीई किट के 10 टुकड़े, डिस्पोजेबल पीपीई किट के 20 टुकड़े, 50 फेस शील्ड, 30 एन–95 मास्क, हाथ के दस्ताने के 1000 जोड़े, सूती मास्क के 1000 टुकड़े, 10 आईआर थर्मामीटर, 15 ऑक्सीमीटर और 50 काले चश्मे थे को उत्तर प्रदेश के सोनभद्र भेजा गया।
62	गांधी दर्शन में कोविड–19 रैपिड एंटीजन टेस्ट	22 और 24 जुलाई, 2020	जीएसडीएस और एसडीएमसी	22 और 24 जुलाई, 2020 को समिति ने दक्षिणी दिल्ली नगर निगम (SDMC) के साथ मिलकर COVID–19 रैपिड एंटीजन परीक्षण किया। इन दो दिनों में जीएसडीएस, खादी और ग्रामोद्योग निगम (केवीआईसी), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) के कर्मचारियों, राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के निर्माण स्थल पर काम करने वालों और गांधी दर्शन के आसपास रहने वाले 345 लोगों के लिए परीक्षण किए गए।
63	मुंबई, महाराष्ट्र भेजी गई कोविड–19 सुरक्षा किट	28 जुलाई, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ओर्गेईजेशन	28 जुलाई, 2020 को कोविड–19 सुरक्षा किट को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ओर्गेईजेशन द्वारा परमाणु ऊर्जा नियामक बोर्ड, गोवंडी पूर्व, मुंबई, महाराष्ट्र के वैज्ञानिक अधिकारी श्री वी. एस. अय्यर को भेजा गया। इस किट में 5 पीपीई किट, 50 फेस शील्ड, हाथ के दस्ताने के 50 जोड़े, 50 सूती मास्क, एक ऑक्सीमीटर, 50 काले चश्मे, पाँच एन–95 मास्क शामिल थे।
64	कोविड–19 सुरक्षा किट भागलपुर, बिहार भेजी गयी	28 जुलाई, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ओर्गेईजेशन	कोविड –19 सुरक्षा किट का एक और सेट जिसमें 276 पीपीई किट, फेस शील्ड के 300 टुकड़े, 100 एन–95 मास्क, 8500 जोड़ी हाथ के दस्ताने, 7800 कॉटन मास्क, आईआर थर्मामीटर के 30 टुकड़े, ऑक्सीमीटर के 100 टुकड़े और 225 काले चश्मे शामिल हैं। इन्हें 28 जुलाई, 2020 को बिहार के भागलपुर में भेजा गया।
65	गांधी स्मृति स्टाफ के सदस्यों के लिए कोविड–19 रैपिड एंटीजन परीक्षण	29 जुलाई, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और एसडीएमसी	29 जुलाई 2020 को समिति ने दक्षिण दिल्ली नगर निगम (SDMC) के साथ मिलकर गांधी स्मृति स्टाफ के सदस्यों के लिए कोविड–19 रैपिड एंटीजन परीक्षण किया। परीक्षण के दौरान कुल 42 लोगों का परिणाम नकारात्मक था।
66	"एक अहिंसक संचार पारिस्थितिकी तंत्र की खोज" पर ई–कार्यशाला	2 जुलाई, 2020	त्रिंकोमाली कैंपस पूर्वी विश्वविद्यालय, श्रीलंका	दिनांक 2 जुलाई, 2020 को "एक अहिंसक संचार पारिस्थितिकी तंत्र की खोज" पर ई–कार्यशाला। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान और डॉ. कार्यक्रम अधिकारी डॉ वेदाभ्यास कुण्डू प्रमुख वक्ता थे। कार्यशाला में 177 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
67	हमारे दैनिक जीवन में अहिंसा का अभ्यास" विषय पर ई–सम्मेलन	8 जुलाई, 2020	पोर्ट ऑफ स्पेन त्रिनिदाद और टोबैगो में भारतीय उच्चायोग और महात्मा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ कल्चरल कॉपरेशन बेटी और शिक्षा फाउण्डेशन के सहयोग से	"हमारे दैनिक जीवन में अहिंसा का अभ्यास" विषय पर ई–सम्मेलन का आयोजन 8 जुलाई, 2020 को किया गया। मुख्य वक्ताओं में शामिल थे श्री अरुण कुमार साहू, उच्चायुक्त पोर्ट ऑफ स्पेन, त्रिनिदाद और टोबैगो, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, श्रीमती रेणु शर्मा, डी एंड एस फाउण्डेशन। सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ. पंडिता इंद्राणी रामप्रसाद ने की। ई–सम्मेलन में भारत, सूरीनाम, गुयाना और त्रिनिदाद के 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

68	कोविड–19 के दौरान सामुदायिक एकता के लिए सक्रिय शांति निर्माण पर नेताओं का संवाद	21 जुलाई, 2020	शांति आश्रम, कोयंबटूर	यूरोप, एशिया और अफ्रीका के शिक्षाविदों, शान्ति कार्यकर्ताओं, शोधकर्ताओं, युवा स्वयंसेवकों सहित 90 प्रतिभागियों ने 21 जुलाई, 2020 को वेबिनार में भाग लिया, जिसकी शुरुआत महात्मा गांधी के पसंदीदा भजन वैष्णव जन तो के गायन से हुई, जिसके बाद एक सर्व धर्म प्रार्थना हुई।
69	"मैं अपने दैनिक जीवन में अहिंसा को कैसे विकसित करूं?" विषय पर अंतरराष्ट्रीय ई–संवाद	25 जुलाई, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	25 जुलाई, 2020 को आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय ई–संवाद में कई देशों के 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ विद्या जैन, पूर्व एसजी एपीआरए और संयोजक, अहिंसा आयोग, आईपीआरए ने पूरी चर्चा का मार्गदर्शन किया। डॉ. बर्नेडेट मुथिएन शांति शोधकर्ता, कवि और दक्षिण अफ्रीका में सूत्रधार ने सत्र की अध्यक्षता की।
70	जीएसडीएस स्टाफ सदस्यों के लिए आरटी–पीसीआर, एंटीजन, एंटीबॉडी परीक्षण	6 अगस्त, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और एसडीएमसी	कोविड–19 के आलोक में, स्टाफ सदस्यों के स्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने दक्षिण दिल्ली नगर निगम के डॉक्टरों की टीम के साथ मिलकर स्टाफ सदस्यों का **RT–PCR**, एंटीजन, एंटीबॉडी **TrueNAT** परीक्षण किया।
71	भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ की पूर्व संध्या पर "देशभक्ति" पर कविता पाठ और गायन	8 अगस्त, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	असम में देश के सबसे पूर्वी कोने से लेकर दक्षिण में कर्नाटक तक बंगाल और ओडिशा, उत्तर प्रदेश, पंजाब के पश्चिमी बेल्ट तक 15 राज्यों के लगभग 129 बच्चों के उत्साह का कोई ठिकाना नहीं था, क्योंकि वे 8 अगस्त, 2020 को "देशभक्ति" के विषय पर कविता पाठ और गायन हेतु एक राष्ट्रीय वेबिनार में वस्तुतः एकत्र हुए थे। यह कार्यक्रम गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा आयोजित किया गया था।
72	"संचार के माध्यम से खुशी का पोषण" पर ई–संवाद	11 अगस्त, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति ने 11 अगस्त, 2020 को उन प्रतिभागियों के लिए "संचार के माध्यम से खुशी का पोषण" पर एक ई–संवाद का आयोजन किया, जिन्होंने जीएसडीएस द्वारा संचालित "अहिंसक संचार" पर निशुल्क ऑनलाइन प्रमाणपत्र कार्यक्रम में भाग लिया था। संवाद उन प्रतिभागियों के साथ आयोजित किया गया था जिन्होंने न केवल पाठ्यक्रम शुरू किया, बल्कि पाठ्यक्रम को बढ़ावा देने की दिशा में व्यक्तिगत स्तर पर पहल की।
73	गांधी दर्शन में फहराया तिरंगा	15 अगस्त, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति निदेशक, श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 74वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त, 2020 को गांधी दर्शन में तिरंगा फहराया। कार्यक्रम में गाँधी दर्शन परिसर में रहने वाले समिति कर्मचारियों और उनके परिजनों ने भाग लिया।
74	"मूल्य निर्माण में स्वदेशी लोक परंपराओं की भूमिका" पर ई–सम्मेलन	18 अगस्त, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और राजा नरेंद्र लाल खान महिला कॉलेज, पश्चिम बंगाल	इस ई–सम्मेलन में 138 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसे मुख्य अतिथि ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री गिरिधर गमांग ने संबोधित किया। कार्यक्रम ने आदिवासियों की समृद्ध लोक परम्पराओं पर ध्यान केंद्रित किया और इस समृद्ध विरासत को संरक्षित करने के लिए नई पीढ़ी को उन मूल्यों को जानने की आवश्यकता पर बल दिया।
75	**COVID**–19 सुरक्षा किट को भागलपुर, बिहार भेजा गया	22 अगस्त, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ऑर्गेनाईजेशन	आवश्यकता के अनुसार देश के विभिन्न हिस्सों में **COVID**–19 सुरक्षा किट प्रदान करने की अपनी पहल के तहत, समिति ने 22 अगस्त, 2020 को 10,000 कॉटन मास्क और 200 ऑक्सीमीटर के साथ कोविड सुरक्षा किट भागलपुर, बिहार को भेजी। इसके अतिरिक्त मुंगेर, बाका, भागलपुर और जमुई में वितरण के लिए किट प्रस्तावित हैं।
76	'हमारी शिक्षा नीति में महात्मा गांधी के प्रभाव' पर ई–वेबिनार	19 अगस्त, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	'हमारी शिक्षा नीति में महात्मा गांधी के प्रभाव' पर एक ई–वेबिनार का आयोजन किया गया। इसमें श्री विजय प्रकाश, आईएएस (सेवानिवृत), और प्रो. पी. के. मिश्रा, आईआईटी बीएचयू ने "हाशिए के समुदायों के छात्रों के लिए नवाचार के माध्यम से उद्यमिता" विषय पर लगभग 54 प्रतिभागियों की सभा को सम्बोधित किया।
77	अहिंसक संचार के माध्यम से खुशी का पोषण" विषय पर ई–सम्मेलन	28 अगस्त, 2020	एलीएजर जोल्डन मेमोरियल (ईजेएम) कॉलेज, लेह	इस सम्मेलन में प्रो. देस्कयोंग नामग्याल, प्राचार्य ईजेएम कॉलेज, श्री गुलशन गुप्ता, पूर्वोत्तर समन्वयक, समिति मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। ईजेएम कॉलेज की सहायक प्रो. सुश्री हज़ीरा बानो ने सत्र का संचालन किया। इस सत्र में 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर दैनिक जीवन के विभिन्न उदाहरणों के माध्यम अहिंसक संचार के संचालन और संचार को कैसे फ्रेम किया जाए, विषय पर श्री गुलशन गुप्ता ने अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने शब्दों के महत्व पर बात की, जिनमें नष्ट करने और ठीक करने की शक्ति है।
78	जमुई बिहार को भेजी गई कोविड–19 सुरक्षा किट	23 अगस्त, 2020	जीएसडीएस और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन	समिति और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ओर्गेनाइजेशन, भरतपुर राजस्थान के सहयोग से देश के विभिन्न हिस्सों में कोविड–19 सुरक्षा किट उपलब्ध कराने की अपनी पहल के तहत बिहार को किट वितरण के लिए भेजा था। 23 अगस्त 2020 को जमुई बिहार में एक छोटे से समारोह में इन सुरक्षा किटों का वितरण किया गया।

79	मुंगेर बिहार में भेजी गई कोविड–19 सुरक्षा किट	30 अगस्त, 2020	समिति और ल्यूपिन हयूमन वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन	समिति और ल्यूपिन ल्यूपिन हयूमन वेलफेयर ओर्गेनिजेश्ना? ओर्गेनाइजेशन द्वारा 30 अगस्त, 2020 को कोविड–19 सुरक्षा किट मुंगेर के हवेली खड़गपुर जिले मे वितरित की गई। समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत सिंह ने इस पहल का समन्वय किया। तेलियादिया में ग्रामीणों और स्वास्थ्य कर्मियों के बीच पीपीई किट, मास्क, ऑक्सीमीटर, हाथ के दस्ताने, हैंड सैनिटाइजर, फेस शील्ड वितरित किए गए।
80	छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों में भी कोविड–19 सुरक्षा किट का वितरण किया गया	अगस्त 2020	जीएसडीएस और ल्यूपिन हयूमन वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन	छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों जैसे दुर्ग, राजनांद गांव, महासमुंद और रायपुर में भी समिति और ल्यूपिन हयूमन वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन ने कोविड–19 सुरक्षा किट वितरित की। पॉटरी समुदायम्परिसर के लगभग 700 बच्चों को कोविड–19 सुरक्षा किट मिलीं।
81	स्वयं को समझने में अहिंसक संचार का महत्व"	01 अगस्त, 2020	समिति के सहयोग से एटेनियो डी दावो विश्वविद्यालय, फिलीपींस	इस इंटरैक्टिव सत्र में संबंधित विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और मानव विज्ञान जैसे विभिन्न विषयों के लगभग 97 छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सत्र का समापन डॉ. कुप्पू और प्रतिभागियों के बीच साझा किए गए प्रश्न–उत्तर दौर के साथ हुआ। जैसे : इस महामारी में अहिंसक संचार कैसे लागू किया जा सकता है?
82	शांति शिक्षा पर चौथा अंतरराष्ट्रीय ई–संवाद – एक न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण भविष्य का निर्माण	13 अगस्त, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	कार्यक्रम का मार्गदर्शन प्रो. विद्या जैन (संयोजक, अहिंसा आयोग, इपरा) द्वारा किया गया। डॉ. जेनेट गर्सन (शिक्षा निदेशक, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑन पीस एजुकेशन, यूएसए) की अध्यक्षता में प्रो. टोनी जेनकिंस (प्रबंध निदेशक, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑन पीस एजुकेशन, यूएसए), प्रोफेसर हर्बर्ट बी रोसाना (एसोसिएट डीन, ग्रेजुएट स्कूल बिकोल) विश्वविद्यालय, फिलीपींस), और डॉ. स्टीव शर्रा (शिक्षा नीति विश्लेषक और शांति शिक्षा, मलावी) ने सत्रों को सम्बोधित किया। वेबिनार में 62 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।
83	अहिंसक संचार के माध्यम से ऑनलाइन नफरत की कहानियों का मुकाबला करने पर एक अंतरराष्ट्रीय ई–सम्मेलन	26 अगस्त 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और यूनेस्को–मीडिया और भारत की सूचना साक्षरता विश्वविद्यालय नेटवर्क	ई–कॉन्क्लेव की अध्यक्षता प्रो. जगतार सिंह समन्वयक, मीडिया और सूचना विश्वविद्यालय नेटवर्क ऑफ इंडिया (मिलुनी), ने की। कॉन्क्लेव में अन्य वक्ताओं में शामिल थे श्री एल्टन ग्रिजल (कार्यक्रम विशेषज्ञ यूनेस्को, पेरिस), श्री ब्रैम वान हावर (कार्यक्रम प्रबंधन विशेषज्ञ, यूएनएओसी, न्यूयॉर्क), सुश्री सारा गाबाई (संचार विशेषज्ञ, यूरोपीय संघ स्विच–एशिया), सुश्री महा बश्री (संचार के सहयोगी प्रो., संयुक्त अरब अमीरात) और श्री मैथ्यू जॉनसन (निदेशक शिक्षा, मीडिया स्मार्ट, कनाडा) उस दिन के माननीय वक्ता थे। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 90 लोग सम्मेलन में शामिल हुए।
84	"सत्याग्रह के माध्यम से स्वराज के दर्शन को आकार देने में यूरोप और अफ्रीका के माध्यम से महात्मा गांधी की यात्रा" पर आभासी अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन	12 सितम्बर, 2020		इस अवसर पर भारत सरकार के विदेश राज्य मंत्री श्री वी मुरलीधरन मुख्य अतिथि थे। वेबिनार में 65 प्रतिभागियों ने भाग लिया। जिसमें श्रीमती इला गांधी, अध्यक्ष गांधी विकास ट्रस्ट (डरबन), दक्षिण अफ्रीका वीरेंद्र गुप्ता, अध्यक्ष (एआरएसपी) अनूप मुद्गल, अध्यक्ष, डीआरआरसीय श्री श्याम परांडे, महासचिव एआरएसपी शामिल थे। उद्घाटन सत्र में समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, और अनूप मुद्गल उपस्थित थे।
85	"वैश्विक महामारी संकट के समय में मानव एकजुटता की अनिवार्यता" पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार	14–15 सितंबर, 2020	मालवीय शांति अनुसंधान केंद्र (एमसीपीआर), शांति और सांस्कृतिक समझ के लिए यूनेस्को चेयर, बीएचयू और गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति	पहले दिन प्रो. प्रियांकर उपाध्याय, यूनेस्को चेयर फॉर पीस, मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र, बीएचयू, ने सत्र की अध्यक्षता की। सम्मेलन की शुरुआत श्रीमती गीता शुक्ला, शोध अधिकारी, द्वारा दिए गए स्वागत भाषण से हुई। वेबिनार में 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया। दूसरे दिन "यंग रिसर्चर्स फोरम" का आयोजन किया गया, जहां दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आये वक्ताओं ने अपने विचार साझा किए।
86	हिंदी पखवाड़ा	14–28 सितम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति ने दोनों परिसरों– गांधी स्मृति और गांधी दर्शन में क्रमशः 14–28 सितंबर, 2020 तक 'हिंदी पखवाड़ा' का आयोजन किया। कोविड–19 के कारण, "गांधी और हिंदी" पर निबंध लेखन और "राष्ट्रीय एकता का प्रतीक हिंदी" विषय पर कविता लेखन जैसी ऑनलाइन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें समिति के कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
87	स्वच्छता पखवाड़ा	16–30 सितंबर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति ने 16–30 सितम्बर, 2020 तक 'स्वच्छता पखवाड़ा' का आयोजन किया। इस अवधि के दौरान, समिति द्वारा अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से स्वच्छता पर जागरूकता अभियान चलाया गया। साथ ही सभी आंतरिक कर्मचारियों ने लॉन में गांधी दर्शन परिसर की व्यापक सफाई की। इस दौरान सभी कर्मचारियों ने अपने–अपने कार्यालयों की सफाई की।

88	द महात्मा इन मी': महात्मा गांधी के गूढ़ जीवन की समझ पर वीडियो आमंत्रित करना	सितंबर 13–20, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और दूरदर्शन केंद्र	2 अक्तूबर, 2020 को महात्मा गांधी की 151वीं जयंती के उपलक्ष्य में हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में 'मुझ में है महात्मा' और 'द महात्मा इन मी' शीर्षक पर निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर प्रविष्टियां आमंत्रित कीं– 1. मैं अपने दैनिक जीवन में अहिंसा का अभ्यास कैसे करूं? 2. मैं एक शांति की संस्कृति की दिशा में कैसे योगदान करूं? 3. सबसे महत्वपूर्ण गांधीवादी मूल्य जिसका आज दुनिया को पालन करना चाहिए। 4. महात्मा गांधी के जीवन से मैंने सबसे महत्वपूर्ण बात क्या सीखी? लगभग 200 प्रविष्टियां प्राप्त हुईं, जिसके लिए दूरदर्शन केन्द्र ने अपने राष्ट्रीय नेटवर्क में इसका प्रोमो भी बनाया। यह कार्यक्रम 2 अक्तूबर, 2020 को महात्मा गांधी की 151वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में शुरू किया गया था।
89	"आज के युग में गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता" विषय पर संगोष्ठी	26 सितम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी	वर्चुअल सेमिनार की अध्यक्षता दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. रामशरण गौर ने की। अन्य वक्ताओं में कार्यक्रम समिति के अध्यक्ष श्री सुभाष चंद्र कांखेरिया और समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान शामिल थे। मुख्य भाषण देते हुए श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने ऐतिहासिक चंपारण सत्याग्रह पर बात की।
90	2 अक्तूबर गांधी जयन्ती कार्यक्रम के लिए कोविड–19 परीक्षण	28, 29, 30 सितम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	महात्मा गांधी की 151वीं जयंती कार्यक्रम की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, समिति ने 28, 29, 30 सितम्बर को गांधी दर्शन और गांधी स्मृति में सभी समिति स्टाफ सदस्यों, संस्कृति मंत्रालय के अधिकारियों, धर्म गुरुओं और भक्ति संगीत कलाकारों के लिए कोविड–19 परीक्षण किया। टेस्ट क्रमशः गांधी दर्शन और गांधी स्मृति में आयोजित किए गए थे।
91	रेल राज्य मंत्री श्री सुरेश अंगड़ी को श्रद्धांजलि	23 सितम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति ने रेल राज्य मंत्री श्री सुरेश अंगड़ी को श्रद्धांजलि अर्पित की, जिनका 23 सितम्बर, 2020 को कोविड–19 के कारण निधन हो गया। गायक पद्मश्री डॉ. एस. पी. बालासुब्रमण्यम को भी श्रद्धांजलि दी गई, जिनका 25 सितम्बर, 2020 को कोविड–19 के कारण निधन हो गया।
92	समिति के ई–प्रकाशन – अनाशक्ति दर्शन (हिंदी)	जुलाई 2019 से अगस्त 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति का ई–प्रकाशन–अनाशक्ति दर्शन (हिंदी) जुलाई 2019 से अगस्त 2020 तक महात्मा गांधी और गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर पर केन्द्रित था। सितम्बर 2020 के दौरान महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती के हिस्से के रूप में प्रकाशित किया गया था।
93	प्रकाशनः अंतिम जन (वर्ष 3, अंक 1, क्रमांक 11)	सितम्बर 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	मई 2020 से अगस्त 2020 की अवधि के लिए समिति का मासिक प्रकाशन अन्तिम जन (वर्ष 3, अंक 1, क्रमांक 11) भी सितम्बर 2020 के दौरान ई–प्रकाशित किया गया था।
94	प्रकाशनः गांधी अक्रॉस द बाउंड्रीज	सितम्बर 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	गाँधीजी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर राम लाल आनंद कॉलेज के डॉ. देवेन्द्र कुमार द्वारा सम्पादित, "गांधी अक्रॉस द बाउंड्रीज" का प्रकाशन किया गया। दिनांक 23–24 अक्तूबर के दौरान राम लाल आनंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के गांधी स्टडी सर्कल और समिति द्वारा आयोजित "सीमाओं के पार गांधी" विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की गतिविधियों को प्रकाशित किया गया है। इसे समिति और राम लाल आनंद कॉलेज द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित किया गया था।
95	महात्मा गांधी की 151वीं जयंती और अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के उपलक्ष्य में	2 अक्तूबर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महात्मा गांधी की 151वीं जयन्ती और अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के उपलक्ष्य में 2 अक्तूबर, 2020 को गांधी स्मृति में महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। विभिन्न धार्मिक समूहों (धर्म गुरुओं) के नेताओं द्वारा सर्वधर्म प्रार्थना की गयी।
96	सीबीएसई के साथ अहिंसक संचार पर मुफ्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम शुरू किया	2 अक्तूबर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और सीबीएसई	देश भर के छात्रों, शिक्षकों, प्रधानाचार्यों और अभिभावकों तक पहुंचने के लिए एक बड़ी पहल के रूप में, समिति ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) के साथ मिलकर अहिंसक संचार पर अपना मुफ्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम शुरू किया। समिति अप्रैल 2020 से यह पाठ्यक्रम चला रही है।
97	जंतर–मंतर पर चरखे का प्रदर्शन	2 अक्तूबर, 2020	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण	समिति के आठ कार्यकर्ताओं ने 2 अक्तूबर, 2020 को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में जंतर–मंतर पर एक चरखा प्रदर्शन में भाग लिया। जो कि सादगी और आर्थिक स्वतंत्रता के संदेश को उजागर करने के लिए 2 अक्तूबर, 2020 को आयोजित किया गया था। यह संदेश गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान नागरिकों के बीच फैलाया था।

98	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के साथ साप्ताहिक व्याख्यान श्रृंखला	21 और 29 अक्तूबर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और सीबीएसई	समिति ने अहिंसक संचार पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम पर आधारित साप्ताहिक व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया गया। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के साथ एक पहली व्याख्यान श्रृंखला 21 अक्तूबर, 2020 को आयोजित की गई थी। जिसमें अहिंसक संचार का सामान्य परिचय दिया गया था। दूसरा व्याख्यान 29 अक्तूबर, 2020 को आयोजित किया गया था। और यह इस बात पर केन्द्रित था कि हम शांतिपूर्ण स्कूलों के लिए अहिंसक संचार पारिस्थितिकी तंत्र को कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं। दोनों व्याख्यान समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने दिए।
99	स्वस्थ जीवन के लिए माइंडफुलनेस का अभ्यास	22 अक्तूबर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति ने 22 अक्तूबर, 2020 को "स्वस्थ जीवन के लिए माइंडफुलनेस अभ्यास" पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। सुश्री रेणु सागर उत्तर प्रदेश में समिति स्टाफ सदस्यों द्वारा आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम में आदित्य बिड़ला ग्रुप ऑफ स्कूल के बच्चों सहित 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
100	आचार्य विनोबा भावे की 125वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में समारोह के तौर–तरीकों पर चर्चा करने के लिए वर्चुअल बैठक।	27 अक्तूबर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने आचार्य विनोबा भावे के 125वें जन्म समारोह के तौर–तरीकों पर चर्चा करने के लिए 27 अक्तूबर, 2020 को एक आभासी बैठक का आयोजन किया।
101	गांधी स्मृति के 'ऑडियो गाइड ऐप्स' के सम्बन्ध में बैठक	28 अक्तूबर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति द्वारा हॉप ऑन इंडिया के सहयोग से गांधी स्मृति को 'ऑडियो गाइड ऐप्स' उपलब्ध कराने के लिए एक बैठक आयोजित की गई। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने सुश्री शालिनी बंसल और हॉप ऑन इंडिया के आकाश गौतम के साथ बैठक की कार्यवाही का संचालन किया। 28 अक्टूबर, 2020 को आयोजित इस बैठक में गांधी स्मृति संग्रहालय में इस परियोजना को शुरू करने पर चर्चा की गयी। ताकि आगंतुकों को समिति का एक ऐप डाउनलोड करने में मदद मिल सके। जो गांधी स्मृति में संग्रहालय की यात्रा के दौरान उन्हें एक निर्देशित यात्रा दे सके।
102	"महात्मा के पदचिन्हों पर, रचनात्मक संवादों के माध्यम से समुदायों तक पहुंचना" विषय पर ई–कार्यशाला	28 अक्तूबर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और सामाजिक कार्य विभाग राजागिरी कॉलेज ऑफ सोशल साइंस के सहयोग से	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने सामाजिक कार्य विभाग और आईक्यूएसी, राजगिरी कॉलेज ऑफ सोशल साइंस के सहयोग से 28 अक्तूबर 2020 को "महात्मा के नवरोकवम पर, रचनात्मक संवादों के माध्यम से समुदायों तक पहुंचना" पर एक ई–कार्यशाला का आयोजन किया।
103	सतर्कता जागरूकता सप्ताह	29 अक्तूबर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	सतर्कता जागरूकता सप्ताह (27 अक्तूबर से 2 नवम्बर) के तहत समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 29 अक्तूबर, 2020 को समिति स्टाफ सदस्यों को सतर्कता जागरूकता प्रतिज्ञा दिलाई। इस वर्ष की थीम "सतर्क भारत, समृद्ध भारत" है।
104	'राष्ट्रीय एकता दिवस' पर शपथ	31 अक्तूबर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर गांधी दर्शन स्थित कल्पना चावला जागृति पार्क में 31 अक्तूबर, 2020 को संकल्प समारोह का आयोजन किया गया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान द्वारा स्टाफ सदस्यों को शपथ दिलाई गई। उल्लेखनीय है कि 31 अक्तूबर को देश भर में सरदार बल्लभभाई पटेल का जन्मदिवस राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन देश की एकता और अखंडता व सुरक्षा को बनाए रखने के लिए भारत के नागरिकों को प्रतिबद्धता की शपथ दिलाई जाती है।
105	"अहिंसक संचार" पर ऑनलाइन किर्गिस्तान विश्वविद्यालय के साथ अभिविन्यास कार्यक्रम	20 अक्तूबर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने 20 अक्तूबर, 2020 को "अहिंसक संचार" पर किर्गिस्तान के ऑनलाइन विश्वविद्यालय के साथ एक ऑनलाइन अभिविन्यास कार्यक्रम की मेजबानी की। इस अभिविन्यास कार्यक्रम में मुख्य वक्ता समिति के कार्यक्रम अधिकारी, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू थे। ऑनलाइन विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डॉ. एलिरा तुरबुदेवा ने स्वागत भाषण दिया। किर्गिस्तान और भारत के 63 प्रतिभागी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

106	डिसइन्फोमेडिक का विरोधः शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के लिए मीडिया और सूचना साक्षरता का उपयोग" पर एक ई–सम्मेलन	30 अक्टूबर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति द्वारा इंडियन एसोसिएशन ऑफ टीचर्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस (IATLIS), मालवीय सेंटर फॉर पीस रिसर्च, बनारस के सहयोग से 30 अक्टूबर, 2020 को "डिसइन्फोमेडिक का विरोधः शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के लिए मीडिया और सूचना साक्षरता का उपयोग" पर ई–सम्मेलन का आयोजन किया गया। मुख्य भाषण देते हुए प्रो. प्रियांकर उपाध्याय ने कहा कि सूचना और मीडिया साक्षरता नागरिकों के जीवन में एक महत्वपूर्ण घटक बन गया है।
107	डिजिटल प्रदर्शनी का उद्घाटन और सर्कुलर डोम में 360° वीडियो–इमर्सिव अनुभव	6 नवम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	महात्मा गांधी पर उनके जीवन, उनके संघर्ष, उनके दृष्टिकोण और मोहनदास से 'महात्मा' तक की यात्रा को प्रदर्शित करने वाली एक इंटरैक्टिव डिजिटल प्रदर्शनी, जिसमें 'मल्टीयूजर एंगेजमेंट के लिए स्मार्ट इंटरफेस' और एक डोम में 360° वीडियो–इमर्सिव अनुभव था। माननीय संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं उपाध्यक्ष गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति श्री प्रहलाद सिंह पटेल के साथ माननीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एवं स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्री डॉ. हर्षवर्धन द्वारा 6 नवम्बर, 2020 को गांधी दर्शन राजघाट में उद्घाटन किया गया।
108	अहिंसक संचार व्याख्यान श्रृंखला	4, 11 और 18 नवम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और की? सीबीएसई	इस व्याख्यान का फोकस इस बात पर था कि अहिंसक संचार के माध्यम से संघर्षों को कैसे सुलझाया जाए। 11 नवम्बर, 2020: सीबीएसई के साथ चौथी व्याख्यान श्रृंखला क्रोध प्रबंधन पर केन्द्रित थी। समिति कार्यक्रमों के उत्तर पूर्व समन्वयक श्री गुलशन गुप्ता द्वारा आयोजित कार्यशाला में क्रोध के पीछे के मनोविज्ञान को समझने और क्रोध को शांत करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया। 18 नवम्बर, 2020: व्याख्यान का फोकस अहिंसक संचार के माध्यम से स्वयं को समझने पर था। आत्म–जागरूक होने की तकनीकों पर ध्यान केन्द्रित किया गया था और कैसे हमारी आत्म–चर्चा और आंतरिक संवाद प्रकृति में अहिंसक होना चाहिए।
109	'मुदिता' 'रचनात्मक कार्य के लिए स्वयंसेवा को बढ़ावा' पर एक कार्यशाला	7 नवम्बर, 2020	समिति और शहीद राजगुरु कॉलेज ऑफ एप्लाइड साइंसेज फॉर विमेन, दिल्ली विश्वविद्यालय	समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुप्पू और पूर्वोत्तर समन्वयक श्री गुलशन गुप्ता उत्तर पूर्व कार्यक्रम ने इंटरैक्टिव कार्यशाला का संचालन किया। चर्चा में लगभग 89 प्रतिभागियों ने भाग लिया। वक्ताओं ने विभिन्न स्थानों पर स्वयंसेवा करने के अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को साझा किया और बताया कि कैसे उन्होंने विभिन्न चुनौतियों जैसे कि विवाद, अपेक्षित परिणाम प्राप्त न करना आदि का सामना किया।
110	भारतीय संविधान की प्रस्तावना का वाचन	26 नवम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	71वें संविधान दिवस के अवसर पर, समिति ने अपने दोनों परिसरों गांधी दर्शन, राजघाट और गांधी स्मृति में 26 नवंबर, 2020 को एक कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें हिंदी और अंग्रेजी में भारतीय संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया गया। समारोह के दौरान दोनों परिसरों के सभी स्टाफ सदस्य शामिल हुए।
111	भारत के संविधान की 71वीं वर्षगांठ पर वेबिनार	26 नवम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	लगभग 79 छात्रों, स्वयंसेवकों, एनयूएसआरएल के संकाय सदस्यों, वकीलों और अन्य लोगों की एक सभा को संबोधित करते हुए, मुख्य वक्ता न्यायमूर्ति विक्रमादित्य प्रसाद ने कहा कि महात्मा गांधी के विचारों और दृष्टि के प्रभाव को भारत के संविधान में परिलक्षित देखा जा सकता है। समाजवाद से लेकर सर्वोदय तक, महिलाओं के कल्याण और अन्य मुद्दों पर मानव जीवन के सभी पहलुओं पर गांधी जी के विचार ही संविधान में निहित हैं। वेबिनार के दौरान पूर्वाह्न 11.00 बजे भारतीय संविधान की प्रस्तावना को हिंदी और अंग्रेजी में पढ़ा गया। संस्थान के दोनों परिसरों में स्टाफ सदस्यों ने प्रस्तावना पढ़ी।
112	अहिंसक संचार पर ऑनलाइन सर्टिफिकेट कोर्स का शुभारंभ	19 नवम्बर, 2020	लिबरल आर्ट्स विश्वविद्यालय, बांग्लादेश (ULAB)	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा आयोजित अहिंसक संचार पर ऑन–लाइन सर्टिफिकेट कोर्स के शुभारंभ के दौरान आयोजित वेबिनार में लिबरल आर्ट्स विश्वविद्यालय, बांग्लादेश (ULAB) के 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया। चर्चा की शुरुआत करते हुए, प्रो. जूड विलियम आर. जेनिली, प्रोफेसर और MSJ–ULAB के प्रमुख ने अपने संगठन और सहनशीलता के मूल्य के बारे में बताया।
113	अहिंसक संचार की खोज – एक कार्यशाला	12 नवम्बर, 2020	यूनिवर्सिडैड कॉम्प्लुटेंस डी मैड्रिड, स्पेन	डीमैड्रिड, स्पेन के छात्रों के लिए "अहिंसक संचार" पर एक सत्र 12 नवम्बर, 2020 को समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुप्पू के संचालन में आयोजित किया।

114	"क्यों अहिंसक संचार, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए मायने रखता है?" विषय पर वेबिनार	12 नवम्बर, 2020	कैथोलिक विश्वविद्यालय मलावी	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने मलावी के कैथोलिक विश्वविद्यालय के सहयोग से "क्यों अहिंसक संचार शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए मायने रखता है?" विषय पर 12 नवम्बर, 2020 को वेबिनार का आयोजन किया। कैथोलिक विश्वविद्यालय के राजनीतिक नेतृत्व विभाग के प्रमुख श्रीमती चिमवेमवे डेमेट्रिया कंडोडो ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया और अपने विचार प्रस्तुत किए। मुख्य भाषण समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुन्डू ने दिया।
115	'अहिंसक संचार के माध्यम से संघर्ष क्षमता' पर ई–कार्यशाला	24 नवम्बर, 2020	ऑनलाइन विश्वविद्यालय किर्गिस्तान	किर्गिस्तान के ऑनलाइन विश्वविद्यालय के सहयोग से 24 नवम्बर, 2020 को समिति द्वारा आयोजित ई–कार्यशाला में, सत्र का संचालन करने वाले समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने कहा कि हम अहिंसक संचार के माध्यम से अपनी संघर्ष क्षमता को बढ़ा सकते हैं। उन्होंने संघर्ष क्षमता के लिए आवश्यक व्यवहार, भावनात्मक और व्यवहारिक कौशल पर चर्चा की और इन कौशलों को विकसित करने में अहिंसक संचार के तत्वों पर बात की।
116	माननीय संस्कृति मंत्री के निजी सचिव श्री राहुल जैन ने गांधी दर्शन का दौरा किया	7 नवम्बर, 2020	गांधी दर्शन	माननीय संस्कृति मंत्री के निजी सचिव श्री राहुल जैन ने 7 नवम्बर, 2020 को सपरिवार गांधी दर्शन का दौरा किया। निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने अथितियों का स्वागत किया। उन्हें 360° वीडियो–इमर्सिव अनुभव के साथ डॉम थियेटर देखा और फोटो प्रदर्शनी "मेरा जीवन ही मेरा संदेश है" का अवलोकन किया।
117	भारत निर्वाचन आयोग के प्रतिनिधियों ने गांधी दर्शन का दौरा किया	12 नवम्बर, 2020	गांधी दर्शन	भारत के चुनाव आयोग के प्रतिनिधि जिनमें उप चुनाव आयुक्त, उत्तर पश्चिम दिल्ली और मध्य दिल्ली के उप चुनाव आयुक्त शामिल थे ने 12 नवम्बर, 2020 को गांध ी दर्शन का दौरा किया। उन्होंने 360° वीडियो–इमर्सिव अनुभव वाले डॉम थियेटर का दौरा किया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने गांधी दर्शन में प्रतिनिधियों की मेजबानी की। डीएसटी के श्री सच्चिदानंद स्वामी ने उन्हें 6 नवम्बर, 2020 को केन्द्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ हर्षवर्धन और संस्कृति मंत्री और उपाध्यक्ष समिति श्री प्रहलाद सिंह पटेल द्वारा उद्घाटन किए गए डिजिटल इंस्टॉलेशन के बारे में बताया।
118	केन्द्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री मनसुख एल मंडाविया ने गांधी स्मृति का दौरा किया	29 नवम्बर, 2020	गांधी स्मृति	केन्द्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री मनसुख एल मंडाविया ने 29 नवम्बर, 2020 को गांधी स्मृति का दौरा किया और शहीद स्तम्भ पर श्रद्धांजलि अर्पित की।
119	विजय घाट की झुग्गियों में कोविड–19 स्वास्थ्य शिविर का आयोजन	5, 15, 19 दिसम्बर, 2020	विजय घाट, नई दिल्ली	विजय घाट की झुग्गी बस्ती में 5 दिसम्बर, 2020 को स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। यूपीएचसी दरियागंज नई दिल्ली के डॉक्टरों की टीम द्वारा 100 रोगियों के रैपिड एंटीजन और आरटीपीसीआर परीक्षण किए गए।
120	छपरा, बिहार में कोविड सुरक्षा किट का वितरण	5 दिसम्बर, 2020	जीएसडीएस और ल्यूपिन हयूमन ओर्गेनाइजेशन	समिति ने ल्यूपिन हयूमन ओर्गेनाइजेशन राजस्थान और महिला विकास संस्थान बसंतपुर, छपरा, बिहार के सहयोग से शहर के अस्पताल में डॉक्टरों को कोविड सुरक्षा किट वितरित किए। सामाजिक कार्यकर्ता श्री विश्वास गौतम ने समिति की ओर से वितरण कार्यक्रम का संचालन किया। सिविल सर्जन डॉ. मदेश्वर झा ने 4 दिसम्बर, 2020 को पीपीई किट, फेस मास्क, दस्ताने और ऑक्सीमीटर प्राप्त किया।
121	अहिंसा की अवधारणाओं और आयामों पर व्याख्यान	7 दिसम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र, बीएचयू	समिति द्वारा 9 दिसम्बर, 2020 को अहिंसक संचार पर व्याख्यान दिया गया। कार्यक्रम अधिकारी, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डु ने अहिंसक संचार की आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित किया। अहिंसक संचार क्या है और इसे हमारे दैनिक जीवन में कैसे उपयोग किया जा सकता है पर विस्तृत चर्चा की गयी। उन्होंने अहिंसक संचार पर एक सैद्धांतिक अभिविन्यास भी दिया।
122	गांधी दर्शन में किए गए रैपिड एंटीजन और आरटीपीसीआर परीक्षण	8 दिसम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	यूपीएचसी दरियागंज के प्रभारी डॉ. सुनील मिंज के नेतृत्व में डॉक्टरों की टीम ने धर्म गुरुओं और समितियों के अधिकारियों के लिए रैपिड एंटीजन और आरटीपीसीआर परीक्षण किया। परीक्षण किए गए 20 व्यक्तियों के परिणाम नकारात्मक थे।
123	नए संसद भवन के शिलान्यास समारोह में धर्मगुरुओं ने की 'सर्व धर्म प्रार्थना'	10 दिसम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	विभिन्न धर्मगुरुओं ने 10 दिसम्बर, 2020 को नए संसद भवन के शिलान्यास समारोह में 'सर्व धर्म प्रार्थना' की। यह प्रार्थना गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सौजन्य से प्रदान की गयी थी।

124	संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार दिवस पर कार्यशाला का आयोजन	10 दिसम्बर, 2020	जीएसडीएस और कुमारगुरु कॉलेज ऑफ लिबरल आर्ट्स एंड साइंस, कोयंबटूर	संयुक्त राष्ट्र विश्व मानवाधिकार दिवस 2020 के अवसर पर, स्कूल ऑफ पॉलिटिकल साइंस एंड स्कूल ऑफ विजुअल कम्युनिकेशन, कुमारगुरु कॉलेज ऑफ लिबरल आर्ट्स एंड साइंस, कोयंबटूर ने जीएसडीएस के सहयोग से संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार पर "रिकवर बेटर: स्टैंड अप फॉर ह्यूमन राइट्स"" विषय पर एक आभासी कार्यशाला का आयोजन किया। 10 दिसम्बर, 2020 को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य भाषण जस्टिस केजी बालकृष्णन, भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश और भारत के राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) के पूर्व अध्यक्ष द्वारा दिया गया था।
125	स्वामी विवेकानंद, भारतीय संस्कृति और वैश्विक शांति पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	11–13 दिसम्बर, 2020	सोसाइटी फॉर सोशल एम्पावरमेंट एंड इंडियन काउंसिल ऑफ फिलॉसॉफिकल रिसर्च, नई दिल्ली	सोसाइटी फॉर सोशल एम्पावरमेंट द्वारा 11–13 दिसम्बर, 2020 तक सोसाइटी फॉर सोशल एम्पावरमेंट एंड इंडियन काउंसिल ऑफ फिलॉसॉफिकल रिसर्च, नई दिल्ली द्वारा "स्वामी विवेकानंद, भारतीय संस्कृति और वैश्विक शांति" पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी, हरियाणा ज्ञान भागीदार थे। इस अवसर पर इतिहासकारों, शिक्षाविदों, लेखकों ने विभिन्न विषयों पर विभिन्न सत्रों के दौरान बात की।
126	लद्दाखी कला और शिल्प के संरक्षण और संवर्धन पर ऑनलाइन कार्यशाला	11 दिसम्बर, 2020	गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज कारगिल और जीएसडीएस	इस कार्यक्रम में जातीय लद्दाखी शिल्प जैसे शॉल, कढ़ाई के सामान, सजावटी सामान, पारंपरिक बुना हुआ वस्त्र उत्पादों आदि के प्रशिक्षण और उत्पादन में लगी 30 छात्राओं ने कार्यशाला में भाग लिया और स्वदेशी शिल्प के प्रचार और संरक्षण के लिए अपने शिल्प का प्रदर्शन किया। समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत सिंह इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे।
127	पेंशन अदालत	18 दिसम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 18 दिसम्बर, 2020 को गांधी दर्शन में एक "पेंशन अदालत" का आयोजन किया, जिसमें पेंशनभोगियों की विभिन्न शिकायतों का समाधान किया गया, जिसमें सातवें वेतन आयोग और अन्य से संबंधित मुद्दे शामिल थे। कार्यक्रम में समिति के पेंशनभोगी शामिल हुए।
128	गांधी की अहिंसा कितनी अहिंसक है? विषय पर लार्ड भीखू पारेख द्वारा व्याख्यान	18 दिसम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	जीएसडीएस शांति और अहिंसक व्याख्यान श्रृंखला के तहत समिति ने "गांधी की अहिंसा कितनी अहिंसक है" विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया? 18 दिसम्बर, 2020 को आयोजित इस कार्यक्रम में पद्म भूषण लार्ड भीखू पारेख ने ऑनलाइन व्याख्यान दिया, जिसकी अध्यक्षता प्रोफेसर विद्या जैन, संयोजक, अहिंसा आयोग और अंतर्राष्ट्रीय शांति अनुसंधान संघ ने की।
129	चौथा अनुपम मिश्रा स्मृति व्याख्यान	22 दिसम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	श्री लक्ष्मी दास, उपाध्यक्ष हरिजन सेवक संघ और कार्यकारी सदस्य समिति 22 दिसम्बर को गांधी दर्शन में "संस्थान नारायण परायण बने" (संगठनों को अधिक से अधिक सामान्य अच्छे कार्य की ओर उन्मुख होना चाहिए) विषय पर चौथी अनुपम व्याख्यान श्रृंखला को वर्चुअल माध्यम से सम्बोधित कर रहे थे।
130	तिहाड़ सीजे–4 में ऊनी वस्त्रों का वितरण	23 दिसम्बर ,2020	दिल्ली के इनर व्हील क्लब और तिहाड़ जेल के सहयोग से गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने दिल्ली के इनर व्हील क्लब के सहयोग से सिविल लाइंस अचीवर्स, गाजियाबाद नॉर्थ ने 23 दिसम्बर, 2020 को सेंट्रल जेल नंबर 4, तिहाड़ जेल में कैदियों को 350 वार्मर उपलब्ध कराए।
131	अहिंसक संचार का अभ्यास करने पर ई–कार्यशाला	23 दिसम्बर, 2020	प्रौद्योगिकी और विज्ञान संस्थान, गाजियाबाद	प्रौद्योगिकी और विज्ञान संस्थान, गाजियाबाद के 450 संकाय सदस्यों ने 23 दिसम्बर, 2020 को "अहिंसक संचार का अभ्यास" विषय पर एक ऑनलाइन ई–कार्यशाला में भाग लिया। ई–कार्यशाला का संचालन डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी द्वारा किया गया था।
132	न्यायमूर्ति विक्रमादित्य प्रसाद को श्रद्धांजलि	28 दिसम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	झारखण्ड उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश माननीय श्री न्यायमूर्ति विक्रमादित्य प्रसाद के निधन पर समिति के कर्मचारियों ने 28 दिसम्बर, 2020 को गांधी दर्शन में शोक सभा आयोजित की गयी। जस्टिस विक्रमादित्य का 78 साल की उम्र में 28 दिसम्बर को रांची में निधन हो गया था, अपने वक्तृत्व कौशल के लिए प्रसिद्ध, न्यायमूर्ति विक्रमादित्य प्रसाद ने हाल ही में भारत के संविधान की 71 वीं वर्षगांठ पर समिति द्वारा आयोजित एक वेबिनार में मुख्य भाषण दिया था।

133	शोक सभा का आयोजन	29 दिसम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति के कर्मचारियों ने 29 दिसम्बर, 2020 को समिति की शोध सहयोगी डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली के पिता श्री श्रीराम शास्त्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। डॉ. शैलजा के पिता का आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले में उनके पैतृक घर में निधन हो गया। वह 80 वर्ष के थे। इस मौके पर समिति की पूर्व कर्मचारी श्रीमती रीता कुमारी के ससुर श्री प्रयाग महतो को भी श्रद्धांजलि दी गई। 24 दिसम्बर, 2020 को श्री महतो का निधन हो गया। इसके अलावा समिति ने श्रीमती सावित्री और श्री विनोद कुमार यादव जिनका क्रमशः 21 और 23 नवंबर को निधन हो गया को अपनी श्रद्धांजलि भी अर्पित की।
134	"आओ, हम अहिंसक संचार का अभ्यास करें" पर ई–कार्यशाला	15 दिसम्बर, 2020	हेरात चिल्ड्रन पीस बिल्डर्स फोरम, अफगानिस्तान	समिति ने 15 दिसम्बर, 2020 को चिल्ड्रन पीस बिल्डर्स फोरम अफगानिस्तान के सहयोग से हेरात अफगानिस्तान में "आइए हम अहिंसक संचार का अभ्यास करें" विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया। हेरात चिल्ड्रन पीस बिल्डर्स फोरम की सुश्री मलीका हुसैनी और सुश्री फातिमा हल्दरी, अफगानिस्तान ने वेबिनार में भाग लिया। इसका संचालन कार्यक्रम अधिकारी, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डु द्वारा किया गया था।
135	मानव अंतर्सम्बन्ध और अहिंसक संचार पर ई–कार्यशाला	23 दिसम्बर, 2020	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और ऑनलाइन विश्वविद्यालय, किर्गिस्तान	ऑनलाइन विश्वविद्यालय, किर्गिस्तान के साथ ई–कार्यशालाओं की श्रृंखला के रूप में, तीसरी ई–कार्यशाला का आयोजन 23 दिसम्बर, 2020 को किया गया। इसका विषय था– मानव अंतर्सम्बन्ध और अहिंसक संचार। ई–कार्यशाला का संचालन करते हुए, समिति के कार्यक्रम अधिकारी, डॉ वेदाभ्यास कुण्डु ने 2020 की मानव विकास रिपोर्ट का हवाला दिया जो बताती है कि ग्रह पर हम जो दबाव डालते हैं, वह इतना अधिक हो गया है कि वैज्ञानिक इस पर विचार कर रहे हैं कि क्या पृथ्वी पूरी तरह से एक नए भूवैज्ञानिक युग में प्रवेश कर चुकी है।
136	'मेकिंग ऑफ ए हिंदू पैट्रियट' पुस्तक का विमोचन	1–2 जनवरी, 2021	सेन्टर ऑफ पालिसी स्टडीज और समिति	हर आनंद पब्लिशर्स के सहयोग से सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज द्वारा प्रकाशित डॉ जितेंद्र कुमार बजाज और प्रो. एम. डी. श्रीनिवास द्वारा लिखित 'मेकिंग ऑफ ए हिंदू पैट्रियट' की पुस्तक का विमोचन हुआ,जिसमें सरसंघचालक डॉ मोहन भागवत मुख्य अतिथि थे।
137	अहिंसक संचार के माध्यम से संघर्ष क्षमता में वृद्धि	11 जनवरी 2021	महिला शांति बिल्डर्स नेटवर्क, कैमरून	कार्यक्रम की अध्यक्षता वूमेन पीस–बिल्डर्स नेटवर्क की समन्वयक सुश्री अदाह मबाह मुयांग ने की। समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डु ने मुख्य भाषण दिया।
138	स्वामी विवेकानंद की 158वीं जयंती के अवसर पर 12 जनवरी, 2020 को "स्वयं को समझना" पर आभासी संवाद	12 जनवरी 2021	राज्य बाल भवन असम और गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति	इस अवसर पर विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी की असम प्रांत की सुश्री बरनाली चक्रवर्ती मुख्य वक्ता थीं।
139	गांधी दर्शन, राजघाट में 72वां गणतंत्र दिवस समारोह	26 जनवरी, 2021	गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति	समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने तिरंगा फहराया और पूरे उत्साह के साथ कार्यक्रम में भाग लेने वाले जीएसडीएस कर्मचारियों को संबोधित किया। उन्होंने अहिंसा और सत्य की अवधारणा को दोहराया और लोगों से दूसरों की भलाई को बढ़ावा देने की दिशा में काम करने और आत्मनिर्भरता की दिशा में सक्रिय होने का आह्वान किया।
140	दिल्ली विधान सभा के माननीय अध्यक्ष श्री राम निवास गोयल ने गांधी दर्शन का दौरा किया	27 जनवरी, 2021	गांधी दर्शन, राजघाट	माननीय अध्यक्ष श्री राम निवास गोयल ने डिजिटल प्रदर्शनी का अवलोकन किया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने विशिष्ट अतिथि का स्वागत किया और उनका अभिनंदन भी किया।
141	महात्मा गांधी की 73वीं शहादत का स्मरण	30 जनवरी, 2021	गांधी स्मृति	भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम वेंकैया नायडू ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। माननीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री, डॉ हर्षवर्धन, माननीय संस्कृति मंत्री और समिति के उपाध्यक्ष श्री प्रहलाद सिंह पटेल, माननीय पूर्व उपराष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद हामिद अंसारीय जम्मू और कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ फारूक अब्दुल्ला, सचिव संस्कृति मंत्रालय, श्री राघवेंद्र सिंह, सचिव ग्रामीण विकास मंत्रालय श्री एन एन सिन्हा, महात्मा गांधी की पोती और पूर्व उपाध्यक्ष समिति, श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी, महात्मा गांधी के प्रपौत्र श्री श्रीकृष्ण कुलकर्णी, संयुक्त सचिव संस्कृति मंत्रालय, श्रीमती निरुपमा कोटरू, कलाकारों, पूर्व राजनयिकों और अन्य लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया और महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम वेंकैया नायडू ने माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करने में पूरे देश का नेतृत्व किया। माननीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री, डॉ हर्षक नि‍य माननीय संस्कृति मंत्री और उपाध्यक्ष समिति श्री प्रहलाद सिंह पटेल, माननीय पूर्व उप राष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद हामिद अंसारी, जम्मू और कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. फारूक अब्दुल्ला, सचिव संस्कृति मंत्रालय, श्री राघवेंद्र सिंह, सचिव ग्रामीन विकास मंत्रालय श्री एन एन सिन्हा, महात्मा गांधी की पोती और पूर्व उपाध्यक्ष समिति, श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी, महात्मा गांधी के प्रपौत्र श्री श्रीकृष्ण कुलकर्णी, संयुक्त सचिव संस्कृति मंत्रालय, श्रीमती निरुपमा कोटरू, कलाकारों, पूर्व राजनयिकों और अन्य लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया और महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर दो मिनट का मौन भी रखा गया।

142	गांधी–सुभाष सम्बन्ध के आयाम पर कार्यक्रम	23 जनवरी, 2021	केजीआईडी, मणिपुर और जीएसडीएस	डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय और कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान, मणिपुर और जीएसडीएस के सहयोग से 23 जनवरी, 2021 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 124वीं जयन्ती पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। प्रो. सलिल मिश्रा, प्रति–कुलपति, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय ने मुख्य भाषण दिया।
143	माननीय केन्द्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री, भारत सरकार ने गांधी दर्शन का दौरा किया	27 जनवरी, 2021	गांधी दर्शन, राजघाट	माननीय केन्द्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री, भारत सरकार ने 27 जनवरी, 2021 को गांधी दर्शन का दौरा किया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान द्वारा उनका स्वागत किया गया। माननीय मंत्री ने राजपथ पर 72वें गणतंत्र दिवस समारोह में भाग लेने वाले बच्चों से भी बातचीत की।
144	उन्नति गर्ल्स रेनबो होम, तीस हजारी, दिल्ली में कोविड–19 स्वास्थ्य जागरूकता शिविर	16 जनवरी, 2021	एसडीएमसी और समिति	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने दक्षिण दिल्ली नगर निगम के सहयोग से उन्नति गर्ल्स रेनबो होम, तीस हजारी में कोविड–19 स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया। लैब टेक्निशियन श्री अशफाक ने 36 बच्चों का आरटीपीसीआर परीक्षण किया और जीएसडीएस–ल्यूपिन द्वारा निर्मित मास्क वितरित किए। 16 जनवरी, 2021 को आयोजित कार्यक्रम का संचालन समिति की डॉ. मंजू अग्रवाल ने किया।
145	कोविड 19 स्वास्थ्य जागरूकता शिविर	21 जनवरी, 2021	एसडीएमसी और समिति	21 जनवरी, 2021 को कई स्थानों पर कोविड–19 स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। सोसायटी फॉर प्रमोशन ऑफ यूथ एंड मास (एसपीवाईएम) दरियागंज, सिविक सेंटर, दिल्ली, अंसारी रोड दरियागंज और परदा बाग में आरटीपीसीआर के लिए 101 लोगों का परीक्षण किया गया। जीएसडीएस द्वारा डीएम अधिकारी परदा बाग के पास जीएसडीएस–ल्यूपिन फेस मास्क का वितरण किया गया। श्री अशफाक ने स्वाब परीक्षण किया। कार्यक्रम का संचालन समिति की डॉ. मंजू अग्रवाल ने किया।
146	जीएसडीएस स्टाफ के लिए कोविड–19 **RTPCR** परीक्षण	27 जनवरी, 2021	समिति	गांधी स्मृति में 30 जनवरी, 2021 के कार्यक्रम की तैयारी के लिए यूपीएचसी दरियागंज के सहयोग से 27 जनवरी, 2021 को समिति द्वारा 150 लोगों का कोविड–19 **RTPCR** परीक्षण किया गया। समिति की ओर से इस परीक्षण का समन्वय डॉ. मंजू अग्रवाल ने किया।
147	"समकालीन युग में गांधीवादी नैतिकता का पुनरीक्षण" विषय पर पांचवां अंतरराष्ट्रीय ई–संवाद	18 जनवरी, 2021	समिति	समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने स्वागत भाषण दियाय समिति की पूर्व उपाध्यक्ष श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी, डॉ विद्या जैन, संयोजक, अहिंसा आयोग, अंतर्राष्ट्रीय शांति अनुसंधान संघ (आईपीआरए) और प्रो लेस्टर आर. कुर्तज, जॉर्ज मेसन विश्वविद्यालय, यूएसए के समाजशास्त्र प्रोफेसर का मुख्य नोट का पता दिया। सत्र में दो युवा वक्ताओं – जापान के सोका विश्वविद्यालय से सुश्री येन फोबे मोक सीन और श्री विदुर भरतराम, फोटोग्राफर और फिल्म निर्माता ने अपने दृष्टिकोण साझा किए। डॉ. एन राधाकृष्णन, गांधीवादी विचारक, शांति–कार्यकर्ता, शिक्षक और लेखक और पूर्व निदेशक, गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने सत्र की अध्यक्षता की।
148	"संचार के गांधीवादी दृष्टिकोण के माध्यम से संघर्ष क्षमता को बढ़ावा" विषय पर छठा अंतर्राष्ट्रीय ई–संवाद	20 जनवरी, 2021	एमिटी स्कूल ऑफ कम्युनिकेशन और समिति	इस परिचर्चा का मुख्य विषय संघर्ष को सुलझाने में अहिंसक संचार का महत्व था। पैनल में प्रो. साइमन डाउडेन (ऑस्ट्रेलिया), प्रो. क्रिस्टिया चौइट (मोरक्को), सुश्री एलिजाबेथ कैथरीन गामरा (जापान), प्रो. फातिमा हैदरी (अफगानिस्तान), श्री दीपंकर श्री ज्ञान (निदेशक समिति), डॉ वेदाभ्यास कुंडू (कार्यक्रम अधिकारी, समिति) और डॉ. अंशु अरोड़ा जैसे विभिन्न वक्ता शामिल थे।
149	कोविड–19 स्वास्थ्य शिविर आयोजित	3 फरवरी, 2021	राजघाट बस डिपो नंबर 1, राजघाट.	समिति ने यूपीएचसी दरियागंज के डॉक्टरों की टीम के साथ मिलकर डीटीसी मैकेनिकों के लिए राजघाट बस डिपो नंबर 1, राजघाट पर स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया। 3 फरवरी 2021 को 51 **RTPCR** टेस्ट किए गए। समिति की ओर से डॉ. मंजू अग्रवाल ने इस इवेंट का समन्वयन किया।
150	अपने अनुयायियों की नजर से गांधी – एक प्रतिबिंब	12 फरवरी, 2021	मालवीय शांति अनुसंधान केंद्र, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के सहयोग से	"गांधी अपने अनुयायियों की दृष्टि से कार्यक्रम में समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने दो प्रतिष्ठित दिग्गजों और गांधीवादी विचारकों, बाबा आमटे और नटवर ठक्कर के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने लोगों और समाज की मुक्ति के लिए इन दिग्गजों के अपार निस्वार्थ योगदान को दर्शाया।
151	तिहाड़ में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित	16 फरवरी, 2021	सेंट्रल जेल नंबर 4, तिहाड़ जेल	सेंट्रल जेल नंबर 4 में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। जागरूकता कार्यक्रम का संचालन करने वाली डॉ मंजू अग्रवाल ने कैदियों को ल्यूपिन ह्यूमन रिसर्च एंड वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन से मास्क भी वितरित किए।

152	'साथी मध्यस्थता: रचनात्मक विवाद समाधान के लिए एक दृष्टिकोण' विषय पर कार्यशाला	18 फरवरी, 2021	एमएचआरडी के प्रमुख कार्यक्रम उन्नत भारत अभियान के सहयोग से	इस संवाद का मुख्य उद्देश्य युवा लोगों में ध्यान क्षमताओं का विकास करना और रिश्तों के सामंजस्यपूर्ण परिवर्तन को सुनिश्चित करना था। कार्यशाला के प्रमुख वक्ताओं में शामिल थे डॉ. वेदाभ्यास कुंडू, कार्यक्रम अधिकारी, श्री गुलशन गुप्ता, पूर्वोत्तर समन्वयक, समिति। बातचीत के दौरान लोगों से उन संघर्षों के बारे में पूछा जिनका वे सामना करते हैं और उनका समाधान कैसे करते हैं। फिर उन्होंने सहकर्मी मध्यस्थता के महत्व और प्रभावी ढंग से एक सहकर्मी मध्यस्थ बनने के तरीके के बारे में बताया। उन्होंने उन गुणों पर भी चर्चा की जो एक सहकर्मी मध्यस्थ के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने अहिंसा और सहकर्मी मध्यस्थता को बहुत खूबसूरती से जोड़ा।
153	77वें निर्वाण दिवस पर याद की गई कस्तूरबा गांधी	22 फरवरी, 2021	गांधी दर्शन	कस्तूरबा गांधी को उनकी 77वीं पुण्यतिथि पर गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के नेतृत्व में स्टाफ सदस्यों ने कस्तूरबा गांधी को श्रद्धांजलि दी गयी।
154	कला के माध्यम से तिहाड़ के कैदियों ने दी 'बा' को श्रद्धांजलि	22 फरवरी, 2021	सेंट्रल जेल नंबर 4	समिति ने 22 फरवरी, 2021 को तिहाड़ जेल सीजे –4 और दिल्ली अचीवर्स के इनर व्हील क्लब के सहयोग से कस्तूरबा गांधी की 77 वीं पुण्यतिथि मनाई, जिसमें उपस्थित कैदियों ने स्वतंत्रता संग्राम के दिग्गजों – महात्मा गांधी, कस्तूरबा गांधी और आचार्य विनोबा भावे को उनके चित्रों के माध्यम से श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मंजू अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम में सीजे–4 स्कूल ऑफ आर्ट्स के 48 कैदियों ने भाग लिया।
155	वाराणसी से बा को श्रद्धांजलि	22 फरवरी, 2021	कस्तूरबा महिला विद्यापीठ इंटरमीडिएट कॉलेज, सेवापुरी, वाराणसी	कस्तूरबा गांधी की 77वीं पुण्यतिथि पर 22 फरवरी 2021 को कस्तूरबा महिला विद्यापीठ इंटरमीडिएट कॉलेज, सेवापुरी, वाराणसी में उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अनीता सिंह, शिक्षक और छात्रों ने बा को उनके निर्वाण दिवस पर याद किया। इस अवसर पर गीत और प्रार्थना भी आयोजित की गयी।
156	पद्मश्री डॉ. कैलाश मड़बैया का अभिनंदन	27 फरवरी, 2021	गांधी दर्शन और गांधी ग्लोबल फाउण्डेशन	समारोह में वक्ताओं ने डॉ. कैलाश मड़बैया के जीवन प्रसंगो का उल्लेख किया कि उन्होंने अपनी सभी प्रशासनिक व्यस्तताओं के बावजूद बुंदेली साहित्य को कैसे पुनर्जीवित किया, जो अतुलनीय और हिंदी बोलियों के प्रेमियों के लिए प्रेरणा का स्रोत था। इस अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया जहां श्री मड़बैया ने स्वतंत्रता सेनानियों चंद्रशेखर आजाद और संत रविदास जी की स्मृति में एक पौधा लगाया।
157	"ए जर्नी टू वॉलंटियरिंग" पर ई–वर्कशॉप	27 फरवरी, 2021	बंगबासी मॉर्निंग कॉलेज (बीएमसी), कोलकाता के सहयोग से वर्चुअल कार्यक्रम	वक्ताओं ने स्वयंसेवा पर चर्चा की और कहा कि स्वयमसेविता स्वेच्छा से समाजसेवा में योगदान देने के बारे में है। लेकिन एक प्रभावी और जिम्मेदार स्वयंसेवक तुरंत चुनाव नहीं कर सकता" और आगे कहा, "एक अच्छा स्वयंसेवक बनने के लिए, स्वयं की खोज और सम्मान करना महत्वपूर्ण है।
158	मध्यस्थता पर संवाद पर शृंखला 1–पेरू से संघर्ष समाधान के वैकल्पिक तंत्र के विशेषज्ञ, श्री गुस्तावो अनाय सेंटेनो और TEDÛ की अध्यक्ष और शांति व संघर्ष अध्ययन की विशेषज्ञ, जापान की सुश्री एलिजाबेथ कैथरीन गराद वक्ता थीं।	6 फरवरी, 2021	समिति	इस श्रृंखला में मध्यस्थता पर चर्चा की गयी जिसमें कहा गया कि यह बातचीत की एक प्रक्रिया है जिसमें एक तीसरा पक्ष शामिल है और मध्यस्थता व्यक्तिगत स्तर के साथ–साथ संस्थागत स्तर पर भी हो सकती है। मध्यस्थ बनने की इस प्रक्रिया में कई अवांछित चीजों को छोड़ना होगा।
159	शृंखला 2–एशिया पैसिफिक सेंटर फॉर आर्बिट्रेशन एंड मीडिएशन, दिल्ली की कार्यकारी निदेशक, सुश्री इरम मजीद	8 फरवरी, 2021	समिति	कार्यक्रम में वक्ता ने कहा कि "मुकदमा इस बारे में होता है कि कौन सही है जबकि मध्यस्थता इस बारे में है कि क्या सही है। मध्यस्थता जीवन का एक तरीका है। यह मानव–मानव संबंध के बारे में है और इसलिए मूल्यांकन को हतोत्साहित करता है। मध्यस्थता का उद्देश्य मुद्दों के पीछे अंतर्निहित हितों का पता लगाना है।
160	शृंखला 3–अधिवक्ता, मध्यस्थ, सुलहकर्ता, गोल्फ खिलाड़ी और शांतिदूत श्री विक्रम सिंह ने भाग लिया।	10 फरवरी, 2021	समिति	उन्होंने कहा, "विवादों का समाधान पक्षों में आपसी स्तर पर ही सबसे अच्छा होता है। अहंकार, गलत संचार और ऐसी अन्य चीजें एक संवाद में बाधा डालती हैं, ऐसे में मध्यस्थता की भूमिका आरम्भ होती है। मध्यस्थता सभी परिस्थितियों के आसपास केंद्रित बातचीत के बारे में है। यह एक अनौपचारिक प्रक्रिया है जो सड़क, स्कूल, पार्क कहीं भी हो सकती है। मध्यस्थों को प्रशिक्षित लोगों की नहीं बल्कि मध्यस्थता की मानसिकता वाले लोगों की आवश्यकता है।
161	शृंखला 4–'मध्यस्थता' और शरीर की भाषा पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित वक्ता, ऑस्ट्रेलिया के साइमन हाउडेन ने मध्यस्थता पर विभिन्न मुद्दों पर बात की	11 फरवरी, 2021	समिति	उन्होंने कहा, "मध्यस्थ की जिम्मेदारी सुरक्षित स्थान बनाना है जहां लोगों को लगता है कि यहाँ वे इसे बाँट और संवाद कर सकते हैं। लोग अक्सर शिक्षित हो जाते हैं। शिक्षा केवल एक उपकरण है। यह आपको ज्ञान देता है, लेकिन उस ज्ञान को व्यवहार में लाने की जरूरत है।

162	श्रृंखला 5–सुश्री रॉबर्टा बॉल के साथ, एक मध्यस्थ और अहिंसक संचार और संघर्ष समाधान में एक कोच	11 फरवरी, 2021	जीएसडीएस	उन्होंने कहा कि किसी भी स्तर पर मध्यस्थ को सब कुछ जानने की जरूरत नहीं है। आज विश्व हर जगह संघर्ष से भरा है और मध्यस्थों को शांतिपूर्ण संचारक बनने की इच्छा होनी चाहिए।
163	"शांति पर चिंतन" विषय पर किर्गिस्तान के साथ वार्ता	5 फरवरी, 2021	किर्गिस्तान के ऑनलाइन विश्वविद्यालय के सहयोग से	संवाद का विषय "पीस मैटर्स" था जहां विभिन्न प्रतिभागियों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। 11 वक्ताओं ने मुद्दों पर अपने विचार साझा किए। किर्गिस्तान के ऑनलाइन विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. एलिरा तुर्दुबेवा ने चर्चा का समन्वय किया। समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डु ने प्रतिभागियों के साथ सत्र का संचालन किया।
164	भारत के माननीय राष्ट्रपति ने महात्मा गांधी, राम मनोहर लोहिया और पं. दीन दयाल उपाध्याय की प्रतिमाओं का अनावरण किया	7 मार्च, 2021	समिति	भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने 7 मार्च, 2021 को बेलाताल दमोह में महात्मा गांधी, राम मनोहर लोहिया और पंडित दीन दयाल उपाध्याय की कांस्य प्रतिमाओं का अनावरण किया। प्रतिमाओं को प्रख्यात मूर्तिकार पद्मश्री श्री राम सुतार द्वारा तराशा गया है। गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने मूर्तियों के निर्माण और उनकी स्थापना का काम करवाया है। माननीय राष्ट्रपति ने मध्य प्रदेश में दमोह जिले के सिंगोरगढ़ किले में संरक्षण कार्यों का भी उद्घाटन किया और माननीय राष्ट्रपति ने दमोह के ग्राम सिंगरमपुर में राज्य स्तरीय आदिवासी सम्मेलन को भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम का आयोजन संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार और मध्य प्रदेश के जनजातीय मामलों के विभाग द्वारा किया गया था। श्री राम नाथ कोविंद ने गांव सिंगरमपुर में रानी दुर्गावती की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।
165	आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर साबरमती से दांडी यात्रा को हरी झंडी	12–15 मार्च, 2021	गुजरात में समिति	ऐतिहासिक दांडी मार्च की 91वीं वर्षगांठ पर भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अहमदाबाद से एक प्रतीकात्मक 386 किलोमीटर– 25–दिवसीय 'दांडी मार्च' को हरी झंडी दिखाई। श्री नरेन्द्र मोदी ने इस अवसर पर 'आजादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम का भी शुभारम्भ किया। यह महोत्सव 15 अगस्त, 2023 तक चलेगा। इस अवसर पर माननीय संस्कृति मंत्री एवं उपाध्यक्ष समिति श्री प्रहलाद सिंह ने भी साबरमती से नदियाड तक अपनी पदयात्रा शुरू की। समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान और अन्य अधिकारियों के साथ समिति के लगभग 27 स्वयंसेवकों की एक टीम और कुल 110 स्वयंसेवकों की एक टीम का नेतृत्व करते हुए, श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने नडियाद पहुंचने से पहले 75 किलोमीटर की दूरी तय की। नदियाड पहुंचने से पहले, उन्होंने चंदोला तलाव असलाली, बरेजा, नवगम, वासना, मातर और डभान की यात्रा की। यात्रा में भाग लेने वालों में श्रीमती गीता शुक्ला, शोध अधिकारी, श्री रिजवान उर रहमान, श्री जगदीश प्रसाद, श्री अरबिंदो मोहंती, श्री दिलीप कुमार, श्री नरेन्द्र कुमार, श्री यतेन्द्र सिंह, श्री प्रवीण दत्त शर्मा, श्री पीयूष, श्री विवेक कुमार, श्री दीपक तिवारी, श्री दीपक पांडे, श्री सुनील, श्री नवीन, श्री महेन्द्र सिंह, श्री धर्मपाल, श्री राकेश शर्मा, श्री हरेन्द्र, श्री गणेश, श्री मनीष, श्री धनराज, श्री मनीष कुमार, श्री धर्मराज कुमार, श्री अरविंद कुमार और श्री अरुण सैनी शामिल थे। श्री प्रहलाद सिंह पटेल के नेतृत्व में 75 किलोमीटर की दांडी यात्रा नदियाड में समाप्त हुई। श्री पटेल के साथ इस यात्रा में देश के दूर–दराज से 110 पदयात्री (पैदल मार्च करने वाले) षामिल हुए। समापन समारोह में गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री विजय रमणीकलाल रूपाणीय खेड़ा से सांसद श्री देवूसिंह चौहान विधान सभा सदस्य, माननीय श्री विक्रम सिंह और अन्य लोग उपस्थित थे।
166	दांडी मार्च पर संगोष्ठी और आजादी के 75 वर्ष	12 मार्च 2021	चंपारण, बिहार	ऐतिहासिक दांडी मार्च की 91वीं वर्षगांठ और आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर समिति ने पश्चिम चंपारण के राजकीय बुनियादी विद्यालय वृंदावन स्कूल के सहयोग से 12 मार्च को वृंदाबन, चंपारण, बिहार में "सत्याग्रह और स्वराज" पर एक सेमिनार का आयोजन किया। इस अवसर पर बिहार से माननीय सांसद श्री संजय जायसवाल और बिहार विधान सभा के माननीय सदस्य श्री उमाकांत सिंह विशिष्ट अतिथि थे। महात्मा गांधी द्वारा स्थापित स्कूल के शिक्षकों और छात्रों ने कार्यक्रम मे बहुत उत्साह से भाग लिया। स्कूल के शिक्षकों और छात्रों द्वारा पदयात्रा भी निकाली गई। यात्रा का नेतृत्व श्री संजय जायसवाल और श्री उमाकांत सिंह ने किया।
167	गांधी हाट में बा की रसोई का पुनः शुभारम्भ	1 मार्च, 2021	गांधी दर्शन, राजघाट	श्री लक्ष्मी दास, उपाध्यक्ष, हरिजन सेवक संघ और सदस्य जीएसडीएस कार्यकारी समिति द्वारा 1 मार्च, 2021 को गांधी दर्शन, राजघाट स्थित गांधी हाट में बा की रसोई का पुनः उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान भी उपस्थित थे।

168	पत्रकारिता में सत्य साधना पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	1 मार्च, 2021	गांधी दर्शन, राजघाट	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और दिल्ली पत्रकार संघ (डीजेए) ने 1 मार्च, 2021 को गांधी दर्शन, राजघाट में "पत्रकारिता में सत्य साधना" पर संगोष्ठी का आयोजन किया। उत्तरी दिल्ली के मेयर, श्री जय प्रकाश इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक समिति, श्री ओंकारेश्वर पांडे, वरिष्ठ पत्रकार श्री मनोहर सिंह, अध्यक्ष, डीजेए श्री अनलेश राजू, वरिष्ठ पत्रकार, डीजेए श्री मनोज मिश्रा, वरिष्ठ पत्रकार, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी, समिति और मीडिया के वरिष्ठ लोग उपस्थित थे। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) के अध्यक्ष पद्म श्री राम बहादुर राय भी इस अवसर पर शामिल हुए।
169	महात्मा गांधी और विनोबा भावे पर संगोष्ठी	5 मार्च, 2021	गांधी दर्शन, राजघाट	उत्तर क्षेत्र के खादी संस्थानों और संघों द्वारा गांधी दर्शन में 5 मार्च, 2021 को महात्मा गांधी और विनोबा भावे पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके मुख्य अतिथि श्री बसंत कुमार, सदस्य खादी और ग्रामोद्योग आयोग, उत्तर क्षेत्र थे। अध्यक्षता समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने की। श्री लक्ष्मी दास और श्री मामचंद शर्मा ने भी सभा को संबोधित किया। खादी संस्थाओं के विभिन्न प्रतिनिधियों और पदाधिकारियों ने भी अपने विचार रखे।
169	यूपीएचसी दरियागंज में बांटे मास्क	5 मार्च, 2021	यूपीएचसी दरियागंज (औषधालय) दरियागंज	समिति व ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर संस्था ने 5 मार्च 2021 को यूपीएचसी दरियागंज (डिस्पेंसरी) में डॉक्टरों की टीम को मास्क बांटे। वितरण समारोह में श्री बसंत कुमार एवं डॉ. मंजू अग्रवाल उपस्थित थे। डॉ. सुनील मिंज, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, यूपीएचसी दरिया गंज और उप केंद्र विक्रम नगर, दक्षिण दिल्ली नगर निगम, डॉ शीतल, स्त्री रोग विशेषज्ञ और डॉक्टरों और नर्सों की टीम को मास्क प्रदान किया।
170	न्यूरो–भाषाई–प्रोग्रामिंग पर मध्यस्थता पर संवाद	8 मार्च, 2021	वर्चुअल	समिति ने 8 मार्च, 2021 को 'न्यूरो भाषाई प्रोग्रामिंग' (एनएलपी) पर मध्यस्थता पर एक संवाद का आयोजन किया। यह संवाद की शृंखला में छठा कार्यक्रम था, जिसे सुश्री सलोनी प्रिया, निदेशक उम्मीद पंचायत पंचायत सेवा केंद्र के सलाहकार द्वारा दिया गया था। सुश्री मानसी शर्मा ने संवाद का संचालन किया, जिसके दौरान सुश्री सौलनी प्रिया ने एनएलपी से सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों पर बात की और विस्तार से बताया कि इसका वास्तव में क्या मतलब है। उन्होंने कहा, "न्यूरो तंत्रिका तंत्र को संदर्भित करता है जिसके माध्यम से अनुभवों को सचेत या अचेतन विचार में अनुवादित किया जाता है" "भाषाई" से तात्पर्य है कि लोग कैसे संवाद करते हैं और अनुभवों को समझाने के लिए भाषा का उपयोग कैसे किया जाता है" और "प्रोग्रामिंग" मौलिक एनएलपी अवधारणा को संदर्भित करता है कि व्यवहार और सोच को कोडित किया जा सकता है और परिणामस्वरूप पुनः उत्पन्न किया जा सकता है।"
171	शांति प्रार्थना का आयोजन	10 मार्च 2021	गांधी स्मृति	गिल्ड ऑफ सर्विसेज, वॉर विक्टिज एसोसिएशन और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने संयुक्त रूप से 10 मार्च, 2021 को गांधी स्मृति में शांति प्रार्थना का आयोजन किया। शहीद स्तंभ पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर सर्वधर्म प्रार्थना का आयोजन किया गया। इस मौके पर महिलाओं के खिलाफ हिंसा रोकने की शपथ भी दिलाई गई। शपथ का वाचन डॉ. वंदना सिंघा ने किया। गिल्ड ऑफ सर्विसेज द्वारा मानसिकता में बदलाव लाने में मदद करने के लिए एक अभियान "नो साइलेंस फॉर वायलेंस" प्रस्तावित किया गया था। इस अवसर पर उपस्थित सदस्यों द्वारा मानव गरिमा, स्वतंत्रता, सगानता और एकता के सार्वभौमिक आदर्शों की अवधारणाओं को दोहराया गया। इस अवसर पर महिला सशक्तिकरण पर गीत और भजन प्रस्तुत किये गये।
172	दिल्ली गेट पर स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन	10 मार्च 2021	गांधी दर्शन,	समिति के स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम के तहत यूपीएचसी दरियागंज के डॉक्टरों की टीम द्वारा 10 मार्च, 2021 को दिल्ली गेट स्थित नशामुक्ति केंद्र में 36 आरटीपीसीआर परीक्षण किए गये। सीएसडीएस और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन द्वारा फेस मास्क का निःशुल्क वितरण भी किया गया। शिविर का संचालन डॉ. मंजू अग्रवाल ने किया।
173	दिल्ली अचीवर्स के इनर व्हील क्लब और जीएसडीएस ने यूपीएचसी डिस्पेंसरी, दरियागंज को आरओ वाटर प्यूरीफायर दान किया	10 मार्च 2021	यूपीएचसी दरियागंज (औषधालय) दरियागंज	यूपीएचसी डिस्पेंसरी दरियागंज नई दिल्ली में गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सहयोग से इनर व्हील क्लब ऑफ दिल्ली अचीवर्स 2020–21 द्वारा दान की गई आरओ वाटर प्यूरीफायर मशीन का उद्घाटन 10 मार्च, 2021 को श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने किया। दरियागंज में आयोजित एक समारोह में बिंदू संगल, श्रीमती गीता शुक्ला, डॉ मंजू अग्रवाल और अन्य डॉ सुनील मिंज और डॉक्टरों की टीम उपस्थित थी। समिति की इस पहल का समन्वय डॉ. मंजू अग्रवाल ने किया।

174	गांधी दर्शन में पदयात्रियों का अभिनंदन	23 मार्च, 2021	गांधी दर्शन, राजघाट	समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 23 मार्च, 2021 को गांधी दर्शन, राजघाट में दांडी यात्रा के पदयात्रियों के सम्मान हेतु बैठक बुलाई, जिन्होंने 12 मार्च से 15 मार्च, 2021 तक साबरमती से नदियाड तक यात्रा में भाग लिया था। माननीय संस्कृति मंत्री और समिति उपाध्यक्ष श्री प्रहलाद सिंह पटेल के नेतृत्व में निकली इस यात्रा को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा यात्रा को हरी झण्डी दिखाई थी।
175	तिहाड़ सीजे–4 . में निःशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन	24 मार्च, 2021	केन्द्रीय कारागार तिहाड़ सीजे–4	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) और अग्रवाल फाउण्डेशन के डॉ. राजेंद्र प्रसाद नेत्र विज्ञान केन्द्र के सहयोग से तिहाड़ केन्द्रीय कारागार सीजे –4 में समिति द्वारा 24 मार्च, 2021 को नि: शुल्क नेत्र शिविर का आयोजन किया गया। समिति की नीलम शर्मा एवं सुश्री आशा रानी ने भी भाग लिया। संचालन मंजू अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर तिहाड़ कारागार अधीक्षक सीजे–4 श्री राजकुमार, उपाधीक्षक श्री मनमोहन एवं वार्डर श्री अमरजीत उपस्थित थे।
176	'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम आयोजित	24 मार्च, 2021	हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने 24 मार्च, 2021 को दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज के सभागार में 'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. के.एन. तिवारी की पुस्तक 'उत्तर कबीर–नंगा फकीर' पर चर्चा हुई। यह पुस्तक जीएसडीएस द्वारा प्रकाशित की गई है। इस मौके पर अपने भाषण में डॉ. ओमप्रकाश ने कहा कि साहित्य समाज के लिए प्रेरणा का काम करता है. इस पुस्तक में लेखक ने कबीर और गांधी के काल्पनिक संवाद के माध्यम से देश और समाज की विसंगतियों को उजागर किया है।
177	जीएसडीएस के पेंशनभोगियों के साथ बैठक	मार्च 31, 2021	गांधी दर्शन, राजघाट	समिति निदेशक, श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 31 मार्च, 2021 को जीएसडीएस के पेंशनभोगियों की एक बैठक बुलाई। इसमें सीजीएचएस, सातवें वेतन आयोग आदि से सम्बन्धित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए 20 पेंशनभोगी शामिल हुए।
178	अहिंसक संचार के माध्यम से संघर्ष क्षमता के विस्तार पर ई–कार्यशाला	1 मार्च, 2021	आभासी अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम	समिति द्वारा 1 मार्च, 2021 को यूनिवर्सिटैट जैम, स्पेन, यूनेस्को और डीप नेटवर्क के सहयोग से "अहिंसक संचार के माध्यम से संघर्ष क्षमता का विस्तार" पर ई–कार्यशाला का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम अधिकारी डॉ वेदाभ्यास कुण्डू ने किया। उन्होंने संघर्ष दक्षताओं, संघर्ष समाधान के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण और अहिंसक संचार पर बात की।
179	अहिंसक संचार के माध्यम से अभद्र भाषा का मुकाबला करने पर ई–संवाद	18 मार्च, 2021	आभासी अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम	समिति के कार्यक्रम अधिकारी, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने अहिंसक संचार के गांधीवादी मॉडल को अभद्र भाशा के खतरे का मुकाबला करने के तौर पर प्रस्तुत किया। प्रो. जुआन पेझो ने 18 मार्च, 2021 को यूनिवर्सिडैड कम्प्लीटेन्स डी. मैड्रिड, स्पेन के सहयोग से अहिंसक संचार के माध्यम से घृणास्पद भाषण का मुकाबला करने पर ई–संवाद में चर्चा का संचालन किया।
180	वायु सेना के कमांडर की पत्नी ने गांधी स्मृति का किया दौरा	2 मार्च, 2021	गांधी स्मृति	प्रशांत वायु सेना के कमांडर की पत्नी श्रीमती सिंडी विल्लावैक, ने अपनी टीम के साथ 2 मार्च, 2021 को गांधी स्मृति का दौरा किया। डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली, अनुसंधान सहयोगी समिति ने आगंतुकों का स्वागत किया और गांधी स्मृति संग्रहालय में एक निर्देशित दौरा करवाया।
181	दक्षिणी दिल्ली नगर निगम के महापौर, ने गांधी दर्शन का दौरा किया	4 मार्च, 2021	गांधी स्मृति	दक्षिण दिल्ली नगर निगम की महापौर सुश्री अनामिका मिथिलेश ने 4 मार्च, 2021 को गांधी दर्शन, राजघाट का दौरा किया। उन्होंने विशाल परिसर में प्रदर्शित प्रदर्शनियों में गहरी दिलचस्पी ली। उन्हें समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान द्वारा सम्मानित किया गया।
182	दक्षिण कोरिया गणराज्य के माननीय रक्षा मंत्री, श्री सुह चूक	26 मार्च 2021	गांधी स्मृति	दक्षिण कोरिया गणराज्य के माननीय रक्षा मंत्री, श्री सुह चूक ने अन्य अधिकारियों के साथ 26 मार्च, 2021 को गांधी स्मृति का दौरा किया और महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली, अनुसंधान सहयोगी, समिति ने संग्रहालय का निर्देशित दौरा किया।
183	राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय के अधिकारियों ने गांधी स्मृति का किया दौरा	30 मार्च–1 अप्रैल, 2021	गांधी स्मृति	नेशनल डिफेंस कॉलेज के वरिष्ठ अधिकारियों ने 30 मार्च और 1 अप्रैल, 2021 को गांधी स्मृति में शहीद स्तम्भ पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। समिति की शोध सहयोगी डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली, ने प्रतिनिधिमंडल का मार्गदर्शन किया।

****

महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि

गांधी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित

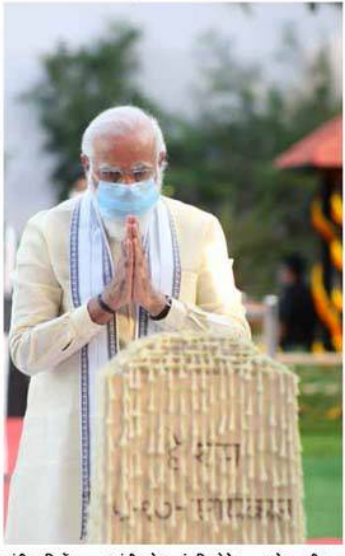

गांधी स्मृति में महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देते भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी।

महात्मा गांधी की 151वीं जयंती और अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के उपलक्ष्य 2 अक्तूबर, 2020 को गांधी स्मृति में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्र ने बापू को श्रद्धांजलि अर्पित की। कोविड–19 महामारी के मद्देनजर, गृह मंत्रालय के प्रोटोकॉल के अनुसार, केवल 100 आमंत्रित लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम में सचिव संस्कृति मंत्रालय, श्री राघवेन्द्र सिंह संयुक्त सचिव, श्रीमती निरुपमा कोटरू महात्मा गांधी की पोती और समिति की पूर्व उपाध्यक्ष श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी ने भी अपने ढंग से गांधीजी को याद किया। कार्यक्रम में विभिन्न दूतावासों और उच्चायोगों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

शाम की प्रार्थना सभा की शुरुआत दूरदर्शन केन्द्र द्वारा एक लघु फिल्म के प्रसारण से हुई। उल्लेखनीय है कि गांधीजी की जयन्ती पर दूरदर्शन और गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने 'मुझ में है महात्मा' शीर्षक के तहत लोगों से महात्मा गांधी के बारे में उनके विचारों से

माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन महात्मा गांधी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए।

माननीय श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी अपने दादा मोहनदास करमचंद गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए। संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त सचिव, श्रीमती निरुपमा कोटरू गांधीजी को श्रद्धांजलि देते हुए; साथ हैं, समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

सम्बन्धित विडियो आमंत्रित किये गये थे, जिसमें देश भर से लगभग 200 वीडियो प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। चार अलग–अलग श्रेणियों पर महात्मा गांधी के जीवन, संदेश और दर्शन की समझ पर आधारित 25 मिनट की इस डॉक्यूमेंट्री में विभिन्न आयु समूहों के प्रतिभागियों, युवा और वृद्धों के विचारों को दिखाया गया है कि कैसे उन्होंने अपने दैनिक जीवन में महात्मा गांधी के आदर्शों को आत्मसात किया है।

इस मौके पर सर्वधर्म प्रार्थना भी आयोजित की गयी, जिसमें बौद्ध धर्म, ईसाई, इस्लाम, पारसी धर्म, सिख धर्म, यहूदी धर्म, बहाई, शबद कीर्तन जैसे विभिन्न धार्मिक समूहों के गुरुओं द्वारा प्रार्थना की गयी। कार्यक्रम में वरिष्ठ गांधीवादी बहन इंदु बाला ने चरखे पर कताई की।

भारत में संयुक्त राष्ट्र की ओर से यूनिसेफ की प्रतिनिधि डॉ. यास्मीन अली हक ने संयुक्त राष्ट्र महासचिव, श्री एंटोनियो गुतरस का संदेश पढ़कर सुनाया। संदेश का अंश इस प्रकार है:

विभिन्न धर्मों के गुरुओं द्वारा सर्वधर्म प्रार्थना के माध्यम से महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

भारत में यूनिसेफ की प्रतिनिधि, माननीय यास्मीन अली हक, शहीद स्तम्भ पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ।

महात्मा गांधी के जन्मदिन को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाना, अहिंसा और शांतिपूर्ण विरोध की उल्लेखनीय शक्ति के महत्व को दर्शाता है। यह उन मूल्यों को बनाए रखने के प्रयास करने की याद दिलाता है, जिनके द्वारा गांधीजी रहे थे। यह मूल्य थे: गरिमा को बढ़ावा देना, सभी के लिए समान सुरक्षा, और शांति से एक साथ रहने वाले समाज की स्थापना।

इस वर्ष हमारा एक विशेष कर्तव्य है: हमें आपसी लड़ाई बंद कर हम सब के आम दुश्मन से लड़ने पर ध्यान केन्द्रित करना है, वह है: कोविड–19। एक महामारी के दौरान संघर्ष का केवल एक ही विजेता होता है: स्वयं वायरस।

जैसे ही महामारी ने जोर पकड़ लिया, मैंने वैश्विक युद्धविराम का आह्वान किया। आज इस वर्ष के अंत तक इसे साकार करने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा एक नए प्रयास की आवश्यकता है। युद्धविराम अत्यधिक पीड़ा को कम करेगा, अकाल के जोखिम को कम करने में मदद करेगा और शांति की दिशा में बातचीत के लिए जगह तैयार करेगा।

गहरा अविश्वास हमारे रास्ते में खड़ा है। फिर भी मुझे आशा की किरण दिखाई देती हैं। कुछ जगहों पर, हम हिंसा मे ठहराव देखते हैं। बहुत से सदस्य देश, धार्मिक नेता, नागरिक समाज नेटवर्क और अन्य लोग मेरे आह्वान का समर्थन करते हैं। अब समय आ गया है कि हम अपने प्रयासों को और तेज करें। आइए हम गांधी की भावना और संयुक्त राष्ट्र चार्टर के स्थायी सिद्धांतों से प्रेरित हों।

गांधी स्मृति में गांधी जयन्ती के अवसर पर धर्मगुरुओं से रूबरू होते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी।

गांधी स्मृति में गांधी जयन्ती 2021 के अवसर पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि के रूप में भक्ति संगीत प्रस्तुत करते पंडित मधुप मुद्गल।

इस अवसर पर भक्ति संगीत का गायन पद्मश्री पंडित मधुप मुद्गल ने किया। गांधी स्मृति के प्रार्थना स्थल में संत कबीर, गुरुदास, गुरु नानक, मीराबाई के गीतों की गूंज सुनाई दी। इस अवसर पर महात्मा गांधी और राम धुन के पसंदीदा भजन भी गाए गए।

इससे पहले समिति ने रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) के साथ मिलकर आगंतुकों की सुरक्षा सुनिश्चित की, जिन्होंने कोविड–19 महामारी को देखते हुए पूरे गांधी स्मृति परिसर को कीटाणुरहित और साफ किया।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, पंडित मधुप मुद्गल को चरखा भेंट करते हुए।

महात्मा गांधी की 73वीं पुण्यतिथि

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ 30 जनवरी, 2021 को गांधीजी की पुण्य तिथि पर महात्मा गांधी की शहादत स्थली गाँधी स्मृति में महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। माननीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री, डॉ. हर्षवर्धन, माननीय संस्कृति मंत्री और समिति के उपाध्यक्ष श्री प्रहलाद सिंह पटेल, माननीय पूर्व उपराष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद हामिद अंसारी, जम्मू और कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. फारूक अब्दुल्ला, सचिव संस्कृति मंत्रालय, श्री राघवेन्द्र सिंह, सचिव ग्रामीण विकास मंत्रालय श्री एन. एन. सिन्हा, महात्मा गांधी की पोती और पूर्व उपाध्यक्ष, श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी, महात्मा गांधी के प्रपौत्र श्री श्रीकृष्ण कुलकर्णी, संयुक्त सचिव संस्कृति मंत्रालय, श्रीमती निरुपमा कोटरू, वरिष्ठ गांधीवादी और सदस्य केयीआईसी उत्तर क्षेत्र, श्री बसंत सिंह और पूर्वी क्षेत्र श्री मनोज कुमार सिंह, पद्मश्री कमल सिंह चौहान सहित अनेक गणमान्य लोगों, कलाकारों, पूर्व राजनयिकों और अन्य लोगों ने भाग लिया। इससे पूर्व संसद सदस्य, श्री राहुल गांधी ने गांधी स्मृति में राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री नरेन्द्र पाल गिल द्वारा संचालित, ऑल इंडिया रेडियो, दिल्ली के संगीतकारों ने एक संगीतमय प्रस्तुति दी, जिसमें उन्होंने वंदे मातरम, वैष्णवजन, राग जोग और राम धुन पर रचनाएँ प्रस्तुत कीं। यह प्रस्तुति समिति और आकाशवाणी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई थी।

विभिन्न धर्मों के धार्मिक नेताओं द्वारा इस अवसर पर प्रार्थना की,और कार्यक्रम में चरखे पर कताई का प्रदर्शन भी किया गया।

प्रसिद्ध कलाकार, पद्मश्री अनूप जलोटा ने इस अवसर पर उपनिषद, देवी सरस्वती और राम धुन की प्रार्थनाओं सहित राम और कृष्ण पर भक्ति गीतों के अपने मधुर प्रदर्शन के साथ भक्ति संगीत का नेतृत्व किया।

इस अवसर पर दो मिनट का मौन भी रखा गया।

1. गांधी स्मृति में भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी।
2. माननीय संस्कृति राज्य मंत्री और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के उपाध्यक्ष, श्री प्रहलाद सिंह पटेल महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए।
3. भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति डॉ. मो. हामिद अंसारी ने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की।
4. पद्मश्री श्री अनूप जलोटा गांधीजी को श्रद्धांजलि के रूप में भक्ति संगीत प्रस्तुत करते हुए।
5. अलि इंडिया रेडियो, दिल्ली के कलाकारों ने राष्ट्रपिता को संगीत में श्रद्धांजलि अर्पित की।
6. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 73वीं पुण्यतिथि पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि।

महत्वपूर्ण पहल

अहिंसक संचार पर निःशुल्क अनिलाइन प्रमाणन कार्यक्रम की शुरुआत

समिति ने 2 अप्रैल, 2020 को शिक्षकों, विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों और विभिन्न सेवाओं में कार्यरत लोगों के लिए अहिंसक संचार पर निःशुल्क ऑनलाइन प्रमाणन कार्यक्रम शुरू किया। यह अहिंसक संचार (एनवीसी) के सिद्धांतों की समझ प्रदान करने के उद्देश्य से आरम्भ किया गया। यह पाठ्यक्रम एनवीसी के प्रमुख गांधीवादी सिद्धांतों और दैनिक जीवन के संचार में अहिंसक दृष्टिकोण अपनाने की दिशा में जोर देने वाले अनुप्रयोगों पर प्रकाश डालता है। तीन मॉड्यूल में डिज़ाइन किए गए पाठ्यक्रम से अहिंसक संचार के सिद्धांत और व्यवहार दोनों को समझने में सहायता मिलेगी। पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों से प्रश्नावली के उत्तर देने की अपेक्षा की जाती है। अब तक भारत के विभिन्न हिस्सों से लगभग हजारों प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम के लिए पंजीकरण कराया है।

कोयंबटूर

"महात्मा गांधी एक कार्यकर्त्ता थे। उनके लिए संचार सम्बन्ध स्थापित करने की कुंजी थी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई अत्याचारों का सामना करने के बावजूद, गांधीजी ने कभी भी कठोर या अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया", ये विचार श्रीमती निरुपमा कोटरू, संयुक्त सचिव संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने 20 जुलाई को पीएसजी कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोयंबटूर के सहयोग से गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा तमिल में "अहिंसक संचार" पर वर्चुअल ऑनलाइन पाठ्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए व्यक्त किये।

समिति के कर्मचारियों, शिक्षाविदों और छात्रों सहित अनेक लोग कार्यक्रम में शामिल थे। श्रीमती निरुपमा कोटरू ने कहा, "महात्मा गांधी ने अपने कार्यों में किसी भी प्रकार की हिंसा से परहेज किया। वह संघर्षों को सुलझाने और हिंसा को रोकने के लिए अनशन जैसी गतिविधियाँ करने में विश्वास रखते थे।

सीबीएसई द्वारा अहिंसक संचार पर ओरिएंटेशन कोर्स आरम्भ

देश भर के छात्रों, शिक्षकों, प्रधानाचार्यों और अभिभावकों तक पहुंचने की दिशा में एक बड़ी पहल के रूप में, समिति ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) के साथ मिलकर अहिंसक संचार पर अपना निःशुल्क ऑनलाइन पाठ्यक्रम शुरू किया। समिति अप्रैल 2020 से पाठ्यक्रम चला रही है और सीबीएसई के सहयोग से इसके देश के कोने–कोने तक पहुंचने की उम्मीद है।

यह पहल महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर की गयी। सीबीएसई ने देशभर के अपने सभी सम्बन्द्ध स्कूलों को नोटिफिकेशन जारी किया है। इसके तहत समिति शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों के लिए पाठ्यक्रम पर आधारित साप्ताहिक व्याख्यान आयोजित करेगी।

इस पाठ्यक्रम के लिए पहले से ही 70,000 प्रतिभागियों ने नामांकन किया है। इस पाठ्यक्रम के संयोजक और डेवलपर डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी समिति, न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी विभिन्न स्कूलों, विश्वविद्यालयों के साथ इस अभिविन्यास कार्यक्रम का संचालन कर रहे हैं।

Credit:PTI/ Representative Image

सर्कुलर डोम में डिजिटल प्रदर्शनी और 360° वीडियो–इमर्सिव अनुभव का उद्घाटन

महात्मा गांधी पर उनके जीवन, उनके संघर्ष, उनके दृष्टिकोण और 'मोहनदास से महात्मा' तक की यात्रा को प्रदर्शित करने वाली एक इंटरैक्टिव डिजिटल प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं उपाध्यक्ष गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति श्री प्रहलाद सिंह के साथ माननीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एवं स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. हर्षवर्धन द्वारा 6 नवम्बर, 2020 को गांधी दर्शन राजघाट में किया गया। इस प्रदर्शनी में 'मल्टीयूजर एंगेजमेंट के लिए स्मार्ट इंटरफेस' और एक डोम में 360 वीडियो–इमर्सिव अनुभव की सुविधाएं हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने एक गोलाकार गुंबद में 360°

माननीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. हर्षवर्धन, माननीय संस्कृति राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार एवं उपाध्यक्ष गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति श्री प्रहलाद सिंह पटेल के साथ डिजिटल डोम के उद्घाटन के अवसर पर।

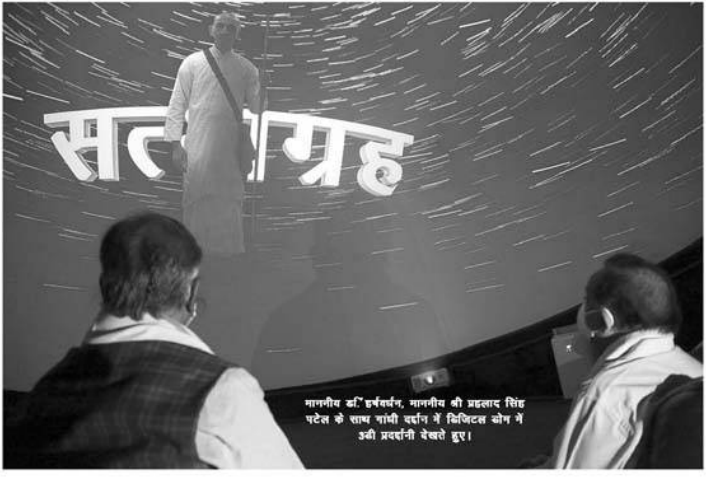

माननीय डॉ. हर्षवर्धन, माननीय श्री प्रहलाद सिंह पटेल के साथ गांधी दर्शन में डिजिटल डोम में 3डी प्रदर्शनी देखते हुए।

माननीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. हर्षवर्धन, माननीय संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं उपाध्यक्ष गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति श्री प्रहलाद सिंह पटेल 360° डिग्री वीडियो इमर्सिव डिजिटल डोम थियेटर का उद्‌घाटन करते हुए।

वीडियो–इमर्सिव अनुभव विकसित करने के लिए वर्चुअल रियलिटी और ऑगमेंटेड रियलिटी (**VR & AR**) के उपकरणों का उपयोग किया। यह परियोजना भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (**IIT**) दिल्ली द्वारा कार्यान्वित की गई है। इसमें महात्मा गांधी के जीवन पर 10 मिनट की अवधि की चार फिल्में (हिंदी और अंग्रेजी दोनों संस्करण) क्रमशः मोहन से महात्मा, अंतिम चरण फ्रीडम फ्रॉम फियर एंड गाधी फॉरएवर और चारों की एक संयुक्त फिल्म का निर्माण और प्रदर्शन किया गया है। महात्मा गांधी के जीवन की घटनाओं के 3डी इमर्सिव एक्सपीरियंस की क्षमता वाले आठ मीटर डोम में 40 दर्शकों (बैठे) या लगभग 60 (खड़े होने) को समायोजित करने की क्षमता है।

इसके अलावा, डिजिटल प्रदर्शनी में लम्बी बहुउपयोगकर्ता इंटरैक्टिव डिजिटल टच–स्क्रीन टेबल (आकारः लगभग 8X2 फीट) के साथ 'बहुउपयोगकर्ता जुड़ाव के लिए स्मार्ट इंटरफेस' है। लगभग छह उपयोगकर्ता एक साथ और स्वतंत्र रूप से तालिका (लंबी सतह के प्रत्येक तरफ तीन खड़े) का उपयोग कर सकते हैं। वे सामग्री के टुकड़ों के साथ बातचीत करके और खींचकर आपस में बातचीत भी कर सकते हैं। प्रदर्शन प्रत्येक उपयोगकर्ता को स्वतंत्र रूप से इंटरैक्टिव और दृश्य–श्रव्य अनुभव भी प्रदान करते हैं। बैकग्राउंड में सॉफ्ट म्यूजिक आगंतुकों को नवीनतम अत्याधुनिक तकनीक से जुड़ने का सुखद अनुभव प्रदान करता है।

डिजिटल प्रदर्शनी को भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा वित्तीय स्वीकृति प्रदान की गई है। इसकी परिकल्पना विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान प्रसार द्वारा की गई है, और इनवॉक्सेल टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड और इंटरएक्टिव 12 द्वारा कार्यान्वित की गई है।

इस अवसर पर बोलते हुए, डॉ. हर्षवर्धन ने महात्मा गांधी पर आधारित परियोजना पर काम करने के लिए प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि गांधीजी का व्यक्तित्व विशाल है। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी के घर जाने के अपने अनुभव को भी साझा किया और कहा कि "यह आत्मनिरीक्षण का क्षण था"। उन्होंने कहा, "महात्मा गांधी ने हमेशा लोगों के हित में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोग की वकालत की।"

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'स्वच्छ भारत मिशन' के दृष्टिकोण को दोहराते हुए, जिसने देश के नागरिकों की विचार प्रक्रिया को बदल दिया है, डॉ हर्षवर्धन ने कहा, "यह स्वच्छ भारत मिशन के कारण है, कि देश ने स्वास्थ्य और स्वच्छता को प्राथमिक स्तर पर ले जाने में बड़ा परिवर्तन देखा है", और कहा, "स्वच्छता और सफाई पर महात्मा गांधी के विचार चिरस्थायी हैं और

यह इस मिशन को आगे बढ़ाने में प्रमुख मार्गदर्शक सिद्धांत रहे हैं"।

इस डिजिटल प्रदर्शनी के माध्यम से महात्मा गांधी के शाश्वत विचारों को आम जनता के सामने लाने की दिशा में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा शुरू की गई परियोजना पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए, डॉ हर्षवर्धन ने इस सफल परियोजना के लिए डीएसटी और समिति की सराहना की और कहा, "हम पूरी दुनिया में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में गौरव प्राप्त कर रहे हैं", आगे कहा, "आज हम देश के सभी स्मारकों को डिजिटल रूप से परिवर्तित करने में सक्षम हैं"। उन्होंने कहा, "यह महत्वपूर्ण है कि हम आज गांधीवादी सिद्धांतों को अपनाएं,

पर से नीचे तक

1. गांधी दर्शन में डोम थियेटर के उद्घाटन के अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए माननीय डॉ. हर्षवर्धन।
2. सभा को संबोधित करते हुए माननीय श्री प्रहलाद सिंह पटेल।
3. अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री दीपंकर श्री ज्ञान, और मंचासीन अतिथिगण।

न कि केवल उनकी पूजा करें"।

अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा, "जबकि महान लोगों की वर्षगांठ और शताब्दी वर्ष एक वर्ष के लिए मनाए जाते हैं, महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती भारत सरकार द्वारा पूरे देश में दो वर्षों के लिए मनाई जायेगी।"

उन्होंने कहा, "हमने विज्ञान और संस्कृति को एक साथ लाने की कोशिश की है ताकि हम युवाओं तक अपनी पहुंच को अधिकतम

उद्घाटन के बाद डोम में गांधी स्मृति की थ्रीडी प्रस्तुति को देखते हुए माननीय डॉ. हर्षवर्धन और माननीय श्री प्रहलाद सिंह पटेल।

कर सकें और उन्हें इस देश की जीवंतता का एहसास करा सकें और साथ ही, देश के दिग्गजों के द्वारा राष्ट्र के निर्माण के कार्यों को समझने में मदद कर सकें।"

श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा, "महात्मा गांधी और पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचार सामान ही हैं। यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि ये विचार शाश्वत रूप से प्रासंगिक हैं। हालांकि उनमें नए आयाम जोड़ना भी उतना ही जरूरी है। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि इनमें से किसी भी विचार को हटाना असंभव है।"

उन्होंने इस उपलब्धि के लिए समिति और डीएसटी को बधाई दी और आशा व्यक्त की कि वे देश के युवाओं को शांति, अहिंसा और आने वाली पीढ़ी के प्रति कृतज्ञता का संदेश देने में सक्षम होंगे।

इससे पूर्व सचिव डीएसटी श्री आशुतोष शर्मा ने स्वागत भाषण दिया। धन्यवाद प्रस्ताय समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने प्रस्तुत किया, उन्होंने इस अवसर पर अतिथियों का अभिनन्दन भी किया।

इस अवसर पर संस्कृति मंत्रालय के सचिव श्री राघवेंद्र सिंह, संयुक्त सचिव, सुश्री निरुपमा कोटरू भी उपस्थित थीं। श्री सच्चिदानंद स्वामी के नेतृत्व में डीएसटी के सदस्यों ने इस अवसर पर '360° वीडियो–इमर्सिव एक्सपीरियंस इन ए सर्कुलर डोम' और 'स्मार्ट इंटरफेस फॉर मल्टीयूजर एंगेजमेंट' डिजिटल प्रदर्शनी का अवलोकन करवाया।

नए संसद भवन के शिलान्यास समारोह में धर्मगुरुओं ने की 'सर्व–धर्म प्रार्थना'

विभिन्न धर्मगुरुओं ने 10 दिसम्बर, 2020 को नए संसद भवन के शिलान्यास समारोह में 'सर्व धर्म प्रार्थना' की। धर्मगुरुओं ने विभिन्न भाषाओं में प्रार्थना की। इसका संयोजन गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने किया।

पुजारियों द्वारा मंत्रोच्चार के बीच, भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने संसद भवन परिसर में नए संसद भवन की आधारषिला रखी। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने एक पट्टिका का भी अनावरण किया।

प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) द्वारा जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार, नया भवन 'आत्मनिर्भर भारत' की दृष्टि का एक आंतरिक हिस्सा है और आजादी के बाद पहली बार लोगों की संसद बनाने का एक ऐतिहासिक अवसर होगा, जो 2022 में स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ पर 'नए भारत' की जरूरतें और आकांक्षाएं का सपना साकार करेगा।

"नया संसद भवन आधुनिक, अत्याधुनिक और ऊर्जा कुशल होगा, जिसमें वर्तमान संसद से सटे त्रिकोणीय आकार के भवन के रूप में अत्यधिक गैर–आक्रामक सुरक्षा सुविधाओं का निर्माण किया जाएगा। लोकसभा मौजूदा आकार से तीन गुना बड़ी होगी और राज्यसभा का आकार भी काफी बड़ा होगा," विज्ञप्ति में कहा गया है।

अन्य नेताओं में केन्द्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह, रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह, केन्द्रीय मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद, वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला, उद्योगपति श्री रतन टाटा भी समारोह में शामिल हुए।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पट्टिका का अनावरण कर संसद मार्ग में नए संसद भवन का शिलान्यास किया। माननीय लोक सभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला, राज्य सभा के उपसभापति श्री हरिवंश के साथ उद्घाटन समारोह में शामिल हुए।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी 10 दिसम्बर, 2020 को नए संसद भवन के शिलान्यास समारोह में लोगों को सम्बोधित करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

नए संसद भवन के शिलान्यास समारोह के अवसर पर आयोजित सर्वधर्म प्रार्थना सभा में विभिन्न धर्मों के धर्मगुरु प्रार्थना करते नजर आ रहे हैं। *फोटो साभार: googleimages ।

दमोह, मध्य प्रदेश

भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा महात्मा गांधी, राम मनोहर लोहिया और पं. दीन दयाल उपाध्याय की मूर्तियों का अनावरण

दमोह के सिंगरमपुर गांव में राज्य स्तरीय आदिवासी सम्मेलन में उपस्थित भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद, जहां उन्होंने महात्मा गांधी, पं. दीनदयाल उपाध्याय और राम मनोहर लोहिया की प्रतिमाओं का उद्घाटन किया। उद्घाटन समारोह के दौरान सभा को सम्बोधित करते हुए संस्कृति मंत्री माननीय श्री प्रहलाद सिंह पटेल स्थाए ।

भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने 7 मार्च, 2021 को बेलाताल दमोह में महात्मा गांधी, राम मनोहर लोहिया और पंडित दीन दयाल उपाध्याय की कांस्य प्रतिमाओं का अनावरण किया। प्रतिमाओं को प्रख्यात मूर्तिकार पद्मश्री श्री राम सुतार द्वारा तराशा गया है। गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने मूर्तियों के निर्माण और उनकी स्थापना का काम करवाया है।

माननीय राष्ट्रपति ने मध्य प्रदेश में दमोह जिले के सिंगोरगढ़ किले में संरक्षण कार्यों का भी उद्घाटन किया और ग्राम सिंगरमपुर में राज्य स्तरीय आदिवासी सम्मेलन को भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम का आयोजन संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार और मध्य प्रदेश के जनजातीय मामलों के विभाग द्वारा किया गया था। श्री रामनाथ कोविंद ने गांव सिंगरमपुर में रानी दुर्गावती की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की इस अवसर पर माननीय राष्ट्रपति ने मध्य प्रदेश में दमोह जिले के सिंगोरगढ़ किले में संरक्षण कार्यों का भी उद्घाटन किया और सिंगोरगढ़ किले के संरक्षण कार्यों की आधारशिला रखी।

उन्होंने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के नवनिर्मित जबलपुर सर्कल का भी उद्घाटन किया। मध्य प्रदेश की माननीय राज्यपाल श्रीमती आनंदी बेन पटेल, मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, केन्द्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और उपाध्यक्ष समिति, श्री प्रहलाद सिंह पटेल, केन्द्रीय इस्पात राज्य मंत्री श्री फग्गन सिंह कुलस्ते, मध्यप्रदेश जनजातीय कार्य विभाग मंत्री श्री मीना सिंह मांडवे और नगर विकास एवं आवास विभाग मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

माननीय राष्ट्रपति ने दमोह के ग्राम सिंगरमपुर में राज्य स्तरीय आदिवासी सम्मेलन को भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम का आयोजन संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार और मध्य प्रदेश के जनजातीय मामलों के विभाग द्वारा किया गया था।

श्री राम नाथ कोविंद ने सिंगरमपुर गांव में रानी दुर्गावती की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

उपस्थित जनों को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि आदिवासी समुदाय का कल्याण और विकास पूरे देश के कल्याण और विकास से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि हमें मिलकर काम करना चाहिए ताकि हमारे आदिवासी भाई–बहनों को बिना अपनी आदिवासी पहचान खोए आधुनिक विकास का लाभ मिले। उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मध्यप्रदेश में एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों के निर्माण एवं संचालन पर विशेष बल दिया जा रहा है। आदिवासी छात्राओं में साक्षरता और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए मध्य प्रदेश में बालिका शिक्षा परिसरों के निर्माण को प्राथमिकता दी जा रही है।

केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) ने सिंगोरगढ़ किले के संरक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन के लिए श्री राम नाथ कोविंद जी को धन्यवाद दिया।

इस भव्य आयोजन में दूर–दूर से हजारों लोग शामिल हुए जिसमें बड़ी संख्या में महिलाओं और बच्चों ने भी भाग लिया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान उन्होंने मनमोहक प्रस्तुतियों का लुफ उठाया।

साबरमती, गुजरात

आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर साबरमती से दांडी यात्रा को हरी झण्डी

ऐतिहासिक दांडी मार्च की 91वीं वर्षगांठ पर भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अहमदाबाद से एक प्रतीकात्मक

दांडी मार्च की 91 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से एक प्रतीकात्मक 25–दिवसीय दांडी मार्च को हरी झंडी दिखाते हुए भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज़ादी के 75 साल पूरे होने पर आयोजित आज़ादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम का भी शुभारम्भ किया।

माननीय संस्कृति मंत्री और समिति के उपाध्यक्ष श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने इस अवसर पर साबरमती से नदियाड तक 110 स्वयंसेवकों की एक टीम के साथ 75 किलोमीटर की दूरी तय की। इस दौरान उन्होंने उन स्थानों का दौरा किया, जहां गांधीजी 1930 के नमक मार्च के दौरान गए थे।

386 किलोमीटर 25 दिवसीय 'दांडी मार्च' को हरी झंडी दिखाई। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इस अवसर पर 'आजादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम का भी शुभारंभ किया। यह महोत्सव 15 अगस्त, 2023 तक चलेगा।

इस अवसर पर माननीय संस्कृति मंत्री एवं उपाध्यक्ष गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति श्री प्रहलाद सिंह ने भी साबरमती से नदियाड तक अपनी पदयात्रा शुरू की। समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान और अन्य अधिकारियों के साथ गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के लगभग 27 स्वयंसेवकों की एक टीम और कुल 110 स्वयंसेवकों की एक टीम का नेतृत्व करते हुए, श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने नदियाड पहुंचने से पहले 75 किलोमीटर की दूरी तय की। नदियाड पहुंचने से पहले, उन्होंने चंदोला तला, असलाली, बरेजा, नवगम, वासना, मातर और उभान की यात्रा की।

माननीय संस्कृति मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल के नेतृत्व में गुजरात में पदयात्रियों द्वारा निकाली गयी दांडी यात्रा की एक झलक।

यात्रा में भाग लेने वालों में समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला, व समिति के अन्य कार्यकर्त्तागण श्री रिज़वान उर रहमान, श्री जगदीश प्रसाद, श्री अरविन्दो मोहन्ती, श्री दिलीप कुमार, श्री नरेन्द्र कुमार, श्री यतेन्द्र सिंह, श्री प्रवीण दत्त शर्मा, श्री पीयूष हलदर, श्री विवेक कुमार, श्री दीपक तिवारी, श्री दीपक पांडे, श्री सुनील कुमार, श्री नवीन बंसल, श्री महेन्द्र सिंह रावत, श्री धर्मपाल, श्री राकेश शर्मा, श्री हरेन्द्र, श्री गणेश, श्री मनीष, श्री धनराज, श्री मनीष कुमार, श्री धर्मराज कुमार, श्री अरविंद कुमार और श्री अरुण सैनी शामिल थे।

पदयात्रा शुरू होने से पहले, निदेशक समिति, श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के स्वयंसेवकों का उत्साह बढ़ाया और उन्हें दांडी यात्रा के महत्व के बारे में

पदयात्रियों और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति की टीम के साथ माननीय संस्कृति मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल के नेतृत्व में निकाली गयी दांडी यात्रा की झलक।

बताया और उन्हें राष्ट्र निर्माण के हित में पूरे उत्साह के साथ भाग लेने के लिए कहा।

माननीय संस्कृति मंत्री और समिति के उपाध्यक्ष श्री प्रहलाद सिंह पटेल के नेतृत्व में यात्री साबरमती आश्रम से चलकर असलाली से गुजरते हुए जैतालपुर पहुंचे, जहां उन्होंने स्वामी नारायण धाम (मंदिर) में भगवान स्वामी नारायण को प्रणाम किया और धाम के महंत श्री पी. पी. स्वामीजी का आशीर्वाद लिया। इसके बाद वह दूसरे दिन बरेजा पहुंचे। अगला पड़ाव नवागाम में था, जहां गांधीजी ने 13 मार्च, 1930 को नमक सत्याग्रह के दौरान विश्राम किया था। खेड़ा गुजरात के माननीय सांसद श्री देवुसिंह चौहान भी श्री प्रहलाद सिंह के साथ शामिल हुए।

14 मार्च को केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं समिति उपाध्यक्ष श्री प्रहलाद सिंह पटेल के नेतृत्व में यात्री नवगाम धर्मशाला से रवाना हुए केन्द्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री माननीय श्री गिरिराज सिंह भी यहाँ से यात्रा में शामिल हुए। वे गोविंदपुरा के प्राथमिक विद्यालय पहुंचे, जहां 1930 में महात्मा गांधी ठहरे थे, जहां स्थानीय लोगों द्वारा पदयात्रियों का भव्य स्वागत किया गया। श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने महात्मा गांधी की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

गुजरात की पवित्र भूमि से यात्रा करते हुए, पदयात्री शाम तक वशना (वासना) बुजर्ग पहुंचे। यात्रा फिर मातर गाँव की ओर बढ़ी, जहाँ महात्मा गांधी 14 मार्च, 1930 की रात को रुके थे और जहाँ उन्होंने प्रार्थना सभा का नेतृत्व किया था। यहां मातर गांव के श्री नटरवाल छोटेलाल परिक सर्वोदय विनय मंदिर में सर्व धर्म प्रार्थना का आयोजन किया गया। यहां श्री प्रहलाद सिंह पटेल सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों का गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

इस अवसर पर जनसभा को सम्बोधित करते हुए श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि राष्ट्र के लिए खुद को फिर से समर्पित करने और भारत को मजबूत, जीवंत और आत्मनिर्भर बनाने के अपने सपनों को जीने की जरूरत है।

संध्या समय हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम में 'नमक सत्याग्रह' पर एक नाटक और एक संगीत प्रस्तुति की गयी।

दांडी यात्रा का चौथा दिन 15 मार्च, 2021 को सुबह मातर से शुरू हुआ। यहाँ पदयात्रियों पर बच्चों और महिलाओं द्वारा गुलाब की पंखुड़ियां बरसते देख कई लोगों की आंखों में आंसू आ गए। मातर से यात्रा दाभान की ओर पहुंची।

दाभान धर्मशाला में ही गांधीजी ने 1930 के दांडी मार्च के दौरान विश्राम किया था। इसके बाद श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने दभान से नदियाड के लिए पदयात्रा का नेतृत्व किया।

यात्री 15 मार्च, 2021 की दोपहर में न्यू इंग्लिश स्कूल और सीबी पटेल आर्ट्स कॉलेज पहुंचे। स्थानीय कलाकारों ने संतों और महात्मा गांधी की भूमि पर कला और संस्कृति की एक समृद्ध रंगीन प्रस्तुति के माध्यम से लोगों का मनमोह लिया। नदियाड के पटेल चौक, जहां महात्मा गांधी ने 1930 के दांडी मार्च के दौरान सभा को सम्बोधित किया था, पहुँचने पर यात्रा का भव्य अभिनन्दन किया गया ।

गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री विजय रमणीकलाल रूपाणी ने यात्रा के समापन स्थल श्री संतराम समाधि स्थान (संतराम मंदिर) तक श्री प्रहलाद सिंह पटेल के साथ मार्च किया।

माननीय श्री प्रहलाद सिंह पटेल, यात्रा के समापन अवसर पर श्री संतराम मंदिर में यात्रियों की एक विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए। उनके साथ गुजरात के मुख्यमंत्री माननीय श्री विजय रमणिकलाल रूपानी भी हैं। मंचासीन अन्य विशिष्ट अतिथिगण भी दिखाई दे रहे हैं।

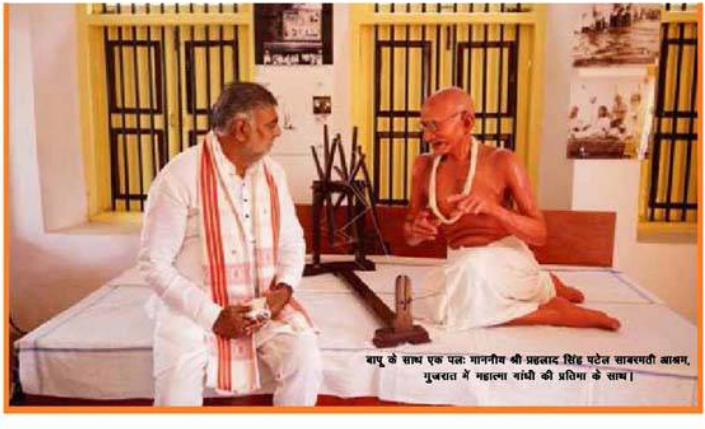

बापू के साथ एक पल: माननीय श्री प्रहलाद सिंह पटेल साबरमती आश्रम, गुजरात में महात्मा गांधी की प्रतिमा के साथ।

गुजरात के नदियाड में संतराम मंदिर का पवित्र कक्ष वह स्थान है, जहां महात्मा गांधी 15 मार्च 1930 को ठहरे थे।

यहाँ श्री प्रहलाद सिंह पटेल के नेतृत्व में 75 किलोमीटर की दांडी यात्रा में समाप्त हुई। श्री पटेल के साथ इस यात्रा में देश के दूर–दराज से 110 पदयात्री (पैदल मार्च करने वाले) शामिल हुए। समापन समारोह में गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री विजय रमणीकलाल रूपाणी खेड़ा से सांसद श्री देवूसिंह चौहान, विधान सभा सदस्य, माननीय श्री विक्रम सिंह और अन्य लोग उपस्थित थे।

चम्पारण बिहार

दांडी मार्च पर संगोष्ठी और आजादी के 75 वर्ष

चम्पारण में कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों के साथ मंच में मधुबन माननीय श्री संजय जायसवाल और माननीय श्री उमाकांत सिंह।

ऐतिहासिक दांडी मार्च की 91वीं वर्षगांठ और आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर समिति ने पश्चिम चम्पारण के राजकीय बुनियादी विद्यालय वृंदाबन स्कूल के सहयोग से 12 मार्च को बृंदाबन, चम्पारण, बिहार में "सत्याग्रह और स्वराज" पर एक सेमिनार का आयोजन किया। इस अवसर पर बिहार से माननीय सांसद श्री संजय जायसवाल और बिहार विधान सभा के माननीय सदस्य श्री उमाकांत सिंह विशिष्ट अतिथि थे। महात्मा गांधी द्वारा स्थापित स्कूल के शिक्षकों और छात्रों ने कार्यक्रम में बहुत उत्साह से भाग लिया।

स्कूल के शिक्षकों और छात्रों द्वारा पदयात्रा भी निकाली गई। यात्रा का नेतृत्व श्री संजय जायसवाल और श्री उमाकांत सिंह ने किया।

इस अवसर पर बोलते हुए, श्री जायसवाल ने स्वतन्त्रता सेनानियों के योगदान और महात्मा गांधी की भूमिका को याद किया। जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ अपने संघर्ष में एक पूरी पीढ़ी को अहिंसक विरोध का नेतृत्व करने के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने ऐतिहासिक चंपारण सत्याग्रह की चर्चा करते हुए चंपारण को महात्मा गांधी की कर्मभूमि कहा। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि बच्चे के समग्र व्यक्तित्व को आकार देने में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और ये राष्ट्र को अपनी सेवाएं कैसे दे सकते हैं। उन्होंने आजादी का अमृत महोत्सव समारोह में विद्यालय के शिक्षकों और छात्रों के योगदान की आवश्यकता पर बल दिया।

ह पर : बिहार के माननीय सांसद श्री संजय जायसवाल, और विधायक श्री उमाकांत सिंह ने बापू कुटीर में गांधीजी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

नीचे : श्री संजय जायसवाल और श्री उमाकांत सिंह ने बुनियादी विद्यालय से बापू कुटीर तक की पदयात्रा का नेतृत्व किया। जिसमें प्रतिभागी बड़े उत्साह के साथ शामिल हुए।

गा□धी स्मृति एवं दर्शन समिति अंतरराष्ट्रीय गांधी अध्ययन एवं शांति शोध केर्न

अंतरराष्ट्रीय कार्य□म

'संघर्ष समाधान, वार्ता और मध्यस्थता में महिलाओं की बढ़ती .दयता' पर ई–संवाद

नारी नैतिक शक्ति, प्रेम और करुणा की भण्डार हैं – विद्या जैन

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा 13 जून, 2020 को "संघर्ष समाधान, वार्ता और मध्यस्थता में महिलाओं की बढ़ती दृश्यता" पर एक अंतरराष्ट्रीय ई–संवाद का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. विद्या जैन, पूर्व एसजी एपीपीआरए और संयोजक, अहिंसा आयोग, आईपीआरए (अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संघ), डॉ. बर्नेडेट मुथिएन, दक्षिण अफ्रीका में सहायक, शोधकर्ता और कवि, अफ्रीकी शांति अनुसंधान संघ के संस्थापक, प्रो. मैट मेयर, सह–महासचिव, आईपीआरए, प्रो. जेनेट गर्सन, (पीस एजुकेटर) शिक्षा निदेशक, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑन पीस एजुकेशन और सुश्री दीना लखहल, कार्यक्रम अधिकारी, ग्लोबल नेटवर्क ऑफ वूमेन पीस–बिल्डर्स प्रमुख वक्ता थे। समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने सत्र का संचालन किया। इस ई–संवाद ने रेखांकित किया कि महिलाओं की आवाज और उनके अधिकार समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। इस अवसर पर शिक्षाविद, लेखक, सामाजिक कार्यकर्ता, संयुक्त राज्य अमेरिका में महिला आन्दोलन की अग्रणी, विभिन्न विश्वविद्यालयों के युवा और अन्य सहित विभिन्न देशों के 105 प्रतिभागी शामिल थे।

सत्र की शुरुआत करते हुए समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने पितृसत्तात्मक समाज और महिलाओं के घरेलू मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने इस युग में महिलाओं को आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित किया। समाज के बारे में बोलते हुए, उन्होंने कहा कि संघर्ष के दौर में शांति वार्ता की बहाली के लिए महिलायें ही सबसे आगे आई हैं।

अपने सम्बोधन में डॉ. विद्या जैन ने बताया कि कैसे पारम्परिक युग से आधुनिक युग में महिलाओं की भूमिका उभरी है। उन्होंने महिलाओं के खिलाफ यौन उत्पीड़न के मुद्दे और इस समय उन पर नियन्त्रण करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि अहिंसा के माध्यम से हम समझ और मेल–मिलाप के सेतु बना सकते हैं। हमारे मन और आत्मा में शांति के साथ, हम अपने सामान्य भविष्य का निर्माण कर सकते हैं, आज की आवश्यकता शांति की संस्कृति बनाने के लिए सक्रिय रूप से सोचने, विश्लेषण करने और कई अंतरराष्ट्रीय गठबंधनों में भाग लेने की है"।

डॉ. जैन ने 'पितृसत्ता को कोरोना वायरस से भी बड़ा वायरस' करार देते हुए कहा कि पुरुषत्व कोविड–19 से अधिक विषैला होता है और जाति, वर्ग, नस्ल, धर्म के सन्दर्भ में सभी असमानताओं में से सबसे व्यापक है। सभी असमानताएं लिंग भेद की हैं। ये गहरी असमानताएं घरों और कार्यस्थलों पर जीवन, पोषण, शिक्षा, आजीविका, अवकाश आदि के हर पहलू तक फैली हुई हैं।

महिलाओं को नैतिक शक्ति, प्रेम और करुणा का भण्डार बताते हुए डॉ. जैन ने कहा कि महिलाएं अनुनय और बातचीत में बहुत अच्छी हो सकती हैं। "इन गुणों को महात्मा गांधी द्वारा फिर से परिभाषित और पुनर्निर्मित किया गया था, जो वास्तव में देखभाल, करुणा और धैर्य के इन तथाकथित नारी गुणों के सार्वभौमिकरण की इच्छा रखते थे", उन्होंने कहा कि "गांधी एक नई महिला का निर्माण करते हैं जिसमें करुणा और साहस है, जो परवाह करने वाली है, लेकिन दृढ़ है और जिसके पास अपनी शुद्धता और सम्मान पर किए गए किसी भी प्रयास की रक्षा करने की नैतिक शक्ति है। यह काली और दुर्गा जैसी शक्तिशाली महिला का निर्माण करता है जो अपने संकल्प से उसके भविष्य के लिए लड़ेगी।

डॉ. बर्नडेट मुथेन ने महिलाओं के खिलाफ हिंसा और वे हर दिन इससे कैसे जूझ रही हैं पर बात की। उन्होंने महिलाओं के खिलाफ सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक हिंसा पर भी लोगों का ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने कहा, "एक व्यक्ति के रूप में हम सभी को महिलाओं के लिए एक ऐसा समुदाय बनाने की जरूरत है जो उन्हें उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान मुहैया कराए।" संघर्ष, शांति और हिंसा से सम्बन्धित मुद्दों को सम्बोधित करते हुए, उन्होंने संरचनात्मक हिंसा, प्रत्यक्ष हिंसा और सांस्कृतिक हिंसा दोनों पर प्रकाश डाला। उसने कहा, "हमारे पसंदीदा शांति गुरुओं द्वारा शांति की इन अवधारणाओं का इस्तेमाल सबसे पहले मार्टिन लूथर किंग ने अपने 1953 के "लेटर फ्रॉम ए बर्मिंघम जेल" में किया था, जिसमें उन्होंने "नकारात्मक शांति" और "सकारात्मक शांति के बारे में लिखा था।" इससे पहले भी, जेन एडम्स के 1907 के शांति के नए आदर्श इस विषय पर चर्चा करते हैं।"

उन्होंने राज्य बनाम समुदाय की विभाजनकारी भूमिका को रेखांकित करते हुए उनके द्वारा निभाई गई भूमिका को समझने का आह्वान किया। 'आम महिलाएं चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बीच खुले में जीवन से जूझ रही हैं और शांतिपूर्ण सुलह की दिशा में काम कर रही हैं। जैसा कि बेट्टी रियरडन ने बताया है, ये हमारे रोजमर्रा के नायक हैं, हमारे सामान्य शांतिदूत हैं, ये महिलाएं इतनी अकथनीय हिंसा के बीच अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हैं। यह वे हैं जो प्रशंसा, वेतन और लाभ, शांति पुरस्कार और नकद, समर्थन और उत्सव के पात्र हैं। क्योंकि, यह आम तौर पर अनसुनी महिलाएं होती हैं, जो राज्य या अंतरराष्ट्रीय समूह में काम करती हैं, जिन्हें हमें सबसे ज्यादा जरूरत है।'

यह केप लैट्स पर सामान्य महिलाएं हैं। जो निर्वाह के लिए गैंगस्टर की गोलियों को चकमा दे रही हैं। ये महिला, 'हमारी रोजमर्रा की नायिका' हैं, हमारे सामान्य शांतिदूत हैं, ये महिला इतनी अकथनीय हिंसा के बीच अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हैं। यह वे हैं जो प्रशंसा, वेतन और लाभ, शांति पुरस्कार और नकद, समर्थन और उत्सव के पात्र हैं। क्योंकि, यह आम तौर पर अनसुनी महिलाएं, होती हैं, जो राज्य या अंतरराष्ट्रीय समूह में काम करती हैं, जिनकी हमें सबसे ज्यादा जरूरत है।

निष्कर्ष में डॉ. बर्नेस्टे ने कहा, "जब हिंसा होती है, तो उसका शिकार न केवल पीड़ित होता है। बल्कि उसका शिकार हिंसा करने वाला भी बनता है। हिंसा करने से पहले और हिंसा के कृत्यों के माध्यम से अपराधी को क्रूर बनाया जाता है। हिंसा के गवाह भी विकृत आघात से पीड़ित हैं। इसलिए, जब हिंसा होती है तो पूरा समाज पीड़ित होता है। हिंसा से कोई भी अछूता नहीं है। फिर भी शांति से सभी को लाभ होता है।" उन्होंने आगे बुर्किना फासो के राष्ट्रपति थॉमस संकरा को उद्धृत किया: "हम महिलाओं की मुक्ति के बारे में इसलिए बात नहीं करते है कि यह एक करुणापूर्ण कार्य है। यह एक बुनियादी आवश्यकता है। स्त्रियाँ आधी दुनिया का प्रतिनिधित्व करती हैं।"

प्रो. मैटमेयर ने महिला शांति निर्माता के रूप में गांधीवादी अध्ययन पर आधारित जानकारी दी व महिलाओं का विकास, अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने व महिला नेतृत्व के लिए संस्थानों के निर्माण पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि "केवल एक प्रतीकात्मक तरीके से महिलाओं की दृश्यता को बढाने की जरूरत है।" महात्मा गांधी की पौत्री, पूर्व अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्य और सांसद श्रीमती इला गाँधी का ज़िक्र करते हुए प्रो. मैट ने कहा कि महात्मा गांधी का मानना था कि ज़मीनी स्तर पर काम करना आवश्यक है। किसी समाज के साथ काम करते वक्त यह अनुभव करें कि वह समाज उनके साथ काम करने के लिए क्या अनुभव कर रहा है। हमें उनकी बात सुननी चाहिए कि वे क्या कह रहें हैं। यही एक तरीका है, जिससे हम वास्तव में समुदायों को सशक्त और शिक्षित बना सकते हैं। इसके लिए हमें लोगों के कौशल का विकास करना होगा और बहुत अधिक अवसरों के साथ महिलाओं को सशक्त बनाना होगा।

अफ्रीकी मुक्ति आन्दोलनों का ज़िक्र करते हुए, प्रो. मेयर ने कहा, "विशेष रूप से पिछले दशकों में किये गये सभी शोध सभी वैज्ञानिक साक्ष्य इस स्पष्ट और सरल तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि महिलाएं, शांति–निर्माता संघर्ष समाधान, बातचीत, मध्यस्थता, वैकल्पिक संस्थान और रचनात्मक कार्यक्रम निर्माण के सभी स्तरों पर लगी हुई हैं।" उन्होंने मोज़ाम्बिक की नेता ग्राका मचेल के स्वतंत्रता के बाद के शिक्षा मंत्री के तौर पर महत्वपूर्ण योगदान के बारे में भी बात करते हुए कहा कि कुछ मायनों में मचेल ने बच्चों और युवाओं के अधिकार के सन्दर्भ में एक वैश्विक चेतना के प्रमुख प्रेरक के रूप में काम किया। इसलिए महिलाओं, बच्चों और युवाओं पर काम करना ग्रेका के नेतृत्व का केन्द्र बिंदु रहा है, जिसे संयुक्त राष्ट्र ने भी संघर्ष और हिंसा और युद्ध पर अपने दृष्टिकोण में संज्ञान में लिया था।

प्रो. मेयर ने महिला नेताओं की कहानियां भी साझा की। उन्होंने ब्रिक्स पर नए उप–साम्राज्यवादी ब्राजील रूस भारत चीन और दक्षिण अफ्रीका पर बौद्धिक कार्य करने वाली एना गार्सिया, मेक्सिको में स्वदेशी महिलाओं और महिला नेताओं की कहानियाँ, कश्मीरी महिलाओं की गाथाओं, पश्चिमी पापुआ और पश्चिमी सहारा के नए आन्दोलनों की नई पीढ़ियों का नेतृत्व करने वाली महिलाओं, जो संरचनात्मक संस्थागत पारस्परिक और सभी प्रकार की हिंसा के सामने नागरिक प्रतिरोध की रणनीति की वकालत करने वाले साधनों और साध्यों के बीच सम्बन्धों को देख रही हैं, का ज़िक्र किया। उन्होंने विशेष रूप से डॉ. बेट्टी रियरडन के बारे में भी उल्लेख किया, जिन्होंने उन्हें सिखाया कि शांति शोधकर्ता और कार्यकर्ताओं के रूप में उनका काम केवल संघर्ष को हल करना नहीं था, बल्कि विशेष रूप से युवा महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए रचनात्मक संघर्ष को बढ़ावा देना और युद्ध को समाप्त करना था। उन्होंने एक अश्वेत नागरिक की मौत के खिलाफ अमेरिका में आन्दोलन पर अपने इनपुट भी साझा किए और तत्काल सकारात्मक सामाजिक राजनीतिक और पर्यावरणीय परिवर्तन के लिए महिलाओं की दृश्यता और वास्तविक शक्ति को बढ़ाने का आह्वान किया।

डॉ. जेनेट गर्सन ने संघर्ष समाधान के आदर्श वाक्य पर बात की और दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण पर हावी हुए बिना हम इसे और अधिक सामंजस्यपूर्ण तरीके से कैसे दूर कर सकते हैं, पर चर्चा की। उन्होंने लोगों से एक अहिंसक शांति निर्माता के रूप में शांति पहल में शामिल होने और वैश्विक नागरिक समाज व शांति–निर्माताओं के समुदाय में शामिल होने का आह्वान किया। उन्होंने एक महिला के रूप में अपनी भूमिका के बारे में बताया, कैसे उनका पालन–पोषण हुआ, कैसे 'अच्छी पत्नी' बनें और 'सुंदर और ग्रेसफुल' कैसे बनें। उन्होंने महिलाओं को पुरुष की सम्पत्ति होने से इन्कार करते हुए कहा कि इसलिए यह आवश्यक है कि, मज़बूती के लिए "हम हजारों–हजार महिलाओं ने वास्तव में बातचीत कर एक–दूसरे की मदद की। एक साथ काम करके हम अपनी भावनाओं के बारे में बात कर सकते थे और हम कार्यों के लिए रणनीति बना सकते थे और हम उन कार्यों में एक–दूसरे का समर्थन कर सकते थे और इस तरह हमने कई आयामों में महिलाओं के लिए जगह बनाई। उन्होंने आगे कहा, "हमने संवाद, सामुदायिक निर्माण का अभ्यास किया और संघर्ष समाधान के लिए काम किया। हमने उन समस्याओं को चुनौती देने के सम्बन्ध में एक साथ सोचने और सीखने का अभ्यास किया जिनका हम सामना कर रहे थे।

डॉ. जेनेट ने संघर्ष की कहानियों को फिर से लिखने और परस्पर विरोधी संवादों को फिर से तैयार करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "विचार यह था कि हम अहिंसक कैसे हो सकते हैं और दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को खत्म किए बिना, चिल्लाए बिना समस्याओं का समाधान कैसे कर सकते हैं। हम या मैं कैसे कह सकते हैं कि संघर्ष समाधान एक व्यक्ति या एक समूह या एक समुदाय का दूसरे समुदाय के खिलाफ एक संघर्ष की कहानी को फिर से लिखने का एक अभ्यास है, हम चर्चा और संवाद के माध्यम से कहानी को फिर से बनाते हैं और खुले तौर पर सुनते और पहचानते हैं कि हमारे पास क्या समान है और हम कैसे परस्पर जुड़े हुए हैं और मौजूदा परस्पर विरोधी स्थितियों को बातचीत और मध्यस्थता से हल करने के लिए अपनी संसाधनशीलता, अपनी सीमाएं और हमारी क्षमताएं को कैसे उपयोग में लाते हैं।"

उन्होंने डॉ. बेट्टी रीर्डन के बारे में भी उल्लेख करते हुए कहा कि, वे इस विचार को चुनौती देने में बहुत सक्रिय रहे हैं कि केवल सरकारें ही बोल सकती हैं और संयुक्त राष्ट्र में मानवाधिकारों के मुद्दे से सम्बन्धित नीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि किसी भी प्रकार की हिंसा के खिलाफ महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कई लड़ाइयाँ जीती गई हैं। प्रो. जेन ने कहा कि "ये ऐसी लड़ाई नहीं हैं जो केवल जीती जाती हैं, ये ऐसे संघर्ष नहीं हैं जिन्हें आसानी से सुलझा लिया जाता है, बल्कि ये निरन्तर चलने वाले संघर्ष हैं, जिन पर सतर्कता बरती जाती है ... वे सामुदायिक निर्माण, संवाद, बातचीत, मध्यस्थता, संघर्ष समाधान के कौशल और संयुक्त राष्ट्र स्तर पर वैश्विक अंतरराष्ट्रीय या वैश्विक नागरिक समाज स्तर पर नीति वार्ता, निर्माण और निर्णय लेने और आगे बढ़ने के लिए रणनीति का आयोजन करने के लिए उन सभी कौशलों का उपयोग करने में विचार–विमर्श करते हैं।"

शांति निर्माताओं के वैश्विक नेटवर्क कार्यक्रम अधिकारी डॉ. दीना लखेल ने कहा कि लैंगिक असमानता संघर्ष का प्रमुख चालक है, अगर हम दूसरों को बदलने के बारे में सोचते है तो वह बदलाव भीतर से आना चाहिए और यह महिलाओं को राजनीतिक, संरचनात्मक, सांस्कृतिक, आर्थिक रूप से मजबूत बनाने से होगा। ताकि आने वाली पीढ़ियों को इन संघर्षों और असमानताओं का अनुभव न करना पड़े, जिनका ये हिस्सा रही हैं और यदि शांति निर्माण प्रक्रियाओं में महिलाओं की भागीदारी, स्थायी शांति को हमारी विविधताओं और समुदायों को शामिल करना है।

डॉ. दीना ने महिला शांति निर्माताओं के अपने वैश्विक नेटवर्क के बारे में बात करते हुए कहा कि उनका संगठन 40 से अधिक विभिन्न देशों के 100 से अधिक महिला अधिकार संगठनों और नागरिक समाज का एक अंतरराष्ट्रीय गठबंधन है, जो संघर्ष या मानवीय संकट अनुभव कर रही महिलाओं के लिए काम करता है। हम संयुक्त राष्ट्र के साथ सरकारों के साथ अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ काम करते हैं। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र इस साल अपनी 75वीं वर्षगांठ मना रहा है। 75 साल पहले संयुक्त राष्ट्र को मानवाधिकारों और विकास के साथ–साथ अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने का काम सौंपा गया था। लेकिन "महिलाओं और शांति व सुरक्षा पर सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव को अपनाने के 20 साल पहले ही औपचारिक रूप से यह माना गया था कि महिलाओं ने युद्ध और संघर्ष को अलग तरह से अनुभव किया है। उस संघर्ष का महिलाओं, युवतियों और लड़कियों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। इसने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक रूप से महिलाओं को बहिष्कृत और हाशिए पर रखकर हर संभव तरीके से लैंगिक असमानताओं को बढ़ाया। यौन हिंसा और बलात्कार को युद्ध के एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया गया, महिलाओं और लड़कियों के लिए निरक्षरता की उच्च दर थी, जबरन बाल विवाह की संख्या बढ़ी। शरणार्थी व अंतरराष्ट्रीय और आंतरिक रूप से विस्थापित आबादी में महिलाओं और लड़कियों का अधिक प्रतिनिधित्व हुआ।

> **ये ऐसी लड़ाई नहीं हैं जो केवल जीती जाती हैं, ये ऐसे संघर्ष नहीं हैं जिन्हें आसानी से सुलझा लिया जाता है, बल्कि ये निरन्तर चलने वाले संघर्ष हैं, जिन पर सतर्कता बरती जाती है——वे सामुदायिक निर्माण, संवाद, बातचीत, मध्यस्थता, संघर्ष समाधान के कौशल और संयुक्त राष्ट्र स्तर पर वैश्विक अंतरराष्ट्रीय या वैश्विक नागरिक समाज स्तर पर नीति वार्ता, निर्माण और निर्णय लेने और आगे बढ़ने के लिए रणनीति का आयोजन करने के लिए उन सभी कौशलों का उपयोग करने में विचार–विमर्श करते हैं।**

उसने यह भी कहा कि जबकि सुरक्षा परिषद वह निकाय है जिसने 1325 को अपनाया, "यह वास्तव में महिलाओं के नेतृत्व वाले नागरिक समाज संगठनों का एक उत्पाद था, जो सुरक्षा परिषद द्वारा इसे कागज पर अपनाने से बहुत पहले से ही इसका समर्थन कर रहे हैं यह वास्तव में महिलाओं के अधिकारों या संगठनों और नागरिक समाज के जमीनी स्तर पर हैं जो इन (डब्ल्यूपीएस) महिला शांति और सुरक्षा प्रस्तावों में प्राण फूंक रहे हैं। यह स्थानीय महिलाएं हैं जो जमीन पर आवश्यक कार्यों में प्रस्तावों का निपटान कर रही हैं। जो उन्हें भागीदारी और नेतृत्व और निर्णय लेने और संघर्ष की रोकथाम और शांति निर्माण की मांग के लिए उपकरणों के रूप में उपयोग कर रही हैं ताकि आने वाली पीढ़ियों को युद्ध और संघर्ष और असमानता का अनुभव न हो।

डॉ. दीना ने अफसोस जताया कि ज़मीनी स्तर पर महिला अधिकार संगठनों और शांति निर्माण संगठनों के काम को मीडिया और कभी–कभी शिक्षाविदों द्वारा संयुक्त राष्ट्र सहित अंतरराष्ट्रीय संगठनों द्वारा सरकारों द्वारा पर्याप्त रूप से मान्यता या समर्थन नहीं दिया जाता है। उन्होंने कहा, "अब हमारे पास लैंगिक असमानता और संघर्ष के बीच सम्बन्ध के अधिक से अधिक सबूत हैं", आगे कहा, "लिंग असमानता संघर्ष के प्रमुख चालकों में से एक है और साथ ही लैंगिक समानता शांति की एक प्रमुख प्रेरक शक्ति है। हमारे पास अत्यधिक अनुभवजन्य साक्ष्य हैं कि महिलाओं की भागीदारी और शांति प्रक्रियाओं का शांति और सुरक्षा और शांति समझौतों के स्थायित्व पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सतत् शांति को समावेशी होना चाहिए और सभी क्षेत्रों की महिलाओं की भागीदारी की विविधता की जरूरतों और प्राथमिकताओं और वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित

करना चाहिए।

उन्होंने केवल संख्याओं और कमरे में महिलाओं की भौतिक उपस्थिति से परे देखने की आवश्यकता की ओर इशारा करते हुए निष्कर्ष निकाला और कहा, "इसके बजाय हमें सत्ता के पदों पर विविध महिलाओं के प्रत्यक्ष वास्तविक और औपचारिक समावेश के रूप में सार्थक भागीदारी को परिभाषित करना होगा जो परिणाम को प्रभावित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि "सार्थक भागीदारी को सक्षम करने के लिए विविध महिलाओं के काम को महत्व देने और वैध बनाने और परामर्श के लिए बोलने के बजाय उनके लिए खुद के लिए बोलने के अवसरों को बनाने और सुरक्षित रखने की आवश्यकता है और महिलाओं को चाहिए एजेंडा सेट करने और आकार देने और उनकी भागीदारी के वास्तविक लाभों का अनुभव करने का अवसर दिया जाना चाहिए।

शिक्षक कॉलेज, कोलंबिया विश्वविद्यालय में शांति शिक्षा केन्द्र और शांति शिक्षा स्नातक डिग्री कार्यक्रम के संस्थापक और निदेशक डॉ. बेट्टी रियरडन, शांति शिक्षा में एक नेता और मानवाधिकार शिक्षा में एक विद्वान और कई प्रमुख महिला कार्यकर्त्ताओं के लिए एक संरक्षक, ने अपने अनुभव साझा किए इस अवसर पर और अपनी आशा और प्रसन्नता व्यक्त की पहली ज़मीनी स्तर में से एक चर्च आन्दोलन के भीतर था, जिसे उसने कहा, "सभी संस्थान पितृसत्ता से संक्रमित थे"। उन्होंने आगे कहा, "इन पिछले हफ्तों के दौरान हमारी सड़कों पर रहने वाली युवतियों और उन युवतियों के लिए जो 1325 का काम कर रही है, उन युवतियों की गहराई और विविधता और युवा महिलाओं की समृद्धता को देखना अद्भुत है। जलवायु संकट को पूरी दुनिया के सामने लाया है।"

अंतरराष्ट्रीय ई–संवाद का समापन महात्मा गांधी, नेल्सन मंडेला और

सार्थक भागीदारी को सक्षम करने के लिए विविध महिलाओं के काम को महत्व देने और वैध बनाने और परामर्श के लिए बोलने के बजाय उनके लिए खुद के लिए बोलने के अवसरों को बनाने और सुरक्षित रखने की आवश्यकता है और महिलाओं को चाहिए एजेंडा सेट करने और आकार देने और उनकी भागीदारी के वास्तविक लाभों का अनुभव करने का अवसर दिया जाना चाहिए।

मार्टिन लूथर किंग पर पाकिस्तान की सुश्री रुमाना द्वारा "शांति" पर एक कविता के साथ हुआ।

"वैश्विक पर्यावरण संकट से लड़ने के लिए आज मानव परस्पर निर्भरता क्यों मायने रखती है" विषय पर ई–सम्मेलन

नोबल इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी (यूएसए) के सहयोग से समिति ने 20 जून, 2020 को निम्नलिखित प्रमुख वक्ताओं के साथ "वैश्विक पर्यावरण संकट से लड़ने के लिए मानव परस्पर निर्भरता क्यों मायने रखती है" पर एक अंतरराष्ट्रीय ई–सम्मेलन का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में पद्मश्री अशोक भगत, संस्थापक सचिव विकास भारती बिशुनपुर, झारखण्ड, प्रो. डॉ. रोजर हैसेल, अध्यक्ष नोबल इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी (यूएसए), प्रो. डॉ. बिस्वजीत (बॉब) गांगुली, चांसलर और सीईओ नोबल इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी (यूएसए), नोबल इंस्टीटयूशन फॉर एनवायरनमेंट पीस (कनाडा) के अध्यक्ष और सीईओ और प्रोफेसर डॉ. मारिओ रेकी, डीन ऑफ स्टडीज, एनआईयू, यूएसए। इस ई–सम्मेलन का उद्घाटन समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने किया। चर्चा में दुनिया भर के 50 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। नोबल यूनिवर्सिटी की प्रो. तनिमा भट्टाचार्जी ने समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाग्यास कुण्डू के साथ सत्र का संचालन किया।

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने अपना स्वागत भाषण देते हुए कहा कि महामारी ने हमें दुनिया से जुड़ने, उनकी संस्कृति और परम्पराओं को समझने और हमारे ज्ञान के आधार को विकसित करने का अवसर दिया है।" उन्होंने कोविड से जुड़े सकारात्मक पक्ष पर चर्चा करते हुए कहा कि महामारी ने पर्यावरण को वापस ला दिया है, और इससे पर्यावरण का कायाकल्प शुरू हो गया है। उन्होंने पर्यावरण की सुरक्षा का आह्वान किया जो अब मानव जाति के सामने एक बड़ी चुनौती है। यह कहते हुए कि मानव जाति ने अपने लालच के लिए पर्यावरण को नष्ट कर दिया है। उन्होंने आगाह किया, "यदि पर्यावरण की गम्भीर स्थिति ठीक नहीं होती, तो मानव जाति के लिए जीवित रहना मुश्किल हो जाएगा।"

सभा को सम्बोधित करते हुए, सत्र की अध्यक्षता करने वाले पद्मश्री श्री अशोक भगत ने पृथ्वी की सभी प्रजातियों, विशेष रूप से मनुष्यों के अस्तित्व के लिए सबसे आवश्यक तत्व और मानदण्ड प्राकृतिक संसाधनों को माना। उन्होंने पर्यावरण के संरक्षण की जोरदार वकालत की। उन्होंने कहा कि कोविड–19 महामारी ने पूरी दुनिया को परेशान कर दिया है, लेकिन गांवों में लोग अपनी आत्मनिर्भर भावना और प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों में अपने दृढ़ विश्वास के कारण महामारी से लड़ रहे हैं, जिसे उन्होंने वर्षों से संरक्षित किया है। उन्होंने कहा, "मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं जो समुदाय के बिना जीवित नहीं रह सकते। अन्योन्याश्रितता हमारे अस्तित्व का एक स्वाभाविक हिस्सा है। महामारी से पहले हमने इस अन्योन्याश्रयता को हल्के में लिया था। अब आत्म–साक्षात्कार का समय आ गया है और हम ऐसे अनिश्चित और परीक्षण के समय में इन अन्योन्याश्रितताओं पर फिर से विचार कर रहे हैं।"

उन्होंने पर्यावरणीय संकट पर भी विमर्श किया। उन्होंने कहा, "पर्यावरण संकट अप्रत्याशित हैं और अक्सर मनुष्य में परस्पर निर्भरता की समीक्षा, विश्लेषण, पुनर्गठन और मजबूत करने के परिणामस्वरूप होते हैं। "वर्तमान वैश्विक संकट परस्पर अधिकारों के मुद्दों के व्यापक स्पेक्ट्रम और और कैसे उन्हें समझा और सुलझाया जा सकता है, पर चर्चा करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करता है।"

उन्होंने कहा कि विकास भारती तीन दशकों से अधिक समय से आदिवासियों के साथ काम करने, उनके बीच रहने, उनसे सीखने, उन्हीं लोगों के साथ काम करने और योजना बनाने की रणनीति अपनाकर आदिवासियों के साथ काम कर रहा है। श्री अशोक भगत ने पारम्परिक प्रथाओं पर सामुदायिक विश्वास के निर्माण करने, स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को बढ़ावा देने और सामुदायिक स्तर पर उन्हें प्रचारित करने के महत्व पर जोर दिया।

उन्होंने कहा कि "महामारी, मानव जाति के सामने आने वाली कई सामूहिक–कार्रवाई समस्याओं में से एक है। उन्होंने कहा ये गैर–अस्तित्ववादी खतरे हैं। रोजमर्रा की आर्थिक गतिविधियाँ आधुनिक जीवन के सामूहिक, जुड़े हुए चरित्र को प्रकट करती हैं" उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि आदिवासियों और उनके जंगलों को पर्यावरण की रक्षा के लिए अछूता छोड़ दें।

वैज्ञानिक प्रो. डॉ. विस्वजीत (बॉब) गांगुली ने हरित प्रौद्योगिकी और अन्य कार्यों के बारे में अपने विचार साझा किए। उन्होंने नोबल इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी द्वारा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में किये जाने वाले शोध कार्यों की जानकारी दी। प्रो. गांगुली ने टोरंटो विश्वविद्यालय में अपने सहयोगी प्रो. रोजर आईसी हंसेल के साथ 'पर्यावरण शांति' की अवधारणा बनाने का जिक्र करते हुये, विभिन्न लागू प्रौद्योगिकियों की जानकारी दी, जो उन्होंने और उनकी टीम ने 'पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण' के क्षेत्र में विकसित की थी। उन्होंने महात्मा गांधी, मदर टेरेसा स्तर जोसेफ रोटबाल्ट को अपना प्रेरक बताया। यह कहते हुए कि उनका मिशन दुनिया भर में 'पर्यावरण शांति' की अवधारणा को बढ़ावा देना है। प्रो. गांगुली ने स्वामी विवेकानंद के दृष्टिकोण का भी उल्लेख किया और कहा, "हमें पर्यावरणीय संकट से लड़ने के लिए सभी प्रौद्योगिकियों के साथ एकजुट होना होगा और इसे बढ़ाना भी होगा। उन्होंने कहा कि मानव जाति के बीच इस चेतना को जाग्रत करना है कि हमारे पास कोई वैकल्पिक ग्रह नहीं है"।

श्री अशोक भगत की भावनाओं को प्रतिध्वनित करते हुए, प्रो. डॉ. मारिजो रेडी ने समाज की प्रमुख संरचनाओं पर प्रकाश डाला। अपनी प्रस्तुतिः "पशु व्यवहार, मानव प्रतिस्पर्धा, मानव सहयोग और हमारी धरती माता के लिए करुणा की मिश्रित आशा" के माध्यम से डॉ. रेडी ने विषम और सम के दृष्टान्तों के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया। विभिन्न स्थितिगत विश्लेषणों के माध्यम से, उन्होंने कहा कि "विज्ञान का उपहार संशोधन है और कमी–कमी नए प्रयोग से भी अजीब प्रतिक्रियाएं होती हैं।"

डॉ. रेडी ने हिंसा की उत्पत्ति के विचारों पर प्रकाश डाला और हिंसा के मूल कारणों के बारे में मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, सामाजिक और राजनीतिक विचारों की ओर इशारा किया और कहा, "जब कोई सोचता है कि उसके पास कारणों के बारे में एक विचार है, और कुछ प्रकाशित करने के लिए तैयार है, तब नियम का अपवाद सामने आता है और इसलिए हमें वापस जाना होगा, और अधिक शोध करना होगा"। उन्होंने व्यवहारवादी दृष्टिकोण के बारे में भी बात की और व्यवहार के विकासवादी इतिहास की ओर इशारा किया। उन्होंने व्यवहार के अनुकूल लाभ सहित विकास प्रक्रियाओं (शारीरिक और मनोवैज्ञानिक) पर भी चर्चा की कि इसे क्यों बनाए रखा जाता है पर भी विमर्श किया।"

महामारी, मानव जाति के सामने आने वाली कई सामूहिक–कार्रवाई समस्याओं में से एक है। उन्होंने कहा ये गैर–अस्तित्ववादी खतरे हैं। रोजमर्रा की आर्थिक गतिविधियाँ आधुनिक जीवन के सामूहिक, जुड़े हुए चरित्र को प्रकट करती हैं।

डॉ. रेडी ने कहा, "निशाचर की तरह, इंसान हर जगह दुनिया को 'हम' और 'उन्हें' में विभाजित करते हैं, कमी–कभी समूहों के बीच अस्पष्ट सीमाओं के साथ", "जब हम उन सांस्कृतिक लक्षण को पाते हैं, जो सार्वभौमिक हैं या लगभग सार्वभौमिक हैं। यह निशाचर तिलचट्टे को खोजने जैसा है। कुछ अपवाद हो सकते हैं, लेकिन एक निश्चित प्रवृत्ति है जो बताती है कि व्यवहार या वर्गीकरण प्रक्रिया के लिए कुछ कठिनाइयाँ हैं"।

शांति, प्रेम और आनन्द को मानव जाति के लिए महान लक्ष्य बताते हुए, उन्होंने कहा कि "वे वही हैं जो हमारी प्रजातियों के लिए मायावी साबित हुए हैं और अजीब तरह से लगभग हर कोई दावा करता है कि वे शांति चाहते हैं। हालाँकि, हम में से अधिकांश को यह भी संदेह है कि हम स्थायी शांति की स्थिति में होंगे या नहीं, यदि यह किसी अन्य व्यक्ति या समूह के लिए नहीं होता जो अपने क्रूर स्वभाव के कारण हमारे लक्ष्य को नहीं समझते हैं।"

उसने आगे कहा कि जब हम आम तौर पर गृह के विनाश में अपनी भूमिका नहीं देखते हैं, तो हम आम तौर पर पारस्परिक संघर्षों में अपनी भूमिका देखते हैं, हम नुकसान को कम करके गृह के विनाश में अपने व्यक्तिगत योगदान को कम करके आंकते हैं। उन्होंने कहा कि "मैं–तू द्विभाजन के लचीलेपन ने बाहरी उत्पीड़न के खिलाफ एक बचाव भी प्रदान किया है।" यह उल्लेख करते हुए कि पर्यावरण पर हमला हो रहा है, मानव जाति ने लम्बे समय से अन्य प्रजातियों के शेष क्षेत्रों में जाने

और अपने स्वयं के उपयोग के लिए अपने संसाधनों के इस्तेमाल के अधिकार का दावा किया है, लेकिन इस महामारी ने वन्यजीवों को अपने कुछ आवासों को पुनः प्राप्त करने का अवसर दिया है। उन्होंने कहा कि संसाधनों के बड़े पैमाने पर दोहन ने आपूर्ति को कम कर दिया है, भले ही विश्व जनसंख्या और खपत स्तर में वृद्धि हुई है।

उन्होंने स्वामी विवेकानंद के विश्व दृष्टिकोण का उल्लेख करते हुए और मानव जाति से आम समस्याओं के खिलाफ एक समूह के रूप में एक साथ आने की अपील करते हुए कहा कि "साक्षरता एक फीड–बैक तंत्र प्रदान करती है जो हमारे विश्व दृष्टिकोण को आकार देती है।

प्रो. डॉ. रोजर हेंसल ने अपने सम्बोधन में आशा व्यक्त की कि महामारी पर्यावरण संकट से लड़ने के लिए लोगों का एक वैश्विक नेटवर्क

जब हम आम तौर पर गृह के विनाश में अपनी भूमिका नहीं देखते हैं, तो हम आम तौर पर पारस्परिक संघर्षों में अपनी भूमिका देखते हैं, हम नुकसान को कम करके गृह के विनाश में अपने व्यक्तिगत योगदान को कम करके आंकते हैं।

तैयार करेगी और मानव जाति के विवेक में बदलाव लाने की दिशा में काम करेगी और हमारे सामाजिक कौशल का उपयोग आसपास की प्रजातियों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए करेगी।

कई विकासशील देशों के लिए प्राकृतिक संसाधन सम्पदा का दोहन महान परिवर्तनकारी अवसर है। संसाधन निष्कर्षण साठ से अधिक निम्न–आय वाले देशों के लिए निर्यात, निवेश और सरकारी राजस्व की संभावना का सबसे बड़ा स्रोत उत्पन्न करता है। हालांकि, भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने की क्षमता के साथ, कुप्रबंधन, आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक क्षति और संघर्ष एक उच्च लागत वहन कर सकता है।

अपने दृष्टिकोण को साझा करते हुए, डॉ. मुस्तफिजुर रहमान, अध्यक्ष, लोकगीत अध्ययन विभाग, इस्लामिक विश्वविद्यालय, बांग्लादेश ने कहा, 'अपने निष्कर्षण और भूमि संसाधनों के प्रबंधक के रूप में, सरकारों के पास निष्कर्षण प्रक्रिया को प्रबंधित और विनियमित करने और प्राकृतिक सम्पदा को वर्तमान और भावी पीढ़ियों दोनों के लिए सतत समृद्धि में बदलने की जिम्मेदारी है। इसमें भूमि का सुनिश्चितता और विशेष रूप से ग्रामीण, गरीबों की सुरक्षा शामिल है। इसके अलावा, कंपनियों को यह सुनिश्चित करके न्यूनतम कानूनी आवश्यकताओं से परे कदम उठाने चाहिए कि वे व्यक्तियों के अधिकारों का उल्लंघन नहीं करते है और उन्हें उच्च पर्यावरण, सामाजिक और मानवाधिकार मानकों का पालन करने का प्रयास करना चाहिए। इसका अर्थ है भ्रष्टाचार से बचना, सतत विकास परिणामों में योगदान देना, और प्रासंगिक परियोजना जानकारी को सार्वजनिक और सुलभ बनाना। हमारे स्थायी निवास के लिए मनुष्य को धरती माता के साथ अनुकूल व्यवहार करने में विचारशील होना चाहिए। पर्यावरण केवल एक शब्द नहीं है बल्कि एक प्रक्रिया है और हमें अपनी समझदारी भरी जिम्मेदारियों और कार्यों से सामूहिक रूप से इसकी रक्षा करने की आवश्यकता है।

मानसिक और शारीरिक कल्याण की ओर विषय पर वेबिनार

छठे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 21 जून, 2020 को गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने ग्लोबल रेनबो फाउण्डेशन मॉरीशस के सहयोग से "मानसिक और शारीरिक कल्याण की ओर" विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया। इस वेबिनार में मुख्य वक्ताओं में समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, श्री अर्नोगुम परशुरामन, संस्थापक अध्यक्ष ग्लोबल रेनबो फाउण्डेशन, डॉ. मंजू रानी अग्रवाल, प्राकृतिक चिकित्सक और सुश्री रूमा चक्रवर्ती, भारतीय संगीत चिकित्सक और संस्थापक–अध्यक्ष 'फैक्टराइज' शामिल थे। वेबिनार में 55 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

वेबिनार की शुरुआत श्री दीपंकर श्री ज्ञान की परिचयात्मक टिप्पणियों के साथ हुई, जिन्होंने इस तथ्य की ओर इशारा करते हुए कहा कि योग व्यक्ति के समग्र विकास को सक्षम बनाता है, उन्होंने कहा, "योग भारत में एक संस्कृति और परम्परा है, एक परम्परा जो 5000 साल से अधिक पुरानी है। आज हमें तकनीकी रूप से एकजुट होने और स्वस्थ रहने की आवश्यकता है।" उन्होंने योग को एक अनुशासन के रूप में भी बताते हुए कहा कि यह एकता की भावना को आत्मसात करता है। भारतीय धर्म में 'आदि योगी' महादेव का उल्लेख करते हुए निदेशक ने कहा कि विभिन्न योग मुद्राएं हमें स्वस्थ रहने के लिए एक अनुशासित चित्तावस्था और इस अनुशासन को प्राप्त करने की प्रक्रिया की याद दिलाती हैं।

श्री अर्नोगुम परशुरामन ने गांधी स्मृति की अपनी यात्रा को याद करते हुए, जहां उन्होंने अपने मिशन और मानवता की सेवा के लिए अपनी प्रेरणा ली, समाज के सबसे कमजोर वर्ग की सेवा करने के अपने काम के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि उन्होंने लोगों के कल्याण के लिए काम करना चुना। "योग हमारे जीवन में संतुलन बनाने के बारे में है। स्वस्थ रहने और शांति से जीने के लिए यह हमारी इंद्रियों, हमारी आत्मा और दिमाग को संतुलित करता है", उन्होंने कहा।

उन्होंने 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रस्ताव पेश करने और योग के इस उपहार को दुनिया को देने के लिए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आज पूरी दुनिया हर साल 21 जून को योग के इस उपहार का जश्न मनाने में शामिल होती है। यह बताते हुए कि योग पूरी दुनिया में फैल गया है और योग एक चिकित्सीय, निवारक और पुनर्वास क्षमता के रूप में कार्य करता है और सभी के लिए सार्वभौमिक रूप से फायदेमंद है, श्री परशुरामन ने कहा, "इसकी समग्र और आध्यात्मिक शक्ति ने शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण का काम किया है।"

उन्होंने आगे कहा कि शारीरिक रूप से विकलांग अधिकांश बच्चों को योग का लाभ नहीं मिल सकता है, लेकिन जीआरएफ के माध्यम से मिशन योग की अवधारणा और इसकी चिकित्सीय शक्तियों को मॉरीशस के सभी स्कूलों, विशेष रूप से विकलांग बच्चों तक पहुँचाना है। उन्होंने कहा कि दिव्यांग लोगों को योगाभ्यास के लाभ से वंचित नहीं किया जा सकता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जीआरएफ ने चार उपचारों– योग, संगीत चिकित्सा, हंसी चिकित्सा

और कला चिकित्सा की शुरुआत की है, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि इससे बच्चों में काफी बदलाव आया है।

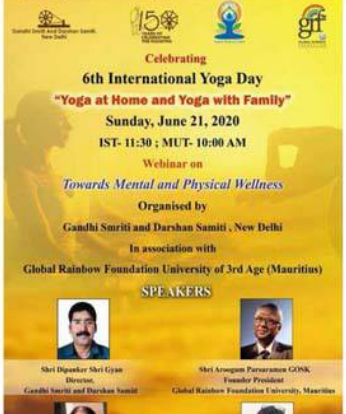

अपनी प्रस्तुति में, डॉ. मंजू अग्रवाल ने प्रकृति के पांच तत्वों– पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु की मदद से स्वास्थ्य प्राप्त करने

के लिए शरीर की अंतर्निहित शक्ति को उत्तेजित करने की एक प्रणाली के रूप में प्राकृतिक चिकित्सा की अवधारणाओं पर प्रकाश डाला और प्रत्येक के व्यापक वर्गीकरण की व्याख्या की। प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से इन तत्वों जैसे उपवास, प्राणायाम, सूर्य स्नान, रंग चिकित्सा और विभिन्न प्रकार के स्नान, एनीमा मिट्टी चिकित्सा और आहार चिकित्सा की उन्होंने जानकारी दी। उन्होंने जीवन के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक स्तरों पर प्राकृतिक चिकित्सा के प्रभावों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि "प्राकृतिक चिकित्सा स्वास्थ्य और स्वस्थ जीवन का विज्ञान है और यह बीमारियों से मुक्ति पाने में मदद करता है," आगे कहा, "प्राकृतिक चिकित्सा लोगों की रहने की आदतों को बदलने में मदद करती है और उन्हें सही और स्वस्थ जीवन शैली सिखाती है"। उन्होंने यह भी बताया कि 'प्राकृतिक चिकित्सा' जीवन शक्ति, कार्य कुशलता को बढ़ाती है और मन व शरीर को संतुलित अवस्था में रखती है।

सुश्री रूमा चक्रवर्ती ने "भारतीय संगीत के चिकित्सीय प्रभाव" पर विमर्श करते हुए कहा कि कैसे नाद और भारतीय संगीत हमारी योगिक प्रथाओं और नाद योग का हिस्सा है। उन्होंने बताया कि हमारे आंतरिक नाद और श्वास संतुलित और सामंजस्यपूर्ण जीवन के महत्वपूर्ण पहलू हैं। भारतीय संगीत जिसे हम गायन और वाद्ययंत्रों के माध्यम से सुनते या उत्पन्न करते हैं, वह हमारे आंतरिक नाद की अभिव्यक्ति है जो बाहयग्रंथी से उत्पन्न होता है और ऊपर की ओर बढ़ता है और शरीर के विभिन्न अंगों के माध्यम से सप्तस्वर के रूप में व्यक्त होता है। उन्होंने आगे इस बात पर जोर दिया कि कैसे उस आंतरिक नाद से जुड़ने में सक्षम होने के लिए हमें विशेष रूप से आज के व्यवसायों, युवाओं और छात्रों के लिए उपयुक्त संगीत सुनने की जरूरत है। हमें अपने मौन का अभ्यास करने की भी आवश्यकता है क्योंकि मौन से सर्वश्रेष्ठ संगीत उत्पन्न होता है जो हमारी आंतरिक ध्वनि को प्रतिध्वनित करता है।

उन्होंने यह भी चर्चा की कि कुछ संगीत तत्वों और तकनीकों के प्रदर्शन के साथ–साथ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए भारतीय संगीत चिकित्सा का उपयोग किया जाता है। उन्होंने ध्यान में रखने के लिए आवश्यक संकेत जैसे संरचित और लक्षित संगीत, चिकित्सा दृष्टिकोण, दोहराव आदि के साथ दो बहुत महत्वपूर्ण अवयवों पर भी जोर दिया, जो कि प्रेम और करुणा हैं। अपने प्रदर्शनात्मक व्याख्यान के माध्यम से, सुश्री रूमा चक्रवर्ती ने आगे बताया कि (एक सत्र के संकलित चित्रों के साथ) भारतीय संगीत के साथ योगासन, ध्यान, चिकित्सीय संगीत खेल, कला और शिल्प चिकित्सा आदि वाले मल्टीमॉडल दृष्टिकोण वाले बुजुर्गों के लिए सत्र आयोजित किए जाते हैं। उन्होंने समझाया कि हम मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों को ध्यान में रखते हुए संगीत चिकित्सा गतिविधियों को डिजाइन करते हैं।

योगाचार्य वरुण नौटियाल द्वारा सूर्य नमस्कार के वीडियो भी वेबिनार के दौरान दिखाए गए। भूमा इन्फोटेक के श्री मनीष ने तकनीकी सहायता प्रदान की।

सुश्री नताशा, योग प्रशिक्षक, कला चिकित्सक और ग्लोबल रेनबो फाउण्डेशन, मॉरीशस द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। श्री परशुरामन ने प्रभावी परिणामों के लिए तीनों को एकीकृत करने की आवश्यकता महसूस की। समिति भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा जारी, पहल नमस्तेयोग और 10 मिलियन सूर्यनमस्कार के माध्यम से योग के संदेश को फैलाने के लिए फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का सक्रिय रूप से उपयोग कर रही है।

एक अहिंसक संचार पारिस्थितिकी तंत्र की खोज" पर ई–कार्यशाला

समिति ने त्रिकोमाली कैंपस ईस्टर्न यूनिवर्सिटी, श्रीलंका के सहयोग से 2 जुलाई, 2020 को "एक अहिंसक संचार पारिस्थितिकी तंत्र की खोज" पर एक ई–कार्यशाला का आयोजन किया। जिसमें समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान और कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू प्रमुख वक्ता थे। कार्यशाला में 177 प्रतिभागियों ने भाग लिया। ई–वर्कशॉप की प्रस्तुतकर्ता सुश्री शिवप्रिया श्रीराम थीं। कार्यक्रम का संचालन सुश्री निसानाला जयवर्धना ने किया।

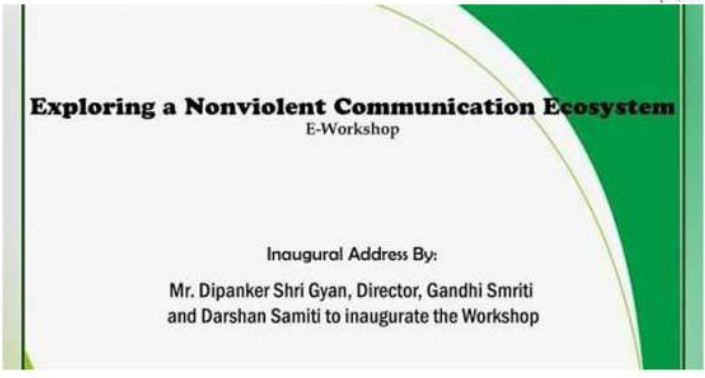

प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. कुण्डू ने अपनी प्रस्तुति "अहिंसक संचार को बढ़ावा" के माध्यम से संचार की प्रमुख अवधारणाओं को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि संचार की कमी से कई अंतराल हो सकते हैं, जो अंततः परस्पर विरोधी स्थितियों का कारण बन सकते हैं। उन्होंने बुद्ध का उल्लेख किया और कहा कि अहिंसक संचार की अवधारणा का प्रयोग सबसे पहले बुद्ध ने किया था।

शब्दों की शक्ति पर टिप्पणी करते हुए, उन्होंने बुद्ध को उद्धृत किया और कहा, "शब्दों में नष्ट करने और चंगा करने दोनों की शक्ति होती है। जब शब्द सच्चे और दयालु दोनों हों, तो वे हमारी दुनिया को बदल सकते हैं।" विभिन्न परिस्थितिजन्य विश्लेषण से निपटने के लिए डॉ. कुण्डू ने बौद्ध जेन मास्टर थिच नहत हान की शिक्षाओं की ओर इशारा किया और कहा कि दुनिया प्यार और करुणा की उनकी शिक्षाओं को अब स्वीकार कर रही है। उन्होंने थिच नहत हान के शब्दों को उद्धृत करते हुए कहा, "जब हम कुछ ऐसा कहते हैं, जो हमें पोषण देता है और हमारे आस–पास के लोगों को ऊपर उठाता है, तो हम प्यार और करुणा महसूस कर रहे हैं। जब हम इस तरह से बोलते और कार्य करते हैं जो तनाव और क्रोध का कारण बनता है, तो हम हिंसा और पीड़ा का पोषण कर रहे हैं।"

"उन्होंने शब्दों की शक्ति के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने कहा, "हम जो शब्द कहते हैं वह पोषण है। हम ऐसे शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं जो स्वयं को पोषित करें और दूसरे व्यक्ति का पोषण करें। आप जो कहते हैं, जो लिखते हैं, उसमें केवल करुणा और समझ होनी चाहिए। आपके शब्द किसी अन्य व्यक्ति में आत्मविश्वास और खुलेपन को प्रेरित कर सकते हैं। थायस मजूर और वेंडी वुड ने अपनी पुस्तक "डू नॉट हार्म: माइंडफुल एंगेजमेंट फॉर ए वर्ल्ड इन क्राइसिस" में लिखा है कि "उस शक्ति को पकड़ो जिसे उकसाने या किसी दिए गए अनुभव को बेअसर करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। उन्हें हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है–या तो अपराध या रक्षा के लिए। हमें उस ऊर्जा से अवगत होने की आवश्यकता है जो हमारी भाषा, हमारे शब्द, धारण करती है और उनका उपयोग अधिक से अधिक अच्छे के लिए करती है।"

आज संचार की चुनौती के बारे में बोलते हुए, डॉ. कुण्डू ने कहा, "समाज का बढ़ता विखण्डन संचार की विफलता से जुड़ा हुआ है जिसके परिणामस्वरूप आक्रामकता बढ़ रही है।" उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी के नकारात्मक पहलुओं से सावधान रहने की आवश्यकता पर जोर दिया।

उन्होंने अहिंसक संचार कौशल, सहानुभूति की शक्ति, भाषा के उपयोग आदि की तकनीकों के बारे में विस्तार से बताया और कहा कि ये सब मानव जाति के लिए स्वयं को शांति लाने के लिए आवश्यक हो गए हैं। उन्होंने मार्शल रोसेनबर्ग के कथन का उल्लेख करते हुए कहा: "अहिंसक संचार भाषा और संचार कौशल पर आधारित है जो कठिन परिस्थितियों में भी मानव बने रहने की हमारी क्षमता को मजबूत करता है। यह हमें फिर से परिभाषित करने में मार्गदर्शन करता है कि हम खुद को कैसे व्यक्त करते हैं और दूसरों को सुनते हैं।" उन्होंने कहा कि "अहिंसक संचार हमें एक दूसरे से और खुद से जुड़ने में मदद करता है जिससे हमारी प्राकृतिक करुणा पनपती है। यह हमें चार क्षेत्रों पर अपनी चेतना को केन्द्रित करके खुद को व्यक्त करने और दूसरों को सुनने के तरीके को फिर से परिभाषित करने के लिए मार्गदर्शन करता है। ये क्षेत्र हैं– हम क्या देख रहे हैं, क्या महसूस कर रहे हैं, हमें क्या जरूरत है और हम अपने जीवन को समृद्ध करने के लिए क्या अनुरोध कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि चुनौती यह है कि कैसे "हमारा संचार पारिस्थितिकी तंत्र सकारात्मक सह–अस्तित्व और मूल्यों के निर्माण का स्रोत बन जाता है और हम आत्मा–से–आत्मा तक के संचार को बढ़ावा देते हैं", जो सहानुभूति और करुणा को बढ़ावा देगा, दयालुता, उदारता और परोपकारी के अन्य भावों को बढ़ावा देगा। उन्होंने सुझाव दिया कि व्यक्ति को सक्रिय सुनने का अभ्यास विकसित करना चाहिए, दूसरों की जरूरतों से जुड़ना

चाहिए, कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए और सकारात्मक प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह अहिंसक संचार की आवश्यक गांधीवादी तकनीक है।

समिति के पूर्वोत्तर संयोजक श्री गुलशन गुप्ता ने मीडिया साक्षरता के ज्ञान और आज के अतिव्याह सूचना युग में इसके महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि मीडिया और सूचनाओं का समालोचनात्मक विश्लेषण करने की आवश्यकता है जिसे कोई सुनता है, इकट्ठा करता है और प्रसारित करता है। उन्होंने साइबर फार्मिंग की अवधारणा को भी उदाहरणों के साथ साझा किया कि यह कैसे और कब व्यक्तियों द्वारा दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव के लिए किया जा सकता है। ई–कार्यशाला में प्रतिभागियों द्वारा प्रश्न भी पूछे गये।

हमारे दैनिक जीवन में अहिंसा का अभ्यास : अंतरराष्ट्रीय ई–सम्मेलन

हिंसा कभी भी शांति संतुलन का साधन नहीं हो सकती: माननीय श्री अरुण कुमार साहू

समिति ने बेटी और शिक्षा फाउण्डेशन, उच्चायोग पोर्ट ऑफ स्पेन त्रिनिदाद और टोबैगो, और महात्मा गांधी सांस्कृतिक सहयोग संस्थान के सहयोग से 8 जुलाई को "हमारे दैनिक जीवन में अहिंसा का अभ्यास" पर एक ई–सम्मेलन का आयोजन किया।. इसमें भाग लेने वाले मुख्य वक्ताओं में शामिल थे: श्री अरुण कुमार साहू, उच्चायुक्त पोर्ट ऑफ स्पेन, त्रिनिदाद और टोबैगो, डॉ. वेदान्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी, श्रीमती रेणु शर्मा, बी एंड एस फाउण्डेशन। सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ. पंडिता इंद्राणी रामप्रसाद ने की। ई–सम्मेलन में भारत, सूरीनाम, गुयाना और त्रिनिदाद के 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

अपनी टिप्पणी में उच्चायुक्त श्री अरुण कुमार साहू ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2 अक्तूबर, महात्मा गांधी के जन्मदिन को हर साल अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाने के प्रस्ताव के बारे में बात की और कहा कि भारत के लिए यह एक महान पहल थी। उन्होंने कहा की गांधी के शांति और अहिंसा के सिद्धांत मानव अन्योन्याश्रयता के लिए भौलिक है। महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों के बारे में बोलते हुए, श्री साहू का मानना था कि शांतिपूर्ण रणनीतियों और अहिंसा के केंगल विचार और व्यावहारिक अनुप्रयोग ही विश्व शांति की शुरुआत कर सकते हैं और मानव सह–अस्तित्व में समानता ला सकते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि किसी को अपने कार्यों के बाहरी नियंत्रण के लिए उपकरणों को स्पष्ट रूप से समझने की आवश्यकता है। "आंतरिक सफाई पर ध्यान दें, क्योंकि हम आंतरिक संघर्ष की निरन्तर स्थिति में हैं, महात्मा गांधी के विचार केवल भारतीयों के लिए ही नहीं हैं, अपितु पूरी दुनिया को दैनिक जीवन में उनके विचारों का अभ्यास करना चाहिए। हिंसा कभी भी शक्ति संतुलन का साधन नहीं हो सकती।"

उन्होंने कहा, डॉ. पंडिता इंद्राणी रामप्रसाद ने अपने संक्षिप्त सम्बोधन में इस महामारी में घरेलू हिंसा की बढ़ती घटनाओं पर बात करते हुए कहा कि इस दौरान वैश्विक हिंसा में वृद्धि हुई है। उन्होंने विश्व शांति के लिए महात्मा गांधी के सिद्धांतों की शाश्वत प्रासंगिकता पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि एक शांतिपूर्ण समाज की नींव अहिंसक संचार के सिद्धांतों, इसकी रणनीतियों और सबसे महत्वपूर्ण सहानुभूति, करुणा और स्वीकृति के माध्यम से स्थापित की जा सकती है।

हमारे दैनिक जीवन में अहिंसक संचार' के अनुप्रयोग पर अपनी प्रस्तुति के माध्यम से, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने अहिंसक संचार के प्रमुख तत्वों और शांति की अधिक सामंजस्यपूर्ण संस्कृति पर पहुंचने के लिए दैनिक जीवन में इसके अनुप्रयोगों को शामिल करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने चम्पारण की अपनी यात्रा के दौरान महात्मा गांधी को जारी किए गए सम्मन का भी उल्लेख किया, जब गांधीजी को तुरंत जाने के लिए कहा गया था और उन्होंने बहुत विनम्र और अहिंसक तरीके से जाने के लिए इन्कार कर दिया था, वे अपने निर्णय पर अंत तक दृढ़ रहे।

डॉ. कुण्डू ने कहा कि गांधीजी ने भारत की आजादी के लिए अपने संघर्ष के दौरान अपने भाषण और कार्यों में कभी भी अहंकार नहीं दिखाया, भले ही उनका सामना कितने ही कड़े प्रतिद्वंद्वी से हुआ हो। उन्होंने अहिंसक संचार (एनवीसी) तकनीकों के उदाहरणों का हवाला देते हुए शरीर की मुद्रा, भाषा, दृष्टिकोण के बारे में बताया। वरिष्ठ गांधीवादी विधारक स्वर्गीय पद्मश्री श्री नटवर ठक्कर का जिक्र करते हुए डॉ. कुण्डू ने कहा कि श्री ठक्कर के अनुसार, अहिंसक संचार एक कला और विज्ञान दोनों है। श्री ठक्कर ने कहा था, "अहिंसक संचार का अर्थ यह भी है कि हम दूसरों के साथ जिस तरह से व्यवहार करते हैं उसमें हिंसा का पूर्ण अभाव है।"

डॉ. कुण्डू ने आगे संवेदनशील सुनने, करुणामय दृष्टिकोण रखने और अधिक लचीला बनने की आवश्यकता के बारे में बताया। यह कहते हुए कि "भाषा मोक्ष है", उन्होंने कहा कि अहिंसक संचार के अभ्यास के माध्यम से, एक आक्रामक व्यक्ति का अधिक परोपकारी इंसान के रूप में परिवर्तन देखा जा सकता है।

सुश्री शशिकांता सनदादिया ने कहा कि मानवीय एकता की समझ के लिए स्कूलों में अहिंसक संचार कौशल को स्वीकृत करना अनिवार्य है। दिल्ली विश्वविद्यालय की एसोसिएट प्रो. डॉ. माथुरी ने पाठ्यक्रम में एनवीसी को शामिल करने और शिक्षा के लिए गांधीजी के दृष्टिकोण पर विमर्श किया। एनवीसी के बारे में श्री मिलन आचार्य के विचार और सुश्री सीता डारलू के शांति के विचार ने संवाद सत्र को और अधिक रोचक बना दिया।

बी एंड एस फाउण्डेशन की ओर से श्रीनती रेणु शर्मा और समिति की ओर से श्री राजदीप पाठक द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

ई–संवाद "मैं अपने दैनिक जीवन में अहिंसा की साधना कैसे करूं"

कई देशों के 70 प्रतिभागियों ने "मैं अपने दैनिक जीवन में अहिंसा की साधना कैसे करूं?" विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय ई–संवाद में भाग लिया। गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा 25 जुलाई, 2020 को आयोजित इस कार्यक्रम में डॉ. विद्या जैन, पूर्व एसजी एपीआरए और संयोजक, अहिंसा आयोग, आईपीआरए ने पूरी चर्चा का मार्गदर्शन किया।

शांति शोधकर्ता, कवि और दक्षिण अफ्रीका में सूत्रधार डॉ. बर्नेडेट मुथियन

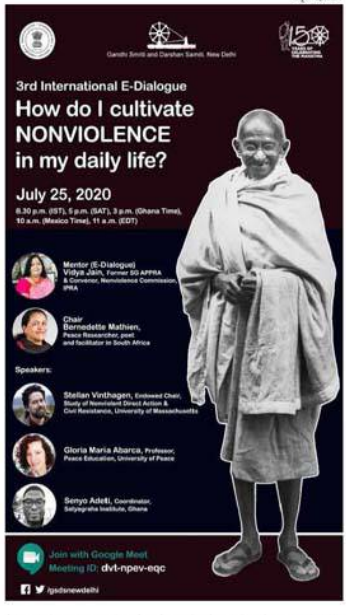

ने सत्र की अध्यक्षता की। प्रो. स्टेलन विंथगेन, एंडेड चेयर, स्टडी ऑफ नॉन वायलेन्स डायरेक्ट एक्शन एंड सिविल रेजिस्टेंस, यूनिवर्सिटी ऑफ मैसाचुसेट्स यूएसए प्रो. ग्लोरिया मारिया अबरका, प्रोफेसर, शांति शिक्षा, शांति विश्वविद्यालय, मैक्सिको और प्रो. सेनियो अदेती, समन्वयक, सत्याग्रह संस्थान, घाना प्रमुख वक्ता थे। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने उद्घाटन भाषण दिया और डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी ने ई–संवाद का समन्वय किया।

"स्वयं को समझने में अहिंसक संचार का महत्व" पर ई–कार्यशाला

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने एटिनियो की जावाओ विश्वविद्यालय, फिलीपींस के सहयोग से 01 अगस्त, 2020 को "स्वयं को समझने में अहिंसक संचार का महत्व" पर एक ई–कार्यशाला का आयोजन किया। समाजशास्त्र जैसे विभिन्न विषयों के लगभग 97 छात्र, इस संवाद सत्र में शामिल हुए। सत्र का समापन डॉ. कुण्डू और प्रतिभागियों के बीच आयोजित प्रश्न–उत्तर दौर के साथ हुआ।

ये प्रश्न थे– इस महामारी में अहिंसक संचार कैसे लागू किया जा सकता है? किसी को सकारात्मक होने या करुणा प्राप्त करने के लिए कैसे मनाएं यदि उसका अनुभव उसे सकारात्मक होने या दयालु होने के लिए बाधित कर रहा है, आदि। डॉ कुण्डू ने सभी सवालों के जवाब दिए और एक–एक करके उनकी शंकाओं को दूर किया।

शांति शिक्षा पर ई–संवाद–एक न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण भविष्य का निर्माण

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के गांधीवादी अध्ययन और शांति अनुसंधान के अंतरराष्ट्रीय केन्द्र ने 13 अगस्त, 2020 को शांति शिक्षा पर चौथे अंतरराष्ट्रीय ई–संवाद का आयोजन किया। इसका विषय था–एक न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण भविष्य का निर्माण। कार्यक्रम का मार्गदर्शन प्रो. विद्या जैन (संयोजक, अहिंसा आयोग, इपरा) द्वारा किया गया। डॉ. जेनेट गर्स्टन (शिक्षा निदेशक, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑन पीस एजुकेशन, यूएसए) की अध्यक्षता में प्रो. टोनी जेनकिंस (प्रबंध निदेशक, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑन पीस एजुकेशन, यूएसए), प्रो. हर्बर्ट बी रोसाना (एसोसिएट डीन, ग्रेजुएट स्कूल), और डॉ. स्टीव शर्रा (शिक्षा नीति विश्लेषक और शांति शिक्षा, मलावी) द्वारा व्यक्तिगत सत्र लिए गये। वेबिनार में 62 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

अहिंसक संचार के माध्यम से अनिलाइन नफरत की कहानियों का मुकाबला

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और यूनेस्को–मीडिया व भारत के सूचना साक्षरता विश्वविद्यालय नेटवर्क द्वारा संयुक्त रूप से अहिंसक संचार के माध्यम से ऑनलाइन नफरत की कहानियों का मुकाबला करने पर एक अंतरराष्ट्रीय ई–कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया। श्री दीपंकर श्री ज्ञान (निदेशक, समिति) ने स्वागत भाषण दिया। डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू (कार्यक्रम अधिकारी, समिति) ने सत्र का संचालन किया।

ई–कॉन्क्लेव की अध्यक्षता प्रो. जगतार सिंह समन्वयक, मीडिया और सूचना विश्वविद्यालय नेटवर्क ऑफ इंडिया (मिलुनी), ने की। कॉन्क्लेव में अन्य वक्ताओं में शामिल थे: श्री एल्टन ग्रिजल (कार्यक्रम विशेषज्ञ यूनेस्को, पेरिस), श्री ब्रैम वान हावर (कार्यक्रम प्रबंधन विशेषज्ञ, यूएनएओसी, न्यूयॉर्क), सुश्री सारा गाबाई (संचार विशेषज्ञ, यूरोपीय संघ स्विच–एशिया), सुश्री महाब्रश्री (संचार के सहयोगी प्रो., संयुक्त अरब अमीरात) और श्री मैथ्यू जॉनसन (निदेशक शिक्षा, मीडिया स्मार्ट, कनाडा) प्रमुख वक्ता थे। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 90 लोग इस सम्मेलन में शामिल हुए।

[सत्याग्रह के माध्यम से स्वराज के अपने दर्शन को आकार देने में यूरोप और अ ीका के माध्यम से महात्मा गांधी की यात्रा" पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद (एआरएसपी), डायस्पोरा रिसर्च एंड रिसोर्स सेंटर (डीआरआरसी) के सहयोग से "सत्याग्रह के माध्यम से स्वराज के अपने दर्शन को आकार देने में यूरोप और अफ्रीका के माध्यम से महात्मा गांधी की यात्रा" पर एक आभासी अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 12 सितम्बर, 2020 को किया। इस अवसर पर भारत सरकार के विदेश राज्यमंत्री श्री वी. मुरलीधरन मुख्य अतिथि थे। वेबिनार में 65 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें श्रीमती इला गांधी, अध्यक्ष गांधी विकास ट्रस्ट (डरबन), दक्षिण अफ्रीका, वीरेंद्र गुप्ता, अध्यक्ष (एआरएसपी), अनूप मुदगल, अध्यक्ष, डीआरआरसी, श्री श्याम परांडे, महासचिव एआरएसपी श्री दीपंकर श्री

ज्ञान, निदेशक समिति जैसे वक्ता शामिल थे।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता अनूप मुदगल ने की। वक्ता के तौर पर डॉ. अर्मोगम परशुराम, संस्थापक–अध्यक्ष, ग्लोबल रेनबो फाउण्डेशन, मॉरीशस, प्रो. सतेन्द्र नन्दा, लेखक–अकादमिक और फीजी के पूर्व सांसद और कैबिनेट मंत्री डॉ. राजेन्द्रन टी. गोवेन्दर, सामाजिक गठबंधन अधिवक्ता, दक्षिण अफ्रीका सरकार और श्री निरोदा ब्रमडॉ, प्रसिद्ध पत्रकार, लेखक और प्रकाशक, श्री नारायण कुमार, मान निदेशक एआरएसपी, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी समिति उपस्थित थे।

वैदिक महामारी संकट के समय में मानव एकता की अनिवार्यता

मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र (एमसीपीआर), यूनेस्को चेयर फॉर पीस एंड इंटरकल्चरल अंडरस्टैंडिंग बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने 14–15 सितम्बर, 2020 को "वैश्विक महामारी संकट के समय में मानव एकजुटता की अनिवार्यता" पर एक अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया।

सम्मेलन के पहले दिन, की शुरुआत समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला के भाषण से हुई। वेबिनार में 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रो. प्रियांकर उपाध्याय, यूनेस्को चेयर फॉर पीस, मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र, एफएसएस, बीएचयू ने सत्र की अध्यक्षता की। दो दिवसीय विचार–विमर्श में अन्य वक्ताओं ने शामिल थे सुश्री वेरोनिका यार्लिंग, मीडिया और सूचना साक्षरता और नागरिकों की मीडिया शिक्षा

पर यूनेस्को की अध्यक्ष, मॉस्को पेडागोगिकल स्टेट यूनिवर्सिटी, डॉ. एन. सतीश कुमार, निदेशक अंतरराष्ट्रीयकरण स्कूल ऑफ नेचुरल एंड बिल्ट एनवायरनमेंट कल्चर एंड सोसाइटी, बाल्कन में अंतरसंस्कृतिवाद कला और सांस्कृतिक प्रबंधन और मध्यस्थता की अध्येता सुश्री मिलिना ड्रैगिडेविक सेसिकय श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक समिति और डॉ. मनोज के मिश्रा समन्वयक (एमसीपीआर)।

दूसरे दिन का आकर्षण "यंग रिसर्चर्स फोरम" रहा, जहां दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आये वक्ताओं ने अपने विचार साझा किए। वक्ताओं में शामिल थेः एंटानानारिवो विश्वविद्यालय मेडागास्कर से श्री रजाफिमामोनजी फानिरिआंटोसोआ रिद्रानिरिनाय वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान से पीएचडी की छात्रा सुश्री ज्योति सिंह, सुश्री सीन येन फोबे मोक मास्टर–ग्रेजुएट स्कूल ऑफ इंटरनेशनल पीस स्टडीज, सोका विश्वविद्यालय जापान, सुश्री देबिका मित्रा, पीएचडी स्कॉलर, बर्दवान विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल (भारत), गांधी सलाहकार मंच, मलावी से श्री विक्टर एलिनसे चिपोफ्या, श्री मुश्ताक उल हक अहमद, सिकंदर एमफिल, श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर, सुश्री पूजा राज, पीएचडी विद्वान और दिल्ली विश्वविद्यालय से सुश्री हिना मुश्ताक पीएचडी विद्वान और श्री टॉम डेविस पीएचडी विद्वान, एमसीपीआर, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय।

किर्गिस्तान

अहिंसक संचार पर ओरिएंटेशन

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने 20 अक्तूबर, 2020 को "अहिंसक संचार" पर किर्गिस्तान के विश्वविद्यालय के साथ एक ऑनलाइन ओरिएण्टेशन कार्यक्रम की मेजबानी की। इस ओरिएण्टेशन कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी, समिति थे। विश्वविद्यालय की प्रमुख डॉ. एलिरा तुरखुदेवा ने स्वागत भाषण दिया। किर्गिस्तान और भारत के 53 प्रतिभागी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। जीएसडीएस फेसबुक पेज पर लाइव–स्ट्रीम किए गए वेबिनार में 632 दर्शकों की उपस्थिति थी। इसका स्थानीय भाषा में अनुवाद किया गया।

अहिंसक संचार के विभिन्न सिद्धांतों का वर्णन करते हुए, डॉ. कुण्डू ने न केवल अपने भीतर बल्कि बाहरी दुनिया के साथ संचार प्रक्रिया की बात की। उन्होंने कहा कि संचार या तो सम्बन्ध बना सकता है या बिगाड़ सकता है। बुद्ध का उल्लेख करते हुए, डॉ. वेदाभ्यास ने उन्हें उद्धृत किया, "शब्दों में नष्ट करने और ठीक करने की शक्ति है। जब शब्द सच्चे और दयालु दोनों हों, तो ये हमारी दुनिया को बदल सकते हैं।" विभिन्न उदाहरणों और दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों का हवाला देते हुए, उन्होंने सकारात्मक और अहिंसक संचार की आवश्यकता को रेखांकित किया, उन्होंने कहा, "यह या तो रिश्तों को खराब कर सकता है या परस्पर विरोधी दलों को एकजुट कर सकता है। यह किसी मित्र या अजनबी को ज्ञान और सहायता प्रदान कर सकता है या दुर्व्यवहार की पेशकश कर सकता है और घृणा और नकारात्मकता को कायम रख सकता है।"

दूसरों के साथ हमारे संचार के महत्व पर, उन्होंने कहा, "हमारा संचार हमारी वास्तविकताओं, हमारे दृष्टिकोणों और भावनाओं को ढालने में मदद करता है। यह हमें एक दूसरे से अधिक जुड़ाव महसूस कराता है। यह हमारे मन के आंतरिक कामकाज का प्रतिबिंब है। हम जो कुछ भी संवाद करते हैं वह हमारे दिमाग की सामग्री से उत्पन्न होता है"।

उन्होंने संचार पारिस्थितिकी तंत्र के बारे में भी विचार साझा करते हुए बताया कि यह कैसे मूल्यों के निर्माण के लिए सकारात्मकता का स्रोत बन गया। उन्होंने कहा, "इसके द्वारा हम आत्मा–से–आत्मा तक के संचार को बढ़ावा देते हैं जो रचनात्मक संवाद को ठीक करता है और पोषित करता है। इससे मनुष्य वास्तव में मानव बन सकता है"।

उन्होंने साफ तौर पर बताया कि इसका कोई जादुई फॉर्मूला नहीं है। इसे भीतर से आना होगा। यह हमारी विचार प्रक्रिया को नया रूप देगा। "अहिंसक संचार का उपयोग हमें अपने विचारों और संचार को फिर से परिभाषित करने के लिए मार्गदर्शन करेगा", डॉ. वेदव्यास ने कहा, "रीफ्रेमिंग हमें यह पहचानने में मदद करता है कि किसी स्थिति या रिश्ते को समझने के लिए हम जो फ्रेम रखते हैं वह तटस्थ नहीं है। किस फ्रेम को किस स्थान पर रखा जाए, इस निर्णय में एक सचेत विकल्प शामिल है। इसके जरिये हम अपने बात करने के तरीके में बदलाव को देखेंगे, सम्बन्ध बनाने में मदद करेंगे और लोगों को अपने करीब लाएंगे।"

उन्होंने गांधीवादी अहिंसा के पांच स्तम्भों–सम्मान, समझ, स्वीकृति, प्रशंसा और करुणा पर भी बात की और अहिंसक संचार के तत्वों की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि मौखिक और अशाब्दिक और विचार प्रक्रिया में आगे बढ़े "जब हम अपनी बातचीत में हिंसक होते हैं, तो हम दूसरे व्यक्ति को अपमानित कर रहे होते हैं।" उन्होंने कहा।

डॉ. वेदाम्यास ने अहिंसक संचार के सात उप–मूल तत्वों को रेखांकित किया। ये तत्व हैं–स्वयं को समझना, खुद के साथ संवाद करना सीखना, रचनात्मक आंतरिक संवाद, आत्मनिरीक्षण की आदत का अभ्यास करना, हमारी आत्म–चर्चा को गहराई से सुनना, आत्म–जागरूकता का महत्व और घावों को ठीक करने के लिए आत्म–मानसिक सफाई की आवश्यकता।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुए, डॉ. कुण्डू ने उचित और सकारात्मक संवाद के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भावनात्मक शब्दावली का विस्तार करने की आवश्यकता है, जो "हमारी भावनाओं और जरूरतों को एक स्वतन्त्र और बेहतर तरीके से व्यक्त करने में मदद करती है और इस तरह दूसरों के साथ हमारे सम्बन्धों और बातचीत को बेहतर बनाने में मदद करती है।" उन्होंने नैतिक निर्णयों से बचने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने रूढ़िवादितावादी मूल्यांकन की भाषा से परहेज करना और सबसे महत्वपूर्ण रूप से सहानुभूति के पूरे आयाम और शक्ति पर ध्यान केन्द्रित करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, "दूसरों के साथ सहानुभूति करके, हम उनकी मानवता को छू सकते हैं, और हम खुद को भी ठीक कर सकते हैं क्योंकि हम दूसरों की जरूरतों से जुड़ते हैं जिन्हें प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि गहन और सक्रिय श्रवण कौशल का अभ्यास करना आवश्यक है, क्योंकि सुनने की कला दूसरे व्यक्ति से जुड़ने की क्षमता से जुड़ी होती है। उन्होंने दूसरों के प्रति दयालु रवैया रखने की आवश्यकता की भी वकालत की।

उन्होंने तिब्बती बौद्ध विद्वान थुपटन जिनपा को उद्धृत करते हुए कहा कि "करुणा एक चिंता की भावना है जो तब पैदा होती है जब हम दूसरे के दुख का सामना करते हैं और उस पीड़ा से राहत पाने के लिए प्रेरित महसूस करते हैं। यह वह है जो सहानुभूति की भावना को दयालुता, उदारता और परोपकारी प्रवृत्ति के अन्य भावों के कार्यों से जोड़ता है।'

वेबिनार का समापन प्रतिभागियों ने अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत करने और कई प्रश्नों के उत्तर देने के साथ किया।

शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के लिए मीडिया और सूचना साक्षरता का उपयोग करना : ई–सम्मेलन

साइबर"कस्ट "न का सावधानी से इस्तेमाल करने की जरूरत : प्रियांकर उपाध्याय

समिति द्वारा इंडियन एसोसिएशन ऑफ टीचर्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस (**IATLIS**), मालवीय सेंटर फॉर पीस रिसर्च, बनारस के सहयोग से 30 अक्तूबर, 2020 को "डिसइन्फोमेडिक का विरोध: शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के लिए मीडिया और सूचना साक्षरता का उपयोग" पर एक ई–सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर प्रमुख वक्ता थे प्रो. प्रियांकर उपाध्याय, यूनेस्को चेयर फॉर पीस एंड इंटरकल्चरल अंडरस्टैंडिंग (यूनिट्विन), डॉ. के. एस. अरुल सेलवन, एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड न्यू मीडिया स्टडीज, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), प्रो. अनुभूति यादव, हेड डिपार्टमेंट ऑफ न्यू मीडिया एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन (आईआईएमसी) और डॉ. वेदाम्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी, समिति। श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक समिति ने स्वागत भाषण दिया। इस सम्मेलन की पूरी कार्यवाही का संचालन प्रो. जगतार सिंह, समन्वयक, मीडिया और सूचना साक्षरता, यूनिवर्सिटी नेटवर्क ऑफ इंडिया (मिलुनी) ने किया।

प्रमुख भाषण देते हुए प्रो. प्रियांकर उपाध्याय ने कहा कि सूचना और मीडिया साक्षरता नागरिकों के जीवन में एक महत्वपूर्ण घटक बन गया है। नए सोशल मीडिया ने परिवर्तनकारी बदलाव किये हैं और चमत्कार किए हैं, लेकिन साथ ही, यह किसी भी अन्य ऊर्जा की तरह दुरुपयोग होने की चुनौतियों के साथ आया है, जिसे उन्होंने "साइबर फ्रैंकस्टीन"

करार दिया और आगाह किया कि समाज को इसकी आवश्यकता है इस फ्रेंकस्टीन का उपयोग करने के बारे में गंभीर रूप से जागरूक रहें अन्यथा यह खतरनाक हो सकता है। इसके अलावा, सोशल मीडिया ने हम में से बुराई को बाहर निकाला है और देश में विविधता के कारण भारत बुरी तरह प्रभावित हुआ है। तथाकथित पढ़े–लिखे लोग भी गलत सूचना फैलाकर जा रहे हैं। इसलिए, अच्छे ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए, यूनेस्को ने धार्मिक नेताओं को एक साथ लाकर अंतर–सांस्कृतिक संवाद का एक दृष्टिकोण तैयार किया है।

प्रो. उपाध्याय ने आगे कहा कि दूसरे के धर्म से ज्यादा अपने धर्म के बारे में न जानने की विडंबना ने तथ्यों और सच्चाई के बीच एक खाई पैदा कर दी है। एक ऐसी दुनिया में जहां अधिकांश छोटे बच्चों के पास डेटा और जानकारी का अभाव है, वे जो दिखाया जाता है उन चीजो को ही देखते हैं, वास्तविकता को नहीं। उन्हें आसानी से मीडिया द्वारा नफरत और क्रूरता के लिए मूर्ख बनाया जाता है, और उनके बीच अलग–अलग राष्ट्र या धर्म के प्रति अस्तित्व की चिंता भी विकसित कर ली है।

इन्हीं विचारों को आगे बढ़ाते हुए प्रो. अनुभूति यादव ने कहा, गलत सूचना और दुष्प्रचार की समस्या सदियों से इस दुनिया का हिस्सा रही है लेकिन सोशल मीडिया के आविष्कार ने समस्या को बढ़ा दिया है। विभिन्न वेबसाइटों पर क्लिक पेड फॉन्ट नवीनतम रुझानों में से एक है जहां उपभोक्ता को सुर्खियों के बारे में संदेह करने की जरूरत है। लेकिन डिसइन्फोडेमिक का मुकाबला करने के लिए फैक्ट–चैकिंग समय की जरूरत है।

उन्होंने बताया कि कक्षा 7 से सीबीएसई के सभी छात्रों के लिए मीडिया साक्षरता के कौशल पर आधारित एक मॉड्यूल पेश किया जाएगा। साथ ही शिक्षकों के लिए भी 100 दिन की पढ़ाई की व्यवस्था की जाएगी। प्रो. यादव ने भी आम जनता से डिसइन्फोडेमिक पर अंकुश लगाने के लिए चार बुनियादी कदमों का पालन करने की अपील की:

- तथ्य की जाँच– इस कदम में सूचना के स्रोत की जाँच करना शामिल है। स्रोत का प्रमाणीकरण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए सोशल मीडिया ऑडिट, गूगल रिवर्स इमेज सर्च आदि जैसे टूल का उपयोग कर सकते हैं।
- विश्लेषण करना– मीडिया सामग्री का उपभोग करने के बाद सूचना पैदा करने के उद्देश्य पर विचार करना व्यक्ति की जिम्मेदारी होनी चाहिए।
- चिंतन करना– आत्मनिरीक्षण की कुंजी है। आत्म–व्यवहार या किसी विशेष सामग्री के प्रति पसंद की जांच करना भी उतना ही महत्वपूर्ण हो जाता है।
- अधिनियम– उपरोक्त सभी उपाय करने के बाद, अंतिम रिपोर्टिंग करना आवश्यक है। शिकायत दर्ज करने के लिए सही संगठनों के बारे में पता होना चाहिए।

इस अवसर पर बोलते हुए, डॉ. कुप्पू ने दुनिया भर के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में पहले से चल रहे गांधीवादी मीडिया साक्षरता कार्यक्रम के बारे में जानकारी साझा की और पूरे भारत में सीबीएसई के साथ शुरू किए गए अहिंसक संचार पर पाठ्यक्रम के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने आग्रह किया कि मीडिया बिरादरी के लोगों को भी अहिंसक संचार पर निःशुल्क पाठ्यक्रम लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि अभद्र भाषा का मुकाबला करने के लिए पत्रकारों को भी प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है, खासकर जब व्यावसायिक मीडिया टीआरपी मॉडल के आधार पर काम कर रहा हो। वह स्कूल मॉड्यूल से दुष्प्रचार के खिलाफ उचित रणनीतिक हस्तक्षेप के प्रस्ताव पर भी सहमत हुए।

स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड न्यू मीडिया स्टडीज, इग्नू के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. के. एस. अरुल सेलवन ने डिसइन्फोडेमिक के खिलाफ कार्रवाई पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सम्मेलन का समापन किया। उनके अनुसार, "भारत सोशल मीडिया का दूसरा सबसे बड़ा उपयोगकर्ता है, जो मुख्यधारा की मीडिया से अपने कनेक्शन के माध्यम से जानकारी साझा करता है। दुर्भाग्य से, 2004 से पूर्व की मीडिया के विपरीत, इन वेबसाइटों पर कोई नियन्त्रण नहीं है, इसलिए गलत सूचना परिष्कृत तरीके से प्रसारित हो रही है।"

हालाँकि, उन्होंने इसके पीछे कॉर्पोरेट प्रकृति को दोषी ठहराया, जिन्होंने व्यावसायीकरण या राजनीति के आधार पर सूचनाओं को नियंत्रित किया है। डॉ. सेलवन ने गलत सूचना की तुलना हेरफेर की सुनामी से भी की क्योंकि यह लाभ–उन्मुख हितों के लिए गोपनीयता नीति का फायदा उठाती है। "आज, जब इंटरनेट आसानी से न्यूनतम लागत के साथ दर्शकों को आकर्शित करने में सक्षम है, यह एक महत्वपूर्ण कारक बन जाता है कि कौन क्या और कैसे उपभोग कर रहा है"?

दर्शकों का हिस्सा अब इंटरनेट के दायरे में है इसलिए, उनके द्वारा पेश किए गए इन समाधानों के साथ तैयार रहने की आवश्यकता है:

- 1. अल्पकालिक: इस मामले में, हम केवल उपभोक्ताओं के बीच जागरूकता फैला सकते हैं। विभिन्न मंचों पर समाचार साक्षरता पर विभिन्न अभियानों का आयोजन किया जा सकता है।
- 2. समग्र दृष्टिकोण: समय की उपलब्धता के कारण, हम डिजिटल असमानता की खाई को पाट सकते हैं, स्थानीय जनता के लिए मीडिया डोमेन में वाणिज्यिक हितों जैसे विषयों को ला सकते हैं और निश्चित रूप से शैक्षणिक संस्थानों के माध्यम से हस्तक्षेप कर सकते हैं और उन्हें एक बेहतर विचार दे सकते हैं।

अपनी समापन टिप्पणी में, प्रो जगतार सिंह ने सभी वक्ताओं की प्रस्तुतियों को संक्षेप में प्रस्तुत किया और दुष्प्रचार का विरोध करने के लिए मीडिया सूचना के प्रति आलोचनात्मक विश्लेषण सिद्धांत से सहमत हुए।

बांग्लादेश

अहिंसक संचार पर ऑनलाइन सर्टिफिकेट कोर्स का शुभारम्भ

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा 19 नवम्बर, 2020 को आयोजित अहिंसक संचार पर ऑन–लाइन सर्टिफिकेट कोर्स के शुभारम्भ के दौरान एक वेबिनार आयोजित किया गया। इस वेबिनार में लिबरल आर्ट्स विश्वविद्यालय, बांग्लादेश **(ULAB)** के 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

चर्चा की शुरुआत करते हुए, MSJ&ULAB के प्रमुख प्रो. जूड विलियम आर. जेनिलो ने अपने संगठन और सहिष्णुता के मूल्य के बारे में बताया। उन्होंने कहा, "सहिष्णुता दूसरों के लिए अपना दिल खोलने का नाम है। यह सभी के साथ मानवीय व्यवहार करने और साहस के साथ चलने के बारे में है।" अहिंसक संचार को "दयालु और सहयोगात्मक संचार" करार देते हुए, उन्होंने 'बातचीत और संवाद' के महत्व पर जोर दिया। "हमारा लक्ष्य साझा जरूरतों की पहचान करना और सामूहिक होना है, जो सांस्कृतिक संपर्क विकसित करता है।"

ह पर और नीचे : समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, यूनिवर्सिटी ऑफ लिबरल आर्ट्स, बांग्लादेश के साथ अहिंसक संचार पर उन्मुखीकरण सत्र लेते हुए।

इसी तरह की भावना को प्रकट करते हुए, समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कमजोर समूहों के प्रति होने वाले अत्याचारों के बारे में बात की और कहा कि अहिंसक संचार संघर्षों के कई मुद्दों को सौहार्दपूर्ण तरीके से हल कर सकता है।

पाठ्यक्रम की जानकारी देते हुए श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य दूसरों की जरूरतों को समझना है और प्रतिभागियों को बातचीत के साधनों में संलग्न करना है। इसे "जीवन–कौशल सिखाने वाला आत्म क्षमता निर्माण कार्यक्रम" करार देते हुए, उन्होंने संवाद और करुणा में संलग्न होने के महत्व को रेखांकित किया।

भारतीय और पश्चिमी दर्शन से संदर्भ लेते हुए, समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने उन तरीकों की बात की जो पारस्परिक सम्बन्धों को बेहतर बनाते हैं, स्वयं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की क्षमता को बढ़ाते हैं और अहिंसक संचार के कौशल और उपकरणों का उपयोग करके करुणा विकसित करते हैं। उन्होंने कहा, "अहिंसक संचार आपको सहानुभूति, सम्मान, कृतज्ञता, करुणा, गैर–निर्णयात्मक होने की शक्ति के माध्यम से दूसरों के साथ अपने गहरे संघर्षों को भी हल करने में मदद करता है।" "संघर्ष के दौरान हम खुद को आलोचना, अपमान की घटनाओं से घिरा पाते हैं। और संघर्षों को हल करने का प्रयास करते समय दोषारोपण करते हैं, जिससे सभी आहत, क्रोधित या उदास होते हैं। अहिंसक संचार लोगों के साथ अधिक गहरे सम्मान के साथ व्यवहार करने पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना सिखाता है और स्वयम को व साथ ही कठिन परिस्थितियों को सकारात्मक रूप से बदल सकता है"।

यूएलबी की एम. फरजाना अख्तर और मरियम अख्तर द्वारा अनुभवों को साझा किया गया। साथ ही उन्होंने दूसरों के साथ संवाद करने और करुणा के साथ मुद्दों का समाधान करने के टिप्स भी सिखाए।

स्पेन

अहिंसक संचार की खोज–एक कार्यशाला

समिति द्वारा "अन्वेषण अहिंसक संचार" पर एक ऑनलाइन सत्र का आयोजन 12 नवम्बर, 2020 को किया गया। जिसमें डी मैड्रिड, स्पेन के छात्रों ने हिस्सा लिया। प्रमुख भाशण समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने दिया।

डॉ. कुण्डू ने गंभीर विवादों के बारे में विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि जब आक्रोश, क्रोध या निराशा रास्ते में आती है, तब अक्सर बचना असंभव लगता है। "अहिंसक संचार के साथ, व्यक्ति स्वयं सहित दूसरों का सम्मान करते हुए समस्याओं का समाधान करने में सक्षम होगा, आत्म–निर्णय के बारे में जागरूक होना महत्वपूर्ण है, साथ ही अपनी भावनाओं और जरूरतों को पहचानना जरूरी है क्योंकि ये अपराध बोध, शर्म, क्रोध या अवसाद की ओर ले जाने वाले तरीके के बजाय आत्म–क्षमा की ओर ले जाने वाले रास्ते को सुगम

बनाने में आपको सक्षम बनाते हैं। उन्होंने आगे बताया कि जीवन में करुणा को स्थान देना, जीवन के प्रति आपके दृष्टिकोण के बारे में बतलाता है।

मलावी

"शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के लिए अहिंसक संचार क्यों?" विषय पर वेबिनार का आयोजन

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने मलावी के कैथोलिक विश्वविद्यालय के सहयोग से 12 नवम्बर, 2020 को "शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के लिए अहिंसक संचार क्यों?" विषय पर वेबिनार का आयोजन किया। कैथोलिक विश्वविद्यालय मलावी के राजनीतिक नेतृत्व विभाग की प्रमुख श्रीमती चिमवेम्वे डेमेट्रिया कंडोडो ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया और अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रमुख भाषण समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने दिया। निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने स्वागत भाषण दिया। शिक्षक और जीवन कौशल प्रशिक्षक, गांधीवादी शांति निर्माता और ग्लोबल एजुकेशन एंड लीडरशिप फाउण्डेशन की कार्यक्रम प्रशिक्षक सुश्री शुचि शर्मा ने प्रतिभागियों के साथ सत्र का संचालन किया। गांधी सलाहकार मंच, मलावी के श्री विक्टर अलियांसे चिपोफ्या ने वेबिनार का संचालन किया।

समिति के अहिंसक संचार पर सर्टिफिकेट कोर्स करने वाले सैकड़ों प्रतिभागियों के साथ अपनी बातचीत का उदाहरण देते हुए और अपने दैनिक जीवन में पाठ्यक्रम की अवधारणाओं और व्यावहारिक अनुप्रयोग की उनकी समझ का हवाला देते हुए, सुश्री शुची ने इस बात पर प्रकाश डाला कि अहिंसक संचार "पारस्परिक संघर्ष को हल करने के लिए एक उपयोगी उपकरण हो सकता है, हमारी भावनाओं का पता लगाने के लिए, हमारे कार्यों के लिए जवाबदेही लेने के लिए, खुद को सुधारने के लिए और जिस तरह से हम संवाद करते हैं उसके लिए भी। उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति को सक्रिय श्रवण कौशल विकसित करने और दूसरों की जरूरत को समझने की आवश्यकता है।

किर्गिस्तान

'अहिंसक संचार के माध्यम से संघर्ष क्षमता' पर ई–कार्यशाला

"संघर्ष क्षमता संज्ञानात्मक, भावनात्मक और व्यवहारिक कौशल विकसित करने और उपयोग करने की क्षमता है जो वृद्धि या नुकसान की संभावना को कम करते हुए संघर्ष के उत्पादक परिणामों को बढ़ाती है। संघर्ष क्षमता के परिणामों में सम्बन्धों की बेहतर गुणवत्ता, रचनात्मक समाधान और भविष्य में चुनौतियों और अवसरों को नियंत्रित करने के स्थायी समझौते शामिल हैं। जैसा कि हम अपने दैनिक जीवन में खुद को विभिन्न प्रकार के

संघर्षों में पाते हैं, ऐसे में यह महत्वपूर्ण है कि हम अपनी संघर्ष क्षमता को कैसे बढ़ा सकते हैं।"

उक्त विचार समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने व्यक्त किये। वे ऑनलाइन विश्वविद्यालय किर्गिस्तान के सहयोग से समिति द्वारा आयोजित ई–कार्यशाला में, सत्र का संचालन कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हम अहिंसक संचार के माध्यम से अपनी संघर्ष क्षमता को बढ़ा सकते हैं। उन्होंने संघर्ष क्षमता के लिए आवश्यक व्यवहार, भावनात्मक और व्यवहार कौशल पर चर्चा करते हुए इन कौशलों को विकसित करने में अहिंसक संचार के तत्वों की जानकारी दी।

ऑनलाइन विश्वविद्यालय के अध्यक्ष, प्रोफेसर एलीरा तुर्दुवेवा ने हमारे दैनिक जीवन में संघर्ष क्षमता के महत्व पर बात की। बाद में प्रतिभागियों के साथ बातचीत के दौरान संघर्ष क्षमता के लिए आत्म–जागरूकता के महत्व पर गहन चर्चा हुई।

हेरात, अफगानिस्तान

"आओ, हम अहिंसक संचार का अभ्यास करें" पर ई–कार्यशाला

समिति ने 15 दिसम्बर, 2020 को चिल्ड्रन पीस बिल्डर्स फोरम अफगानिस्तान के सहयोग से हेरात अफगानिस्तान में "आओ हम अहिंसक संचार का अभ्यास करें" विषय पर एक ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया। हेरात के चिल्ड्रन पीस बिल्डर्स फोरम से सुश्री मलीका हुसैनी, सुश्री फातिमा हल्दरी, समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने इस वेबिनार में भाग लिया। ई–कार्यशाला ने संघर्ष क्षेत्रों में अहिंसक संचार का इस्तेमाल करने और युवाओं द्वारा लोग इसके माध्यम से अपनी संघर्ष दक्षताओं का उपयोग करने पर लोगों का ध्यान केन्द्रित किया।

किर्गिस्तान

मानव अंतर्सम्बन्ध और अहिंसक संचार पर ई–कार्यशाला

ऑनलाइन विश्वविद्यालय, किर्गिस्तान के साथ ई–कार्यशालाओं की श्रृंखला के हिस्से के रूप में, तीसरी ई–कार्यशाला 23 दिसम्बर, 2020 को आयोजित की गई थी। इसका विषय था– मानव अंतर्सम्बन्ध और अहिंसक संचार। ई–कार्यशाला का संचालन करते हुए, समिति के कार्यक्रम अधिकारी, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने 2020 की मानव विकास रिपोर्ट का हवाला दिया, जो बताती है कि हमारे गृह पर हम जो दबाव डालते हैं, वह इतना अधिक हो गया है कि वैज्ञानिक इस पर विचार कर रहे हैं कि क्या पृथ्वी पूरी तरह से एक नए भूवैज्ञानिक युग में प्रवेश कर चुकी है। रिपोर्ट में एक न्यायोचित परिवर्तन का आह्वान किया गया है जो ग्रहों के दबाव को कम करते हुए मानव स्वतंत्रता का विस्तार करती है। रिपोर्ट के मुताबिक, "आज दुनिया के लगभग 80 प्रतिशत लोग मानते हैं कि ग्रह की रक्षा करना महत्वपूर्ण है। लेकिन लगभग आधे लोग ही इसे बचाने के लिए ठोस कदम उठाने को तत्पर हैं। लोगों के मूल्यों और उनके व्यवहार के बीच एक अंतर है।"

इस सन्दर्भ में, डॉ. कुण्डू ने जोर देकर कहा कि कैसे अहिंसक संचार प्रकृति–मानव–और अन्य सभी जीवित प्राणियों के बीच जटिल सम्बन्धों की समझ को समाहित करता है। उन्होंने कहा कि न केवल अन्य मनुष्यों के साथ बल्कि प्रकृति और अन्य जीवित प्राणियों के साथ अहिंसक संचार का अभ्यास करना महत्वपूर्ण है। ऑनलाइन विश्वविद्यालय, किर्गिस्तान की प्रोफेसर एलीरा तुर्दुबेवा ने ई–कार्यशाला का संचालन किया।

कैमरून

अहिंसक संचार के माध्यम से संघर्ष क्षमता बढ़ाना

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने महिला शांति बिल्डर्स नेटवर्क, कैमरून के सहयोग से 11 जनवरी, 2021 को "अहिंसक संचार के माध्यम से संघर्ष क्षमता को बढ़ाना" विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता, महिला शांति–निर्माता नेटवर्क की समन्वयक, सुश्री अदाह मबाह मुयांग ने की। समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

अपने सम्बोधन में डॉ. वेदव्यास कुण्डू ने कहा कि जब हम संघर्ष समाधान के लिए अहिंसक संचार (एनवीसी) का उपयोग करते हैं, तो परिणाम अक्सर परिवर्तनकारी और लम्बे समय तक चलने वाले होते हैं। उन्होंने संघर्षों को हल करने के लिए मजबूत अहिंसक संचार कौशल विकसित करने पर भी ध्यान केन्द्रित किया। "एनवीसी में, हम जरूरतों को सार्वभौमिक मानव आवश्यकताओं के रूप में परिभाषित करते हैं। जब हम विवादों को हल करने के लिए अहिंसक संचार (एनवीसी) कौशल का उपयोग करते हैं, तो हम सार्वभौमिक मानवीय जरूरतों के हितों की तुलना में अधिक गहराई तक जाते हैं,"।

समकालीन युग में गांधीवादी नैतिकता पर पुनः गौर करना

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा 18 जनवरी, 2021 को "समकालीन युग में गांधीवादी नैतिकता का पुनरीक्षण" पर पांचवां अंतरराष्ट्रीय ई–संवाद आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित वक्ताओं में शामिल थे: श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी, पूर्व उपाध्यक्ष समिति और डॉ विद्या जैन, संयोजक, अहिंसा आयोग, अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संघ (आईपीआरए)। जॉर्ज मेसन यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए से पब्लिक सोशियोलॉजी के प्रोफेसर प्रो. लेस्टर आर. कुर्तज ने मुख्य भाषण दिया। सत्र में दो युवा वक्ता, जापान के सोका विश्वविद्यालय से सुश्री येन फोबे मोक सीन और श्री विदुर भरतराम, फोटोग्राफर और फिल्म निर्माता ने अपने दृष्टिकोण साझा किए। डॉ. एन. राधाकृष्णन, गांधीवादी विचारक, शांति–कार्यकर्ता, शिक्षक, लेखक और पूर्व निदेशक, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने सत्र की अध्यक्षता की।

इस अवसर पर प्रो. लेस्टर कर्ट्ज ने 'गांधीवादी नैतिकताः एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य' पर बोलते हुए, नैतिक विरोधाभासों और विरोधों की ओर संकेत किया। उदाहरण के लिए, गांधी न्याय के योद्धा, शांतिवादी और अहिंसक कार्यकर्ता थे। वे अहिंसक रचनात्मक कार्यों के माध्यम से 'सांस्कृतिक क्रांति' लाये। श्री कुर्तज द्वारा तैयार किए गए कुछ दिलचस्प विरोधाभासों में योद्धा–शांतिवादी, आध्यात्मिक–सामग्री, पारम्परिक–आधुनिक, अधिकार–कर्तव्य, व्यक्तिगत–सामूहिक, नैतिकता–अर्थशास्त्र, सिद्धांत–अभ्यास और विरोध व निर्माण के आयाम शामिल हैं। यह बताते हैं कि गांधी की नैतिकता सत्य + ईश्वर + अहिंसा है। ये अवधारणाएं सत्याग्रह के बड़े मकसद के लिए मौलिक हैं।

संचार के गांधीवादी ,ष्टिकोण के माध्यम से संघर्ष क्षमता को बढ़ावा देना

समिति ने एमिटी स्कूल ऑफ कम्युनिकेशन के सहयोग से 20 जनवरी, 2021 को "संचार के गांधीवादी दृष्टिकोण के माध्यम से संघर्ष क्षमता को बढ़ावा देना" पर छठे अंतरराष्ट्रीय ई–संवाद का आयोजन किया। चर्चा का मुख्य एजेंडा था–टकराव को दूर करने में अहिंसक संचार का महत्व था। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंशु अरोड़ा (एसोसिएट प्रोफेसर, एमिटी स्कूल ऑफ कम्युनिकेशन) द्वारा किया गया। पैनल में प्रो. साइमन हाउडेन (ऑस्ट्रेलिया), प्रो. क्रिसिया चौइट (मोरक्को), सुश्री एलिजाबेथ कैथरीन गानरा (जापान), प्रो. फातिमा हैदरी (अफगानिस्तान), श्री दीपंकर श्री ज्ञान (निदेशक समिति), डॉ वेदाभ्यास कुंडू (कार्यक्रम अधिकारी, समिति) जैसे विभिन्न वक्ता शामिल थे।

'द्यांति पर चिंतन' विषय पर किर्गिस्तान के साथ वार्ता

समिति ने 5 फरवरी, 2021 को किर्गिस्तान के ऑनलाइन विश्वविद्यालय के साथ एक सत्र का आयोजन किया, जिसमें प्रतिभागियों ने समिति द्वारा डिजाइन किए गए "अहिंसक संचार" पर पाठ्यक्रम पर विमर्श किया। प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम अध्ययन पर अपनी समझ के अपने अनुभव साझा किए और इस बात पर विचार किया कि वे इसे अपने दैनिक जीवन में कैसे आगे बढ़ाएंगे। संवाद का विषय "पीस मैटर्स" था जहां अनेक प्रतिभागियों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। इन प्रतिभागियों में शामिल थेः नुज़िजा अब्दुमुहमद, नूरहान ओरोज्बेवा, गुलजादा सिदकोवा, एलिजा तुरुस्बावा, सेज़िम सगिनबेकोवा, ऐनिसा केनेशबेकोवा, कामिलजन काजी हवासखोन, एलविरा इस्काकोवा, गुलिजा तिलनोवा, गुलसैरा महमदसवीर और एलिजा ओमुरजाकोवा। किर्गिस्तान के ऑनलाइन विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. एलिरा तुर्दुबायेवा ने चर्चा का समन्वय किया। डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी, समिति ने प्रतिभागियों के साथ सत्र का संचालन किया।

अहिंसक संचार के माध्यम से संघर्ष क्षमता के विस्तार पर ई–कार्यद्याला

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा 1 मार्च, 2021 को यूनिवर्सिटैट जैम, स्पेन, यूनेस्को और डीप नेटवर्क के सहयोग से "अहिंसक संचार के माध्यम से संघर्ष क्षमता का विस्तार" पर ई–कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने किया। उन्होंने संघर्ष दक्षताओं, संघर्ष समाधान के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण और अहिंसक संचार पर चर्चा की।

गांधीवादी दृष्टिकोण के अनुसार:

- संघर्ष बुरा है, लेकिन इसमें शामिल लोग बुरे नहीं हैं। यह मानवतावादी सिद्धांतों को रेखांकित करता है।
- संघर्ष को अच्छी तरह परिभाषित करें और समझें। अपना लक्ष्य स्पष्ट रूप से बताएं। अपने विरोधियों के लक्ष्यों को समझने की कोशिश करें। सामान्य और संगत लक्ष्यों पर जोर दें।
- संघर्ष को प्रतिद्वंद्वी से मिलने और समाज व स्वयम को बदलने के अवसर के रूप में देखें।
- ध्रुवीकरण न करें। पक्ष और प्रतिपक्ष के बीच भेद न करें। जुड़ाव और सम्पर्क बनाए रखें। अपने प्रतिद्वंद्वी की स्थिति के साथ सहानुभूति रखें।
- हमें संघर्ष को सुलझाने का प्रयास करना चाहिए। हमेशा प्रतिद्वंद्वी के साथ बातचीत करने की कोशिश करें। सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की तलाष करें। स्वयं और प्रतिद्वंद्वी के बीच मानवीय परिवर्तन की तलाश करें।
- उद्देश्य मतान्तरण होना चाहिए न कि जबरदस्ती। ऐसे समाधान खोजें जो आपको और आपके विरोधियों को स्वीकार्य हों। अपने प्रतिद्वंद्वी के साथ कभी भी जबरदस्ती न करें। अपने प्रतिद्वंद्वी को आस्तिक रूप में परिवर्तित करें।
- सकारात्मक अहिंसा, संवाद और आपसी सीख से कभी नहीं डरती।

विरोध होने पर विकल्प उपलब्ध हैं?

- इसके साथ रहना या बचने की रणनीति
- युद्ध में जाना या संभावित मुकदमेबाजी
- बातचीत के जरिए मतभेदों को सुलझाएं
- बातचीत का विस्तार करने और मतभेदों को सुलझाने के लिए किसी तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप को आमंत्रित करें

संघर्ष को देखने के लिए तीन बुनियादी श्रेणियां हैं: धारणा, भावना और संचार। उन्होंने कहा कि संघर्ष क्षमता विकसित करने का मतलब होगा कि यह व्यक्तियों और समूहों को सतह के नीचे छिपे हुए अर्थों और संघर्ष के संभावित कारणों को विच्छेदित करने में मदद करेगा। व्यापक परिघटनाओं का एक अंडरप्ले हो सकता है जो संघर्ष के लिए ट्रिगर फेक्टर होते हैं– इनमें भय, इच्छाएं, रुचियां, सांस्कृतिक मुद्दे, आर्थिक मुद्दे, भावनाएं, असमानताएं, ऐतिहासिक मुद्दे और इरादे शामिल हैं। संघर्ष से निपटने में सक्षम व्यक्ति या समूहों में व्यापक दृष्टिकोण से इन्हें समझने और विश्लेषण करने की क्षमता होती है।

अहिंसक संचार के उनके मॉडल में सभी पहलुओं में अहिंसा शामिल है– मौखिक, अशाब्दिक, विचार और कैसे मन, ह्रदय और शरीर हर स्तर पर अनुशासित रहते हैं।

अहिंसक संचार प्रक्रिया की विषेषता के रूप में अहिंसक अनुनय का महत्व:

1. अशाब्दिक प्रतीकवाद का सार जिसका उद्देश्य आत्मनिरीक्षण और आत्म–अनुशासन को प्रोत्साहित करना, न्याय के लिए संघर्ष और लोगों से भावनात्मक रूप से जोड़ना है।
2. गांधी के अहिंसक संचार के मॉडल में मानव अन्योन्याश्रितता के सिद्धांत शामिल हैं और ये मानव प्रकृति के लिए ब्रह्मांडीय दृष्टिकोण के महत्व को रेखांकित करते हैं।
3. सामाजिक और आर्थिक मुक्ति के लिए रचनात्मक कार्यों के माध्यम से जनता के दिलों तक पहुँचने में उनकी रणनीति शामिल थी। उदाहरण के लिए, उनका तावीज इस बात का एक शक्तिशाली कथन है कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति को आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता है कि वे समाज के अंतिम व्यक्ति के लिए क्या कर रहे हैं। यह सहानुभूतिपूर्ण सम्बन्धों का सार।
4. अहिंसा के उनके पांच बुनियादी स्तम्भ– सम्मान, समझ, स्वीकृति, प्रशंसा और करुणा को एक अहिंसक संचार पारिस्थितिकी तंत्र की मूलभूत वास्तुकला के रूप में माना जा सकता है।
5. गांधीवादी मॉडल एक व्यक्ति के विकास को मूल्यों और नैतिकता के उच्च स्तर और मानवीय गरिमा के सम्मान पर जोर देता है।
6. उनका संचार मॉडल नैतिक रूप से अनुषासित होने के महत्व को रेखांकित करता है, अहिंसा और सच्चाई के सिद्धांतों का सख्ती से पालन करता है, यह रचनात्मक और अभिनव, खुला और लचीला है।

अहिंसक संचार के माध्यम से अभद्र भाषा का मुकाबला करने पर ई–संवाद

यह भाषा का एक दोष है कि शब्द स्थायी वास्तविकताओं का संकेत देते हैं और लोग इसे छल के रूप में नहीं देखते हैं। लेकिन केवल शब्द ही वास्तविकता नहीं बना सकते। इस प्रकार लोग अंतिम लक्ष्य की बात करते हैं और मानते हैं कि यह वास्तविक है, लेकिन यह शब्दों का एक रूप है और इसका लक्ष्य सार रहित है। जो वस्तुओं और अवधारणाओं की शून्यता को महसूस करता है वह शब्दों पर निर्भर नहीं होता है। पूर्ण ज्ञान परिभाषा से परे है, और पथविहीनता इसका मार्ग है। – प्रज्ञापारमिता

2019 में संयुक्त राष्ट्र की रणनीति और अभद्र भाषा पर कार्य योजना के शुभारम्भ पर संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने कहा था, 'डिजिटल प्रौद्योगिकी के माध्यम से घृणास्पद और विनाशकारी विचारों को तेजी से बढ़ाया जाता है और चरमपंथी ऑनलाइन इकट्ठा हो रहे हैं, नये लोगों को कट्टरपंथी बना रहे हैं। उन्होंने सभी से अभद्र भाषा के व्यवहार का विरोध करने का आग्रह किया "किसी भी अन्य दुर्भावनापूर्ण कार्य की तरहः बिना शर्त निंदा करके इसे बढ़ाने से इनकार करना, सच्चाई के साथ इसका मुकाबला करना और अपराधियों को अपना व्यवहार बदलने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है।"

इस संदर्भ में, समिति के कार्यक्रम अधिकारी, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने अहिंसक संचार के गांधीवादी मॉडल को अभद्र भाषा के खतरे का मुकाबला करने के लिए प्रस्तुत किया। प्रो. जुआन पेड्रो ने 18 मार्च, 2021 को यूनिवर्सिडैड

कम्प्लीटेंस डी मैड्रिड, स्पेन के सहयोग से आयोजित 'अहिंसक संचार के माध्यम से नफरत भरे भाषण का मुकाबला करने' पर ई–संवाद का संचालन किया।

उन्होंने कहा कि अभद्र भाषा का मुकाबला करने के लिए अलग–अलग तरीके हैं। इनमें शामिल हैं:

- समुदाय द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों के माध्यम से जागरूकता बढ़ाना या भेदभाव और असहिष्णुता के खतरों के बारे में मित्रों और परिवार को शिक्षित करना।
- अफवाह या गलत सूचना फैलाने वाले सोशल मीडिया पोस्ट की रिपोर्ट करना।
- सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर शांति और सहिष्णुता के सकारात्मक संदेशों को बढ़ावा देना।
- अभद्र भाषा द्वारा लक्षित व्यक्तियों या समूहों का समर्थन करना और नीति निर्माताओं को भेदभावपूर्ण भाषा या नीतियों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- संघर्ष संवेदनशील पत्रकारिता पर कार्यशालाओं की मेजबानी करना ताकि पत्रकारों को संघर्ष के स्रोतों की पहचान करने के लिए नैतिक क्षमता विकसित करने में मदद मिल सके और समाचारों को निष्पक्ष और सटीक रूप से रिपोर्ट किया जा सके।
- घृणास्पद भाषण की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए अहिंसक संचारकों की एक सेना का विकास करना।

इस अवसर पर अभद्र भाषा का मुकाबला करने के लिए गांधीवादी प्रथाओं और इसके विभिन्न आयामों पर विस्तृत चर्चा की गई।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति में गाांधीवादी अध्ययन और शांति अनुसंधान के लिए अंतरराष्ट्रीय केन्द्र

मध्यस्थता पर संवाद

मध्यस्थता पर संवाद पर श्रृंखला

मध्यस्थता बातचीत की एक प्रक्रिया है जिसमें एक तीसरा पक्ष शामिल होता है। यह तीसरा पक्ष एक पेशेवर मध्यस्थ हो सकता है, यह कोई अन्य व्यक्ति हो सकता है, यह लोगों का समूह हो सकता है या कोई संस्था भी हो सकती है जो इस तरह के विवाद में शामिल है। मध्यस्थता व्यक्तिगत और संस्थागत दोनों स्तरों पर हो सकती है। मध्यस्थ बनने की प्रक्रिया में कई अवांछित चीजों को छोड़ना होगा।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों विशेषज्ञों के साथ मध्यस्थता पर संवाद की पांच–किस्तों की श्रृंखला का आयोजन किया। समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदन्यास कुप्पू, और पंजाब विश्वविद्यालय की सुश्री मानसी शर्मा ने चर्चा में भाग लिया और सत्र का संचालन भी किया।

श्रृंखला 1– पेरू से संघर्ष समाधान के लिए वैकल्पिक तंत्र में विशेषज्ञ, श्री गुस्तावो अनाय सेंटेनो और शांति और संघर्ष अध्ययन की विशेषज्ञ, जापान की सुश्री गलिजाबेथ कैथरीन गरारा 6 फरवरी, 2021 को वक्ता के रूप में उपस्थित थीं।

अपने दृष्टिकोण को साझा करते हुए गुस्तावो ने कहा: मध्यस्थता के

क्षेत्र में एक विशेषज्ञ के रूप में मैंने लैटिन अमेरिका के विभिन्न हिस्सों की यात्रा की है और मैंने देखा है कि मध्यस्थता के लिए आपको वकील होने या कानूनी क्षेत्र में होने की आवश्यकता नहीं है। "मध्यस्थ मध्य भाग हैं और सक्रिय रूप से सुनने के साथ वे वास्तव में लोगों की जरूरतों को बहुत गहरे स्तर पर समझ सकते हैं। एक अच्छा मध्यस्थ वह होता है जो वास्तव में सामाजिक संदर्भ को समझता है और व्यक्तिगत स्तर पर मुद्दों से जुड़ सकता है।" उन्होंने जोड़ा।

एलिजाबेथ का मानना है कि आत्म–जागरूकता की अक्सर अनदेखी की जाती है। एक मध्यस्थ को प्रतिदिन आत्म–जागरूकता का अभ्यास करना चाहिए। युवा और विशेषज्ञ मध्यस्थों दोनों के लिए कौशल को तराशना महत्वपूर्ण है। सहकर्मियों के साथ चुनौतियों पर चर्चा करना, सह–मध्यस्थता का अभ्यास करना, फीडबैक लेना काम आ सकता है।

मध्यस्थता किसी ऐसे व्यक्ति को बुलाती है जो शांति की संस्कृति को समझता हो। इसमें सामाजिक और आर्थिक मतभेदों की सावधानीपूर्वक जांच करने की आवश्यकता है। मध्यस्थ का काम लोगों को प्रक्रिया का हिस्सा बनाना है। उसे शरीर की भाषा के साथ–साथ सुनने के अच्छे कौशल की समझ होनी चाहिए।

सीरीज 2– एडिया पैसिफिक सेंटर फॉर आर्बिट्रेशन एंड मीडिएशन, दिल्ली की कार्यकारी निदेशक, सुश्री इरम मजीद ने 8 फरवरी, 2021 को अपनी बातचीत के दौरान कहा कि मुकदमा इस बारे में होता है कि कौन सही है जबकि मध्यस्थता इस बारे में है कि क्या सही है। मध्यस्थता जीवन का एक तरीका है। यह मानव–मानव सम्बन्ध के बारे में है और इसलिए इसमें मूल्यांकन की कोई जगह नहीं है। मध्यस्थता का उद्देश्य मुद्दों के पीछे छिपे हितों का पता लगाना है। लोगों की अलग–अलग धारणाएं, भावनाएं और स्वभाव होते हैं। मध्यस्थता इन अंतरालों को पाटने और उन्हें एक ही जगह पर लाने का काम करती है। प्रभावी संचार के साथ एक मध्यस्थ मुद्दों पर मध्यस्थता कर सकता है और उन्हें पक्षों के विकास के अवसरों में बदल सकता है।

उन्होंने आगे कहा, एक मध्यस्थता कक्ष में तीन आवाजें गूँजती हैं, मध्यस्थ की आवाज एक जोड़ने वाली आवाज होती है, आगे उन्होंने बताया, एक मध्यस्थ को पार्टियों के मौखिक और अशाब्दिक संचार दोनों को समझने की आवश्यकता होती है। समझने की जिज्ञासा करुणा और सहानुभूति के साथ होनी चाहिए।

सीरीज 3– एडवोकेट, मध्यस्थ, सुलहकर्ता, गोल्फर और शांतिदूत, श्री विक्रम सिंह ने 10 फरवरी, 2021 को आयोजित संवाद की तीसरी श्रृंखला में भाग लिया। इस अवसर पर बोलते हुए, उन्होंने कहा, विवादों का समाधान दो पक्षों के बीतर ही सबसे अच्छा होता है। अहंकार, गलत संचार और ऐसी अन्य चीजें एक संवाद में जब बाधा डालती हैं, तो वहां मध्यस्थता की भूमिका प्रारम्भ होती है। मध्यस्थता सभी परिस्थितियों के इर्द–गिर्द केन्द्रित बातचीत के

बारे में है। यह एक अनौपचारिक प्रक्रिया है जो सड़क, स्कूल, पार्क कहीं भी हो सकती है। मध्यस्थों को प्रशिक्षित लोगों की नहीं बल्कि मध्यस्थता की मानसिकता वाले लोगों की आवश्यकता है। आप लोगों को मध्यस्थता के लिए प्रशिक्षित नहीं कर सकते। एक मध्यस्थ को एक अच्छे इरादे की आवश्यकता होती है। एक मध्यस्थ को यह कभी नहीं मानना चाहिए कि एक व्यक्ति को सब कुछ पता है, बल्कि उसे स्पष्ट रूप से बातचीत का अर्थ बताना चाहिए। अगर इरादा अच्छा है तो कोई भी संचार अहिंसक हो सकता है।

श्रृंखला 4– मध्यस्थता और शरीर की भाषा पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित वक्ता, ऑस्ट्रेलिया के साइमन हर्डिन ने 11 फरवरी, 2021 को एक सत्र में मध्यस्थता पर विभिन्न मुद्दों पर

बात की। उन्होंने कहा, मध्यस्थ की जिम्मेदारी सुरक्षित स्थान बनाना है, जहां लोगों को लगता है कि वे अपने विचारों को साझा कर सकते हैं और संवाद कर सकते हैं। लोग अक्सर शिक्षित हो जाते हैं। लेकिन शिक्षा केवल एक उपकरण है। यह आपको ज्ञान देता है, लेकिन उस ज्ञान को व्यवहार में लाने की जरूरत है। अकेले थ्योरी से कोई फायदा नहीं होता। यह वह प्रथा है जो कम सैद्धांतिक होने पर भी एक मुख्य मध्यस्थ बनाती है, आगे एक पारस्परिक समझौते की दिशा में काम करने में सहायता करने के लिए मध्यस्थ की एक तटस्थ भूमिका होती है। उसे सलाह या निर्देश नहीं देना चाहिए। साथ ही, बातचीत की गोपनीयता को सख्ती से बना, रखा जाना चाहिए। पारस्परिक सम्मान मध्यस्थता की प्रक्रिया का एक अन्य अनिवार्य तत्व है। उन्होंने यह भी कहा कि मध्यस्थों को किसी भी परिस्थिति के लिए तैयार रहना होगा।

सीरीज 5– 11 फरवरी, 2021 को एक और सत्र सुश्री रोबर्टा वलि के साथ आयोजित किया गया, जो एक मध्यस्थ और अहिंसक संचार और संघर्ष समाधान में एक कोच हैं, जहां उन्होंने संघर्ष समाधान में मध्यस्थ की सकारात्मक भूमिका पर बात की। उन्होंने आगे कहा कि किसी भी स्तर पर मध्यस्थ को सब कुछ जानने की जरूरत नहीं है। आज विश्व हर जगह संघर्ष से भरा है और मध्यस्थों को शांतिपूर्ण संचारक बनने की इच्छा होनी चाहिए।

न्यूरो–लिंग्विस्टिक–प्रोग्रामिंग पर मध्यस्थता पर संवाद भाग–6

समिति ने 8 मार्च, 2021 को श्न्यूरो लिंग्विस्टिक प्रोग्रामिंग (एनएलपी) पर मध्यस्थता पर एक संवाद का आयोजन किया। यह संवाद श्रृंखला का छठा कार्यक्रम था। इसमें मुख्य वक्ता 'उम्मीद' की निदेशक सांस्कृतिक अनुसंधान और प्रशिक्षण (सीसीआरटी) की सलाहकार सुश्री सलोनी प्रिया, सुश्री मानसी शर्मा ने संवाद का संचालन किया, जिसके दौरान सुश्री सौलनी प्रिया ने एनएलपी से सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों पर बात की और विस्तार से बताया कि इसका वास्तव में क्या मतलब है। उन्होंने कहा,

न्यूरो तंत्रिका तंत्र को संदर्भित करता है जिसके माध्यम से अनुभवों को सचेत या अचेतन विचार में अनुवादित किया जाता है। लिंग्विस्टिक से तात्पर्य है कि लोग कैसे संवाद करते हैं और अनुभवों को समझने के लिए भाषा का उपयोग कैसे किया जाता है और प्रोग्रामिंग मौलिक एनएलपी अवधारणा को संदर्भित करता है कि व्यवहार और सोच की कैसे कोडिंग की जा सकती है और इसके परिणामस्वरूप किसे उसे पुनः पेश किया जा सकता है।

उन्होंने आगे बताया कि एनएलपी के चार मुख्य आधार हैं तालमेल, संवेदी जागरूकता, परिणामात्मक सोच और व्यवहार में लचीलापन। एनएलपी दुनिया को एक बेहतर जगह नहीं बनाता है अपितु यह आपकी दुनिया को देखने/समझने के तरीके को बदलने में आपकी मदद करता है। एनएलपी आपको दुनिया को अलग तरह से देखने की अनुमति देता है जिससे आपको अधिक प्रभावी होने और अधिक सफल जीवन जीने में मदद मिलती है। इस सरल तकनीक की शक्ति जबरदस्त है। यह मध्यस्थता में अहिंसक संचार के लिए एक बड़ा मददगार हो सकता है। एनएलपी बहुत सरल, अत्यंत कार्यात्मक है और रोजमर्रा के संचार से सम्बन्धित है। अन्य मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के विपरीत, इसके कार्यान्वयन के लिए थोड़ा सा ज्ञान पर्याप्त है।

बातचीत के दौरान एनएलपी की विस्तृत तकनीकों पर भी चर्चा की गई। सुश्री सलोनी प्रिया ने आगे कहा, एनएलपी तकनीक बुनियादी इंद्रियों के उपयोग पर आधारित हैं, अपनी आवाज की शक्ति के माध्यम से उपचार के बारे में हैं। इसके लिए एक ऐसी भाषा की जरूरत है जो सकारात्मकता का तंत्रिका सम्बन्धी संकेत पैदा करे।

संवाद के दौरान कई अन्य तकनीकी पहलुओं पर भी चर्चा की गई, जिसका संचालन डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी, गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने किया।

ओरिएण्टेद्दान कार्य□म

अहिंसक संचार– तत्व और अनुप्रयोग पर वेबिनार

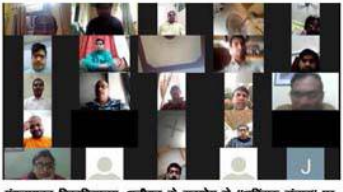

मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के सहयोग से "अहिंसक संचार" पर वर्चुअल ई–कार्यशाला में शामिल प्रतिभागी।

गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के सहयोग से 15 मई, 2020 को "अहिंसक संचार– तत्व और अनुप्रयोग" पर एक वेबिनार का आयोजन किया। इस वेबिनार में मुख्य वक्ताओं में शामिल थे: प्रो. शिवाजी सरकार, डीन और निदेशक मंगलायतन विश्वविद्यालय श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक समिति, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी समिति और डॉ. धीरज कुमार गर्ग, संयुक्त निदेशक एम. यू.। वेबिनार में लगभग 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

अहिंसक संचार पर वेबिनार

समिति ने 'वेबिनार सीरीज: कोविड–19 आउटब्रेक' के तहत 16 मई, 2020 को 'अहिंसक संचार' पर एक वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार का आयोजन ब्लू बेल्स ग्रुप ऑफ स्कूल्स, गुरुग्राम के सहयोग से किया गया था। कार्यशाला में मुख्य वक्ता समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू थे। वेबिनार का संचालन सुश्री मानसी ने किया। इस वेबिनार में 78 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, 'अहिंसक संचार' पर आयोजित वेबिनार के दौरान प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए।

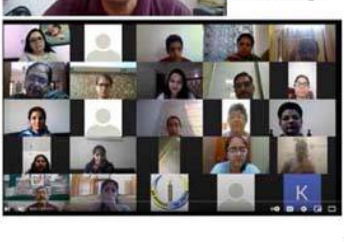

वेबिनार की शुरुआत ब्लू बेल्स मॉडर्न स्कूल की प्राचार्या श्रीमती अलका सिंह के सम्बोधन से हुई, जिन्होंने एक–दूसरे से संचार की आवश्यकता और संचार हमारे और दूसरों के व्यवहार को कैसे प्रभावित करता है, के बारे में चर्चा की।

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने अपने स्वागत भाषण में सभी स्तरों पर शांतिपूर्ण संचार स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया और सहकर्मी समूहों के बीच गलतफहमी को कम करने पर जोर दिया। समाज में हिंसा होने पर अपना शोक व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि ज्यादातर समय प्रतिक्रियाएं काफी आवेगपूर्ण होती हैं और यह आवेग प्रतिकूल प्रतिक्रियाएं पैदा करता है। उन्होंने कहा कि जो किया जाना चाहिए वह यह महसूस करना है कि एक दूसरे के साथ संचार के दौरान 'गर्मागर्मी' पैदा ना हो और अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया जाए।

अहिंसक संचार (एनवीसी) पर कार्यशाला का संचालन करते हुए डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने विभिन्न सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों के बारे में बताया। संचार के पांच प्रमुख स्तम्भों– 'सम्मान', 'समझ', 'स्वीकृति', 'प्रशंसा' और 'करुणा' पर चर्चा करते हुए उन्होंने भारतीय संस्कृति की विशेषताओं के बारे में समझाया।

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए, डॉ. कुण्डू ने मार्शल रोसेनबर्ग को उद्धृत किया, जिनके अनुसार: "अहिंसक संचार भाषा और संचार कौशल पर आधारित है जो कठिन परिस्थितियों में भी मानव बने रहने की हमारी क्षमता को मजबूत करता है। यह हमें इस बात में मार्गदर्शन करता है कि हम अपने आप को कैसे व्यक्त करते हैं और दूसरों को किस प्रकार सुनते हैं। उन्होने कहा कि हमारे आस–पास के मनुष्यों और जीवित प्राणियों के प्रति 'ब्रह्मांड–केन्द्रित' दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है। प्रख्यात गांधीवादी स्वर्गीय नटवर ठक्कर का जिक्र करते हुए डॉ. कुण्डू ने कहा कि अपने अंतस को समझने और गहराई तक जाने की जरूरत है।

अपनी प्रस्तुति के माध्यम से उन्होंने भाषा की शक्ति, करुणा, सकारात्मकता पर विचार किया और उल्लेख किया कि नैतिक निर्णय और रूढ़िवादिता से बचने की भी आवश्यकता है। डॉ. कुण्डू ने करुणामयी श्रवण की कला पर बल दिया, जिसके बारे में उनका मानना था कि इसे विकसित किया जाना चाहिए।

वेबिनार के संवादात्मक सत्र में कई प्रतिभागियों ने एनवीसी के सिद्धांतों और आज इसकी प्रासंगिकता पर विभिन्न प्रश्न पूछे। परिचर्चा करने वालों में सुश्री सिद्धिका शर्मा, धैर्य कुमार, कुनिका शर्मा, सान्या, रिया भाटिया, मयंक शर्मा, एन. वशिष्ठ और वंशिका शामिल थीं।

लॉकडाउन के दौरान अहिंसक संचार के उपयोग से सम्बन्ध प्रबंधन

'अहिंसक संचार संबंधों और तनाव प्रबंधन के मुद्दों से उभरने वाली चुनौतियों से लड़ने के लिए कोविड–19 संकट से प्रभावित व्यक्तियों को रणनीति प्रदान करता है होते हैं। ऐसे समय में जब बड़ी संख्या में लोग खुद को कोरोना वायरस के कारण लॉकडाउन में पाते हैं,

Non Violent COMMUNICATION Orientation Course

कई लोग लगातार अपने आसपास रहने वालों के साथ संबंधों में बढ़ते टकराव और तनाव का अनुभव कर रहे हैं।" यह विचार वक्ताओं द्वारा 22 मई, 2020 को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और दिल्ली मेट्रोपॉलिटन एजुकेशन द्वारा आयोजित एक वेबिनार में व्यक्त किये गये। इस वेबिनार में 163 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

वेबिनार में व्याख्यान देते हुए, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने अहिंसक संचार के विभिन्न तत्वों और लॉकडाउन के इस समय के दौरान सम्बन्ध प्रबंधन में इनका उपयोग कैसे किया जा सकता है, इस पर चर्चा की। दिल्ली मेट्रोपॉलिटन एजुकेशन के डीन डॉ. अंबरीश सक्सेना ने सत्र का संचालन किया।

सत्र में सम्बन्ध प्रबंधन और लॉकडाउन के कारण परिवारों में तनाव के बारे में बात की गई। उन्होंने अहिंसा के गांधीवादी स्तम्भों–आपसी सम्मान, समझ, स्वीकृति, प्रशंसा और करुणा की व्याख्या की।

वेबिनार में काउंसलर, आध्यात्मिक उपचारक, जीवन–प्रबन्धन कोच, सम्बन्ध विशेषज्ञ सहित 255 प्रतिभागी शामिल थे, जो महामारी के कारण मनोवैज्ञानिक संकट में फंसे विभिन्न लोगों को अपनी सलाह दे रहे थे।

डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने इस संघर्षपूर्ण समय में अहिंसक संचार के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि 'इस लॉकडाउन के कारण कई लोग खुद को बीमार मानसिक स्वास्थ्य और नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभावों की ओर बढ़ते हुए पाते हैं, जिनमें अभिघातजन्य तनाव के लक्षण, भ्रम और क्रोध शामिल हैं। लंबी अवधि के तनाव, संक्रमण भय, भावनात्मक अविश्वास, निराशा, ऊब, अपर्याप्त आपूर्ति, अपर्याप्त जानकारी, वित्तीय नुकसान और कलंक शामिल हैं, कई को दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति से समझौता करने के लिए मजबूर किया जा रहा है, कुल मिलाकर हर कोई 'कोरोना थकान' से पीड़ित है।

उन्होंने यह भी कहा कि 'अपनी वाणी, क्रिया, विचार और दृष्टिकोण में अहिंसा को आत्मसात करके हम कम आक्रामक हो सकते हैं। इससे हम शांत रहेंगे और हम अपने रिश्तों में आक्रामक होने से बचेंगे।

वेबिनार में आत्मनिरीक्षण पर भी चर्चा की गयी, कि कैसे लोग भौतिकवादी लाभ और विलासितापूर्ण जीवन के पीछे भाग रहे है। लोगों को इस संकट को अपने अंतर्वैयक्तिक संचार के लिए खुद को प्रोत्साहित करने के अवसर के रूप में देखना चाहिए। उन्हें खुद को नया रूप देना चाहिए और अपनी छिपी प्रतिभा को बाहर निकालने का प्रयास करना चाहिए। यह एक ऐसा चरण है जब व्यक्ति को अपनी भावनात्मक शब्दावली का विस्तार करना चाहिए। भाषा और शब्दों का अनुचित उपयोग संघर्ष और अराजकता में योगदान कर सकता है। शांतिपूर्ण और पूर्ण जीवन जीने के लिए सहानुभूति का अभ्यास करना चाहिए। डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने कहा, "हम दूसरों के प्रति जितना अधिक सहानुभूति रखते हैं, हमें दूसरों से अधिक सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार की अपेक्षा करनी चाहिए। इसलिए हम सहानुभूतिपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देने में सक्षम होंगे जो बदले में घरों में तनाव के स्तर को कम करने में सक्षम होंगे।

लोगों को दूसरों के प्रति दयालु होना चाहिए। उन्हें एक–दूसरे की चिंताओं और कठिनाइयों को समझना चाहिए। हमें दुनिया भर के सभी श्रमिकों के प्रति करुणा और सम्मान दिखाना चाहिए। सभी स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, डॉक्टरों, उन सभी लोगों के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहिए जो यह सुनिश्चित करने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं कि हम सुरक्षित और स्वस्थ हैं।

महामारी के दौरान प्रतिरक्षा को मजबूत करना

अच्छी प्रतिरक्षा सबसे आवश्यक महत्वपूर्ण उपाय है जिसे हमारे जीवन में किसी भी प्रकार के वायरस से लड़ने के लिए ध्यान रखना चाहिए। कोविड–19 महामारी ने पहले से कहीं अधिक प्रतिरक्षा प्रणाली की भूमिका पर ध्यान केन्द्रित किया है। अच्छी प्रतिरक्षा प्रणाली के महत्व और एक अच्छी और मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली को विकसित करने के तरीके पर 23 मई, 2020 को गांधी समिति एवं दर्शन समिति द्वारा आयोजित "वैकल्पिक चिकित्सा के साथ प्रतिरक्षा और स्वास्थ्य को बनाए रखने" के विषय पर एक ऑनलाइन वेबिनार आयोजित किया गया। वेबिनार में स्वास्थ्य विशेषज्ञों, छात्रों, प्रशिक्षुओं, शिक्षाविदों, योगाचार्यों और समिति स्टाफ सदस्यों सहित 80 सदस्य शामिल थे। कार्यक्रम का संचालन समिति के कार्यक्रम कार्यकारी राजदीप पाठक ने किया। श्री पंकज शर्मा, तकनीकी सहयोगी समिति ने इस सत्र की मेजबानी कर तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

चर्चा की शुरुआत करते हुए, निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने बच्चों, वयस्कों और सामान्य रूप से लोगों के बीच स्वास्थ्य की बढ़ती चिंता के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि इस समय कोरोना वायरस ने मानवता को घेर लिया है। ऐसे में प्राकृतिक उपचार के जरिये प्रतिरक्षा को मजबूत करने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने प्राकृतिक उपचार के लाभों पर भी प्रकाश डाला और कहा कि कैसे महात्मा गांधी इस पूरे इलाज में दृढ़ता से विश्वास करते थे, जिसे उन्होंने अपनी, अपनी पत्नी और अपने बच्चों पर जब भी आवश्यकता होती थी, लागू किया।

एनआईटीआरडी (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ट्यूबरकुलोसिस एंड रेस्पिरेटरी डिजीज) की डॉ. मंजू रानी अग्रवाल ने ऑनलाइन इंटरेक्टिव व्याख्यान देते हुए सुरक्षित और स्वस्थ रहने और प्रतिरक्षा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रकार के "प्राणायाम" (योग) के बारे में बहुमूल्य जानकारी साझा की। उन्होंने कई आसनों को बताया जैसे: अनुलोम विलोम, प्राणायाम शरीर के समुचित कार्य को सुगम बनाता है। उन्होंने कहा, "पद्मासन" स्वास्थ्य और मन को नियंत्रित करने के लिए सबसे आसान और सबसे महत्वपूर्ण प्राणायाम है।

उन्होंने कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा जैसे कई उपचार एक दवा रहित चिकित्सा है जिसमें स्वास्थ्य को बहाल करने और बनाने के लिए "पंचमहाभूत" या प्रकृति के पांच तत्वों का उपयोग शामिल है। उन्होंने कहा कि 'प्राकृतिक चिकित्सा' शरीर के स्वयं के उपचार तंत्र को स्वामाविक रूप से समर्थन देकर जीवन शक्ति को बहाल करती है। उन्होंने 'क्रोमोथेरेपी' की अवधारणा या रंगों से जुड़ी चिकित्सा का भी विस्तार से वर्णन किया। "ये रंग अलग–अलग बीमारियों के लिए अलग–अलग उपचार दिखाते हैं जब पानी और तेल सूरज के सम्पर्क में आते हैं", उन्होंने कहा। सफेद रंग कंकाल प्रणाली का प्रतीक है और हड्डियों को प्राकृतिक कैल्शियम प्रदान करता है, बैंगनी अच्छी नींद के लिए, रोगों के लिए इंडिगो, तंत्रिका तंत्र और गले के लिए, नीला आंखों और जिगर की बीमारियों के लिए, हरा पीला पूर्ण उत्सर्जन में मदद करता है, संतरा भूख बढ़ाता है। 'हाइड्रोथेरेपी' या पानी के उपयोग पर विचार करते हुए उन्होंने कहा कि असुविधा को दूर करने और शारीरिक कल्याण के लिए यह आवश्यक है । डॉ. अग्रवाल ने कहा कि 'हाइड्रोथेरेपी' शिथिल प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करती है, तनाव को कम करती है और सूजन को कम करती है। तत्पश्चात, डॉ. अग्रवाल ने खाद्य चिकित्सा के बारे में चर्चा करते हुए पोशक तत्वों के उचित सेवन के बारे में बताया।

हाथ की मुद्राओं के माध्यम से विभिन्न "हस्त मुद्रा" और योगाभ्यास की जानकारी भी उन्होंने दी, जिसका अभ्यास कभी भी और कहीं भी किया जा सकता है। डॉ मंजू ने 'ज्ञान मुद्रा' के बारे में बात की 'वात मुद्रा' (वात, पित्त और कफ को शांत करने का सबसे सरल और सबसे प्रभावी तरीका) 'अपान मुद्रा' (जो निचले शरीर को बेहतर बनाने में मदद करती है) और 'प्राण मुद्रा' (जीवन शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है और जीवन शक्तियों के प्रवाह को सक्रिय करती है।

संवादात्मक सत्र में उपचारों से सम्बन्धित कई प्रश्नों के जवाब दिए गये, जिसमें प्रक्रियाओं पर विशेष जोर दिया गया और प्रभावी परिणामों के लिए रंग चिकित्सा का उपयोग किया गया।

सूरत, गुजरात

'हमारे दैनिक जीवन में अहिंसक संचार' पर वेबिनार आयोजित

गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा ऑरो यूनिवर्सिटी सूरत, गुजरात के स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन के सहयोग से 11 जून, 2020 को "हमारे दैनिक जीवन में अहिंसक संचार (एनवीसी)" पर एक वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार में 52 प्रतिभागियों ने भाग लिया। वक्ताओं में समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान और कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू शामिल थे। प्रो. श्याम पारेख, जीन, जनसंचार विभाग, ऑरो विश्वविद्यालय भी इस अवसर पर उपस्थित थे। प्रो. सयंतनी रॉय सहायक प्रोफेसर ने सत्र का संचालन किया।

वेबिनार की शुरुआत निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान द्वारा एनवीसी के गांधीवादी दृष्टिकोण के परिचय के साथ हुई। एनवीसी के गांधीवादी ढांचे के विभिन्न आयामों का जिक्र करते हुए, श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने इस बात पर भी जोर दिया कि संचार की शैली पिछले कुछ वर्षों में बदल गई है और वर्तमान संदर्भ में बहुत अधिक दबाव ने मानवता को जकड़ लिया है। उन्होंने शांत और सहज मन से दबाव को संभालने के महत्व का उल्लेख किया। यह कहते हुए कि महात्मा गांधी ने

अपने विरोधियों के लिए कभी कठोर शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया, और इस तरह लोगों की प्रशंसा हासिल की। श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने प्राचीन भारतीय संस्कृति और परंपरा की बात करते हुए कहा कहा कि मुद्दों की सहानुभूतिपूर्ण समझ और संवादों के माध्यम से ही शांतिपूर्वक समस्याओं को हल किया जा सकता है।

मौखिक और गैर–मौखिक संचार दोनों का उल्लेख करते हुए, उन्होंने जोर देकर कहा कि सकारात्मक और निष्पक्ष संचार की कला घर से शुरू होनी चाहिए जो समाज में कार्यस्थल पर और इसी तरह से आगे बढ़ती है। "हमें खुद को बदलना होगा, अपने भीतर बात करनी होगी, आंतरिक रूप से आत्मनिरीक्षण करना होगा", उन्होंने कहा, "बाहरी दुनिया में दूसरों के बीच शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व स्थापित करने के लिए पहले हमारे भीतर शांति स्थापित करने की आवश्यकता है"।

संवादात्मक सत्र में प्रतिभागियों के बीच एक प्रश्न–उत्तर सत्र भी किया गया। प्रमुख वक्ता डॉ. वेदाभ्यास कुंडू और मॉडरेटर प्रो सायंतनी ने अहिंसक संचार (एनवीसी) के सिद्धांतों पर व्याख्यान देते हुए, अपने और दूसरों के बीच माइंडफुलनेस डायलॉग के विशेष संदर्भ में कई प्रमुख बिंदुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने एनवीसी के विभिन्न तत्वों की ओर भी इशारा किया और एनवीसी के पांच गांधीवादी स्तंभों पर जोर दिया जो रोजमर्रा की जिंदगी का आधार बनते हैं।

नकारात्मक आख्यानों पर बोलते हुए, उन्होंने प्रतिभागियों से इस तरह के विचारों को अपने विवेक और रणनीतिक रूप से उपयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र में कई लोगों द्वारा माइंडफुलनेस पत्रकारिता के उपयोग का भी उल्लेख किया और कहा कि परस्पर विरोधी स्थितियों से निपटने के लिए यह एक सहयोगी दृष्टिकोण तकनीक है। इंटरैक्टिव प्रश्न–उत्तर सत्र में भाग लेने वालों में शामिल थे प्रो श्याम पारेख, सुश्री गायत्री देशमुख, सुश्री मैत्री देसाई, सुश्री आसिया नकवी, श्री मलिक मोहम्मद, अशफाक, श्री राजदीप पाठक और श्री गुलशन गुप्ता।

कारगिल

"कक्षाओं में संघर्ष समाधान पर रणनीतियाँ: एक अन्वेषण" पर कार्यशाला

शिक्षा विभाग कारगिल, लद्दाख ने गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सहयोग से 22–23 जुलाई, 2020 को शिक्षकों/व्याख्याताओं के लिए "कक्षाओं में संघर्ष समाधान पर रणनीतिः एक अन्वेषण" पर दो दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला शुरू की। माननीय सीईसी एलएचडीसी कारगिल श्री फिरोज अहमद खान ने ऑनलाइन कार्यशाला का उद्घाटन किया और शिक्षकों, बी. एड, एम. एड और शिक्षा शोधकर्ताओं के लिए एक मुफ्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम "शांतिपूर्ण स्कूलों के लिए संघर्ष समाधान की रणनीतियां" भी शुरू किया।

श्री नजीर अहमद वानी सीईओ कारगिल ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। रिसोर्स पर्सन डॉ. शाजिया मंसूरी के साथ डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू कार्यक्रम अधिकारी समिति भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री सैयद सज्जाद आगा, कार्यक्रम समन्वयक, शिक्षा विभाग, कारगिल द्वारा किया गया। दो दिवसीय कार्यशाला में 95 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

जम्मू और कश्मीर

प्रतिद्रोध से लेकर पुनर्स्थापनात्मक प्रथाओं तक– अहिंसक संचार का उपयोग करके कक्षा के संघर्षों को संभालना

समिति ने गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ एजुकेशन, इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज इन एजुकेशन (**IASE**), क्लस्टर यूनिवर्सिटी, श्रीनगर के सहयोग से 27 जुलाई, 2020 को "प्रतिरोध से लेकर पुनर्स्थापनात्मक प्रथाओं तक–अहिंसक संचार का उपयोग करके कक्षा के संघर्षों को संभालना" विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार में 205 प्रतिभागियों ने भाग लिया और अहिंसक संचार तकनीकों के उपयोग के विभिन्न पहलुओं और रणनीतियों

पर चर्चा की।

प्रो. (डॉ.), प्राचार्य राजकीय शिक्षा महाविद्यालय, आईएएसई, कश्मीर, निदेशक समिति श्री दीपंकर श्री ज्ञान और कार्यक्रम अधिकारी समिति डॉ. वेदव्यास कुण्डू मुख्य वक्ता थे। वेबिनार का संचालन श्री अंजुमन कुरैशी ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत श्री सैयद इकबाल के संगीतमय तराने से हुई।

"संचार के माध्यम से खुशी का पोषण" पर ई–संवाद

गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति के अंतरराष्ट्रीय गांधी अध्ययन और शांति अनुसंधान केन्द्र के तहत, समिति ने 11 अगस्त, 2020 को "संचार के माध्यम से पौष्टिक खुशी" पर एक ई–संवाद का आयोजन किया। यह कार्यक्रम विशेष तौर पर उन लोगों के लिए था, जो "समिति द्वारा संचालित 'अहिंसक संचार" पर मुफ्त ऑनलाइन प्रमाणपत्र कार्यक्रम के विद्यार्थी थे।

समिति की सुश्री प्रेरणा जिंदल द्वारा संचालित और समन्वयित इस संवाद कार्यक्रम में निम्नलिखित वक्ता थे– सुश्री मलिका हुसैनी, छात्रा, अफगानिस्तान, सुश्री सोहिनी जाना, निदेशक, जे. के. नीति संस्थान, जम्मू और कश्मीर, श्री निखिल त्रिपाठी, मध्य प्रदेश के अधिवक्ताय सुश्री सुची शर्मा, दिल्ली की शिक्षिकाय दिल्ली पब्लिक स्कूल, गुरुग्राम के छात्र श्री विनायक त्रिवेदी, कारगिल की सरकारी शिक्षिका सुश्री मरजिया बानो और लेह की छात्रा सुश्री सोनम चोरोल।

"सीबीएसई के साथ व्याख्यान श्रृंखला"– 1 और 2

अहिंसक संचार पर साप्ताहिक व्याख्यान श्रृंखला

अहिंसक संचार पर अपने ऑनलाइन पाठ्यक्रम के तहत समिति केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के साथ एक साप्ताहिक व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन कर रही है। पहली व्याख्यान श्रृंखला 21 अक्तूबर, 2020 को आयोजित की गई थी। जिसमें अहिंसक संचार का सामान्य परिचय दिया गया था। दूसरा व्याख्यान 29 अक्तूबर, 2020 को आयोजित किया गया था और यह इस बात पर केन्द्रित था कि हम शांतिपूर्ण स्कूलों के लिए अहिंसक संचार पारिस्थितिकी तंत्र को कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं। दोनों व्याख्यान समिति कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने दिए।

4 नवम्बर, 2020: व्याख्यान का फोकस अहिंसक संचार के माध्यम से संघर्षों को हल करने पर था। वार्ता विन–विन सिचुएशन के माध्यम से विवादों को हल करने में संघर्ष समाधान की रणनीतियों और अहिंसक संचार की भूमिका पर केन्द्रित थी।

11 नवम्बर, 2020: सीबीएसई के साथ चौथा व्याख्यान क्रोध प्रबंधन पर केन्द्रित था। समिति के पूर्वोत्तर समन्वयक श्री गुलशन गुप्ता द्वारा आयोजित कार्यशाला में क्रोध के पीछे के मनोविज्ञान को समझने और क्रोध को शांत करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया। इस वेबिनार में क्रोध से जुड़े विभिन्न विशयों जैसे अच्छे और बुरे क्रोध

के बीच भेद, किशोरों में किसी अन्य व्यक्ति की तुलना में अधिक बार क्रोध उत्पन्न करने के जिम्मेदार कारक पर चर्चा हुई। इसके अतिरिक्त प्रतिभागियों को अहंकार, ज्ञान, आत्मविश्वास, ईर्श्या और सफलता जैसे कुछ आवश्यक शब्दों के महत्वपूर्ण निहितार्थों के बारे में भी जानने को मिला। वक्ताओं ने अपने सपनों और सफलता को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहने का आह्वान किया, यह क्रोध से खुद को अलग करने और खुश रहने की कुंजी है

18 नवम्बर, 2020: इस व्याख्यान का फोकस अहिंसक संचार के माध्यम से स्वयं को समझने पर था। इसमें आत्म–जागरूक होने की तकनीकों और हमारी आत्म–चर्चा और आंतरिक संवाद प्रकृति में अहिंसक संचार की भूमिका पर चर्चा की गयी।

अहिंसा की अवधारणाओं और आयामों पर व्याख्यान

मालवीय सेंटर फॉर पीस रिसर्च, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के सहयोग से समिति द्वारा आयोजित अहिंसा पर व्याख्यान श्रृंखला के हिस्से के रूप में, 7 दिसम्बर, 2020 को पहले व्याख्यान का फोकस अहिंसा की विभिन्न अवधारणाओं और आयामों पर था। समिति के

कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने व्याख्यान दिया। उन्होंने अहिंसा की विभिन्न सैद्धांतिक और व्यावहारिक धारणाओं, अहिंसा की भारतीय परम्पराओं, गांधीवादी दृष्टिकोण और अहिंसा से सम्बन्धित समकालीन मुद्दों पर बात की।

श्रृंखला में दूसरा व्याख्यान 9 दिसम्बर, 2020 को अहिंसक संचार पर था। डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने अहिंसक संचार की आवश्यकता, अहिंसक संचार क्या है और इसे हमारे दैनिक जीवन में कैसे उपयोग किया जा सकता है, पर ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने अहिंसक संचार पर एक सैद्धांतिक ओरिएंटेशन भी दिया।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार दिवस के अवसर पर कार्यशाला का आयोजन

संयुक्त राष्ट्र विश्व मानवाधिकार दिवस के अवसर पर, स्कूल ऑफ पॉलिटिकल साइंस एंड स्कूल ऑफ विजुअल कम्युनिकेशन, कुमारगुरु कॉलेज ऑफ लिबरल आर्ट्स एंड साइंस, कोयंबटूर ने समिति के सहयोग से संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार पर "रिकवर बेटर" विषय पर एक आमासी कार्यशाला "स्टैंड अप फॉर ह्यूमन राइट्स" का आयोजन किया। 10 दिसम्बर, 2020 को आयोजित इस कार्यक्रम में प्रमुख भाषण भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश और भारत के राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) के पूर्व अध्यक्ष जस्टिस के. जी. बालकृष्णन, द्वारा दिया गया था।

अपने सम्बोधन में न्यायमूर्ति बालकृष्णन ने मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा (यूडीएचआर) के इतिहास और इसके विभिन्न लेखों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि मानवाधिकारों के मूल सिद्धांत प्रारम्भ से ही भारतीय संविधान के आंतरिक पहलू थे, और यह न्यायिक अधिकारों जैसे मामलों में भारतीय नागरिक को अधिक स्वतंत्रता की अनुमति देता है। उन्होंने **NHRC** के अध्यक्ष के रूप में अपने समय और विभिन्न राज्यों के लाभ के लिए उनके आयोग की सिफारिशों के कार्यान्वयन को सक्षम करने वाली प्रक्रियाओं को याद किया। यह कहते हुए कि कोविद –19 महामारी में स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए मानवाधिकारों की आवश्यकता है। उन्होंने सरकारी अधिकारियों को ऐसे समाधान बनाने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर बल दिया जो आम आदमी की समस्याओं को पूरा करते हैं जो स्वास्थ्य की प्राथमिक चिंता से परे हैं। उन्होंने चार बुनियादी मानवाधिकारों – जीवन, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व पर भी चर्चा की।

मानवाधिकारों और संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार घोषणा के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए, केसीएलएएस कोयंबटूर ने स्कूल और कॉलेज के छात्रों के लिए तीन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया, जिसके पुरस्कारों की घोषणा मुख्य अतिथि ने लाइव कार्यक्रम के दौरान की। विजेता प्रविष्टियों की भी स्क्रीनिंग की गई। इन प्रतियोगिताओं में पोस्टर बनाने की प्रतियोगिताएं "लैंगिक समानता" और "महिला सशक्तिकरण" विषयों पर थीं। निबंध प्रतियोगिता "रिकवर बेटर स्टैंड अप फॉर ह्यूमन राइट्स" विषय पर थी और 2 मिनट की लघु वीडियो प्रस्तुति प्रतियोगिता थी। जिसका विषय था– "बाल अधिकार जागरूकता"। इस प्रतियोगिता में भारत के 23 राज्यों के 92 शहरों/कस्बों/गांवों के छात्रों ने भाग लिया।

टीम केसीएलएएस द्वारा एक विशेष वीडियो भी दिखाया गया, जिसे यूएनएचआर वेबसाइट के लिए तैयार किया गया था, जिसमें संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार घोषणा के सभी 30 लेख सूचीबद्ध थे। इस कार्यक्रम का केसीएलएएस के फेसबुक और यूट्यूब पेजों पर सीधा प्रसारण किया गया।

बच्चों के लिए ओरिएंटेद्दान कार्य□म

प्रतिशोध से लेकर पुनर्स्थापनात्मक व्यवहार तक– अहिंसक संचार का उपयोग करके कक्षा के संघर्षों का प्रबन्धन करना

हमें स्वीकृति की संस्कृति बनाने की जरूरत है : डॉ. वेदाभ्यास कुंडू

राष्ट्र शक्ति विद्यालय नई दिल्ली के 250 प्रतिभागियों ने "प्रतिशोध से लेकर पुनर्स्थापनात्मक प्रथाओं तक– अहिंसक संचार का उपयोग करके कक्षा संघर्षों को संभालना" विषय पर आयोजित वेबिनार में भाग लिया। इस वेबिनार में संघर्ष समाधान की रणनीतियों, उनके तत्वों और कक्षा को एकजुट बनाने पर समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू द्वारा चर्चा की गई। जहां उन्होंने स्वीकृति की संस्कृति के निर्माण और हमारे दैनिक जीवन में कृतज्ञता के अभ्यास को बढ़ाने की आवश्यकता को रेखांकित किया। वेबिनार का आयोजन 11 जुलाई, 2020 को किया गया था।

राष्ट्र शक्ति विद्यालय की निदेशक श्रीमती शशि त्यागी ने कहा कि आज जब पूरी दुनिया हिंसा की चपेट में है, ऐसे में इस प्रकार के वेबिनार की आवश्यकता बढ़ जाती है। उन्होंने समझ, सहानुभूति और करुणा का आह्वान किया और प्रतिशोध का विचार, जिसके परिणामस्वरूप समाज में अधिक परस्पर विरोधी स्थितियां पैदा हुई। उन्होंने एक दूसरे के बीच विश्वास विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया और कहा कि विश्वास निर्माण केवल शब्दों के माध्यम से ही सम्भव है।

डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से अहिंसक संचार (एनवीसी) के विभिन्न विचारों पर प्रकाश डाला, उन्होंने एनवीसी के गांधीवादी सिद्धांतों सम्मान, समझ, स्वीकृति और प्रशंसा पर विशेष जोर दिया और शिक्षकों के बीच पारस्परिक साझरता को प्रोत्साहित करने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, "हमारा उद्देश्य एक मूल्य–आधारित कक्षा संस्कृति के विकास के लिए होना चाहिए जहां छात्र और शिक्षक दोनों एक साथ मिलकर काम करने में सक्षम हों"।

प्रतिशोध से बचने के लिए कक्षाओं में एनवीसी को लागू करने के विभिन्न तरीकों और तकनीकों के बारे में बात करते हुए, उन्होंने शिक्षकों से रूढ़िवादिता और मूल्यांकन से बचने का आह्वान किया। इसके बजाय उन्होंने आशा व्यक्त की कि शिक्षकों को सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए और छात्रों के 'विघटनकारी' या इस तरह के व्यवहार के पीछे के कारण को समझने का प्रयास करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि "शिक्षण एक भावनात्मक और मांग वाला काम है", उन्होंने घर से लेकर स्कूलों तक कृतज्ञता की आवश्यकता पर भी जोर दिया और सहयोगात्मक तरीकों को बढ़ावा देकर और दूसरों की आवश्यकता को समझकर दूसरों के साथ सकारात्मक सम्बन्ध स्थापित करने के पूरे विचार को रेखांकित किया। उन्होंने शिक्षकों से अपने अवलोकन कौशल को विकसित करने, दूसरों की समस्याओं या जरूरतों के प्रति सहानुभूति रखने और साथी मनुष्यों के प्रति दयालु रवैया रखने के लिए भी कहा, जो उन्हें लगा कि यह तभी सम्भव हो सकता है जब कोई सक्रिय रूप से सुनने का अभ्यास करे।

प्रश्न–उत्तर सत्र के दौरान सुश्री दीपाली शर्मा, सुश्री हेमा शर्मा, सुश्री प्रियंका राजपूत, सुश्री शिल्पी मेसन और अन्य ने डॉ. कुण्डू के साथ चर्चा की। श्रीमती शशि त्यागी ने समिति से भविष्य में ऐसी और प्रशिक्षण कार्यशालाओं के लिए अनुरोध किया।

प्रतिशोध से लेकर पुनर्स्थापनात्मक व्यवहार तक– अहिंसक संचार का उपयोग करके कक्षा के संघर्षों का प्रबन्धन करना

मनभावन शब्दों से आप जुड़ सकते हैं डॉ. अंजू टंडन

समिति ने भारतीय विद्या भवन के मेहता विद्यालय, नई दिल्ली के साथ मिलकर 12 जून, 2020 को "प्रतिशोध से लेकर तक पुनर्स्थापनात्मक व्यवहार तक– अहिंसक संचार का उपयोग करके कक्षा संघर्षों को संभालना" पर विषय एक वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार के प्रमुख वक्ताओं में समिति निदेषक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, डॉ. (श्रीमती) अंजू टंडन, प्रिंसिपल, बीवीबीएमवी और समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू शामिल थे। इस कार्यक्रम मे भारतीय विद्या भवन के एनएससीबी विद्यानिकेतन हल्दिया, बैंगलोर, हैदराबाद, होली चाइल्ड सीनियर सेकेंडरी के शिक्षक और टैगोर गार्डन स्कूल शामिल हुए।

अपनी परिचयात्मक टिप्पणी देते हुए और संवाद की शुरुआत करते हुए, श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने पक्षों के बीच संघर्षों के शमन की पारम्परिक भारतीय प्रणाली पर प्रकाश डाला और 'पंच परमेश्वर' की अवधारणा पर भी बात की, जिसने समाज को नियंत्रित किया और सभी विवादों को संभाला। उन्होंने कहा, 'शांति की स्थापना वह अंतिम लक्ष्य है जिसे मानव जाति प्राप्त करना चाहती है'। उन्होंने समकक्ष समूहों, समाज, शिक्षा, नौकरियों आदि में प्रतिस्पर्धा के बारे में बात करते हुए कहा कि यदि स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित होती है तो समूहों के बीच संचार स्थापित करने की प्रक्रिया आसान हो जाती है। उन्होंने अपने

दैनिक जीवन में शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों पर भी जोर दिया और विभिन्न व्यवहार, दृष्टिकोण और तौर–तरीकों के साथ छात्रों को संभालने में उनके धैर्य की सराहना की और "हमारा उद्देश्य एक मूल्य–आधारित कक्षा संस्कृति के विकास के लिए होना चाहिए जहां छात्र और शिक्षक दोनों एक साथ मिलकर काम करने में सक्षम हों।"

महसूस किया कि अहिंसक संचार के तरीकों के माध्यम से एक अधिक एकीकृत दृष्टिकोण आ सकता है। इससे न केवल छात्रों में बल्कि शिक्षकों में भी परिवर्तन होता है क्योंकि जब संचार अंतर को पाटता है, तो सारी समस्याएं हल हो जाती हैं।

डॉ. (श्रीमती) अंजू टंडन ने अपने सम्बोधन में संचार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला और कहा कि मानव जाति के लिए संवाद न करना संभव नहीं है। हर क्षण भीतर, बाहर संचार होता है। उन्होंने एक दूसरे के बीच विश्वास और आस्था विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया और कहा कि यह केवल शब्दों के माध्यम से ही संभव है। "मौखिक, गैर–मौखिक या दोनों श्रेणी के संचार महत्वपूर्ण हैं। हमें सम्बन्ध स्थापित करने में एक लम्बा रास्ता तय करना होता है", डॉ टंडन ने कहा, "मनभावन शब्दों के साथ आप जुड़ सकते हैं, क्योंकि मानव जाति के लिए सबसे महत्वपूर्ण है–शब्दों की ताकत।

डॉ. कुण्डू ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से अहिंसक संचार (एनवीसी) के विभिन्न विचारों पर प्रकाश डाला, जिसमें एनवीसी के गांधीवादी सिद्धांतों– सम्मान, समझ, स्वीकृति और प्रशंसा पर विशेष जोर दिया और शिक्षकों के बीच पारस्परिक साक्षरता को प्रोत्साहित करने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, प्रतिशोध से बचने के लिए कक्षाओं में एनवीसी को लागू करने के विभिन्न तरीकों और तकनीकों के बारे में बात करते हुए, उन्होंने शिक्षकों से रुढिवादिता और मूल्यांकन से बचने का आह्वान किया। इसके बजाय उन्होंने आशा व्यक्त की कि शिक्षकों को सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए और छात्रों के 'विघटनकारी' या इस तरह के व्यवहार के पीछे के कारण को समझने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने शिक्षक की अवधारणा को एक संक्षिप्त नाम के रूप में भी परिभाषित किया –टी–सच्चा/भरोसेमंद/पारदर्शीय ई–सहानुभूतिय ए–स्वीकृतिय सी–दयालुय एच–मानवीय/विनोदीय ई–प्रबुद्ध और आर–आश्वासन/विश्वसनीय और कहा, "शिक्षण एक भावनात्मक और मांग वाला काम है "छात्रों की जरूरतों को जानने और एक ऐसा माहौल बनाने के द्वारा शिक्षण की मध्यस्थता की जाती है जहां छात्र सक्रिय रूप से लगे हुए हैं"।

उन्होंने अभ्यास की आवश्यकता की ओर भी इशारा किया कि कैसे हमारी विचार प्रक्रियाएं भी स्वभाव से अहिंसक हैं और रचनात्मक संवाद को प्रोत्साहित करने का आह्वान किया, जिसके लिए उन्होंने सक्रिय और गहन श्रवण कौशल विकसित करने की आवश्यकता को रेखांकित किया।

घर से लेकर स्कूलों तक कृतज्ञता की आवश्यकता पर महत्व देते हुए, डॉ कुण्डू ने शिक्षकों से सहकर्मी मध्यस्थता प्रथाओं को बढ़ावा देने और सीखने को मजेदार बनाने के लिए कहकर अपनी प्रस्तुति का समापन किया।

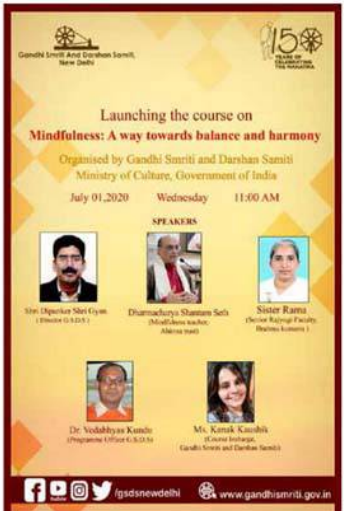

डॉ. अंजू टंडन ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक जागरूकता और प्रतिबिंब अभ्यास जैसे और अधिक विषयों को शामिल करने का प्रस्ताव रखा। सुश्री अनुपमा नागेंद्र, सुश्री एनी नारंग, सुश्री सुनीता झा, सुश्री सुमाश्री प्राइड और अन्य ने भी पैनलिस्टों के साथ बातचीत की। वेबिनार का समापन भारतीय विद्या भवन के मेहता विद्यालय की अकादमिक समन्वयक सुश्री अलका जायसवाल द्वारा दिए गये धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

"माइंडफुलनेस : ए वे टुवर्ड्स बैलेंस एंड हारमनी" विषय पर कार्यशाला

समिति ने 16 जुलाई, 2020 को केएमएस कॉन्वेंट स्कूल, नई दिल्ली के सहयोग से "माइंडफुलनेस: ए वे टुवर्ड्स बैलेंस एंड हारमनी" पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। वेबिनार में ब्रह्माकुमारीज की सिस्टर विधात्री भी विशेष रूप से उपस्थित थी। सुश्री सोनिया सैनी (प्रिंसिपल–केएमएस कॉन्वेंट स्कूल), डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू (कार्यक्रम अधिकारी, समिति), श्री राजदीप पाठक (कार्यक्रम कार्यकारी, समिति) और सुश्री कनक कौशिक (पाठ्यक्रम प्रभारी–माइंडफुलनेस,समिति) ने भी कार्यशाला में भाग लिया।

केएमएस कॉन्वेंट स्कूल के 38 शिक्षकों और छात्रों ने समिति के स्टाफ सदस्यों के साथ वेबिनार में भाग लिया, जिसकी शुरुआत डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू के स्वागत भाषण से हुई, जिन्होंने माइंडफुलनेस के लाभों का जिक्र किया गया।

स्वस्थ जीवन के लिए माइंडफुलनेस के अभ्यास पर उन्मुखीकरण

हम आंतरिक शांति की यात्रा में हैं, दौड़ में नहीं: सुश्री सुरभि सिंह

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने 22 अक्तूबर, 2020 को "स्वस्थ जीवन के लिए माइंडफुलनेस अभ्यास" पर एक ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया। आदित्य बिड़ला ग्रुप ऑफ स्कूल, रेणु सागर उत्तर प्रदेश के बच्चों सहित 80 प्रतिभागियों और समिति के स्टाफ सदस्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत आईसीएफ प्रमाणित कोच और एनएलपी मास्टर प्रैक्टिशनर सुश्री सुरभि सिंह के स्वागत भाषण से हुई। समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि माइंडफुलनेस एक जीवन कौशल है। "माइंडफुलनेस उपनिषदों जितनी ही पुरानी है। प्रत्येक संत और ऋषियों ने बार–बार हमें अपने दैनिक जीवन में इसे पालन करने के लिए आवश्यक सिद्धांत दिए हैं, आज दुनिया विभिन्न प्रकार की हिंसा से जकड़ी हुई है– मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक आदि। ऐसे में वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को नियमित रूप से इसका अभ्यास करना पड़ता है क्योंकि यह बिल्कुल भी सैद्धांतिक नहीं है। उन्होंने बौद्ध जेन मास्टर रेव थिच नाथ हान का भी उल्लेख किया, जिन्होंने अपने दैनिक जीवन में कई हजारों लोगों को जागरूक होने की दिशा दी है।

एक सेकंड में हमें चार मिलियन बिट्स की जानकारी मिलती है, और मस्तिष्क सूचनाओं को छानना शुरू कर देता है। जरूरत इस बात की है कि हमें किस तरह से और किस पर ध्यान केंन्द्रित करना चाहिए"। हमें अतीत को विस्मृत करने की जरूरत है ताकि हम वर्तमान से मुठभेड़ न हों।

प्रमुख भाषण देते हुए, सुश्री सुरभि सिंह ने 'उम्मीदों' के सन्दर्भ में तनाव के कारणों की

ओर इशारा किया, उन्होंने कहा की तनाव के मामले आजकल बढ़ गए हैं और जीवन में अनेक चुनौतियाँ भी हैं। ऐसे में माइंडफुलनेस प्रशिक्षण आज बहुत आवश्यक है।

प्रमुख चिकित्सकों के उद्धरण, गुरु नानक से उपाख्यानों और कहानियों को साझा करते हुए, सुश्री सुरभि सिंह ने सभी स्तरों पर "गठबंधन की गुणवत्ता" की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि "क्षण दर क्षण जागरूकता, हमें माइंडफुलनेस की ओर ले जाएगी। उन्होंने गठबन्धनों के विभिन्न स्तरों की बात की – स्तर 1, 2 और 3– जहां सम्बन्धों की गुणवत्ता का विभिन्न स्तरों पर निरीक्षण करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि प्रक्रिया में शामिल विभिन्न लोगों के बारे में सोचना और उन्हें धन्यवाद देना, जुड़ाव का सबसे गहरा स्तर है।"

सुश्री सुरभि ने अवलोकन के लिए सुनने की शक्ति पर जोर दिया और एक बड़े ढांचे के रूप में प्रकृति की सराहना और सम्मान करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि "एक सेकंड में, हमें चार मिलियन बिट्स की जानकारी मिलती है, और मस्तिष्क जानकारी को फिल्टर करना शुरू कर देता हैय जरूरत इस बात की है कि हमें किस तरह और किस पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए"। उन्होंने कहा कि "अतीत को भूलने की जरूरत है ताकि हम वर्तमान को न खोएं"।

"आइसबर्ग मॉडल" जैसे विभिन्न मॉडलों की व्याख्या करते हुए, सुश्री सुरभि सिंह ने 'प्रभाव का चक्र' और 'नियंत्रण चक्र' की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पहला माडल 'आपके विचारों, भावनाओं और शब्दों' को दर्शाता है, और बाद वाला बाहरी और किसी के व्यक्तिगत नियन्त्रण में नहीं है। हमें बाहरी सर्कल को आंतरिक सर्कल से कम नहीं होने देना चाहिए।

सुश्री सुरभि सिंह ने एक व्यावहारिक प्रदर्शन भी किया जिसे उन्होंने "आई" अभ्यास कहा था जो एक व्यक्ति को स्वयं को अच्छे और बुरे को समझाने में मदद करता है और किसी के डर के बारे में बात करने में भी मदद करता है। उन्होने कहा, अगर इसका लगातार अभ्यास किया जाता है, तो धीरे–धीरे परिवर्तन आगे बढ़ेगा। "हम आंतरिक शांति की यात्रा में हैं, दौड़ में नहीं", उन्होंने निष्कर्ष निकाला।

युवाओं के लिए ओरिएंटेद्दान कार्य□म

अहिंसक संचार के उपयोग से कक्षा में उत्पन्न विवादों का प्रबन्धन– एक राष्ट्रीय वेबिनार

समिति ने शिक्षा विभाग, लेडी इरविन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से 1 जून, 2020 को "अहिंसक संचार के उपयोग से कक्षा में उत्पन्न विवादों का प्रबन्धन" विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार में मुख्य वक्ता समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान और कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू थे। वेबिनार का आयोजन समिति के सदस्यों में डॉ. रेणु मालवीय, सुश्री राशि दुबे मिश्रा, डॉ. विनोद कुमार कालरा, डॉ. सूरज कुमार और डॉ. स्तुति श्रीवास्तव शामिल थे। इस वेबिनार में 155 प्रतिभागियों

लेडी इरविन कॉलिज की एक प्रतिभागी 1 जून, 2020 को वेबिनार के दौरान अपने .प्टिकोण साझा करती हुई दिखाई दे रही है।

अपनी परिचयात्मक टिप्पणी देते हुए, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने संचार प्रबंधन और देश के भावी नागरिकों के जीवन को आकार देने में भविष्य के शिक्षकों की भूमिका के बारे में बताया। उन्होंने कक्षाओं में संघर्ष प्रबंधन के मुद्दे पर चर्चा करते हुए कहा कि बड़ी संख्या में छात्रों को एक साथ संभालने वाले शिक्षकों को एक और सभी के साथ जुड़ना मुश्किल लगता है, लेकिन वे सकारात्मक संचार में छात्रों को शामिल करके संचार अंतर को पाटने के लिए सबसे अच्छे संरक्षक हैं। उन्होंने संघर्ष समाधान की गांधीवादी अवधारणा को भी रेखांकित किया, जो संघर्ष समाधान के सभी रूपों पर लागू होती है।

अहिंसक संचार (एनवीसी) का उपयोग करके कक्षाओं को संभालने के विषय पर मुख्य भाषण देते हुए, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने एनवीसी के तत्वों को गांधीवादी सिद्धांतों के विशिष्ट सन्दर्भ में समझाया। कक्षा में छात्रों के विघटनकारी व्यवहार के बारे में बोलते हुए, उन्होंने रेखांकित किया कि संचार के टूटने से समस्याएं हो सकती हैं और कहा कि शिक्षकों को ऐसे छात्रों को संभालने के लिए संचार की सरलता विकसित करनी चाहिए जो कक्षा में जटिल गतिशीलता प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने कक्षा में एक संचार पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

अहिंसक संचार के गांधीवादी सिद्धांतों पर जोर देते हुए, डॉ. कुण्डू ने भविष्य के शिक्षकों को छात्रों के प्रति सहानुभूति विकसित करने और स्टीरियोटाइप व्यवहार से बचने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक संवादों के लिए रास्ते बनाने की जरूरत है, जिससे अपनेपन की भावना विकसित होगी। उन्होंने भविष्य के शिक्षकों से कहा कि वे छात्रों की रुचि की कमी या विघटनकारी व्यवहार के लिए प्रतिशोधात्मक रवैये से बचें। उन्होंने आगे कहा कि उपेक्षा केवल समस्या को बढ़ाती है और इसलिए सुझाव दिया कि शिक्षकों को अपने छात्रों के प्रति सकारात्मक और सहयोगी भूमिका निभानी चाहिए जो बदले में सम्बन्ध बनाएगी और इस तरह प्रकृति और अन्य सभी जीवों के प्रति करुणा के साथ छात्रों के बीच अन्योन्याश्रयता के महत्व को स्थापित करने में मदद करेगी। "दूसरों की जरूरतों से जुड़ना और छात्र–शिक्षक, छात्र–छात्र सम्बन्धों को समझना और उनके मतभेदों को हल करना आक्रामक या विघटनकारी व्यवहार को अधिक रचनात्मक कार्य में बदलने की कुंजी है। यह अपनेपन की भावना को विकसित करने में मदद करता है", डॉ. कुण्डू ने कहा।

अंत में प्रश्नोत्तर सत्र में शिक्षकों ने छात्रों के रवैये और व्यवहार पर ध्यानाकर्षण से लेकर अपमानजनक भाषा के उपयोग और शिक्षकों के साथ माता–पिता के व्यवहार पर चर्चा की। डॉ. स्तुति श्रीवास्तव, सुश्री वर्षा रानी, सुश्री रुखसार सिद्दीकी, प्रो प्रियंका, सुश्री चंद्रिका सनवाल और अन्य ने डॉ. कुण्डू के साथ अनेक विषयों पर बातचीत की। यह महसूस किया गया कि प्रत्येक छात्र के साथ व्यक्तिगत रूप से जुड़ने में शिक्षकों की सरलता भी उनमें कृतज्ञता और सम्मान की भावना विकसित करेगी, जो उन्हें आगे ले जाएगी। डॉ. कुण्डू ने यह भी बताया कि प्रत्येक शिक्षक के लिए मीडिया साक्षरता शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है।

कक्षा में संघर्ष समाधान की रणनीतियाँ पर ई–कार्यशाला

समिति द्वारा देश भर के विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के छात्रों और शिक्षकों के लिए 9–10 जून, 2020 को "कक्षा में संघर्ष समाधान की रणनीतियाँ" पर दो दिवसीय ई–कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. शाजिया मंसूरी, सहायक प्रो. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक समिति और डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी प्रमुख वक्ता थे। वेबिनार में वक्ताओं ने कक्षाओं में एक प्रभावी उपाय करने और स्वस्थ वातावरण के लिए छात्रों के साथ शांति और सम्बन्ध बनाने की संस्कृति स्थापित करने की आवश्यकता को रेखांकित किया। दो दिवसीय ई–कार्यशाला में 45 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

मुख्य व्याख्यान में समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने अहिंसक संचार तकनीकों का उपयोग करके कक्षाओं में संघर्ष समाधान के विभिन्न आयामों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि संघर्ष प्रबंधन, तनाव और संघर्ष को कम करने में कैसे मदद करता है। साथ ही उन्होंने अहिंसक संचार कौशल के गांधीवादी दृष्टिकोण का उल्लेख किया। उन्होंने स्वयंसेवा के गांधीवादी दृष्टिकोण पर बात करते हुए कहा कि महात्मा गांधी सबसे महान स्वयंसेवकों में से एक थे।

डॉ. कुण्डू ने आगे बताया कि आज के परिदृश्य में रूढ़िवादिता से बचकर, भाषा का मूल्यांकन करके और दूसरों के प्रति अधिक सहानुभूति रख कर ही किसी के विचारों और कार्यों को नियंत्रित करके एक टकराव की स्थिति को शांत किया जा सकता है। डॉ. कुण्डू ने अहिंसक संचार तकनीकों को मीडिया साक्षरता के साथ जोड़ते हुए कहा कि आज के मीडिया परिदृष्य में छात्रों को सही दिशा में ले जाने में शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।

डॉ. शाजिया ने अपनी संवादात्मक प्रस्तुति के माध्यम से विस्तार से बात की कि मानचित्रण भाषा की इस स्थिति से कैसे निपटा जाए, एकीकृत सोच, परिस्थितियों को वश में करने के उपाय और वास्तविक जीवन में सहानुभूति के अवसर कैसे पैदा किए जाएं। वेबिनार के दौरान परिवार, स्कूल और कार्यालयों में उत्पन्न होने वाली परस्पर विरोधी स्थितियों के विभिन्न विश्लेषणों पर भी चर्चा की गई। छात्रों के बीच सहकर्मी मध्यस्थता को प्रोत्साहित करने वाली विभिन्न स्थितियों पर भी चर्चा की गई।

इससे पूर्व समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने सत्र का उद्घाटन किया। उन्होंने क्रोध प्रबंधन के मुद्दे पर बात की और बताया की बिना झगड़े के क्रोध की समस्या पर कैसे काबू पाया जा सकता है। उन्होंने परस्पर विरोधी स्थिति से निपटने के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण पर ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने कहा कि पारस्परिक संचार में मध्यस्थता विशेष रूप से आवश्यक है। अपनी प्रस्तुति के माध्यम से उन्होंने कक्षा में संघर्ष के कारणों का उल्लेख किया और संघर्षों को हल करने के तरीकों पर भी चर्चा की। दुनिया भर की संस्कृति जो सत्ता के बजाय शांतिपूर्ण अनुनय द्वारा तर्कों को निपटाने का अभ्यास करती है, के बारे में बात करते हुए, श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि प्राचीन गांवों में एक कुशल नेता होता था

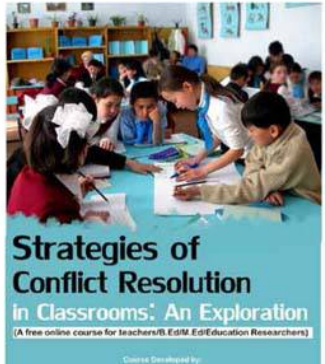

जो लोगों को उनकी समस्याओं को हल करने में मदद करता था। उन्होंने उन्होंने बातचीत की संस्कृति विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया जिसके लिए प्रतिभागियों को अपनी भावनाओं और जरूरतों को व्यक्त करने की अनुमति दी जानी चाहिए। उन्होंने टीम वर्क की भावना पर जोर देते हुए संचार की खाई को पाटने के लिए सक्रिय श्रवण के महत्व को रेखांकित किया।

वेबिनार का समापन प्रतिभागियों को असाइनमेंट साझा करके हुआ जिसमें रचनात्मक अभ्यास शामिल थे। इन अभ्यासों का उपयोग संवाद स्थापित करके, भावनाओं को समझने और सहानुभूतिपूर्ण रवैये और खुली मानसिकता रखकर परस्पर विरोधी दलों के लिए विन–विन स्थिति प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है।

कक्षाओं में संघर्ष समाधान की रणनीतियों पर ई–कार्यशालाः एक अन्वेषण

समिति द्वारा 16–17 जून, 2020 को "कक्षाओं में संघर्ष समाधान की रणनीतियाँ" पर विषय पर अपनी दूसरी ई–कार्यशाला का आयोजन किया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, डॉ. शाजिया मंसूरी, सहायक प्रोफेसर, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। दो दिवसीय ई–कार्यशाला में 45 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए समिति निदेशक ने संघर्ष की उत्पत्ति पर चर्चा की। उन्होंने सहकर्मी समूहों, शिक्षकों और छात्रों, छात्रों और छात्रों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का आह्वान किया और समझ और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण रखने की प्रेरणा दी। उन्होंने समुदाय में परस्पर विरोधी स्थितियों को निपटाने में पंच परमेश्वर की अवधारणा को दोहराया और कहा कि संघर्ष प्रबंधन एक परिधिमी अवधारणा नहीं है, बल्कि इसकी उत्पत्ति प्राचीन वेदों से हुई है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि गांधीवादी सिद्धांतों के अनुसार संघर्ष प्रबंधन एक जीत की स्थिति है, जहां न कोई जीतता है और न ही कोई हारता है। उन्होंने दोहराया कि संघर्ष में सिर्फ यह नहीं है कि हम बहस करते रहें, हमें धैर्यपूर्वक सुनना भी आना चाहिए। कक्षाओं को वास्तविक नर्सरी बताते हुए उन्होंने शिक्षकों को जीवन का वास्तविक प्रशिक्षक कहा।

अपने प्रदर्शनात्मक ऑनलाइन व्याख्यान के माध्यम से, डॉ. शाजिया ने संघर्ष प्रबंधन के विभिन्न आयामों पर प्रतिभागियों के साथ एक आकर्षक जुड़ाव बनाया। विभिन्न सिद्धांतों और परस्पर विरोधी विचारों को समाप्त करने के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण पर चर्चा करते हुए डॉ. शाजिया ने उन विभिन्न स्थितियों का भी विश्लेषण किया, जिनका शिक्षक कक्षा में प्रतिदिन सामना करते हैं। इनमें विद्यार्थियों के व्यवहारिक व्यवहार से लेकर अछीबोगरीब विचार तक शामिल हैं, जो परस्पर विरोधी स्थिति का कारण बनते हैं। उन्होंने प्रतिभागियों से शांति–निर्माताओं के रूप में अपनी भूमिका तलाशने के लिए भी कहा।

डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने पहले दिन अपने सम्बोधन में समाज के अनुकूल व्यवहार को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बात की और एक समेकित कक्षा बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने अधिक पारस्परिक सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया और आशा व्यक्त की कि शिक्षक गैर–निर्णयात्मक बनेंगे।

ई–कार्यशाला के दूसरे दिन प्रतिभागियों ने विभिन्न अभ्यासों में भाग लिया। डॉ. शाजिया ने संवाद और मध्यस्थता के महत्व की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि देने की कला के साथ–साथ दयालुता का अभ्यास करने और इसे विकसित करने की आवश्यकता है।

डॉ. वेदाभ्यास ने संवाद को एक समावेशी प्रक्रिया के रूप में बताया। उन्होंने कहा कि संचार आपसी सम्मान पर आधारित है, यह सुनने को प्रोत्साहित करता है और समस्याओं को ध्यान से हल करता है। उन्होंने एक सुरक्षित स्थान बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया और संघर्ष समाधान के पांच प्रमुख गांधीवादी स्तम्भों पर बात की। उन्होंने मीडिया साक्षरता के महत्व पर भी जोर दिया और कहा कि मीडिया साक्षरता महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मीडिया संदेशों का आलोचनात्मक विश्लेषण करने की क्षमता सिखाती है।

प्रतिभागियों को असाइनमेंट देकर ई–वर्कशॉप का समापन हुआ, जिसके बाद कई शिक्षकों और शिक्षाविदों द्वारा इंटरैक्टिव प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया।

"अहिंसक संचार के माध्यम से खुशी का पोषण" विषय पर ई–सम्मेलन

समिति ने जनसंचार और पत्रकारिता विभाग, एलीएजर जोल्डन मेमोरियल (ईजेएम) कॉलेज, लेह के सहयोग से 28 अगस्त, 2020 को "अहिंसक संचार के माध्यम से खुशी का पोषण" विषय पर एक ई–सम्मेलन का आयोजन किया। इसमें ईजेएम कॉलेज के प्राचार्य प्रो. देसकयोंग नामग्याल के साथ समिति के पूर्वोत्तर समन्वयक श्री गुलशन गुप्ता, मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। ईजेएम कॉलेज की सहायक प्रो. सुश्री हजीरा बानो ने सत्र का संचालन किया।

इस सत्र में 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में दैनिक जीवन के विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से संचार को संचालित करने और इसे फ्रेम करने के बारे में विचार व्यक्त किये गये। श्री गुलशन गुप्ता ने संचार में प्रयुक्त होने वाले उन शब्दों के बारे में बताया जिनमें नष्ट करने और ठीक करने की शक्ति है। उन्होंने महात्मा गांधी को भी उद्धृत किया जिन्होंने कहा था कि "प्रेम की शक्ति आत्मा या सत्य की शक्ति के समान है ..

"महात्मा के पदचिन्हों पर चलते हुए रचनात्मक संवादों के माध्यम से समुदायों तक पहुंचना" विषय पर ई–कार्यशाला

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने सामाजिक कार्य विभाग और राजगिरी कॉलेज ऑफ सोशल साइंस के सहयोग से 28 अक्तूबर को ""महात्मा के पदचिन्हों पर चलते हुए रचनात्मक संवादों के माध्यम से समुदायों

तक पहुंचना" विषय पर ई–कार्यशाला का आयोजन किया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने ई–कार्यशाला का उद्घाटन किया। मुख्य भाषण कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने दिया। इस अवसर पर कॉलेज के प्राचार्य डॉ. बिनॉय जोसेफ ने भी अपने विचार रखे। राजगिरी कॉलेज के सामाजिक कार्य विभाग के प्रमुख डॉ. एम. के. जोसेफ ने स्वागत भाषण दिया। आईक्यूएसी, राजगिरी के समन्वयक डॉ. मैरी वीनस जोसेफ ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में 72 प्रतिभागी शामिल हुए। डॉ. आनंद के ने सत्र का संचालन किया।

राजगिरी कॉलेज की ओर से प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए, डॉ. एम. के. जोसेफ ने उन जरूरतों पर प्रकाश डाला जो कोविड–19 महामारी ने पैदा की। उन्होंने महात्मा गांधी की ग्रामीण पुनर्निर्माण और 'ग्राम स्वराज' की अवधारणा पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भरता और रचनात्मक कार्यक्रम की परिकल्पना सभी को वापस अपनी जड़ों की ओर ले जाता है। इससे गांव सुरक्षित हैं और शहर की तुलना में स्थानीय पर्यावरण का गाँवों में बहुत कम खतरा है।

अपने सम्बोधन में, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने राजगिरी कॉलेज को स्वच्छता पुरस्कार जीतने के लिए बधाई दी और कहा कि वे महात्मा गांधी के दर्शन को व्यावहारिक रूप से लागू करने वालों में से एक हैं। उन्होंने इस बात पर ध्यान केन्द्रित किया कि कैसे मानव जाति में करुणा की कमी रही है और वह आक्रामक हो गया है, क्योंकि, "हमें लगता है कि हम दूसरों से श्रेष्ठ हैं। हम अपने विचारों को आगे बढ़ाते हैं और दूसरों को सुनने के लिए तैयार नहीं हैं" और आगे कहा, "जब तक भीतर शांति नहीं है, तब तक स्थायी शांति प्राप्त नहीं हो सकती है, यह तभी हो सकती है जब स्वस्थ संचार हो।"

संचार के गांधीवादी मॉडल के बारे में बोलते हुए, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि महात्मा गांधी ने उसी संचार कौशल का इस्तेमाल किया जिसे उन्होंने अंग्रेजों या आम जनता के साथ अपने व्यवहार में प्रयोग किया था। उन्होंने कहा कि सभी उनके संदेशों से समान रूप से प्रभावित थे। उन्होंने प्रथम श्रेणी का टिकट होने के बावजूद, गांधीजी को दक्षिण अफ्रीका जाते समय ट्रेन से बाहर फेंकने की घटना का जिक्र करते हुए कहा कि गांधीजी ने कभी क्रोध नहीं किया और उन्होंने कभी आक्रामक प्रतिक्रिया नहीं दी। यह वही संचार कौशल था जो उन्हें उनके माता–पिता और शिक्षकों ने सिखाया था।

यह मानव जाति के सामने एक वास्तविक चुनौती है कि हम लोग एक–दूसरे के बीच समझ विकसित करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं और यह साबित करने की कोशिश कर रहे हैं कि हमारे विचार दूसरों से श्रेष्ठ हैं। हम अपने परिवार, पर्यावरण के साथ सह–अस्तित्व के लिए तैयार नहीं हैं और हमें यह सीखना चाहिए कि अपने और दूसरों के साथ कैसे सहअस्तित्व करना है। महात्मा गांधी प्रासंगिक बने रहेंगे, क्योंकि उनके दर्शन सार्वभौमिक, पर्यावरण सम्मर्थक मानव जाति के हैं और सभी धर्मों के आधार पर हैं।

सत्र का संचालन करते हुए, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने संचार और संचार के तत्वों की व्याख्या की। उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा दैनिक जीवन में काम आने वाले रचनात्मक संवाद को सीखने और फिर से देखने की आवश्यकता की ओर इशारा किया, क्योंकि यह 'जमे हुए संचार' और 'विश्वास की कमी' के क्षेत्र को तोड़ने के लिए आवश्यक है, जिसने व्यक्तियों को जकड़ लिया है। उन्होंने निरन्तर जुड़ाव और आत्मा से आत्मा के संवाद पर जोर दिया जो व्यक्तियों के बीच सम्बन्ध और भावनात्मक पुल–निर्माण में मदद करता है।

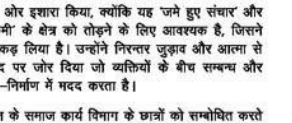
राजगिरी कॉलेज के समाज कार्य विभाग के छात्रों को सम्बोधित करते

> मानव जाति के सामने यह एक वास्तविक चुनौती है कि हम एक–दूसरे के बीच समझ विकसित करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं और यह साबित करने की कोशिश कर रहे हैं कि हमारे विचार दूसरों से श्रेष्ठ हैं। हम अपने परिवार, पर्यावरण के साथ सह–अस्तित्व के लिए तैयार नहीं हैं, जबकि हमें स्वयं और दूसरों के साथ सह–अस्तित्व सीखना चाहिए। महात्मा गांधी प्रासंगिक बने रहेंगे, क्योंकि उनके दर्शन सार्वभौमिक, पर्यावरण और मानव जाति के समर्थक हैं और सभी धर्मों पर आधारित हैं।

हुए डॉ. कुण्डू ने विभिन्न व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से समुदायों में प्रभावी ढंग से काम करने के लिए संवाद स्थापित करने और उसमें संलग्न होने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने नेल्सन मंडेला को उद्धृत किया जिन्होंने बातचीत, संवाद और तर्क के महत्व पर जोर दिया था। उन्होंने कहा था, "दुनिया के लगभग हर हिस्से में, मनुष्य मतभेदों को दूर करने के लिए बल और हिंसा का सहारा लेने के कारण ढूंढते हैं जिन्हें हमें बातचीत, तालमेल और तर्क के माध्यम से हल करने का प्रयास करना चाहिए।"

उन्होंने गांधीवादी अहिंसा के पांच स्तम्भों– 'सम्मान, समझ, स्वीकृति, प्रशंसा और करुणा' पर बात की और कहा कि "संवाद रिश्तों को मजबूत करता है और गतबंधन बनाने में मदद करता है। यह लोगों को लक्ष्यों और रणनीतियों को बनाने में मदद करता है और संचार के पारदर्शी चौनल बनाता है और परस्पर सहयोग को सहानुभूतिपूर्वक बढ़ावा देता है" यह स्थितियों की जटिलताओं को ठीक करता है.

(जैसा कि हम में से कई अलग–अलग पृष्ठभूमि से हो सकते हैं)। हमें रूढ़िबद्ध और नैतिक निर्णयों के जाल में नहीं पड़ना चाहिए और दूसरों के लिए परस्पर सम्मान और आम सहमति विकसित करनी चाहिए।"

उन्होंने बताया कि संचार में सहयोग की आवश्यकता है। अहिंसक संचार के विभिन्न तत्वों जैसे सहानुभूति की शक्ति करुणा का महत्वय लचीलापन और खुलापन, सक्रिय और गहन श्रवण कौशल विकसित करना, दूसरों की आवश्यकता से जुड़ना और कृतज्ञता व्यक्त करना, को हमें सीखना चाहिए।

डॉ. कुण्डू ने संयुक्त राष्ट्र महासचिव, श्री एंटोनियो गुतरेस को उद्धृत करते हुए कहा कि, "दुनिया की सभी परिस्थितियों में– यहां तक कि सबसे कठिन परिस्थितियों में– हमें बातचीत के साथ बढ़ने की आवश्यकता है।"

'मुदिता'–'रचनात्मक कार्य के लिए स्वयंसेवा को बढ़ावा' विषय पर एक कार्यशाला

उन्नत भारत अभियान (यूबीए), शहीद राजगुरु कॉलेज ऑफ एप्लाइड साइंसेज फॉर वुमेन (एसआरसीएएसडब्ल्यू) और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सहयोग से एमएचआरडी के एक प्रमुख कार्यक्रम 'रचनात्मक कार्य के लिए स्वयंसेविता को बढ़ावा देने' पर एक कार्यशाला 'मुदिता' का आयोजन किया। 7 नवंबर, 2020 को आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य थे:

1. युवाओं में स्वयंसेवा की भावना पैदा करना।
2. गांधीवादी रचनात्मक कार्यों की प्रदर्शनी लगाना।
3. स्वयंसेवी कार्य के लिए विचारों का अन्वेषण और विकास करना।

4. युवाओं को समुदाय और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए तैयार करना।
5. नेतृत्व और टीम निर्माण में युवाओं की क्षमता का विकास करना।

इस कार्यशाला का संचालन समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, पूर्वोत्तर समन्वयक श्री गुलशन गुप्ता ने किया। कार्यक्रम में लगभग 89 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

वक्ताओं ने स्वयंसेवा के सार और अर्थ को सुंदर तरीके से समझाया, सफल स्वयंसेवा के लिए आवश्यक कौशल जैसे संचार कौशल, नेतृत्व कौशल, जनसम्पर्क कौशल को बहुत व्यापक तरीके से समझाया गया। प्रतिभागियों को टीम भावना, भरोसे, सहानुभूति, स्वयंसेवा में आत्मविश्वास के महत्व के बारे में भी बताया गया।

इस कार्यशाला में 'हमें स्वयंसेवा कब शुरू करनी चाहिए? हमें कैसा स्वयंसेवक होना चाहिए? हमें स्वयंसेवक कहाँ होना चाहिए? हमें स्वयंसेवा कब बंद करनी चाहिए? क्या आप स्वेच्छा से कमा सकते हैं? स्वयंसेवा के लिए दान का क्या महत्व है?' जैसी युवाओं की अनेक जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। वक्ताओं ने विभिन्न स्थानों पर स्वयंसेवा सम्बन्धी वास्तविक जीवन के अनुभवों को साझा किया और

बताया कि कैसे उन्होंने विवादों, अपेक्षित परिणाम प्राप्त न करने आदि जैसी विभिन्न चुनौतियों का सामना किया।

अहिंसक संचार के अभ्यास पर ई–कार्यशाला

प्रौद्योगिकी और विज्ञान संस्थान, गाजियाबाद के 450 छात्रों, संकाय सदस्यों ने 23 दिसम्बर, 2020 को "अहिंसक संचार का अभ्यास" पर आयोजित एक ऑनलाइन ई–कार्यशाला में भाग लिया। ई–कार्यशाला का संचालन डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी समिति द्वारा किया गया था। स्वागत भाषण प्रो. नैन्सी शर्मा, उपप्राचार्य यूजी कैंपस, आई. टी. एस. गाजियाबाद ने दिया, कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. उत्तम

शर्मा ने की।

अहिंसक संचार (एनवीसी) पर कार्यशाला का संचालन करते हुए डॉ. कुण्डू ने विभिन्न सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों के बारे में बताया। संचार के पांच प्रमुख तत्वों सम्मान', 'समझ', 'स्वीकृति', 'प्रशंसा' और 'करुणा'के बारे में बोलते हुए, उन्होंने भारतीय संस्कृति की चर्चा की।

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए, डॉ. कुण्डू ने मार्शल रोसेनबर्ग को उद्धृत किया, जिनके अनुसारः "अहिंसक संचार भाषा और संचार कौशल पर आधारित है जो कठिन परिस्थितियों में भी मानव बने रहने की हमारी क्षमता को मजबूत करता है। हम अपने आप को कैसे व्यक्त करते हैं और दूसरों को सुनते हैं, इस दिशा में यह हमारा मार्गदर्शन करता है। उन्होंने कहा कि हमारे आस–पास के मनुष्यों और जीवित प्राणियों के प्रति 'ब्रह्मांड–केन्द्रित' दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है। प्रख्यात गांधीवादी स्वर्गीय नटवर ठक्कर का जिक्र करते हुए डॉ. कुण्डू ने कहा कि हमें स्वयं के अंतस को समझने और इसकी गहराई तक जाने की जरूरत है।

साथ ही उन्होंने बताया कि कैसे हम अपने जीवन में अहिंसक संवाद ला सकते हैं। और हमें अपने भाषण के दौरान किन बातों का ध्यान रखना चाहिए– जैसे अपने भीतर रचनात्मकता को बढ़ावा देना, खुद को जागरूक रखना, पूर्वाग्रह से बचना, किसी के प्रति निर्णय न करना, दूसरों की समस्याओं को समझना, ये सभी तरीके हैं जिनसे हम अहिंसक संवाद को बढ़ावा दे सकते हैं।

गा्धी अपने अनुयायियों की .ष्टि से– एक प्रतिबिम्ब

समिति ने मालवीय शांति अनुसंधान केन्द्र, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के सहयोग से 12 फरवरी, 2021 को "अपने अनुयायियों की नजर से गांधी" शीर्षक से ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने प्रतिष्ठित दिग्गजों और गांधीवादी विचारकों, बाबा आमटे और नटवर ठक्कर के कार्यों और लोगों और समाज की मुक्ति के लिए इन दिग्गजों के अपार निःस्वार्थ योगदान पर विमर्श किया।

स्वर्गीय मुरलीधर देवीदास आमटे, जिन्हें आमतौर पर बाबा आमटे के नाम से जाना जाता है, एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता थे, जिन्हें विशेष रूप से कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों के पुनर्वास और सशक्तिकरण के काम के लिए जाना जाता था।

स्वर्गीय नटवर ठक्कर, जिन्हें नटवर भाई के नाम से जाना जाता है, एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता थे, जो नागालैंड में काम करते थे। वह महाराष्ट्र से आए थे लेकिन 23 साल की उम्र में नागालैंड में उग्रवाद के चरम पर सामाजिक कार्यों के लिए नागालैंड चले गए। उन्होंने नागालैंड के मोकोकचुंग जिले के चुचुयिमलंग गांव में नागालैंड गांधी आश्रम की स्थापना की थी।

साथी मध्यस्थताः रचनात्मक विवाद समाधान के लिए एक .ष्टिकोण' पर कार्यद्दाला

एमएचआरडी के प्रमुख कार्यक्रम उन्नत भारत अभियान और गांधी स्मृति एवम दर्शन समिति के सहयोग से अंग्रेजी और जैव रसायन विभाग द्वारा 'साथी मध्यस्थताः रचनात्मक विवाद समाधान के लिए एक दृष्टिकोण' विषय पर कार्यशाला 'मुदिता'–का आयोजन 18 फरवरी को किया गया। इस संवाद कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवा लोगों में

ध्यान क्षमताओं का विकास करना और रिश्तों के सामंजस्यपूर्ण परिवर्तन को सुनिश्चित करना था। कार्यशाला के प्रमुख वक्ताओं में शामिल थे डॉ. वेदव्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी, समिति श्री गुलशन गुप्ता, उत्तर–पूर्व समन्वयक, समिति।

डॉ. वेदव्यास कुण्डू ने अपनी बातचीत के दौरान उनसे उन संघर्षों के बारे में पूछा जिनका वे सामना करते हैं और उनका समाधान कैसे करते हैं। फिर उन्होंने सहकर्मी मध्यस्थता के महत्व और प्रभावी ढंग से एक सहकर्मी मध्यस्थ बनने के तरीके के बारे में बताया। उन्होंने उन गुणों पर भी चर्चा की जो एक सहकर्मी मध्यस्थ के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने अहिंसा और सहकर्मी मध्यस्थता को बहुत खूबसूरती से जोड़ा।

श्री गुलशन गुप्ता ने अपनी प्रस्तुति में कहा कि मध्यस्थता भी तभी संभव है जब अन्य पक्ष मध्यस्थता करना चाहें। साथ ही, उन्होंने बताया कि कैसे कोई मदद कर सकता है जब परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं कि बच्चों और माता–पिता के बीच उम्र के अंतर के कारण मध्यस्थ के रूप में कार्य नहीं किया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि कभी–कभी हमें पार्टियों को सक्रिय रूप से हल करने के बजाय चीजों को सुलझाने के लिए समय और स्थान देने की आवश्यकता होती है।

"स्वयमसेविता की यात्रा" विषय पर साथी–कार्यद्दाला

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने बंगबासी मॉर्निंग कॉलेज (बीएमसी),

कोलकाता के सहयोग से 27 फरवरी, 2021 को "स्वयंसेविता की यात्रा" विषय पर साथी–कार्यशाला" पर एक ई–कार्यशाला का आयोजन किया। समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. तुलिका चक्रवर्ती, सहायक प्रोफेसर और एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी, बीएमसी कोलकाता ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे।

अपने सम्बोधन में, स्वयंसेवा के विभिन्न आयामों और सामाजिक विकास की भूमिका में इसके महत्व पर चर्चा करते हुए डॉ. कुण्डू ने कहा, "स्वयंसेवा नागरिक समाज का मूलभूत निर्माण खण्ड है। यह मानव जाति की महानतम आकांक्षा–सभी लोगों के लिए शांति, स्वतंत्रता, अवसर, सुरक्षा और न्याय की खोज को जीवंत करता है। उन्होंने कहा कि दुनिया के सभी लोगों को स्वतंत्र रूप से अपना समय, प्रतिभा और ऊर्जा दूसरों और उनके समुदायों को देने का अधिकार होना चाहिए।

उन्होंने आगे कहा कि "स्वयंसेविता अपनी इच्छा से समाज में योगदान देने का नाम है। लेकिन एक प्रभावी और जिम्मेदार स्वयंसेवक तुरन्त चुनाव नहीं कर सकता। एक अच्छा स्वयंसेवक बनने के लिए, स्वयं की खोज और सम्मान करना महत्वपूर्ण है।"

व्याख्यान / चर्चा / सेमिनार / संवाद / सम्मेलन

पृथ्वी दिवस के भाग के रूप में अनिलाइन व्याख्यान

धरती को बचाना है 700 करोड़ लोगों की जिम्मेदारी : श्री लक्ष्मी दास

हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष और समिति के कार्यकारिणी सदस्य श्री लक्ष्मी दास, व्याख्यान देते हुए।

पृथ्वी दिवस के अवसर पर 22 अप्रैल, 2020 को गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा ऑन–लाइन व्याख्यान आयोजित किया। 'महामारी, पृथ्वी और महात्मा गांधी' विषय पर आयोजित इस व्याख्यान में प्रमुख वक्ता समिति के कार्यकारिणी सदस्य और हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मी दास थे।

श्री लक्ष्मी दास ने मानव जाति से कोविड–19 महामारी से निपटने के लिए सरकार द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करने की अपील की। उन्होंने अर्थव्यवस्था और बड़ी संख्या में लोगों की आजीविका प्रभावित करने वाले इस वायरस को मारने के लिए एक समाधान खोजने के लिए वैज्ञानिकों से एक शोध में शामिल होने की भी अपील की।

उन्होंने कहा कि हम पृथ्वी की विभिन्न रूपों में पूजा करते हैं। पृथ्वी के आकार और गति को कम या बढ़ाया नहीं जा सकता है। उन्होंने कहा, मनुष्य धरती माता के बारे में सोच भी सकता है और नहीं भी, लेकिन धरती माता हमेशा सभी जीवित प्राणियों के बारे में सोचती है और यह पृथ्वी दिवस इस बात की याद दिलाता है कि हमें धरती माता को कैसे बचाना और पोषित करना चाहिए। पृथ्वी के संरक्षण के लिए आयोजित संगोष्ठियों और संवादों में, यह दोहराया गया है कि अधिक जनसंख्या ने पृथ्वी पर बोझ डाला है, लेकिन मेरी एक अलग राय है। पृथ्वी में सभी प्राणियों को उनकी आवश्यकता के लिए प्रदान करने की क्षमता है, उनके लालच के लिए नहीं। हमारे दो हाथ और एक मुंह है। सवाल यह है कि हम इस एक मुंह को खिलाने के लिए अपने हाथों को काम कैसे दें?"

श्री लक्ष्मी दास ने आगे कहा कि जरूरत बनाम लालच के इस विचार की महात्मा गांधी ने भी जोरदार वकालत की है और उन्होंने हमेशा हाथों के इस्तेमाल पर जोर दिया है। हालाँकि, अधिक से अधिक धन इकट्ठा करने के लालच में और औद्योगीकरण के नाम पर, हमने अपना ध्यान व्यक्तिगत मलाई से मशीनों और भौतिकवाद के उपयोग की ओर स्थानांतरित कर दिया है और इस लालच के कारण समाज भ्रष्ट हो गया है, जिसके परिणामस्वरूप बहुतों का शोषण हुआ है। गरीब लोगों के लिए काम करने और आत्मनिर्भर होने के रास्ते तलाशना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। महात्मा गांधी का भी प्रमुख विचार और विश्वास यही था, हालांकि वे आधुनिकीकरण के खिलाफ नहीं थे।

उन्होंने इस बात पर भी अफसोस जताया कि आधुनिकीकरण के नाम पर आज धरती माता द्वारा उपलब्ध कराए गए संसाधनों का शोशण करने की प्रवृत्ति है। हमें पेड़ों को वैज्ञानिक तरीके से उगाना चाहिए ताकि वनों का विकास हो और उनका वैज्ञानिक तरीके से इस्तेमाल किया जाए न कि लापरवाही से। यह हमारा प्रमुख एजेंडा होना चाहिए और पूरी मानवता को प्रकृति, मानव और वन्य जीवन के शोशण से दूर रहने और आपसी सह–अस्तित्व का निर्माण करने का संकल्प लेना चाहिए।

गांधीजी के हिंद स्वराज का जिक्र करते हुए श्री लक्ष्मी दास ने कहा कि महात्मा गांधी ने जिस तरह विकास के लिए अपने स्थानीय संसाधनों का उपयोग करने के लिए कहा था, उसी तरह हमें भी स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना शुरू करना चाहिए न कि उनका दोहन करना चाहिए।

उन्होंने इस तथ्य पर और जोर दिया कि विकल्पों की तलाश करने की आवश्यकता है। धरती किसी की जागीर नहीं है। हमें पृथ्वी को उसकी पोषण क्षमता से नहीं सुखाना चाहिए। दुनिया में एक संतुलन बनाने की जरूरत है और संसाधनों का दोहन नहीं करने के लिए हमारे चारों ओर एक अहिंसक वातावरण बनाने का लालच ही हिंसा का मार्ग प्रशस्त करता है। हम पृथ्वी का निर्माण नहीं कर सकते हैं और इसलिए अपने लालच को सीमित करके और पृथ्वी के प्रचुर संसाधनों के दोहन को रोककर पृथ्वी को बचाना दुनिया के 700 करोड़ लोगों की जिम्मेदारी है।

'चम्पारण सत्याग्रह' पर अनिलाइन व्याख्यान देते हुए समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

चम्पारण सत्याग्रह पर अनिलाइन व्याख्यान

चम्पारण सत्याग्रह के इतिहास पर 27 अप्रैल, 2020 को एक इंटरैक्टिव लाइव ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने व्याख्यान दिया। चर्चा का संचालन श्री प्रियांक कानूनगो ने किया।

भारतीय भूमि में महात्मा गांधी के पहले सत्याग्रह के बारे में बोलते हुए, श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने चम्पारण सत्याग्रह की आवश्यक विशेषताओं, इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में बताया। उन्होंने इस तथ्य पर जोर दिया कि इस घटना ने मानवता को फिर से एक सबक सिखाया है कि लोगों के साथ उनकी शिकायतों और मुद्दों को जानने के लिए संचार स्थापित करना किसी भी सामाजिक कार्य को करने के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने आगे महात्मा गांधी द्वारा अपनी पत्नी कस्तूरबा गांधी को सौंपी गई भूमिका के बारे में बताया,

जिन्होंने महिलाओं के साथ सम्पर्क विकसित करना शुरू किया और उन्हें स्वच्छता, स्वच्छता के क्षेत्र में शिक्षित किया।

निदेशक ने यह भी कहा कि महात्मा गांधी ने सच्चाई के साथ अपने प्रयोगों से चम्पारण में लोगों की दुर्दशा को समझना शुरू किया और उनके मुद्दों को सही मंच पर रखा। श्री ज्ञान ने कहा, यह पहली बार क्रांति की लड़ाई नहीं बल्कि राजनीतिक बदलाव के लिए विकास की लड़ाई थी।

मध्य प्रदेश

एकजुटता, अहिंसक संचार और कोरोनावायरस पर ऑनलाइन व्याख्यान

समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने 20 अप्रैल, 2020 को राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय जबलपुर, मध्य प्रदेश के छात्रों के लिए एकजुटता, अहिंसक संचार और कोरोना वायरस पर एक ऑनलाइन व्याख्यान दिया। यह समिति द्वारा जारी ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला का हिस्सा है। व्याख्यान श्रृंखला कोविड–19 के मद्देनजर लॉकडाउन की अवधि के दौरान शुरू की गई थी।

इस अवसर पर डॉ. कुण्डू ने समिति के कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने न्यायपालिका के साथ मिलकर किये गये कार्यक्रमों पर भी प्रकाश डाला।

शांति की संस्कृति के लिए प्रभावी संवाद की आवश्यकता पर वेबिनार

समिति ने ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला की श्रृंखला के हिस्से के रूप में 2 मई, 2020 को शांति की संस्कृति के लिए प्रभावी संवाद की आवश्यकता पर एक वेबिनार का आयोजन किया। इस अवसर पर प्रख्यात गांधीवादी विद्वान और विचारक प्रो. एन. राधाकृष्णन और यूनेस्को चेयर फॉर पीस रिसर्च, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो. प्रियांकर उपाध्याय, प्रमुख वक्ता थे। इस कार्यक्रम में समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, ने अन्य कर्मचारियों के साथ चर्चा में भाग लिया। जिसका संचालन कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने किया। इसमें तकनीकी सहायता डिजिटल इंडिया द्वारा प्रदान की गई थी। वेबिनार में लगभग 137 प्रतिभागियों ने भाग लिया। वेबिनार ने संवाद की संस्कृति की स्थापना के लिए दैनिक जीवन में शांति पद्धतियों के अनुप्रयोग पर चर्चा की, जिसके बारे

में वेद और उपनिशद में लिखा है और परम पूज्य दलाई लामा से लेकर स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, दैसाकू इकेदा और अन्य शांति और अहिंसा के प्रमुख अभ्यासकर्ताओं ने अपनी जीवन भर की शिक्षाओं और मिशन के माध्यम से बखालत की।

डॉ. वेदभ्यास ने कहा कि संवाद, प्रतिभागियों के सीखने के लिए जगह बनाता है, और बदले में सहयोग उत्पन्न करता है। उन्होंने कहा कि संवाद एक संचार है जो सम्बन्धों का सम्मान करता है।

प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए, श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने संवाद के सार के बारे में बताते हुए समाज में शांति स्थापित करने के लिए संवाद की आवश्यक पर बल जताया। उन्होंने कहा कि मनुष्य स्वयं शांति का नाश करने वाला है, इस पर व्यथा व्यक्त करते हुए श्री ज्ञान ने लोगों से दूसरों के प्रति सहानुभूति विकसित करने का आह्वान किया, जिसके लिए धैर्यपूर्वक दूसरों के दृष्टिकोण को सुनने, उनकी बात को समझने और आपसी सहमति के स्तर तक पहुंचने की आवश्यकता है।

प्रो. एन. राधाकृष्णन ने वसुधैव कुटुम्बकम (दुनिया एक परिवार है) और बुद्ध के मध्य मार्ग के दो सिद्धांतों पर अपनी बात रखी। उन्होंने बेहतर सम्बन्धों को बढ़ावा देने के लिए एक साधन और अभ्यास के रूप में संवाद की शक्ति पर टिप्पणी की और कहा कि संवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को स्वयं अपनी क्षमता को खोजने में सक्षम बनाती है। उन्होंने आगे कहा कि संवाद ताजा रणनीति विकसित करता है और साहस, आत्मविश्वास और चेतना का संचार करता है।

प्रो. प्रियांकर उपाध्याय ने कहा कि शांति और अहिंसा की संस्कृति की भारतीय परम्परा को दुनिया ने स्वीकार किया है। अहिंसा को किसी भी समाज की प्रमुख आधारशिला बताते हुए प्रो. उपाध्याय ने महात्मा गांधी की अहिंसक रणनीतियों को दोहराया, जिनका उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ अपने संघर्ष में लगातार पालन किया।

यह कहते हुए कि शांति का निर्माण एक सतत प्रक्रिया है, उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा कही गई बातों का उल्लेख किया। दुनिया शांति से रहेगी, जब इसे रचने वाले व्यक्ति ऐसा करने का मन बना लेंगे। उन्होंने आगे विस्तार से बताया कि शांति के विचार को लम्बे समय से मानवता के सबसे पोषित लक्ष्यों में से एक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। शांति एक व्यापक अभिव्यक्ति है जो सद्भाव में एक साथ रहने की महत्वाकांक्षी खोज को दर्शाती है।

उन्होंने कहा कि शांति एक सतत प्रक्रिया और खोज की यात्रा है, सामाजिक न्याय में गहरी दरारें और हाल के वर्षों में कट्टरता और हिंसक उग्रवाद की वृद्धि स्पष्ट रूप से इंगित करती है कि शांति की संस्कृति में निहित बहुलवाद और सहिष्णुता के मूल्यों को अभी तक हमारे समाजों में आत्मसात नहीं किया गया है। रोजमर्रा की जिंदगी में विविधता के लिए सम्मान सकारात्मक शांति के लिए एक अनिवार्य शर्त है, जो मानव क्षमता की इष्टतम प्राप्ति को दर्शाता है। यह केवल उन संरचनाओं और प्रक्रियाओं के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जो व्यक्तियों और समुदायों की सक्रिय भागीदारी के माध्यम से निरन्तर संवाद का पोषण करते हैं। संघर्ष और हिंसा के बजाय बातचीत और शांति को प्रोत्साहित करने की तत्काल

आवश्यकता है और शांति सैनिकों की भूमिका महत्वपूर्ण और समान रूप से अनुकरणीय है।

समस्या आधारित पत्रकारिता से समाधान आधारित पत्रकारिता की ओर जाने की जरूरत : के जी सुरेश

वरिष्ठ पत्रकार, स्तम्भकार, शिक्षाविद और भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक, प्रो. के. जी. सुरेश ने समस्या–आधारित पत्रकारिता से समाधान–आधारित पत्रकारिता में स्थानांतरित होने की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने मीडिया शिक्षा में ऐसे पाठ्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने का भी प्रस्ताव रखा।

प्रो. सुरेश 27 मई, 2020 को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सहयोग से दिल्ली पत्रकार संघ (डीजेए) संगठन द्वारा अहिंसक संचार (एनवीसी) पर आयोजित एक वेबिनार में बोल रहे थे। दिल्ली पत्रकार संघ ने अहिंसक संचार पर चर्चा को पूरे देश में ले जाने का प्रस्ताव रखा।

चर्चा में शामिल होने वाले प्रमुख वक्ताओं में डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी समिति, श्री मनोज मिश्रा, अध्यक्ष, राष्ट्रीय पत्रकार संघ, श्री उमेश चतुर्वेदी, पत्रकार, लेखक और शोधकर्ता, डॉ. प्रमोद कुमार, लेखक और सामाजिक विचारक, श्री मनोहर सिंह, अध्यक्ष दिल्ली पत्रकार संघ और श्री अमलेष राजू, महासचिव, दिल्ली पत्रकार संघ शामिल थे। वेबिनार में चंडीगढ़, बिहार, दिल्ली, इंदौर और राजस्थान के शिक्षाविदों, पत्रकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित लगभग 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। चर्चा का संचालन श्री मनोहर सिंह ने किया।

इस अवसर पर विचार व्यक्त करते हुए, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ में अहिंसक संचार (एनवीसी) के तत्वों की बात की और सह–अस्तित्व और करुणा के बौद्ध सिद्धांतों को भी बताया।

महात्मा गांधी को अहिंसा का जनक बताते हुए डॉ. कुण्डू ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के सबसे महत्वपूर्ण चरण के दौरान भी, महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के साथ अपने व्यवहार में संचार के चौनल खुले रखे। उन्होंने मीडिया अध्ययन के पाठ्यक्रम में एनवीसी के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण को शामिल करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

अपने सम्बोधन में, श्री के. जी. सुरेश ने डॉ. कुण्डू द्वारा कही गई बातों को दोहराते हुए कहा कि भारत में संचार की परम्परा वेदों और उपनिषदों से पहले प्राचीन काल से है। उन्होंने कहा कि संचार की भारतीय परंपरा विरोध की नहीं है अपितु यह स्वीकृति की है। देश के सबसे महान संचारक बुद्ध से स्वामी विवेकानंद और महात्मा गांधी तक सभी ने संचार के भारतीय मॉडल को अपनाया, हमें भी वही अपनाने की आवश्यकता है। श्री सुरेश ने कहा कि मीडिया की भूमिका केवल सूचना का प्रसार करने की नहीं है, बल्कि लोगों को शिक्षित करने की भी है।

समस्या–आधारित पत्रकारिता से समाधान–आधारित पत्रकारिता में स्थानांतरित होने की तत्काल आवश्यकता है। श्री सुरेश ने पत्रकारिता में पाठ्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने का भी प्रस्ताव रखा।

श्री मनोज मिश्रा ने अपने सम्बोधन में चम्पारण में अपने प्रवास के दौरान सत्य को ढूँढने की महात्मा गांधी की विशिष्ट प्रक्रिया पर अपने विचार रखे और कहा कि कभी भी किसानों या ब्रिटिश अधिकारियों के साथ अपने व्यवहार में महात्मा गांधी ने लोगों को कानून अपने हाथ में लेने के लिए उकसाया नहीं था। उन्होंने मीडिया की प्रभावी भूमिका के बारे में बताते हुए कहा कि यह किसी भी तरह के तनाव को दूर कर सकती है।

टेलीविजन पत्रकारिता की तमाशा संस्कृति के बारे में बोलते हुए, श्री उमेश चतुर्वेदी ने वर्तमान कोविड–19 महामारी का सन्दर्भ दिया और कहा कि प्रवासियों को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, उन्हें आसानी से रोका जा सकता था, यदि टेलीविजन मीडिया ने अफवाह फैलाने में सहायता करने के बजाय लोगों को सही जानकारी देने में सक्रिय और सूचनात्मक भूमिका निभाई होती।

डॉ. प्रमोद कुमार ने पं. दीनदयाल उपाध्याय और महात्मा गांधी, दोनों की पत्रकारिता के विचारों को छुआ। उन्होंने कहा कि आज मीडिया में जो नकारात्मक खबरें आ रही हैं, उनसे बचना चाहिए और पत्रकारों को मुश्किल समय में भी सिद्धांतों का पालन करना

चाहिए। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बारे में बोलते हुए भाषा की संस्कृति पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि मीडिया की भाषा

भारत में संचार की परम्परा वेदों और उपनिषदों से प्राचीन काल से चली आ रही है। संचार की भारतीय परम्परा कभी भी प्रतिकूल नहीं रही है। इसके बजाय यह सर्व स्वीकार्य रही है। बुद्ध से स्वामी विवेकानंद से लेकर महात्मा गांधी तक जो सबसे महान संचारकों में से एक थे, के संचार के भारतीय मॉडल को अपनाने की आवश्यकता है।

बद से बदतर होती जा रही है।

वेबिनार में भाग लेने वाले अन्य लोगों में गांधी ज्ञान मंदिर, मधेपुरा, बिहार के वरिष्ठ गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता श्री दीनानाथ प्रबोध, श्री सुरेश शर्मा, श्री धीरज आर्य, श्रीमती कामना झा, श्री रमेश चंद शर्मा, श्री अशोक मलिक, श्री आशुतोष कुमार सिंह, श्री हरदयाल कुशवाहा, श्री मनमोहन शर्मा। श्री अमलेश राजू ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

32वें विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर वेबिनार

व्यसन पलायनवाद का एक रूप है: श्री प्रसून चटर्जी

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) नई दिल्ली के जराचिकित्सा विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रसून चटर्जी ने कहा, नशे की लत पलायनवाद का एक रूप है, और कब्ज, अवसाद, चिंता या मानसिक तनाव जैसी किसी भी अवस्था के निदान से तंबाकू चबाने का कोई सम्बन्ध नहीं है।) डॉ. चटर्जी 32वें विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा आयोजित वेबिनार को सम्बोधित कर रहे थे।

कई स्वास्थ्य खतरों जिसका न केवल पीड़ित व्यक्ति पर, बल्कि उनके पूरे परिवार पर इसका दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है, का सन्दर्भ देते हुए, डॉ चटर्जी ने कहा कि तंबाकू उद्योग रेडियोधर्मी रसायनों का उपयोग करते हैं, जो स्ट्रोक, गम्भीर संक्रमण और कई प्रकार के कैंसर के रूप में दीर्घकालिक हानिकारक प्रभाव डालते हैं। अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए डॉ. चटर्जी ने कहा कि तम्बाकू से सबसे ज्यादा पीड़ित मध्यम वर्ग हैं, जहां धूम्रपान न करने वाले लोग भी प्रभावित होते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि महिलाएं तंबाकू की सबसे बड़ी उपभोक्ता हैं और इसका गर्भवती महिलाओं पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

श्री रजनीश कुमार ने अपने सम्बोधन में कहा कि इस सम्बन्ध में लोगों में काफी जागरूकता पैदा करने की जरूरत है. उन्होंने विभिन्न प्रकार के व्यसनों से ग्रस्त लोगों तक पहुंचने और नशामुक्ति में उनकी मदद करने के गांधीवादी तरीके को अपनाने में एआईपीसी की भूमिका के बारे में भी बताया। भारत में पहली बार अकबर के दरबार में भारत में तंबाकू के आगमन का ऐतिहासिक सन्दर्भ देते हुए श्री रजनीश ने कहा कि महात्मा गांधी ने हमेशा शराबबंदी के बारे में विस्तार से बात की थी और अपने सामाजिक मिशन में इसकी वकालत की थी। उन्होंने तंबाकू के सेवन से होने वाली बीमारियों से प्रभावित लोगों पर पड़ने वाले सामाजिक और आर्थिक प्रभाव के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि नशाबन्दी पर महात्मा गांधी के विचारों पर आधारित प्रदर्शनी और एआईपीसी को उपहारस्वरूप देश भर में लगभग 60 स्थानों पर लगाया गया है।

इससे पहले वेबिनार में वक्ताओं का स्वागत करते हुए, निदेशक समिति, श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने वेबिनार की समयबद्धता पर प्रकाश डाला क्योंकि तंबाकू ने देश नर में लाखों लोगों को प्रभावित किया है। महात्मा गांधी के इस विचार को दोहराते हुए कि वे शराब और ऐसी अन्य बुरी आदतों को सामाजिक बुराई मानते हैं, श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि तंबाकू के सेवन ने कई परिवारों को तबाह और बर्बाद कर दिया है। उन्होंने यह भी आशा व्यक्त की कि डॉ. प्रसून और श्री रजनीश जैसे सामाजिक इंजीनियरों के विचारों से इस मुद्दे को समझने में मदद मिलेगी और युवाओं को तंबाकू सेवन के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए स्वेच्छा से बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

प्रतिभागियों ने भी सत्र के दौरान पैनलिस्टों के सामने अपने विचार रखे और प्रश्न पूछे।

बिहार

केंद्रीय विश्वविद्यालय दक्षिण बिहार के मीडिया विभाग में पाठ्यक्रम का हिस्सा बना अहिंसक संचार।

समिति ने दक्षिण बिहार स्थित केन्द्रीय विश्वविद्यालय के जनसंचार

और मीडिया विभाग के सहयोग से 28 मई, 2020 को अहिंसक संचार पर एक वेबिनार का आयोजन किया। वक्ताओं में श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक समिति, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी और प्रो. आतिश पाराशर, डीन और एचओडी डीएमसीएम सीयूएसबी शामिल थे। वेबिनार में लगभग 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विश्वविद्यालय ने जनसंचार विभाग में अहिंसक संचार को पाठ्यक्रम में एक नए विषय के रूप में शामिल करने का निर्णय लिया है। सत्र की अध्यक्षता प्रो. आतिश पाराशर ने की।

मीडिया विभाग के प्रमुख प्रो. पाराशर ने इस अवसर पर कहा कि इस कोर्स से छात्रों के जीवन में अप्रत्याशित बदलाव देखने को मिलेंगे। उन्होंने कहा कि इस विषय को आत्मसात करने के बाद छात्र अपने जीवन में अनुशासन और मौलिक ज्ञान को करीब से समझ सकेंगे, जिससे वे एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकेंगे। उन्होंने इस पाठ्यक्रम को समय की आवश्यकता बताते हुए कहा कि महात्मा बुद्ध की तपोभूमि (बिहार) से महात्मा गांधी के सिद्धांत पर आधारित अहिंसक संचार का यह विषय भारत की आध्यात्मिकता और दर्शन को वैश्विक मंच पर एक नए तरीके से पेश करेगा। इतिहास गवाह है कि भारत ने दुनिया को युद्ध नहीं बल्कि बुद्ध के माध्यम से बुद्ध की शिक्षा दी है।

अपने विचार साझा करते हुए श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि अहिंसक संचार आज समय की मांग है। उन्होंने कहा कि आज का युवा आक्रामक भाषा उपयोग कर रहा है, जिससे शांति स्थापित करना कठिन होता जा रहा है। इन्हीं सब समस्याओं को देखते हुए समिति ने इस पाठ्यक्रम को शुरू करने का विचार किया।

अहिंसक संचार के तत्वों पर अपनी प्रस्तुति देते हुए, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने भाषा और शब्दों के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने संचार पारिस्थितिकी तन्त्र को अहिंसक बनाने के लिए एक ठोस प्रयास करने का आह्वान करते हुए कहा कि अहिंसक संचार, संवाद का एक हिस्सा रहा है। भारतीय संस्कृति में महात्मा गांधी का उल्लेख आता है, जिन्होंने अहिंसक संचार का इस्तेमाल भारतीय स्वतंत्रता के लिए किया था।

उन्होंने अहिंसक संवाद के पांच गांधीवादी स्तम्भों–एक दूसरे के लिए सम्मान, एक–दूसरे को समझना, एक दूसरे को स्वीकार करना, एक दूसरे की सकारात्मक चीजों और प्रतिस्पर्धा के विचार को प्रोत्साहित करने का विस्तार से विश्लेषण किया।

साथ ही उन्होंने बताया कि कैसे हम अपने जीवन में अहिंसक संवाद ला सकते हैं, और हमें अपने भाषण के दौरान किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि अपने भीतर रचनात्मकता को बढ़ावा देना, खुद को जागरूक रखना, पूर्वाग्रह से बचना, किसी के प्रति निर्णय न करना, दूसरों की समस्याओं को समझना, ये सभी तरीके हैं जिनसे हम अहिंसक संचार को बढ़ावा दे सकते हैं।

वेबिनार के दौरान प्रतिभागियों के साथ एक संवादात्मक सत्र का भी आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने सक्रियता से हिस्सा लिया।

कोयंबत्तूर

अहिंसक संचार के माध्यम से स्वयंसेवा को बढ़ावा देना

"समाज में स्वैच्छिकता और परोपकारिता को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीति अहिंसक संचार का उपयोग है।" यह विचार वक्ताओं द्वारा 30 मई, 2020 को पीएसजी कॉलेज ऑफ

आर्ट्स एंड साइंसेज, कोयंबटूर, तमिलनाडु के सहयोग से समिति द्वारा आयोजित एक वेबिनार में व्यक्त किया गया। इसका विषय था– अहिंसक संचार के माध्यम से स्वयंसेवा को बढ़ावा देना।

वेबिनार में रेखांकित किया गया कि प्रभावी स्वयंसेवावाद के लिए सम्बन्ध बनाने और उनका विकास करने की आवश्यकता है। इस कार्यक्रम में लगभग 100 छात्रों और शिक्षकों ने भाग लिया।

प्रमुख व्याख्या देते हुए, समिति के कार्यक्रम अधिकारी, डॉ वेदाभ्यास कुण्डू ने अहिंसक संचार के विभिन्न आयामों और स्वयंसेवी प्रयासों के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने भारतीय परम्परा में वर्णित स्वयंसेवा के बारे में बात की और महात्मा गांधी भारत के सबसे महान

स्वयंसेवक कैसे बने, इसके बारे में बताया। उन्होंने स्वयंसेवा के गांधीवादी दृष्टिकोण के बारे में विस्तार से चर्चा की।

डॉ. कुण्डू ने बताया कि प्रभावी स्वयंसेवा के लिए, एक स्वयंसेवक को रूढ़ियों, नैतिक निर्णयों और मूल्यांकन की भाषा से बचने की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कि सहानुभूति परोपकार, प्रेम और करुणा एक कुशल स्वयंसेवक के महत्वपूर्ण गुण होते हैं।

इससे पूर्व श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने वेबिनार का उद्घाटन किया। अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा कि देश भर में एनएसएस स्वयंसेवक महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित स्वयंसेवा की परम्परा का पालन कर रहे है।

समाज कार्य विभाग की डॉ. आर कविता ने सत्र का संचालन किया और कॉलेज के एनएसएस स्वयंसेवकों की गतिविधियों की जानकारी दी।

आयोजकों में कार्यक्रम अधिकारी (एनएसएस पीएसजी सीएएस) डॉ. आर कविता, श्री एस. एम. सर्वनाकुमार, श्री आर. कनागराज और डॉ. वी. सुमति शामिल थे। वेबिनार का आयोजन महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर किया गया था।

'सामुदायिक स्वयंसेवकों को बढ़ावाः कोविड–19 के दौरान समाज सेवा' विषय पर एक वेबिनार

हमें डर को अवसर में बदलना होगाः श्री दीपंकर श्री ज्ञान

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर समिति ने 5 जून, 2020 को 'सामुदायिक स्वयंसेवकों को बढ़ावाः कोविड–19 के दौरान समाज सेवा' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया। उत्तराखण्ड, कानपुर, उत्तर प्रदेश, असम, मणिपुर, इंदौर, पश्चिम बंगाल, बिहार

और नई दिल्ली से लगभग 46 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों ने कोविड–19 के दौरान अपने–अपने क्षेत्रों में की गई गतिविधियों को साझा किया। चर्चा के दौरान सुश्री प्रेरणा ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

समिति के श्री शकील खान ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि कैसे उन्होंने और उनकी टीम ने बिहार के 15 साल से कम उम्र के बच्चों को बस की व्यवस्था करके उनके घर तक पहुंचने में मदद की।

दस्तक सामाजिक संस्थान, द्वाराहाट, उत्तराखण्ड के श्री सी. पी. जोशी ने बताया कि उनका संगठन लगभग बीस जिलों में पहुंचा है और अपने राज्य के दूरदराज के इलाकों में बसे 127 परिवारों को भोजन और राशन वितरण करके मदद की। उन्होंने बताया कि उन्होंने लगभग 750 मास्क वितरित किए और विशेष रूप से विकलांग लोगों की मदद भी की। श्री जोशी ने कहा कि कोविड–19 ने मानवता को प्रकृति का सम्मान करने का पाठ पढ़ाया है।

सत्र का संचालन कर रहे समिति के पूर्वोत्तर समन्वयक श्री गुलशन गुप्ता ने श्री राजेन्द्र नेगी से चर्चा की। चर्चा के दौरान श्री नेगी ने बताया कि वे रुद्रप्रयाग में रोगियों के साथ नियमित रूप से योग सत्र लेते रहे हैं।

नारी और शिशु कल्याण केन्द्र पश्चिम बंगाल की सुश्री सादिया आफरीन ने उन पहलों के बारे में भी बताया, जो केन्द्र द्वारा हावड़ा और कोविड प्रभावित दूर–दराज के इलाकों में भी जरूरतमंद लोगों तक पहुंचने के लिए केन्द्र द्वारा शुरू की गई हैं। उन्होंने हाल ही में आए चक्रवात अम्फान के बारे में भी जानकारी दी जिसने पश्चिम बंगाल को हिलाकर रख दिया। उन्होंने कहा कि उनके संगठन ने तत्काल राहत कार्य आरम्भ कर लोगों को सुरक्षा प्रदान की। उन्होंने बताया कि उन्होंने सेव द चिल्ड्रन संगठन के सहयोग से टेली–कॉलिंग शुरू कर, 1000 लोगों को सूखा राशन और सैनिटरी नैपकिन वितरित किए गए।

चर्चा में शामिल होते हुए, श्री राहुल पाठीक ने आंकड़ों के माध्यम से बताया कि मार्च में लॉकडाउन की घोषणा के बाद से वे अब तक अनेक परिवारों तक पहुंच पाए हैं। उन्होंने कहा कि उनके संगठन के स्वयंसेवकों ने लगभग 19000 परिवारों को राशन वितरित किया है और अब तक लगभग 3750 मास्क वितरित किए जा चुके हैं। वे अपने क्षेत्र के लगभग 26500 जरूरतमंद बच्चों के लिए ऑनलाइन कक्षाएं भी संचालित कर रहे हैं।

इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी के सदस्य और यूपी स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया के निदेशक डॉ. संजय तिवारी ने कहा कि खिलाड़ियों के मनोबल को बढ़ाने के लिए, उन्होंने प्रमुख खेलों के साथ कई ऑनलाइन कार्यशालाओं का आयोजन किया। उन्होंने जरूरतमंदों को बड़े पैमाने पर समान वितरण की पहल भी की है।

असम के श्री रिहान अली ने ऐसे कई व्यक्तियों का जिक्र किया, जिनसे वे व्यक्तिगत तौर पर नहीं मिले, लेकिन वे लोग उनके साथ अनेक परिवारों की मदद करने के उनके काम में शामिल

हुए। उन्होंने कहा कि वे एक सामाजिक कार्यकर्ता हिमांशु शर्मा से पहले कभी नहीं मिले थे, लेकिन शुरूआती अड़चन के बाद उन्हें और उनकी मदद को स्वीकार किया। वे अब तक असम के लगभग कई जिलों में 750 परिवारों तक पहुँच चुके हैं। रिहान ने लोक/स्थानीय कलाकारों के साथ अपनी पहल के बारे में भी बताया जो इस महामारी के शिकार हुए हैं और अपनी कला और संगीत का दस्तावेजीकरण कर रहे हैं। उनके पास फण्ड एकत्र करने के लिए सोशल मीडिया पर अपने वीडियो अपलोड करना शुरू करने की योजना है।

सिलचर असम के श्री प्रसनजीत रॉय चौधरी, जो संस्कार भारती से भी जुड़े हैं, कलाकारों की देखभाल भी करते रहे हैं और इस अवधि में उन्होंने 350 कलाकारों का डेटाबेस बनाया है, ने भी कार्यक्रम में अपने विचार रखे। उन्होंने बताया कि कोविड की अवधि में अनेक मंच कलाकारों को भी मुश्किलों का सामना करना पड़ा, ऐसे में श्री रॉय चौधरी अपनी टीम के साथ उन कलाकारों तक पहुंचे और उनकी हर सम्भव मदद की।

महामारी के इस दौर में अपने विचार साझा करते हुए उत्तर प्रदेश के श्री नीरज सोनी ने कहा कि इस अवधि के दौरान किसान भी काफी प्रभावित हुए हैं और वह अपनी टीम के साथ इन परिवारों को भोजन उपलब्ध कराने के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने भविष्य की फसल के लिए बीज भी उपलब्ध कराए हैं और वे किसानों को अच्छी गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध कराने के लिए एक बीज बैंक बनाने की योजना बना रहे हैं।

समिति की पूर्व कार्यकर्ता और सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय, सुश्री रीता कुमारी ने घरेलू कामगारों के साथ अपनी पहल के बारे में बात की और बताया कि कैसे दिल्ली में यमुना के किनारे खेती बंद हो गई है, जिससे किसानों के परिवार प्रभावित हुए हैं। वह अपने करीबी सहयोगियों के साथ इस स्थिति की बारीकी से निगरानी कर रही है और इन परिवारों को सहायता प्रदान कर रही है। सुश्री रीता ने भी रिहान अली जैसे लोगों को आर्थिक रूप से मदद करके पूर्वोत्तर में उनके प्रयासों में मदद की है।

हमें उन लोगों के लिए संसाधन तैयार करने होंगे, जो इस कमी को पूरा करने के लिए वापस चले गए हैं। कोविड–19 ने जहां एक डर पैदा किया है, वहीं लोगों को डर को अवसर में बदलना भी सिखाया है। दुनिया को, कोविड–19 के बाद पर्यावरण को फिर से जीवंत करने के लिए हर साल 15 दिनों के लॉकडाउन के लिए एक अभियान चलाना चाहिए।

डॉ. मंजू अग्रवाल ने अपने क्षेत्र में रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन के साथ जरूरतमंद परिवारों को चिकित्सा सहायता प्रदान करने के अपने सरल प्रयासों की जानकारी दी। इसी तरह बेटी और शिक्षा फाउण्डेशन की सुश्री रेणु शर्मा, जो एक उद्यमी भी हैं, ने जौहरी समुदाय का ध्यान रखा है।

मणिपुर में कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान की डॉ. सरिता देवी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कोविड–19 ने एक बार फिर सभी आयु वर्ग के लोगों को स्वयंसेवा की भावना सिखाई है। उन्होंने बताया कि उनके केन्द्र ने स्वयंसेवकों की मदद से ताजी सब्जियों की ऑनलाइन डिलीवरी शुरू कर दी है। कारीगरों और उनके शिल्प को मदद देने के लिए उनके संस्थान ने कारीगरों के शिल्प को खरीदने का प्रयास किया ताकि उन्हें वित्तीय समस्याओं का सामना न करना पड़े।

ग्रामीणों के बीच कोविड के व्याप्त भय के बारे में बोलते हुए, बरगद के श्री हरदयाल कुशवाहा ने कहा कि कोविड के समय में वह अपने गांव चले गए। मध्य प्रदेश में और इस बीमारी के बारे में जागरूकता बढ़ाने और इसे कैसे रोका जा सकता है, इसके लिए ग्राम पंचायतों और जिला प्रशासन के साथ काम करना शुरू किया। उन्होंने इस पहल को आसपास के जिलों में भी ले जाने का प्रयास किया है।

अपनी समापन टिप्पणी में, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने प्रतिभागियों द्वारा साझा किए गए अनुभवों का उल्लेख किया और इस अवधि में कई अज्ञात लोगों से जुड़ने के उनके प्रयासों की सराहना की और आशा व्यक्त की कि यह सहयोग समाज की बेहतरी के लिए मिलकर काम करने के लिए और लम्बे समय तक चलने वाले सम्बन्धों में विकसित होगा। उन्होंने असंगठित क्षेत्र व नौकरी खो चुके लोगों के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए सम्पन्न लोगों को उनके प्रति सहानुभूति रखने व उन्हें रोजगार दिलाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, हमें उन लोगों के लिए संसाधन बनाना होगा जो घबराकर पलायन कर गये हैं। उन्होंने आगे कहा, कोविड–19 ने एक डर पैदा किया है, लेकिन इसने लोगों को डर को अवसर में बदलना भी सिखाया है। यह कहते हुए कि पर्यावरण का कायाकल्प हो गया है, उन्होंने आशा व्यक्त की कि दुनिया कोविड–19 के बाद, पर्यावरण को फिर से जीवंत करने के लिए हर साल 15 दिनों के लॉकडाउन का अभियान चलाएगी।

उन्होंने सभी के प्रयासों की सराहना करते हुए सुश्री प्रेरणा जैसे लोगों का भी उल्लेख किया जो आवारा और गली के जानवरों की देखभाल कर रहे हैं। श्री राजदीप पाठक व कई अन्य लोगों ने चर्चा के दौरान समिति की कुछ गतिविधियों की भी जानकारी दी।

श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने महात्मा गांधी के आत्मनिर्भर लोगों के गांव के सपने का एक मॉडल बनाने के लिए रणनीति विकसित करने के लिए ग्राम स्वराज के गांधीवादी सिद्धांतों पर अवसर और आत्मनिर्भरता (आत्मनिर्भर भारत) पर निकट भविष्य में ई–सम्मेलन करने की भी आशा व्यक्त की। कई प्रतिभागियों ने अगरबत्ती बनाने, खेती आदि करने की अपनी विनम्र पहल को साझा किया जिसके माध्यम से उन्होंने दूसरों के लिए रोजगार का सृजन किया है।

मधेपुरा, बिहार

महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज के .ष्टिकोण पर वेबिनार

स्वशासन की परिभाषा बदलनी होगी
राम बहादुर राय

महात्मा गांधी ने अपने सपनों के गांव की परिकल्पना को साकार

करने के लिए ग्राम स्वराज की अवधारणा दी थी, लेकिन यह नया नही है। उन्होंने मानवता के सामने जो प्रस्तुत किया वह भारत को एक बार फिर से आत्मनिर्भर बनाने की प्राचीन भारतीय परम्परा थी, जो वेदों और उपनिषदों ने हमें दी थी। ये विचार श्री राम

बहादुर राय, अध्यक्ष इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) ने व्यक्त किये। वे 7 जून, 2020 को गांधी ज्ञान मंदिर, मधेपुरा, बिहार के सहयोग से गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली द्वारा आयोजित महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज के दृष्टिकोण पर एक वेबिनार में मुख्य वक्ता के तौर पर बोल रहे थे।

बिहार, दिल्ली, झारखण्ड, कानपुर, पंजाब के लगभग 55 प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए, जिसमें वरिष्ठ पत्रकार, सामाजिक विचारक, छात्र, शोध विद्वान शामिल थे, श्री राम बहादुर राय ने कहा कि ग्राम पंचायतें, आदि भारतीय गांवों की अंतर्निहित ताकत और आत्मनिर्भरता का उनका माँडल है, जिन्हें भारत ने सदियों से कई घाराओं और लहरों का सामना करते हुए बनाया है।"

उन्होंने कहा, गांधीजी के विचार विकास और मानव कल्याण पर प्राचीन भारतीय विचारों से प्रेरित थे, जो भारत के प्राचीन शास्त्रों में निहित थे और आंशिक रूप से छठी शताब्दी ईसा पूर्व के कौटिल्य अर्थशास्त्र नामक अर्थशास्त्र और राज्य शिल्प पर आधारित उत्कृष्ट ग्रंथ में लिखे गए थे।

उन्होंने महात्मा गांधी की अंतिम इच्छा और वसीयतनामा के बारे में भी बताया, जिसे उन्होंने अपनी मृत्यु से एक दिन पहले 29 जनवरी, 1948 को तैयार किया था और अफसोस जताया कि दुर्भाग्य से स्वतंत्रता की शुरुआत के बाद से और उसके बाद इस तरह के विचारों का कभी भी केन्द्र में नेताओं ने पालन नहीं किया। राज्यों ने भी कभी इस प्रस्ताव को गहराई से नहीं देखा।

गांधीजी के स्वराज के विचार के बारे में बोलते हुए, श्री राम बहादुर राय ने इसे भारतीय लोकतंत्र के कामकाज से जोड़ा और कहा कि लोकतंत्र भारत की भूमि, संस्कृति और परम्पराओं में निहित है। उन्होंने विशेष रूप से महात्मा गांधी द्वारा निर्धारित बारह सिद्धांतों के बारे में भी बताया जो उनका मानना था कि मानव कल्याण के लिए महत्वपूर्ण हैं।

ये सिद्धांत है:

1. लोगों को प्रसन्न और कुशल बनाएं
2. शारीरिक श्रम
3. समानता के सिद्धांत
4. व्यवहार और सम्बन्ध, आदि
5. ट्रस्टीशिप
6. विकेन्द्रीकरण
7. स्वदेशी / स्थानीय
8. आत्मनिर्भरता
9. आपसी भागीदारी
10. अंतर–विश्वास
11. पंचायती व्यवस्था और
12. नई तालीम

श्री राम बहादुर राय ने आगे कहा कि जहां जम्मू–कश्मीर, केरल और कर्नाटक में ग्राम सभाएं और पंचायतें बहुत अच्छी तरह से काम कर रही हैं, वहीं हमारे नेताओं को सभी स्तरों पर ग्राम ग्राम सभाओं को मजबूत करने को मजबूर करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, स्व–शासन की परिभाषा बदलनी होगी। स्व–शासन का अर्थ है कि ग्राम पंचायतों और ग्राम सभाओं को बिना किसी हस्तक्षेप के निर्णय लेने का अधिकार है।

ग्राम स्वराज, या ग्राम स्व–शासन, गांधी की सोच में एक महत्वपूर्ण अवधारणा थी। यह भारत में आर्थिक विकास की उनकी दृष्टि का केन्द्र बिन्दु था। गांधीजी का ग्राम स्वराज पुराने गाँव का पुनर्निर्माण नहीं था बल्कि आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था वाले गाँवों की नई स्वतंत्र इकाइयों का निर्माण था", उन्होंने निष्कर्ष निकाला।

वरिष्ठ पत्रकार और कई पुस्तकों के लेखक श्री अरविंद मोहन ने स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए उत्पादन में विकेन्द्रीकरण और विविधता की बात की और कहा कि ये थी ग्राम स्वराज पर महात्मा गांधी के विचारों में परिलक्षित प्रमुख विचार थे। उन्होंने प्रवासी मजदूरों का मुद्दा भी उठाया, जिन्हें महामारी कोविड–19 के दौरान विभिन्न बाधाओं से गुजरना पड़ा और केन्द्र और राज्यों के नेतृत्व से गांवों के विकास के लिए नीतियां बनाने का आह्वान किया ताकि ऐसे लोगों को आगे दिक्कतों का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि कोरोना काल एक बड़ी चुनौती हो सकती है जिसे यदि नीतियों में परिवर्तन के माध्यम से गांवों के विकास के लिए एक उपयोगी अवसर में बदल दिया जाए तो आत्मनिर्भरता के गांधीवादी दृष्टिकोण को पूरा किया जा सकता है, जिसे महात्मा गांधी ने ग्राम पुनर्निर्माण की मूलभूत शर्तों में से एक माना था।

इस अवसर पर बोलने वाले अन्य लोगों में गांधी ज्ञान मंदिर के संस्थापक निदेशक श्री दीनानाथ प्रबोध थे, जिन्होंने भूदान आन्दोलन के अपने अनुभवों को साझा किया और दर्शाया कि कैसे जीवन–कौशल सीखने से शिक्षा का मॉडल एक अधिक यांत्रिक पैटर्न में स्थानांतरित हो गया है। उन्होंने अपनी यादें भी साझा कीं कि कैसे गांधीजी द्वारा स्थापित बुनियादी विद्यालय, जहां उनका नामांकन हुआ था, ने जीवन कौशल में प्रशिक्षण प्रदान किया और प्रत्येक छात्र को कृषि उत्पादन के लिए भूमि का एक हिस्सा दिया।

इससे पहले चर्चा को आरम्भ करते हुए समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने महात्मा गांधी के हिंद स्वराज पर प्रकाश डाला, जिसने न केवल विकास के मॉडल पर सवाल उठाया, बल्कि समाधान भी प्रदान किया। उन्होंने इस बात पर निराशा व्यक्त की कि महात्मा गांधी द्वारा परिकल्पित ग्राम स्वराज की विराट अवधारणा को नीति निर्माताओं द्वारा ग्रामीण विकास तक ही सीमित कर दिया गया है।

श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा: अंग्रेज उत्पादन के केन्द्रीकृत, औद्योगिक और मशीनीकृत तरीकों में विश्वास करते थे, लेकिन महात्मा गांधी ने इस सिद्धांत को बदल दिया और उत्पादन के विकेन्द्रीकृत, घरेलू, हाथ से तैयार किए गए तरीके की कल्पना की। महात्मा गांधी ने बड़े पैमाने पर उत्पादन पर नहीं, बल्कि जनता द्वारा उत्पादन पर जोर दिया। गांधीजी के लिए भारत की सच्ची स्वतंत्रता का अर्थ भारतीय समाज और राजनीति का व्यापक परिवर्तन था। वह चाहते थे कि राजनीतिक सत्ता भारत के गांवों में बांट दी जाए।

उन्होंने आगे कहा कि गांधीजी ने स्वराज शब्द को पसंद किया, जिसे उन्होंने सच्चा लोकतंत्र कहा। "यह लोकतंत्र स्वतंत्रता पर आधारित है। महात्मा गांधी के अनुसार, पंचायत राज व्यवस्था के विकास के लिए स्थानीय संसाधनों का उपयोग काफी मौलिक है। ग्राम सभाओं के साथ पंचायतों को इस प्रकार संगठित किया जाना चाहिए कि कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों में विकास के लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों की पहचान की जा सके।

उन्होंने कहा कि इस महत्वपूर्ण समय में, यह महसूस करना और भी प्रासंगिक हो जाता है कि क्या महात्मा गांधी की ग्राम स्वराज की दृष्टि स्थापित हो गई है, क्या उनके आदर्शों को भुला दिया गया है और क्या सभी के स्थायित्व और विकास के विचारों से समझौता किया गया है?

इस अवसर पर श्री देव नारायण पासवान देव, पूर्व प्रोफेसर, जगजीवन कॉलेज, गया मगध विश्वविद्यालय और श्री सुनील कुमार सिन्हा, अध्यक्ष, चाणक्य स्कूल ऑफ पॉलिटिकल स्टडीज एंड रिसर्च, पटना ने भी अपने विचार व्यक्त किये। जनसत्ता के वरिष्ठ पत्रकार श्री अमलेश राजू ने चर्चा का संचालन किया। तकनीकी सहयोग स्वस्थ भारत न्यास के श्री आशुतोष सिंह ने प्रदान किया। धन्यवाद प्रस्ताव श्री सुनील कुमार सिन्हा ने प्रस्तुत किया।

[]अधिकार प्राप्त गांव– सशक्त राष्ट्र[]

सतत विकास के लिए नैतिकता, अर्थव्यवस्था और पारिस्थितिकी जरूरी : श्री राम लाल

राष्ट्रीय स्वयं सेवक के अखिल भारतीय मुख्य समन्वयक श्री रामलाल जी ने कहा, हमें अपने गांवों, अपने ग्रामीणों को उनकी आत्मनिर्भर कार्यप्रणाली, उनकी पारम्परिक प्रणालियों और अपनी संस्कृति में उनके विश्वास के लिए धन्यवाद देना है जो इस महामारी के दौरान एक वरदान साबित हुई है। श्री रामलाल 26 जून, 2020 को कोविड–19 और वर्तमान परिदृश्य के आलोक में समिति द्वारा आयोजित सशक्त गांव– सशक्त राष्ट्र विषय पर वेबिनार को सम्बोधित कर रहे थे।

मेहनतकश लोगों के शहरों से अपने–अपने गाँव–घरों में आने के बावजूद महामारी से निपटने में गांवों के प्रयासों की सराहना करते हुए, श्री रामलाल ने कहा, हमें श्रम की गरिमा का सम्मान करना होगा। उन्होंने कहा, मजदूरों ने कठिनाइयों के बावजूद अपने घर वापस जाने की यात्रा में कभी भी किसी प्रकार का कोई विद्रोह नहीं किया।

ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन के सीईओ श्री सीता राम गुप्ता और मिशन समृद्धि के श्री नरेन्द्र मेहरोत्रा ने श्री राम लाल की बातों का समर्थन करते हुए कहा कि महामारी ने इस नई पीढ़ी और आज के युवाओं को सेवा के सार का एहसास कराया है। नई पीढ़ी अपने परिवार के साथ रहने लगी है, वे स्वदेशी (स्थानीय निर्मित) उत्पादों और स्वावलंबन (आत्मनिर्भर) के बारे में अधिक जागरूक हो गए हैं, साथ ही नैतिकता, पारिस्थितिकी और अर्थव्यवस्था के बारे में सतर्क हो गए हैं जो सतत विकास के लिए आवश्यक हैं।

सर्वोदय के विचारों को साझा करते हुए, महात्मा गांधी, आचार्य विनोबा भावे, पं. दीन दयाल उपाध्याय, श्री नानाजी देशमुख के अंत्योदय विचारों पर भी चर्चा की गयी। उन्होंने कहा कि जब हर कोई विकास की बात करता है, तो उनका मुख्य विचार समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने और उन गांवों में वापस जाने में परिलक्षित होता है जहां बेरोजगारी की खाई को कम करने के लिए युवाओं के काम करने के पर्याप्त अवसर हैं। उन्होंने कहा कि महामारी के कारण आज हम सभी के सामने जो चुनौती आई है, वह भारत को आत्मनिर्भर बनाने का

अवसर है और यही भारत का सच्चा धर्म है। क्योंकि, भारत में धर्म का अर्थ कार्तव्य है।

श्री सीता राम गुप्ता ने अपने सम्बोधन में घुले, महाराष्ट्र जैसे विभिन्न स्थानों में ल्यूपिन द्वारा की गई पहलों की सफलता की कहानियां प्रस्तुत कीं। उन्होंने नंदुरबार, महाराष्ट्र, इंदौर, भरतपुर, विदिशा आदि में एक एक छोटे से प्रयास द्वारा संघर्षरत महिलाओं के उद्यमी बनने की गाथा का भी वर्णन किया। उन्होंने कहा कि अपनी कथनी और करनी के अंतर को कम करने के लिए हमारी विचार प्रक्रिया में एक आदर्श बदलाव की आवश्यकता है।

उन्होंने आगे गरीबी, कुपोषण और बेरोजगारी के मुद्दों को सम्बोधित करने और इस तरह मानव विकास सूचकांक बढ़ाने के लिए भारत की अप्रयुक्त क्षमता का दोहन करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, हमें समस्याओं को अवसर में बदलने के बारे में महत्वपूर्ण सोच रखनी होगी, उन्होंने कहा और आशा व्यक्त की कि सरकार द्वारा कृषि पर एक कैबिनेट समिति का गठन किया जाएगा।

श्री सीता राम गुप्ता ने "तीन के"–किसान, कारीगर और कामगार को मजबूत करने और उनकी गरिमा सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, जिसके लिए उन्होंने सरकार के साथ कॉर्पोरेट क्षेत्रों के तालमेल का सुझाव दिया और आशा व्यक्त की कि कॉरपोरेट, सिविल सोसाइटी और सरकार की त्रिमूर्ति मिलकर रोजगार का आत्मनिर्भर मॉडल तैयार कर आत्मानिर्भर भारत के सपने को साकार कर सकेंगे।

मिशन समृद्धि के श्री नरेन्द्र मेहरोत्रा ने शासन की पारम्परिक भारतीय प्रणाली पर प्रकाश डाला, जहां किसान–कारीगर–उद्यमी के बीच एकता थी। सच्चे लोकतंत्र की अवधारणा के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि सच्चा लोकतंत्र यही है, जहां संसाधनों पर सबका अधिकार है। उन्होंने कहा कि यह पारम्परिक प्रणाली समान स्तर पर अधिकार और जिम्मेदारी दोनों प्रदान करती है।

अंग्रेजों के आगमन और भारतीय अर्थव्यवस्था को कैसे लूटा गया, इस पर अपने विचार साझा करते हुए, श्री नरेन्द्र मेहरोत्रा ने श्री सीता राम गुप्ता की भावनाओं का समर्थन किया। उन्होंने सरकार के साथ मिशन समृद्धि की ग्रामीण विकास योजनाओं की कुछ सफलता की कहानियों को भी साझा किया और महाराष्ट्र और वर्धा के आदिवासी क्षेत्र यवतमाल के अनुभवों को साझा किया। उन्होंने स्थानीय/ग्रामीण क्षेत्रों में विकास पर भी जोर दिया और महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज के दृष्टिकोण के बारे में अपने विचार साझा किए।

इससे पहले, वेबिनार की शुरुआत गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के स्वागत भाषण से हुई, जिन्होंने वेबिनार पर अपने इनपुट भी साझा किए। वेबिनार में बिहार, लखनऊ, दिल्ली, राजस्थान के लगभग 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

माइंडफुलनेस : संतुलन से सद्भाव की ओर यात्रा

समिति ने धर्माचार्य श्री शांतम सेठ (माइंडफुलनेस टीचर, अहिंसा ट्रस्ट) के साथ माइंडफुलनेसः ए वे टुवर्ड्स बैलेंस एंड हार्मनी पर एक परिचर्चा का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी सिस्टर रमा, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू और, पाठ्यक्रम प्रभारी सुश्री कनक कौशिक ने अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर युवाओं, बच्चों, महिलाओं, जेल के कैदियों के लिए माइंडफुलनेस पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इसमें 89 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

बौद्ध धर्माचार्य शांतम सेठ, ने प्रतिभागियों को एक आभासी माइन्डफुलनेस अभ्यास करवाया। इसके माध्यम से उन्होंने तीन आवश्यक तकनीकों, रुकने, सांस लेने और मुस्कुराने का सही ढंग सिखाया। पाठ्यक्रम की शुरुआत करते हुए उन्होंने कहा, माइंडफुलनेस हमें खुशी की ओर ले जा सकती है। उन्होंने कहा कि वर्तमान क्षण में आना महत्वपूर्ण है, क्योंकि अतीत चला गया है और भविष्य एक विचार है। इसलिए जो हमारे पास है वह वर्तमान क्षण है। उन्होंने आगे कहा कि माइंडफुलनेस का अभ्यास एक संतुलन बनाता है, एक जागृति पैदा करता है और खुद का पोषण करता है। उन्होंने मुस्कान के प्रभाव पर प्रकाश डाला जिसका तंत्रिका सम्बन्धी प्रभाव होता है। उन्होंने कहा कि यह तनाव और अवसाद से मुक्त होने की एक सरल माइंडफुलनेस तकनीक है।

सिस्टर रमा ने श्वसन व्यायाम का अभ्यास करवाया। उन्होंने मौन की यात्रा के माध्यम से स्वयं पर ध्यान केन्द्रित करने का अभ्यास करवाया। इसके बाद अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा, माइंडफुलनेस के सिद्धांत भारत की भूमि में निहित हैं और महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धांतों का उल्लेख करते हैं। उन्होंने कहा, गहरे अर्थों में माइंडफुलनेस का कार्य ऐसा कोई विचार भी नहीं पैदा करने देना है, जो हमारे भीतर की शांति को भंग करता हो।

उन्होंने आगे कहा, आज लोग जिस सबसे बड़ी गुलामी, जाल, बंधन में जी रहे हैं, वह हमारे नकारात्मक विचारों का बंधन है। उन्होंने लोगों को इस तरह की नकारात्मकताओं से दूर रहने और उनके आसपास सकारात्मक माहौल पैदा करने का विकल्प प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, जब कोई शांति, सत्य, अहिंसा और सबसे बढ़कर स्वयं के बारे में जागरूक होता है, तो वह आत्म–चेतना प्राप्त करने में सक्षम होता है।

अध्यात्म को स्वयं और दूसरों के बीच संतुलन बैठाने और जानने की कला की संज्ञा देते हुए, सिस्टर रमा ने चयन करने की स्वतंत्रता पर जोर दिया और कहा कि संचार के प्रवाह को समझने के लिए ज्ञान और आत्म सशक्तीकरण के चौनल आवश्यक हैं, जो हमें खुद को देखने और इसे हमारे साथ हर समय हर जगह ले जाने में सक्षम बनाता है।"

इससे पहले श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने पाठ्यक्रम की आवश्यकता और

इसके समय का जिक्र करते हुए कहा कि यह पाठ्यक्रम ऐसे समय में आया है, जब लोगों पर अवसाद छाया हुआ है। उन्होंने कहा कि इतने लम्बे समय तक घर पर रहने वाले छात्रों के लिए अपने साथियों के ग्रुप की याद भी उनके लिए तनाव का कारण बनी है। यह कहते हुए कि यह पाठ्यक्रम लोगों को स्वयं को समझने में मदद करेगा, उन्होंने कहा कि एक स्वतंत्र दिमाग ही प्रसन्न दिमाग है और आज इसकी आवश्यकता है।

सुश्री कनक कौशिक ने महिलाओं/गृहिणियों के लिए पाठ्यक्रम की रूपरेखा की जानकारी दी और कहा कि यह पाठ्यक्रम स्कूली बच्चों, युवाओं और जेल के कैदियों को आत्म–करुणा का अभ्यास करने में मदद करेगा।

डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने इस अवसर पर धन्यवाद प्रस्ताव रखा और लोगों से समिति द्वारा शुरू किए गए इस निःशुल्क पाठ्यक्रम में शामिल होने का आह्वान किया।

प्रभावी स्वयंसेवा के लिए कौशल विकास पर ई–कार्यशाला का आयोजन

समिति ने भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय, सोनीपत, हरियाणा के छात्र कल्याण विभाग के सहयोग से 7–8 जुलाई, 2020 को 'प्रभावी स्वयंसेवा के लिए कौशल विकास पर ई–कार्यशाला का आयोजन किया। विश्वविद्यालय की कुलपति, प्रो. सुषमा यादव कार्यक्रम की संरक्षक थीं। इस कार्यक्रम में समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, कार्यक्रम अधिकारी, डॉ. वेदव्यास कुण्डू, श्री गुलशन गुप्ता, पूर्वोत्तर समन्वयक, प्रो. विजय नेहरा, ई–कार्यशाला निदेशक, डॉ. शैकाली नागपाल, सह–निदेशक, डॉ. वंदना तेहलान दहिया, सहायक और डॉ. दीपाली माथुर, सहायक उपस्थित थे। प्रथम दिन 107 प्रतिभागियों ने भाग लिया और लगभग 400 लोग फेसबुक के माध्यम से जुड़े।

उद्घाटन भाषण देते हुए श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि कार्यशाला का आयोजन उचित समय पर किया जा रहा है क्योंकि महामारी ने दुनिया भर के लोगों को स्वयंसेवा में अपने कौशल को विकसित करने

का अवसर दिया है। स्वयंसेविता को आंतरिक विवेक के माध्यम से निःस्वार्थ सेवा करार देते हुए, उन्होंने कहा कि स्वयंसेविता सहानुभूति द्वारा निर्देशित होती है। उन्होंने प्लाज्मा दान या रक्तदान की दिशा में व्यक्तियों द्वारा की गई पहल का उदाहरण देते हुए कहा कि ये सच्ची स्वयंसेवा के उदाहरण हैं जहां लोग दूसरों की मदद के लिए आगे आए हैं।

उन्होंने कहा कि स्वयंसेवा की प्रेरणा परिवार से मिलती है, यह हमारे अंदर होती है। स्वयंसेविता आत्मिक और आंतरिक संतुष्टि दोनों का परिणाम है। उन्होंने जोड़ा।

इस अवसर पर बोलते हुए, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू ने स्वयंसेवा से सम्बन्धित अवधारणाओं पर प्रकाश डाला और कहा कि स्वयंसेवा एक विशिष्ट मानवीय विशेषता है, जहां साझा करना, नए गठबंधन बनाना, एकजुटता रखना महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। उन्होंने स्वयंसेवा को भारतीय परम्परा का हिस्सा बताते हुए स्वयंसेवा की निःस्वार्थ परम्परा पर प्रकाश डाला। उन्होंने स्वामी विवेकानंद और महात्मा गांधी व उनके अद्वितीय विचारों का भी उल्लेख किया। गांधीजी सेवा के पूरे क्षेत्र में स्वयंसेवा की एक समावेशी प्रकृति लेकर आए।

विभिन्न उदाहरणों के जरिये उन्होंने बताया कि कैसे युवाओं की नेतृत्व क्षमता बढ़ाने में स्वयंसेवा ने मदद की है। उन्होंने कहा कि स्वयंसेवा के उद्देश्य के लिए अपने समय का प्रबंधन करना महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि अध्ययनों से पता चला है कि युवा स्वयंसेवा इसलिए करते हैं क्योंकि वे ज्ञान प्राप्त करना, नया अनुभव लेना और कौशल सीखना चाहते हैं। समूह के साथ काम करना, संसाधन निर्माण करना, उन्हें व्यक्तिगत संतुष्टि देता है।

उन्होंने संसाधन जुटाने की चुनौतियों पर भी बात की और आत्म–अनुशासन और दृढ़ता को विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। यह कहते हुए कि स्वयंसेवा करुणा सिखाती है, डॉ. कुण्डू ने ईमानदारी और विश्वास को एक स्वयंसेवक के लिए आवश्यक मानदंड के रूप में विकसित करने का आह्वान किया। उन्होंने स्वयंसेवकों को समय प्रबंधन जैसी छोटी चीजों पर ध्यान केन्द्रित करने और स्पष्ट लक्ष्यों और उद्देश्यों के साथ एक रूपरेखा विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने सेवा की निःस्वार्थ प्रकृति पर बहुत जोर दिया। अपनी बुकलेट, फ्रॉम यरवदा मंदिर में, वे लिखते हैं, दूसरों के लिए स्वैच्छिक सेवा और स्वयं की सेवा के मुकाबले स्वयंसेवा को वरीयता देनी चाहिए। वास्तव में, शुद्ध भक्त बिना किसी आरक्षण के मानवता की सेवा के लिए खुद को समर्पित कर देता है। गांधी को सेवा की भावना वाला चरित्र बहुत पसंद है।

अपने सत्र में, श्री गुलशन गुप्ता ने सेवा के सार पर प्रकाश डाला और कहा कि लोगों को अपनी क्षमता के अनुसार समाज को कुछ प्रदान करना चाहिए, जो उन्हें इतना कुछ देता है। यह कहते हुए कि मानव जाति आजीवन स्वयंसेवक है, श्री गुलशन ने रेडियो उड़ान जैसी पहलों के बारे में बात की जो विकलांग व्यक्तियों को समर्पित है और पूरी तरह से स्वैच्छिक नेटवर्क पर कार्य करती है। उन्होंने युवाओं से अपने नेटवर्किंग और संचार कौशल में सुधार करने का आह्वान किया और आशा व्यक्त की कि वे प्रतिभागी समाज के लिए अपनी निःस्वार्थ सेवा में खुद को ऑटो अलार्म मोड के रूप में बदल देंगे।

8 जुलाई को कार्यक्रम के दूसरे दिन लगभग 96 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ. वेदाभ्यास कुप्पू द्वारा प्रतिभागियों के साथ अहिंसक संचार के विभिन्न तत्वों पर चर्चा साझा की गई। उन्होंने संवाद के माध्यम से विचारों को साझा करने की आवश्यकता के बारे में भी बताया और कहा, संवाद दो लोगों के बीच वास्तविक बातचीत की एक प्रक्रिया है, जो संचार को समावेशी बनाने के लिए केन्द्रित है। उन्होंने बातचीत के माध्यम से सम्बन्ध स्थापित करने की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए और संवाद के महत्व का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि सम्वाद सुरक्षित स्थान बनाता है और आपसी सम्मान विकसित करता है। उन्होंने स्वयंसेवकों से नई चीजें,/कौशल सीखने, अहिंसक संचार कौशल का उपयोग करने और सम्बन्ध विकसित करने का आह्वान किया।

इसके अलावा डॉ. वेदव्यास ने ऑन–लाइन स्वयंसेवा की अवधारणा पर बात की। उन्होंने कहा कि अहिंसक संचार, आज की महामारी की अवधि में न केवल लोगों और संसाधनों को जुटाने में, बल्कि दुनिया भर में असंख्य लोगों को सहायता प्रदान करने में बहुत प्रभावी हो गया है। उन्होंने इस संघ के माध्यम से इससे जुड़ी विभिन्न पद्धतियों जैसे ऑनलाइन सलाह, ऑनलाइन ट्यूशन, ऑनलाइन विकास, शोध, सोशल मीडिया अभियान आदि का भी उल्लेख किया।

उन्होंने आगे टीम–निर्माण को स्वयंसेविता को बढ़ावा देने के प्रमुख कारकों में से एक के रूप में संदर्भित किया। उन्होंने टीम के विकास के पांच चरणों में टीम के गठन से लेकर विचारों को साझा करने, अक्सर परस्पर विरोधी विचारों, एक इकाई के रूप में एक साथ प्रदर्शन करने वाले समूह में भागीदारी का उल्लेख किया। इसे उन्होंने एक एकजुट समूह संरचना कहा।

उन्होंने महात्मा गांधी, मार्टिन लूथर किंग और नेल्सन मंडेला के प्रभावी नेतृत्व गुणों पर प्रकाश डाला और बताया कि क्यों लोग अभी भी उन्हें हिटलर और अन्य जैसे नेताओं के बजाय सामाजिक पुनर्निर्माण के प्रणेता के रूप में देखते हैं। यह कहते हुए कि लोगों को स्वयंसेवा के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है, डॉ. कुप्पू ने स्वामी विवेकानंद को उद्धृत किया जिन्होंने कहा था: देने के बदले में कुछ नहीं चाहिए। जो देना है दे दो, वह तुम्हारे पास लौट आएगा–लेकिन अभी उसके बारे में मत सोचो, वह हजार गुना गुणा होकर वापस आएगा–लेकिन ध्यान उस पर नहीं होना चाहिए। फिर भी देने की शक्ति है, इसलिए स्वेच्छा से दें। अगर आप किसी आदमी की मदद करना चाहते हैं, तो यह कभी न सोचें कि उसका रवैया आपके प्रति अच्छा होना चाहिए।

श्री गुलशन गुप्ता ने अपनी प्रस्तुति में विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से एक अच्छा स्वयंसेवक बनने के लिए संचार कौशल, शरीर की भाषा, अवलोकन कौशल, समर्पण और आंतरिक प्रेरणा के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एक स्वयंसेवक ऐसा व्यक्ति है जिसे काम करने के लिए क्षेत्र में जाना पड़ता है। आप लोगों से मिलें, संवाद करें, विचार साझा करें और उनके लिए उनके साथ काम करें। उन्होंने कहा कि आज के युग में जब संचार और सूचना का अतिप्रवाह होता है, गलत सूचना भी किसी अन्य रूप की तुलना में तेजी से यात्रा करती है और इसलिए संचार कायम करने की आवश्यकता है। उन्होंने मीडिया साक्षर बनने का भी निवेदन किया। टीम निर्माण पर अपने विचार साझा करते हुए, श्री गुलशन ने कई उदाहरणों के माध्यम से एक नेता, एक टीम के सार और भावना के महत्व का वर्णन किया और यह भी बताया कि, आप लोगों की एक टीम ही नहीं बनाते हैं, बल्कि वास्तव में आप एक आदर्श वाक्य या सेवा के साथ एक टीम बनाते हैं।

उन्होंने जोर देकर कहा कि यह आवश्यक है कि व्यक्ति एक नेता से सीखे, क्योंकि स्वयंसेवा के इस क्षेत्र में, निराशा, उपेक्षा और हताशा का सामना करना पड़ सकता है। जरूरी नहीं कि तुरन्त ही किसी को सफलता मिलें। इसलिए एक नेता उदाहरण सेट करता है जो दूसरों के लिए मार्गदर्शक शक्ति बन जाता है। चुनौतियों और असफलताओं के बारे में बोलते हुए, श्री गुलशन ने आगाह किया कि एक व्यक्ति को पता होना चाहिए कि कब छलांग लगानी है और कब ट्रैक बदलना है अगर किसी को लगता है कि किसी विशेष सेट या काम में उसकी भूमिका समाप्त हो गई है।

दो दिवसीय कार्यशाला के अंत में प्रतिभागियों के साथ एक इंटरैक्टिव सत्र भी आयोजित किया गया और प्रतिभागियों को अहिंसक संचार पर समिति के निःशुल्क पाठ्यक्रम का लाभ उठाने का आग्रह किया गया।

प्रभाष जोशी स्मृति व्याख्यान का आयोजन

श्री प्रभाष जोशी

प्रसिद्ध चिन्तक पद्मश्री डॉ. अभय बंग ने कहा कि आज के समय में स्वराज्य के लिए स्वास्थ्य एक बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा, आपकी जीवनशैली स्वस्थ होनी चाहिए। प्रकृति का संग, संयमित जीवन शैली, शराब और तंबाकू का सेवन न करना आपकी कई बीमारियों को अपने आप ठीक कर देते हैं। स्वस्थ रहने का अर्थ है आत्मनिर्भर होना। इस वैश्विक महामारी और कोरोना के संकट काल में ऐसे महान नायक और मार्गदर्शक की कमी है जो दुनिया को आशा की किरण दिखाए। श्री बंग ने 12 जुलाई, 2020 को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और प्रभाष परम्परा न्यास द्वारा आयोजित 11वें प्रभाष जोशी स्मृति व्याख्यान देते हुए यह बात कही। यह कार्यक्रम हर वर्ष वरिष्ठ पत्रकार और जनसत्ता के संस्थापक सम्पादक प्रभाष जोशी के जन्मदिन पर आयोजित किया जाता है।

उन्होंने कहा कि हमारे युग के महानतम महानायक महात्मा गांधी हैं। आज गांधीजी को बार–बार याद किया जा रहा है। अगर गांधी वैश्विक महामारी, आर्थिक और पर्यावरण संकट में होते तो एक महान नायक की तरह हमें एक संदेश देते। उनके कथन मेरा जीवन ही मेरा संदेश है को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि आज के चुनौतीपूर्ण दौर में हमें गांधी के संदेश और जीवन से अपने जीवन की समस्याओं के समाधान खोजने चाहिए।

कारीगरी और समृद्ध ग्राम्य–जीवन हस्तिल्पकार का सतत ग्रामीण जीवन –एक संवाद

श्री लक्ष्मी दास, उपाध्यक्ष हरिजन सेवक संघ और कार्यकारिणी सदस्य गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने कहा, हस्तनिर्मित और दस्तकारी उत्पादों और कारीगरों के पोषणकर्ता, समर्थक गांधीजी ने भारत की अर्थव्यवस्था की मदद की और शिल्पकारों को बढ़ने के लिए एक मंच दिया। वे 17 जुलाई, 2020 को समिति द्वारा आयोजित कारीगरी और समृद्ध ग्राम्य–जीवन (शिल्पकार का सतत ग्रामीण जीवन) पर एक संवाद को सम्बोधित कर रहे थे।

86 प्रतिभागियों की एक सभा जिसमें वरिष्ठ गांधीवादी कार्यकर्ताओं, सामाजिक उद्यमियों और समाज के अन्य क्षेत्रों के लोगों सहित कारीगरों और शिल्पकारों के उत्थान के लिए अपना जीवन देने वाले लोग शामिल थे, को सम्बोधित करते हुए वक्ताओं ने सर्वसम्मति से रोजगार के अवसर प्रदान करने के विचार की आवश्यकता जताई। वक्ताओं का कहना था कि ग्रामीण युवाओं को विभिन्न कौशलों में सशक्त बनाकर गांवों को उनकी आजीविका की गारंटी दे सकता है ताकि ये शहरी क्षेत्रों में पलायन न करें।

कोविड–19 के बीच सामुदायिक एकता के लिए सक्रिय शांति निर्माण पर नेताओं का संवाद

शांति आश्रम, कोयंबटूर द्वारा गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति, अरिगाटाऊ इंटरनेशनल, सेंटर फॉर चाइल्ड एंड पब्लिक हेल्थ और महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट के सहयोग से कोविड–19 के बीच सामुदायिक एकता के लिए सक्रिय शांति निर्माण पर नेताओं का संवाद विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया। सुश्री मारिया लूसिया, निदेशक, अरिगाटौ इंटरनेशनल, डॉ. ए. सूर्यकांति, पूर्व प्रोफेसर, गांधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय और ट्रस्टी, शांति आश्रम, डॉ. प्रिया एम, वैद्य, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, सुश्री करुणा सागरी वेंकटचलम निदेशक, भक्ति नाट्य निकेतन और भरतनाट्यम नर्तक, और सुश्री पवित्रा राजगोपालन, सहायक प्रशिक्षक, एसोसिएशन मॉंटेसरी इंटरनेशनेल कार्यक्रम में पैनालिस्ट के रूप में उपस्थित थे।

डॉ. के वीनू अराम, संस्थापक निदेशक शांति आश्रम ने भी सभा को सम्बोधित किया। यूरोप, एशिया और अफ्रीका के शिक्षाविदों, शांति कार्यकर्ताओं, शोधकर्ताओं, युवा स्वयंसेवकों सहित 90 प्रतिभागियों ने 21 जुलाई, 2020 को आयोजित इस वेबिनार में भाग लिया, जिसकी शुरुआत महात्मा गांधी के पसंदीदा भजन वैष्णवजन के गायन से हुई, जिसके बाद अंतर–धार्मिक प्रार्थना की गई।

मूल्य निर्माण में स्वदेशी लोक परम्पराओं की भूमिका पर ई–सम्मेलन

समिति ने राजा नरेन्द्र लाल खान महिला कॉलेज, पश्चिम बंगाल के सहयोग से 18 अगस्त, 2020 को मूल्य निर्माण में स्वदेशी लोक परम्पराओं की भूमिका पर एक ई–सम्मेलन का आयोजन किया। ई–सम्मेलन में 138 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें मुख्य अतिथि श्री गिरिधर गमांग, ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री थे। वेबिनार के अन्य विशिष्ट वक्ताओं में पद्मश्री श्री अशोक भगत, संस्थापक सचिव, विकास भारती, बिशुनपुर, झारखण्ड और राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता गायक और कोरियोग्राफर सुश्री मधुश्री हटियाल, झुमुर सिंगर शामिल थे।

कार्यक्रम में आदिवासियों की समृद्ध लोक परम्पराओं पर विमर्श किया गया और इस बात पर चर्चा ही गयी कि नई पीढ़ी के लिए

चित्र में: विकास भारती, बिशुनपुर के संस्थापक सचिव, पद्मश्री श्री अशोक भगत वेबिनार में ओड़िशा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री गिरिधर गमांग और लोक गायिका सुश्री मधुबी डटियाल भाग लेते हुए दिखाई दे रही हैं।

उन मूल्यों को जानना महत्वपूर्ण है जिन्होंने इस समृद्ध विरासत को संरक्षित किया है। समिति की सुश्री कनक कौशिक ने चर्चा का संचालन किया।

'हमारी शिक्षा नीति में महात्मा गांधी के प्रभाव' पर ई–वेबिनार

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने 19 अगस्त, 2020 को हमारी शिक्षा नीति में महात्मा गांधी के प्रभाव पर एक ई–वेबिनार का आयोजन किया, जहां श्री विजय प्रकाश, आईएएस (सेवानिवृत्त), और प्रोफेसर पीके मिश्रा, आईआईटी बीएचयू ने लगभग 54 प्रतिभागियों की सभा को सम्बोधित किया। इस कार्यक्रम में हाशिए के समुदायों के छात्रों के लिए नवाचार के माध्यम से उद्यमिता और प्रयोगशाला से भूमि तक शैक्षिक संस्थानों में नवाचार और इसके व्यावहारिक प्रभाव एक गांधीवादी दृष्टिकोण पर विमर्श किया गया।

कार्यक्रम का संचालन सुश्री मानसी शर्मा द्वारा किया गया था, जिन्होंने इस देश के बच्चों के बीच एक नैतिक और तर्कसंगत चरित्र के निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया, क्योंकि अगले दशक में भारत में दुनिया में सबसे अधिक युवा आबादी होगी। इसलिए हम यहां इस बात पर चर्चा करने के लिए हैं कि भारत की नई शिक्षा नीति वास्तव में किस बारे में बात करती है और इसे महात्मा गांधी के विचारों से कैसे जोड़ा जा सकता है?

'स्वामी विवेकानंद, भारतीय संस्कृति और वैश्विक शांति' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

सोसाइटी फॉर सोशल एम्पावरमेंट और इंडियन काउंसिल ऑफ फिलॉसॉफिकल रिसर्च, नई दिल्ली द्वारा 11–13 दिसम्बर, 2020 तक स्वामी विवेकानंद, भारतीय संस्कृति और वैश्विक शांति विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी, हरियाणा द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में अनेक इतिहासकारों, शिक्षाविदों, लेखकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित केरल के माननीय राज्यपाल, श्री आरिफ मोहम्मद खान ने कहा कि भारत को विदेशी प्रभुत्व के लम्बे दौर में अनेक दिक्कतों का सामना करना पड़ा। हम अपनी नैतिकता और विरासत की उपेक्षा करने लगे। उन्होंने कहा कि सभी लोगों को एक व्याख्या तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह हठधर्मिता या आस्था का सवाल नहीं है, बल्कि अनुभूति (अनुभव) का सवाल है। धर्म स्वार्थ का विलोम है। उन्होंने आगे कहा कि जब विवेकानंद ने शिकागो में धर्म संसद को सम्बोधित किया तो उन्होंने समावेश, देवत्व, मानव जाति की समानता के बारे में बात की।

एनसीईआरटी के पूर्व निदेशक प्रो. जगमोहन राजपूत ने मुख्य भाषण दिया और शिक्षा के बारे में स्वामीजी के विचारों की व्याख्या की। उन्होंने छात्रों के चरित्र निर्माण के माध्यम से समाज निर्माण में एक शिक्षक की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि स्वामी जी ने यह सुनिश्चित किया कि दुनिया न केवल भारत को जाने, बल्कि भारत में भी दिलचस्पी ले।

इससे पहले स्वागत भाषण देते हुए, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि महात्मा गांधी स्वामी विवेकानंद से बहुत प्रभावित थे। गांधीजी ने स्वामीजी के दर्शन से प्रेरणा ली और भारत में समानता सुनिश्चित करने के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया। स्वतंत्रता आन्दोलन के अलावा, सामाजिक सुधार भी गांधी के जीवन का एक अभिन्न अंग बने रहे और इसे भारतीय संविधान में विधिवत रूप से शामिल किया गया।

> सभी लोगों को एक व्याख्या तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह हठधर्मिता या आस्था का सवाल नहीं है, बल्कि अनुभूति (अनुभव) का सवाल है। धर्म स्वार्थ का विलोम है। जब स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में धर्म संसद को सम्बोधित किया, तो उन्होंने मानव जाति की समावेशिता, देवत्व, समानता की बात की।

तीन दिवसीय संगोष्ठी के दौरान जिन कुछ विषयों पर चर्चा हुई उनमें शामिल हैं:

1. मानवतावाद और वैश्विक शांतिः स्वामी विवेकानंद परिप्रेक्ष्य।
2. विकास और हाशिये के लोग : स्वामी विवेकानंद के विकल्पों को समझना।
3. विवेकानंद : वेदांत और आध्यात्मिक जागृति।
4. कोरोना महामारी के बीच स्वामी विवेकानंद के आध्यात्मिक मानवतावाद की प्रासंगिकता।
5. वर्तमान परिदृश्य में महिला शिक्षा पर विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता।
6. भारत के संत – स्वामी विवेकानंद, समय और स्थान के दायरे से परे।
7. समकालीन समय में स्वामी विवेकानंद की आध्यात्मिक मानवता के साथ वैश्विक शांति की पुनः खोज।
8. स्वामी विवेकानंद और धर्म की राजनीति।
9. उभरती सांस्कृतिक कूटनीति और स्वामी की विरासत।
10. विवेकानंद की दृष्टि से आधुनिक भारत की कल्पना।
11. आज के भारत में स्वामी विवेकानंद की प्रासंगिकता।
12. भारतीय समाज और विवेकानंद में वेदांत की व्यावहारिकता।
13. सेवा, साधना और लोक कल्याण की कलारू समकालीन समय में स्वामी विवेकानंद का पता कैसे लगाएं?
14. सामाजिक एकता पर स्वामी विवेकानंद के दृष्टिकोण को प्रासंगिक बनाना।
15. स्वामी विवेकानंद और वेदांत – मानवता के लिए रामबाण।
16. विवेकानंद और वैश्विक व्यवस्था।
17. सामाजिक विचारधारा और सर्वदेशीयवाद पर विवेकानंद का दर्शन।

लद्दाखी कला और शिल्प के संरक्षण और संवर्धन पर कार्यशाला

कारीगरों से उनकी कला सीखें, क्योंकि वे सकारात्मकता का संचार करते हैं– श्री बसंत

केन्द्र शासित प्रदेश लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद, कारगिल के प्रशासन के तत्वावधान में गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज कारगिल ने गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सहयोग से 11 दिसम्बर, 2020 को लद्दाखी कला और शिल्प के संरक्षण और संवर्धन पर एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 68 प्रतिभागियों ने भाग लिया। लद्दाखी शिल्प जैसे शॉल, कढ़ाई के सामान, सजावटी सामान, पारम्परिक बुना हुआ पहनने के उत्पाद आदि के प्रशिक्षण और उत्पादन में लगी 30 छात्राओं ने कार्यशाला में भाग लिया और स्वदेशी शिल्प के प्रचार और संरक्षण के लिए अपने शिल्प का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर वक्ताओं में डॉ. जावेद प्रथम नक्की, समन्वयक, कारगिल शिल्प कौशल केन्द्र, श्री बिश्वजीत सिंह, परियोजना प्रमुख, दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना, सुश्री ताशी यास्किट, वरिष्ठ कलाकार, लद्दाखी पारम्परिक पोशाक, सुश्री अकिला अख्तर, यंग क्राफ्ट ट्रेनर और उद्यमी, कारगिल, सुश्री रहीमा खातून, सचिव नारी ओ शिशु कल्याण केन्द्र, हावड़ा, पश्चिम बंगाल, श्रीमती गीता शुक्ला, अनुसंधान अधिकारी समिति और सुश्री रूपा रावत, प्रभारी सृजन समिति शामिल थे। समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत सिंह इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे।

परिचर्चा की शुरुआत करते हुए डॉ. जावेद प्रथम नक्की ने पारम्परिक कला और शिल्प को बढ़ावा देने के लिए कॉलेज की पहल की बात की।

प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करते हुए श्रीमती गीता शुक्ला ने युवाओं में कौशल को बढ़ावा देने की दिशा में समिति की विभिन्न पहलों के बारे में उपस्थित लोगों को जानकारी दी। उन्होंने भारत सरकार की प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना पर प्रकाश डाला और झारखण्ड, राजस्थान, जम्मू और कश्मीर और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में महिलाओं और स्थानीय लोगों के सशक्तिकरण की दिशा में कई कौशल सम्बन्धी परियोजनाओं को शुरू करने में समिति की पहल के बारे में बताया। उन्होंने दिल्ली में ऑटो चालकों के साथ आरपीएल परियोजना के

सफल कार्यान्वयन के बारे में भी बताया, जिसमें लगभग 2000 ऑटो चालकों को प्रशिक्षित किया गया था।

चर्चा में अपने इनपुट साझा करते हुए, श्री विश्वजीत ने प्रशिक्षकों के कौशल को बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने आजीविका के अवसरों और आय सृजन पर जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि आज प्रशिक्षण कौशल की मान्यता की आवश्यकता है, क्योंकि इससे ब्रांडिंग का मार्ग प्रशस्त होता है, जिससे बिक्री का विस्तार होता है।

श्रीमती रहीमा जी ने अपने संगठन के बारे में जानकारी देते हुए कौशल उन्नयन और डिजाइन विकास के लिए कपड़ा मंत्रालय को शामिल करने के विचार की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि कौशल विकास परियोजनाओं पर अपने काम के दौरान, उन्होंने कारीगरों को शिल्पकारों से जोड़ने और उन्हें उनके प्रदर्शन के लिए सबसे आगे लाने की आवश्यकता को समझा, ताकि उन्हें अवसर मिले।

सुश्री अक्विला अख्तर और सुश्री ताशी यास्किट जो लद्दाख के पारम्परिक डिज़ाइनों को पुनर्जीवित करने की कोशिश कर रही हैं, द्वारा अनुभव साझा करना, कार्यक्रम के अन्य मुख्य आकर्षण थे। सृजन की श्रीमती रूपा रावत ने भी सृजन के काम पर प्रकाश डाला और बताया कि वे कैसे आवश्यकता के अनुसार नए डिज़ाइन पेश कर रहे हैं।

श्री बसंत सिंह ने लद्दाख उत्सव के अवसर पर कारगिल में कारीगर मेला का सुझाव देकर अपने सम्बोधन की शुरुआत की। उन्होंने लद्दाख से लक्षद्वीप व कुरुक्षेत्र तक के कारीगरों को एक साथ जोड़ने पर भी जोर दिया और सुझाव दिया कि लद्दाख के कारीगर पश्चिम बंगाल में कौशल केन्द्र का दौरा करें, जिसे सुश्री रहीमा खातून द्वारा संचालित किया जा रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि कोविड–19 ने कारीगरों की ताकत साबित कर दी है, जिनका काम "कभी नहीं रुका"।

नई तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने इन नई तकनीकों के साथ पारम्परिक डिज़ाइनों को जोड़ने का सुझाव दिया। श्री बसंत ने कहा, हमें यह समझना होगा कि बाजार बदल गया है और इसलिए पैकेजिंग को एक नए दृष्टिकोण के साथ रखना होगा। हमें नये दृष्टिकोण के साथ कारीगरों को प्रेरित और प्रशिक्षित करना है। कलाकार सकारात्मकता का संचार करते हैं। उनके साथ बैठने और उनकी कला सीखने के साथ उनके शिल्प को बाहरी दुनिया के सामने लाने की जरूरत है, क्योंकि जब कारीगरों को अवसर मिलेगा तो उन्हें ऊर्जा प्राप्त होगी।

अपनी समापन टिप्पणी में, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने इस कला को आगे बढ़ाने के लिए कारीगरों के कौशल को उन्नत करने का आह्वान किया। उन्होंने इसके लिए ज्ञान का रचनात्मक उपयोग करने पर जोर दिया ताकि प्रतिभा या कला खो न जाए। उन्होंने कहा, हमें उत्पादन कौशल और सॉफ्ट स्किल में प्रशिक्षण के साथ–साथ विपणन कौशल भी साबित करना होगा, और कहा कि समिति ऐसे लोगों को उनके प्रशिक्षण और सशक्तिकरण के लिए जोड़ सकता है।

वेबिनार का समापन डॉ. जावेद के साथ प्रशिक्षक सुश्री जरेना बानो द्वारा लद्दाख के शिल्पकारों के उत्पादों के प्रदर्शन के साथ हुआ। सुश्री बानो ने सांस्कृतिक डिज़ाइनों और पारम्परिक डिज़ाइनों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता पर अपने इनपुट साझा किए। उन्हें उम्मीद थी कि उन्हें अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए उन्नत मशीनें मिलेंगी।

लार्ड भीखू पारेख द्वारा शांति और अहिंसक व्याख्यान

पद्म भूषण, लार्ड भीखू पारेख हवाएं लंदन से वीएसबीएस शांति और अहिंसा व्याख्यान देते हुए। चर्चा के दौरान उपस्थित डॉ. विद्या जैन हवाएं ।

समिति द्वारा जारी शांति और अहिंसक व्याख्यान श्रृंखला के हिस्से के रूप में, समिति ने कितनी अहिंसक है, गांधी की हिंसा विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया । 18 दिसम्बर, 2020 को आयोजित इस कार्यक्रम में पद्म भूषण लार्ड भीखू पारेख ने ऑनलाइन व्याख्यान दिया, जिसकी अध्यक्षता प्रोफेसर विद्या जैन, संयोजक, अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संघ ने की।

इस विषय पर अपने विचार साझा करते हुए लॉर्ड भीखू पारेख ने दक्षिण अफ्रीका पर चर्चा की जो गांधी के जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। उन्होंने कहा कि इसने उन्हें कई असामान्य अनुभवों और चुनौतियों का सामना किया और उन्हें अपने वश में कर दिया। दक्षिण अफ्रीका में अपने 21 वर्षों के दौरान, गांधी के विचारों और जीवन के तरीकों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। वास्तव में दोनों उसके लिए अविभाज्य बन गए।

उनके लिए विचारों का तब तक कोई महत्व नहीं था, जब तक उसे आत्मसात करके जीवन में शामिल न करें। हर बार जब गांधी को एक नया विचार आया, तो उन्होंने पूछा कि क्या यह जीवन में उतारने लायक है। भारत आने के बाद, गांधी ने महसूस किया कि दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने जिस सत्याग्रह का विकास किया था, वह भारत के लिए सबसे उपयुक्त था। गांधी के लिए सुनियोजित सत्याग्रह और रचनात्मक कार्यक्रम ने भारत के नैतिक उत्थान और राजनीतिक स्वतंत्रता की कुंजी रखी।

चौथा अनुपम मिश्रा स्मृति व्याख्यान आयोजित

व्यष्टि एक मोबाइल संस्था है और उसे निरन्तर आत्मनिरीक्षण करना होता है: श्री लक्ष्मी दास

"संगठनों को थोड़ा लचीला होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपने कामकाज में स्वतंत्र होना होगा। यह महात्मा गांधी और आचार्य विनोबा भावे का संदेश था, जिन्होंने श्रमिकों के समग्र विकास के लिए उनके व्यक्तिगत विकास पर जोर दिया था, यह शब्द श्री लक्ष्मी दास, उपाध्यक्ष हरिजन सेवक संघ और कार्यकारिणी सदस्य समिति ने कहे। श्री लक्ष्मी दास 22 दिसम्बर को गांधी दर्शन में संस्थान नारायण परायण बने विषय पर चौथा अनुपम व्याख्यान समारोह में बतौर मुख वक्ता उपस्थित थे।

उन्होंने कहा, हर संगठन को आत्मनिर्भर संगठन होना चाहिए और उनका ईश्वर में विश्वास होना चाहिए। उन्हें यह महसूस करना होगा कि समाज के कल्याण के प्रति उनकी एक बड़ी भूमिका है और उन्हें स्थापित मानदंडों पर निर्भर रहना होगा।

पर और नीचे: हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष, और कार्यकारिणी सदस्य श्री लक्ष्मी दास, गांधी दर्शन में चौथा 'अनुपम मिश्र स्मृति व्याख्यान' देते हुए और नीचे ध्यान से सुनते हुए प्रतिभागी।

इस वेबिनार में पत्रकारों, सामाजिक विचारकों, शिक्षाविदों और युवाओं को सम्बोधित करते हुए, श्री लक्ष्मी दास ने कहा कि कई स्वयंसेवी संगठनों ने ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण, बच्चों और अन्य क्षेत्रों में समाज की सेवा के लिए अपना पूरा ढांचा समर्पित कर दिया है। वे जरूरतमंदों की सेवा के लिए देश के अंदरूनी हिस्सों में पहुंचे हैं। "इन स्वयंसेवी संगठनों की भूमिका अनुकरणीय है। जहां सरकारें नहीं पहुंच सकीं, वहां कई ऐसे संगठन और लोग हैं जो इन सबसे अविकसित स्थानों पर पहुंचे हैं और उन लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मान प्रदान करने की दिशा में काम किया है। यही महात्मा गांधी और आचार्य विनोबा भावे ने कल्पना की थी जब उन्होंने अधिक से अधिक सामान्य जन की भलाई की बात की थी।

श्री लक्ष्मी दास ने कहा कि ऐसे कई उदाहरण हैं जहां ऐसे कई संगठन संसाधनों के दुरुपयोग और सरकारी या अन्य निजी और सार्वजनिक स्रोतों से धन के आरोप में जांच के दायरे में आ गए हैं। इसके अलावा कई ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने पहल की है गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा करने के लिए।

समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान कार्यक्रम के दौरान श्री लक्ष्मी दास को परखा देकर सम्मानित करते हुए।

श्री लक्ष्मी दास ने कहा, "महात्मा गांधी ने कोई गैर सरकारी संगठन नहीं बनाया। स्वयंसेवी संगठनों को एनजीओ के रूप में बनाने से, स्वयंसेवा की भावना नेपथ्य में चली जाती है।

उन्होंने कहा, ऐसे स्वैच्छिक प्रयास के विचार के पीछे यह विचार है कि इसका उद्देश्य समाज के कल्याण के लिए है। क्योंकि समाज का कल्याण एक बार में नहीं हो सकता। यह एक सतत प्रक्रिया है और यह प्रक्रिया जारी है।

उन्होंने एक ऐसे समाज के ढांचे के लिए जोर दिया जहां एक के लिए दूसरे का शोषण करने की कोई आवश्यकता नहीं है, अपितु आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता है, जो हम शायद ही कभी करते हैं। उन्होंने कहा कि व्यक्ति एक मोबाइल संस्था है,

जिसने महात्मा गांधी, विनोबा भावे और अन्य लोगों की तरह अपने निःस्वार्थ बलिदान और सेवा के द्वारा पूरे देश का नेतृत्व किया है। ये महापुरुष भी स्वयं किसी संगठन से जुड़े नहीं थे। हमें हर शाम व्यक्तिगत ऑडिट करने की जरूरत है", उन्होंने कहा।

इससे पूर्व समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि चौथे अनुपम मिश्र व्याख्यान का विषय महात्मा गांधी और उनके शिष्य आचार्य विनोबा भावे को श्रद्धांजलि है, जिनकी 125वीं जयन्ती हम मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि संगठनों के बदलते आयामों को देखते हुए आज यह विषय प्रमुख महत्व का है।

श्री बसंत ने धन्यवाद प्रस्ताव रखते हुए लोगों से महात्मा गांधी की अंतिम इच्छा और वसीयतनामा को लागू करने के लिए कहा।

पत्रकारिता में सत्य साधना विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और दिल्ली पत्रकार संघ (डीजेए) ने 1 मार्च, 2021 को गांधी दर्शन, राजघाट में 'पत्रकारिता में सत्य साधना' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। उत्तरी दिल्ली के मेयर, श्री जय प्रकाश इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, श्री ओंकारेश्वर पांडे, वरिष्ठ पत्रकार, श्री मनोहर सिंह, अध्यक्ष, डीजेए, श्री अमलेश राजू, वरिष्ठ पत्रकार, श्री मनोज मिश्रा, वरिष्ठ पत्रकार, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी, समिति और अन्य मीडिया बिरादर के लोग उपस्थित थे। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय

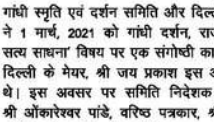

हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष, और कार्यकारिणी सदस्य श्री लक्ष्मी दास सभा को सम्बोधित करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

वरिष्ठ पत्रकार श्री अरविंद मोहन ने गांधी दर्शन में राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान अपना .स्टिकोण साझा किया।

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान विशिष्ट सभा को सम्बोधित करते हुए।

गांधी दर्शन में पत्रकारिता में सत्य साधना पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में के दौरान समाचार पत्रिका के विमोचन अवसर पर उपस्थित विशिष्ट जन।

कला केन्द्र (आईजीएनसीए) के अध्यक्ष पद्मश्री राम बहादुर राय इस अवसर पर विशेष तौर पर शामिल हुए।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री जय प्रकाश ने कहा कि उत्तरी दिल्ली नगर निगम कोरोना वायरस टीकाकरण अभियान को सुचारू रूप से शुरू करने की तैयारी कर रहा है। उन्होंने जनता से इस काम में अधिकारियों का पूरा सहयोग करने की अपील करते हुए कहा कि वैक्सीन लगाकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दुनिया को यह संदेश दिया है कि भारत में विकसित वैक्सीन पूरी तरह से सुरक्षित और प्रभावी है। उन्होंने कहा कि कोरोना काल में उत्तरी दिल्ली नगर निगम ने केन्द्र और राज्य सरकार के सहयोग से कोविड–19 का सफलतापूर्वक मुकाबला किया. उन्होंने कहा, मन में काम करने की प्रबल इच्छा हो तो केन्द्र से लेकर स्थानीय निकाय स्तर तक का सहयोग कर बड़े से बड़े कार्य को सफलतापूर्वक अंजाम दिया जा सकता है।

उन्होंने पत्रकारों से निष्पक्ष और निडर होकर काम करने और राष्ट्र के विकास के लिए अपना समर्थन देने का आह्वान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष एवं हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मी दास ने की।

महात्मा गांधी और विनोबा भावे पर संगोष्ठी

गांधी दर्शन में आयोजित संगोष्ठी में उपस्थित हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष, और समिति के कार्यकारिणी सदस्य श्री लक्ष्मी दास, श्री ज्ञानचंद शर्मा, श्री बसंत और श्री दीपंकर श्री ज्ञान अपने विचार साझा करते हुए।

उत्तर क्षेत्र के खादी संस्थानों और संघों द्वारा गांधी दर्शन में 5 मार्च, 2021 को महात्मा गांधी और विनोबा भावे पर एक संगोष्ठी का संयुक्त रूप से आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि श्री बसंत कुमार, सदस्य खादी और ग्रामोद्योग आयोग, उत्तर क्षेत्र थे। अध्यक्षता समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने की। श्री लक्ष्मी दास और श्री मामचंद शर्मा जी ने सभा को सम्बोधित किया। खादी संस्थाओं के विभिन्न प्रतिनिधियों एवं पदाधिकारियों ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे।

गांधी दर्शन, राजघाट में आयोजित सेमिनार में दिल्ली और एनसीआर के विभिन्न स्थानों से आये प्रतिभागी।

सरनिया आश्रम, गुवाहाटी, असम जहाँ महात्मा गांधी ने तीन दिन 9 जनवरी से 11 जनवरी तक प्रवास किया और प्रांतीय कस्तूरबा ग्राम सेविका विद्यालय की स्थापना की

पूर्वोत्तर में कार्यक्रम

असम, गुवाहाटी

सतत जीवन शैली और अहिंसक संचार पर ई–कार्यशाला

राज्य बाल भवन, असम के लगभग 55 प्रतिभागियों ने प्रकृति, मानव के बीच पारस्परिक सह–अस्तित्व की अवधारणा को समझने के लिए 8–9 जून, 2020 को गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा "सतत जीवन शैली और अहिंसक संचार" पर आयोजित दो दिवसीय ई–कार्यशाला में भाग लिया। इस मौके पर वन्य जीवन और स्थायी जीवन शैली पर चर्चा की गई। दैनिक जीवन में अहिंसक संचार के उपयोग की प्रक्रिया पर भी चर्चा की गई। समिति के पूर्वोत्तर समन्वयक श्री गुलशन गुप्ता, सृजन केन्द्र की परियोजना समन्वयक सुश्री प्रेरणा जिंदल ने कार्यक्रम का समन्वय किया। इस अवसर पर सुश्री बिंजुमोनी दास, अध्यक्ष राज्य बाल भवन, असम, सुश्री कविता भट्टाचार्जी और अन्य उपस्थित थे।

बच्चों से बात करते हुए श्री गुलशन गुप्ता ने एनवीसी के गांधीवादी सिद्धांतों को साझा किया और बताया कि पर्यावरण में इन सिद्धांतों को कैसे लागू किया जा सकता है। टिकाऊ जीवन शैली के लिए आपसी सहअस्तित्व के विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से, श्री गुलशन गुप्ता ने महात्मा गांधी के विचारों को दोहराया, जिन्होंने कहा था कि पृथ्वी मनुष्य की आवश्यकता तो पूरी कर सकती है, लेकिन लालच नहीं।

कार्यक्रम में अपने विचार साझा करते हुए, सुश्री कविता भट्टाचार्जी ने कहा कि बच्चों और वयस्कों को परिवारों के भीतर या बाहर छोटे–छोटे झगड़ों से बचने की जरूरत है क्योंकि उनका मानना है कि इससे आपसी सम्मान का मार्ग प्रशस्त हो सकता है और टीम भावना विकसित हो सकती है। उन्होंने इस वर्चुअल वर्कशॉप को शुरू करने में समिति के प्रयासों का स्वागत किया और कहा कि महामारी ने कई अज्ञात, अनजाने परिवारों को एक साथ ला दिया है।

दो दिवसीय कार्यशाला के तहत बच्चों ने पर्यावरण संरक्षण के अपने प्रयास में पौधरोपण में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। इस पहल को समिति की टीम द्वारा अनिलाइन गोल के माध्यम से समन्वित किया गया था।

दो दिवसीय कार्यशाला में प्रतिभागियों के साथ कई इंटरैक्टिव सत्र हुए जिनमें उन्हें अहिंसक संचार (एनवीसी) की विभिन्न अवधारणाओं के बारे में जानकारी दी गई। वर्तमान समय में जब पूरी दुनिया कोविड–19 महामारी की चपेट में है, ऐसे में पारस्परिक सह–अस्तित्व का महत्व और इसकी आवश्यकता पर विमर्श किया गया।

इसी तरह की भावनाओं को व्यक्त करते हुए, सुश्री रुमझुम ने प्रतिभागियों से कहा कि उन्हें अच्छी चीजें और विचारों को सीखना चाहिए और इसे अपने दैनिक जीवन में लागू करना चाहिए। उन्होंने बच्चों से कहा कि उन्हें अपने कमरे से इसकी शुरुआत करनी चाहिए। कमरे की सफाई करके, कमरे से बाहर निकलने से पहले लाइट बंद कर देना चाहिए, जिससे इससे वातावरण अधिक अनुकूल होगा।

सुश्री प्रेरणा जिंदल ने कुछ चिंतनशील सत्र भी आयोजित किए और बच्चों को कुछ गलतफहमी के कारण उत्पन्न विवादों को अहिंसक तरीकों से लड़ाई से निपटने के सूत्र सिखाये। उन्होंने इस विचार से सम्बन्धित प्रश्नों का भी बच्चों से अभ्यास करवाया। परिवार में अवांछित स्थिति का प्रबंधन, या विवादों से बचने के लिए क्रोध को नियंत्रित

करने के उपाय के बारे में भी जानकारी दी।

दो दिवसीय कार्यशाला में प्रतिभागियों के साथ कई इंटरैक्टिव सत्र हुए जिनमें उन्हें अहिंसक संचार (एनवीसी) की विभिन्न अवधारणाओं के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने कोविड के समय में पारस्परिक सह–अस्तित्व का महत्व और इसकी आवश्यकता की जानकारी दी।

कार्यशाला के दूसरे दिन की शुरुआत असम की प्रमुख और लोकप्रिय अभिनेत्री सुश्री मधुरिमा चौधरी द्वारा अहिंसक संचार पर एक प्रेरक भाषण के साथ हुई। भाषण से बच्चे काफी प्रेरित और उत्साहित हुए। बच्चों ने अपने अनुभव साझा करते हुए अपनी–अपनी कहानियां बनाईं। बच्चों (प्रतिभागियों) ने कला, कविता और भाषण के माध्यम से अपनी प्रस्तुतियों को प्रदर्शित किया।

सत्र का संचालन सुश्री प्रेरणा जिंदल और श्री गुलशन गुप्ता ने किया। इसके बाद सुश्री प्रेरणा ने विषयाधारित भाषण दिया। संवाद सत्र बहुत ही जीवंत रहा। एक वीडियो प्ले सत्र भी हुआ, जहां राज्य बाल भवन के कुछ प्रतिभागियों द्वारा किए गए पर्यावरण संरक्षण और कोविड–19 जागरूकता से सम्बन्धित नृत्य, गीत और माइम कृत्यों के वीडियो चलाए गए।

बच्चों ने अपने अनुभव साझा करते हुए अपनी–अपनी कहानियां बनाईं। उन्होंने सामाजिक दूरियों के मानदण्डों को बनाए रखते हुए कार्यशाला के दौरान दिए गए अभ्यासों के तहत पौधारोपण में भी भाग लिया।

"स्वयं को समझना" विषय पर संवाद

12 जनवरी, 2021

समिति ने स्कूल ऑफ रेसिटेशन और राज्य बाल भवन असम के सहयोग से स्वामी विवेकानंद की 158वीं जयन्ती के अवसर पर 12 जनवरी, 2021 को "स्वयं को समझना" पर एक आभासी संवाद का आयोजन किया। इस अवसर पर विवेकानंद केन्द्र कन्याकुमारी, असम प्रांत की सुश्री बरनाली चक्रवर्ती मुख्य वक्ता थीं।

पर से नीचे तक: समिति के पूर्वोत्तर समन्वयक श्री गुलशन गुप्ता, कार्यशाला का समन्वय करते हुए इनीधे बच्चे अपने त्रिकोण साझा करते हुए और 'अनेकता में एकता' पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में भाग लेते बच्चे।

असम बाल भवन के छात्रों की सभा को सम्बोधित करते हुए, सुश्री बरनाली चक्रवर्ती ने लेखक जी कृष्णमूर्ति का उल्लेख किया, जिन्होंने एक बार लिखा था, "यदि आप बदलने की कोशिश किए बिना यह समझना शुरू कर देते हैं कि आप क्या हैं, तो आप एक परिवर्तन से गुजरते हैं।" उन्होंने आगे कहा कि सभी परिवर्तन की जड़ आत्म–समझ से शुरू होती है। "यदि आप अपने आप को नहीं समझते हैं, तो आपके प्रयास खो जाएंगे, और उन चीजों पर खर्च किए जाएंगे जो वास्तव में

आपके नियंत्रण में नहीं हैं। आत्म–समझ एक यात्रा है। अपने बारे में खोजने के लिए हमेशा नई चीजें होंगी– और उस समझ के परिणामस्वरूप सफलता के नए रास्ते।

''गांधी–सुभाष सम्बन्ध के संवाद आयाम'' पर संवाद

गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय और कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान, मणिपुर के सहयोग से 23 जनवरी, 2021 को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 124वीं जयन्ती पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। प्रो. सलिल मिश्रा, प्रति–कुलपति, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय ने ''गांधी–सुभाष सम्बन्ध के सम्वादपूर्ण आयाम'' पर मुख्य भाषण दिया। उन्होंने कहा कि वैचारिक मतभेद के बावजूद दोनों एक कारण के लिए साथ खड़े थे, वह कारण थी – अपनी मातृभूमि।

उन्होंने अपने व्याख्यान को तीन चरणों में विभाजित किया – 20वां दशक, 30वां दशक, आईएनए की भूमिका और नेताजी का गायब होना और महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धांत के बीच समान समानताएं। उन्होंने कहा कि सुभाष समान रूप से भारत छोड़ो जैसे गांधीजी के आन्दोलनों से प्रेरित थे, उसी वर्ष रासबिहारी बोस और कैप्टन मोहन सिंह जैसी प्रतिष्ठित हस्तियों के प्रयासों से आईएनए का गठन में भी वे सक्रिय थे।

प्रो. सलिल मिश्रा, प्रो–वाइस–चांसलर, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 124वीं जयन्ती पर आयोजित विशेष व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

चर्चा के दौरान महात्मा गांधी द्वारा शुरू किये गये भारत छोड़ो आन्दोलन की खबर को पढ़कर, बर्लिन में रहने वाले नेताजी ने अपने करीबी सहयोगी सी. एन. नांबियार से कहा कि उन्हें ''गांधीजी के साथ रहने'' की जरूरत है। यह लगभग उसी समय था जब सुभाष चन्द्र बोस अंग्रेजों पर हमले शुरू करने के लिए आजाद हिंद फौज के गठन की प्रक्रिया में थे। बर्लिन से अपने आजाद हिंद रेडियो संदेश में, सुभाष चन्द्र बोस ने महात्मा गांधी के भारत छोड़ो आन्दोलन को ''अहिंसक छापामार युद्ध'' कहा था।

विद्योष कार्य□म

कोविड–19 काल में लकिडाउन के दौरान अनिलाइन बाल प्रतिभा की खोज

महामारी के दौरान देश में लगे लॉकडाउन की अवधि बढ़ा दी गई और लोगों को घर पर रहकर आवश्यक सामान की आपूर्ति एकत्र करने, दूसरों की देखभाल करने, व्यायाम के माध्यम से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने की सलाह दी गई थी। इस दौरान बच्चे शैक्षणिक और खेल गतिविधियों से वंचित रह गये। इससे लोगों के सम्बन्धों और मित्रता के रिश्ते भी प्रभावित हुए।

जैसा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा बताया गया है कि इस स्थिति के लोगों की मनोदशा पर दीर्घकालिक नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं और मानसिक स्वास्थ्य को सम्भालने के लिए दुनिया भर के संगठनों द्वारा निरन्तर आग्रह किया जा रहा है। हमें अपनी सेवाओं द्वारा यह सुनिश्चित करना है कि बच्चों में रचनात्मकता छूट न जाए।

ऐसी रचनात्मक गतिविधियों में बच्चों को शामिल करने के लिए गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने दिल्ली और एनसीआर के विभिन्न स्कूलों के प्रतिभागियों को प्रतिभा खोज कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। जिसमें विभिन्न आयु समूहों, 8 साल, 11 साल और 15 साल के बच्चों से प्रविष्टियां आमंत्रित की गईं।

बच्चों को विभिन्न विषयों में भाग लेने के लिए शामिल किया गया था। जैसे:

1. व्यक्तिगत स्वच्छता पर चित्रण।
2. शांति–जैसा मैं देख रहा हूँ पर चित्रण।
3. सेवा पर कविता (हिंदी और अंग्रेजी)।
4. आपसी सह–अस्तित्व : प्रकृति, मानव और वन्य जीवन पर कहानी सुनाना।
5. 'शांति और बच्चे' पर लघु ध्वनि संदेश।
6. 'फूड फॉर थॉट, लिटिल शेफ को अपने माता–पिता के मार्गदर्शन में बच्चों द्वारा तैयार किए गए किसी भी शाकाहारी व्यंजन के दो–तीन मिनट के वीडियो भेजने के लिए आमंत्रित करता है।

छत्तीसगढ़ के गीतवितान कला केन्द्र के बच्चों सहित विभिन्न स्कूलों से 500 से अधिक प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। इसके माध्यम से बच्चों और उनके माता–पिता के उत्साह को बढ़ाया गया। विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों में शामिल होकर बच्चों में लॉकडाउन और कोरोना वायरस के कारण होने वाली दहशत के बीच सकारात्मकता को बढ़ावा मिला।

PERSONAL HYGIENE
ABHINAV
GD GPS, Paschim Vihar

PERSONAL HYGIENE

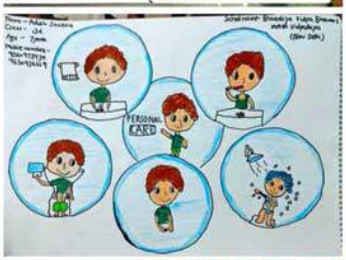

PERSONAL CARD

PERSONAL HYGIENE BASICS!
WASH YOUR HANDS:-
COVER YOUR NOSE AND MOUTH
BATH EVERYDAY
BRUSH TWICE A DAY
AVOID CROWDED PLACES
WEAR CLEAN CLOTHES
COMB YOUR HAIR
GOOD EATING HABITS
SANITISE YOUR SURROUNDINGS & DISINFECT
HYDRATE TOO!!
SLEEP!

सेवा

I Salute Your Service

COMMUNITY SERVICE

Dear GOD
WORLD

Peace

कस्तूरबा गांधी की 151वीं जयन्ती पर उन्हें श्रद्धांजलि

माननीय संस्कृति मंत्री और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति (जीएसडीएस) के उपाध्यक्ष श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने सोशल मीडिया पर कस्तूरबा गांधी को निम्नलिखित ट्वीट कर श्रद्धांजलि दी: श्रीमती कस्तूरबा गांधी को मेरी श्रद्धांजलि, जो मातृ शक्ति की एक मिसाल हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन देश की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। समिति की ओर से भी बा को उनकी 151वीं जयन्ती पर 11 अप्रैल, 2020 को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

जलियांवाला बाग के शहीदों को श्रद्धांजलि

समिति ने 13 अप्रैल, 2020 को जलियांवाला नरसंहार के 101 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। समिति द्वारा जलियांवाला बाग के कार्यक्रम की तस्वीरों का एक कोलाज बनाकर ट्वीट किया गया।

इस अवसर पर, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने महात्मा गाँधी की प्रथम गिरफ्तारी की घटना को भी याद किया। उल्लेखनीय है कि 10 अप्रैल 1919 को जब गांधीजी रॉलेट एक्ट के विरोध में पंजाब जा रहे थे, तो उन्हें पलवल हरियाणा गिरफ्तार कर लिया गया था। यह भारत में उनकी प्रथम राजनीतिक गिरफ्तारी थी।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की 129वीं जयन्ती पर उन्हें श्रद्धांजलि

भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की 129वीं जयन्ती पर 14 अप्रैल, 2020 को उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। बाबा साहेब ने कहा था कि यदि आप एक सम्मानजनक जीवन जीने में विश्वास करते हैं, तो आप को स्वयं की सहायता करनी चाहिए, जो सबसे अच्छी मदद है। उनके इस कथन का उद्देश्य स्वयं को अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने और स्वयं सहायता करने का वादा करना था। उनके इस कथन को आधार बनाकर गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के अधिकांश सदस्यों ने वीडियो और ऑडियो संदेशों के माध्यम से डॉ. अम्बेडकर पर अपने विचार साझा किए।

इससे पूर्व, माननीय संस्कृति मंत्री और समिति के उपाध्यक्ष श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने डॉ. बी. आर. अम्बेडकर को उनके चित्र पर माल्यार्पण व फूल चढ़ाकर उनके नई दिल्ली स्थित आवास पर श्रद्धांजलि दी। श्री प्रहलाद पटेल ने एक ट्वीट में डॉ. अम्बेडकर को एक ऐसा व्यक्ति बताया, जिन्होंने भारतीय संविधान में निहित प्रावधानों के माध्यम से व्यक्तियों को सम्मान और समानता के साथ जीने का अधिकार दिया।

चंपारण सत्याग्रह पर अनिलाइन व्याख्यान और कहानियों के माध्यम से चंपारण का पुनरीक्षण

1917 के ऐतिहासिक चंपारण सत्याग्रह को फिर से जीवंत करने के लिए, समिति ने चंपारण के विभिन्न प्रकरणों के माध्यम से कहानी कहने की एक ऑनलाइन वेब श्रृंखला शुरू की। ध्यातव्य है कि

चम्पारण के एक गरीब किसान राजकुमार शुक्ला ने बैरिस्टर गांधी को भारत की धरती पर सत्याग्रह की शक्ति का परीक्षण करने के लिए एक मंच प्रदान किया।

वेब श्रृंखला के पहले एपिसोड की रिकॉर्डिंग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय

विश्वविद्यालय के गांधी चेयर के जीन प्रो. मनोज कुमार ने की। समिति की सुश्री मानसी ने चम्पारण सत्याग्रह की कहानी को छह एपिसोड के माध्यम से स्टोरी टेलिंग के रूप में भी सुनाया।

गुरुदेव रवींनाथ टैगोर को श्रद्धांजलि

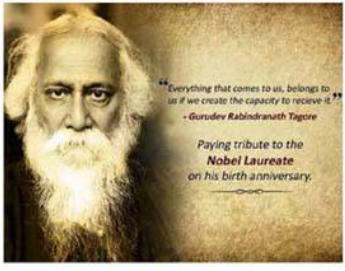

समिति ने नोबेल पुरस्कार विजेता गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर को उनकी 159वीं जयन्ती पर 7 मई, 2020 को श्रद्धांजलि दी। श्रद्धांजली कार्यक्रम में प्रख्यात गांधीवादी विचारक और शिक्षाविद श्री भगवान सिंह द्वारा ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित करके श्रद्धांजलि अर्पित की।

इसके अलावा, समिति द्वारा नारायण भाई देसाई द्वारा लिखे गए एक गीत मा भारती के स्नेहभाव भीगे ... की प्रस्तुति के माध्यम से गुरुदेव को एक ऑनलाइन संगीतमय श्रद्धांजलि भी दी गई। यह गीत गांधी स्मृति में अंतर–धार्मिक प्रार्थना के दौरान लगभग 500 बच्चों द्वारा गाया गया था। व्याख्यान के ऑडियो–वीडियो और गीत दोनों को समिति के यू–ट्यूब चैनल पर अपलोड किया गया था।

भारत छोड़ो आन्दोलन की 75वीं वर्षगांठ की पूर्व संध्या पर देशभक्ति पर कविता पाठ और गायन

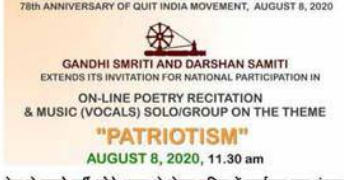

देश के सबसे पूर्वी कोने असम से लेकर दक्षिण में कर्नाटक तक बंगाल और ओडिशा, उत्तर प्रदेश, पंजाब के पश्चिमी बेल्ट तक 15 राज्यों के लगभग 129 बच्चों के उत्साह का कोई ठिकाना नहीं था, क्योंकि वे 8 अगस्त, 2020 को देशभक्ति के विषय पर कविता पाठ और गायन पर एक राष्ट्रीय कार्यक्रम में भाग लेने वाले एक वेबिनार में वस्तुतः एकत्र हुए थे। गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम का आयोजन हिरोशिमा दिवस (6 अगस्त) की 75वीं वर्षगांठ और 8 अगस्त 1942 को महात्मा गांधी के नेतृत्व में शुरू किए गए ऐतिहासिक भारत छोड़ो आंदोलन की 78वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में किया गया था।

8 अगस्त, 2020 को ऑनलाइन देशभक्ति गायन प्रतियोगिता में भाग लेते हुए देश के विभिन्न हिस्सों से आये छात्र।

असम, अगरतला, बिहार, बंगाल, हरियाणा, हैदराबाद, कर्नाटक, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मणिपुर, चंडीगढ़, जालंधर, गुरुग्राम, वाराणसी और दिल्ली के प्रतिभागी अपनी कविताओं और सद्भाव के गीतों के माध्यम से विचारों के इस चार घंटे के ऑनलाइन उत्सव में शामिल हुए।

74वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया

गांधी दर्शन में 74वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर तिरंगा फहराते हुए समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान एवं कार्यरत में उपस्थित स्टाफ सदस्य व उनके परिजन।

74वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त, 2020 को गांधी दर्शन में ध्वजारोहण समारोह आयोजित किया गया। जिसमें समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने तिरंगा फहराया। कार्यक्रम में समिति के स्टाफ सदस्यों और उनके परिजनों ने भाग लिया। श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कर्मचारियों से राष्ट्र निर्माण में योगदान देने और विभिन्न स्थायी कौशल प्राप्त करने का आह्वान किया जो एक आत्मनिर्भर भारत बनाने में सहायक सिद्ध होंगे।

मुझ में है महात्माः महात्मा गांधी के गूढ़ जीवन की समझ पर वीडियो आमंत्रित करना

गांधी स्मृति में समिति और दूरदर्शन की संयुक्त प्रस्तुति "मुझ में है महात्मा" में अपने विचार प्रकट करती सुश्री सना श्रीवास्तव।

महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर समिति और दूरदर्शन ने 13–20 सितम्बर, 2020 तक देश भर के प्रतिभागियों से महात्मा गांधी के गूढ़ जीवन की समझ और कैसे उन्होंने अपने जीवन में गांधीवादी मूल्यों को आत्मसात किया, पर आधारित विडियो आमंत्रित की।

हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में मुझ में है महात्मा और द महात्मा इन मी थीम पर प्रविष्टियां आमंत्रित कीं।

प्रविष्टियों के उपविषय थे– 1. मैं अपने दैनिक जीवन में अहिंसा का अभ्यास कैसे करूं? 2. मैं एक संस्कृति शांति की दिशा में कैसे योगदान करूं? 3. सबसे महत्वपूर्ण गांधीवादी मूल्य जिसका आज दुनिया को पालन करना चाहिए और 4. महात्मा गांधी के जीवन से मैंने सबसे महत्वपूर्ण बात क्या सीखी?

इसके तहत लगभग 200 प्रविष्टियां प्राप्त हुईं, जिसके लिए दूरदर्शन

केन्द्र ने अपने राष्ट्रीय नेटवर्क में इसका प्रोमो भी बनाया। चयनित विडियो क्लिप को 2 अक्तूबर, 2020 को महात्मा गांधी की 151वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में गांधी स्मृति से अंतर–धार्मिक प्रार्थना सभा के लाइव प्रसारण के दौरान दूरदर्शन द्वारा अपने डीडी नेशनल और डीडी भारती चौनलों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया था।

कताई के माध्यम से महात्मा को याद करना

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा गाँधी जयन्ती के अवसर पर 2 अक्तूबर को आयोजित एक कार्यक्रम में जंतर–मंतर पर चरखा प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के आठ सदस्यों ने सादगी और आर्थिक स्वतंत्रता के संदेश को देते हुए चरखा कताई की। कार्यक्रम के दौरान धागा कताई गतिविधि और महात्मा गांधी के साथ इसके सम्बन्ध के बारे में लोगों को शिक्षित और सूचित करने के लिए कुल 16 पोर्टेबल चरखों को रखा गया था।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति की टीम ने 2 अक्तूबर 2021 को जंतर–मंतर पर महात्मा गांधी को कताई के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की।

नौ साल की प्रशस्ति जैसे कई लोगों के लिए चरखे पर कताई सीखना मजेदार अनुभव था। श्री गुरप्रीत सिंह जैसे कई अन्य लोगों ने अपने जीवन में पहली बार चरखे का इस्तेमाल किया था। चरखे पर हाथ आजमाने वाली एमकॉम की छात्रा सुश्री पूनम गौर जैसे अन्य लोगों ने कहा, "इसको चलाना थोड़ा मुश्किल है, लेकिन मैं इस अनुभव का आनंद ले रही हूं। यह जानना मजेदार और शिक्षाप्रद है कि कैसे केवल सूत से आसानी से धागा बनाया जा सकता है।

बाएँ से दाएं: समिति के श्री गणेश, श्री श्याम लाल और श्री कृष्ण ने श्रीमती रिमता भान के साथ जंतर–मंतर पर गांधी जयन्ती 2020 पर चरखा प्रदर्शन में भाग लिया।

समिति ने कार्यक्रम के दौरान गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति प्रकाशनों सहित महात्मा गांधी साहित्य की एक प्रदर्शनी भी लगाई। कार्यक्रम का संचालन समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला द्वारा किया गया। कार्यक्रम में श्री मनीष, श्री कृष्ण, श्री श्याम लाल, श्रीमती रिमता भान, श्री गणेश, श्री अरुण सैनी और श्रीमती नेहा अरोड़ा ने भाग लिया।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा 26 नवम्बर, 2020 को 71वें संविधान दिवस के अवसर एक प्रस्तावना दीवार बनाई गयी।

26 नवम्बर, 2020 को 71वें संविधान दिवस के मौके पर गांधी स्मृति एवं गांधी दर्शन में हिंदी और अंग्रेजी में प्रस्तावना का वाचन करते समिति के कर्मचारीगण।

71वें संविधान दिवस के अवसर पर 26 नवम्बर, 2020 को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा अपने दोनों परिसरों गांधी दर्शन, राजघाट और 30 जनवरी मार्ग स्थित गांधी स्मृति में हिंदी और अंग्रेजी में भारतीय संविधान की प्रस्तावना को पढ़ने का कार्यक्रम आयोजित किया गया। समारोह के दौरान सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।

गांधी दर्शन में, प्रस्तावना को हिंदी में श्री प्रवीण दत्त शर्मा ने पढ़ा और अंग्रेजी पाठ श्री राजदीप पाठक ने पढ़ा। डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली ने गांधी स्मृति प्रार्थना मैदान में प्रस्तावना पढ़ने में कर्मचारियों का नेतृत्व किया।

इसके अलावा दोनों भाषाओं में गांधी दर्शन परिसर की दीवार में प्रस्तावना को अंकित भी किया गया है

भारत के संविधान की 71वीं वर्षगांठ

प्रस्तावना संविधान की आत्मा है: न्यायमूर्ति वि□मादित्य प्रसाद

न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) श्री विक्रमादित्य प्रसाद ने कहा, महात्मा गांधी एक प्रयोगात्मक वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने लोगों के जीवन के हर पहलू पर अपना प्रभाव डाला और समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने के लिए राष्ट्र की आत्मा को छुआ। महात्मा गांधी की समाज की अंतिम पंक्ति में रहने वाले व्यक्तियों की चिंता ने

पर से नीचे :
समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, भारत के सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री बिरजा महापात्रा और एनयूएसआरएल के कुलपति प्रो. केशव राव वर्ताकुला ऑनलाइन वेबिनार को सम्बोधित करते हुए।

भारत के संविधान का मसौदा तैयार करते समय संविधान सभा के सदस्यों को प्रेरणा दी।

झारखण्ड उच्च न्यायालय से न्यायाधीश के रूप में सेवानिवृत्त हुए न्यायमूर्ति विक्रमादित्य प्रसाद ने 26 नवम्बर, 2020 को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा आयोजित भारत के संविधान पर महात्मा गांधी के प्रभाव विषय पर वेबिनार में मुख्य भाषण देते हुए यह बात कही। यह कार्यक्रम 71वें संविधान दिवस के उपलक्ष्य में नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडी इन लॉ, रांची के गांधी पीस क्लब के सहयोग से आयोजित

71वें संविधान दिवस के अवसर पर आयोजित वेबिनार के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति विक्रमादित्य प्रसाद, समारोह को सम्बोधित करते हुए।

किया गया था।

लगभग 79 छात्रों, स्वयंसेवकों, **NUSRL** के संकाय सदस्यों, वकीलों और वेबिनार में शामिल होने वाले कई अन्य लोगों की एक सभा को सम्बोधित करते हुए, न्यायमूर्ति विक्रमादित्य प्रसाद ने कहा कि महात्मा गांधी के विचारों और दृष्टि के प्रभाव को भारत के संविधान में गांधीजी के विचारों के रूप में परिलक्षित देखा जा सकता है। मानव जीवन के सभी पहलुओं, समाजवाद से लेकर सर्वोदय तक, महिलाओं के कल्याण और अन्य मुद्दों पर गांधीजी ने चर्चा की थी, जिसका समावेश हमारे संविधान में भी किया गया है।

श्री विक्रमादित्य ने बताया कि कि महात्मा गांधी ने भी एक संविधान तैयार किया था। महाराष्ट्र में औंधिया की रियासत थी, जिसमें 72 गांव थे। औंधिया के राजकुमार ने महात्मा गांधी से एक संविधान का मसौदा तैयार करने के लिए संपर्क किया। न्यायमूर्ति प्रसाद ने कहा, राजकुमार सेवाग्राम आश्रम में गांधीजी से मिले और गांधीजी के रूप में उन्होंने यह शर्त रखी कि राजकुमार दस साल तक एक झोपड़ी में एक ग्रामीण की तरह रहेगा, व्यक्तिगत खर्चों के लिए प्रति माह केवल 50/– रुपये खर्च करेगा, गाँव में हथकरघा से सिला हुआ कपड़ा पहनेगा, जिस पर राजकुमार सहमत हुए। जब औंधिया का भारतीय गणराज्य में विलय हो गया, इस शर्त का तात्पर्य यह था कि राज्य की नब्ज को समझने के लिए एक राजा को भी एक ग्रामीण की तरह रहना पड़ता है।

पं. जवाहरलाल नेहरू की टिप्पणी कि महात्मा गांधी की आत्मा संविधान सभा में मँडरा रही है पर चर्चा करते हुए न्यायमूर्ति विक्रमादित्य प्रसाद ने कहा कि मौलिक अधिकारों और मौलिक कर्तव्यों के सार की जब आलोचनात्मक जांच की जाती है, तो रचनात्मक कार्यक्रमों के विचार विभिन्न वर्गों में परिलक्षित होते हैं।

भारतीय संविधान प्रस्तावना के सार के बारे में बोलते हुए, न्यायमूर्ति विक्रमादित्य प्रसाद ने कहा, भले ही पूरे संविधान को एक तरफ रख दिया जाए, और अगर लोग ईमानदारी से प्रस्तावना में सभी शब्दों का पालन करते हैं, तो संविधान में फिर से संशोधन करने की आवश्यकता नहीं होगी, इसके लिए इसमें महात्मा गांधी के उन विचारों की आवश्यक विशेषताएं शामिल हैं जिनकी उन्होंने हमेशा वकालत की, यानी न्याय, स्वतंत्रता और समाजवाद। यही कारण है कि प्रस्तावना संविधान की आत्मा है।

उन्होंने कहा कि सबसे बड़ी चुनौती यह है कि महात्मा गांधी के विचारों को व्यावहारिक रूप से कैसे लागू किया जाए और इसे सावधानीपूर्वक लागू किया जाए। उन्होंने कहा कि आज जरूरत इस बात की है कि पहले नागरिक अपने अधिकारों के योग्य हों।

अपनी परिचयात्मक टिप्पणी में, एनयूएसआरएल के कुलपति प्रो. केशव राव वेरुकुला ने संविधान के दो महत्वपूर्ण पहलुओं–प्रस्तावना और मौलिक अधिकार पर बात की। उन्होंने कहा कि हम मौलिक कर्तव्यों से अनिवार्य रूप से जुड़े हुए हैं, जिनका सभी नागरिकों को पूरी ईमानदारी से पालन करना चाहिए। उन्होंने कर्तव्यों के चार्टर पर बात की और पूरे राष्ट्र की एकता पर जोर दिया। ग्राम स्वराज की बात करते हुए उन्होंने राजनीतिक संप्रभुता पर जोर दिया। उन्होंने सर्वोदय की अवधारणाओं के बारे में विचार व्यक्त किया और आर्थिक, सामाजिक और धर्मनिरपेक्ष व्यवस्था पर अपने विचारों को साझा किया जिसे संविधान सशक्त बनाता है। उन्होंने कहा कि भारत के संविधान पर महात्मा गांधी का प्रभाव गहरा है। महात्मा गांधी द्वारा प्रचारित, अभ्यास और प्रयोग किए गए मूल मूल्य सद्भाव और भाईचारा, सत्य और एकता भारत के संविधान के अनुच्छेद 50 में निहित हैं जो शासन की बात करता है।

वेबिनार के दौरान अपने सम्बोधन में बिल्ड इंडिया ग्रुप के संस्थापक निदेशक और भारत के सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ वकील श्री बिरजा महापात्रा ने भारतीय संविधान के निर्माण की ऐतिहासिकता की व्याख्या करते हुए संविधान दिवस पर भी प्रकाश डाला। और रियासतों को एक साथ लाकर भारत को एकजुट करने में सरदार पटेल जैसे दिग्गजों की भूमिका और भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करने में डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की भूमिका के बारे में बताया।

भारतीय संविधान पर महात्मा गांधी के प्रभाव का उल्लेख करते हुए, श्री बिरजा महापात्र ने 1947 के बाद कांग्रेस को भंग करने और श्लोक सेवक संघ के गठन की ओर इशारा किया। उन्होंने आगे बताया कि महात्मा गांधी ने पंचायती राज व्यवस्था पर जोर दिया क्योंकि गांधीजी राजाओं के न्यूनतम हस्तक्षेप में विश्वास करते थे। पंचतंत्र का हवाला देते हुए, श्री महापात्र ने ग्राम सभाओं के सार पर जोर दिया जो जमीनी स्तर पर ग्राम स्वराज पर महात्मा गांधी के विचारों को स्थापित करते हैं, जिसका लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचता है।

मौलिक अधिकारों और मौलिक कर्तव्यों के बारे में बात करते हुए, श्री बिरजा महापात्र ने स्पष्ट रूप से देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने की आवश्यकता पर जोर दिया। एक अच्छा भारतीय होने के लिए, एक अच्छा नागरिक होना चाहिए, उन्होंने निष्कर्ष निकाला।

इससे पहले, स्वागत भाषण देते हुए, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने भारत के संविधान पर विमर्श करते हुए कहा कि हालांकि महात्मा गांधी का प्रभाव सीधे संविधान पर महसूस नहीं होता है, लेकिन संविधान में अधिकारों और कर्तव्यों के मुद्दे उनसे ही प्रभावित हैं। मोहनदास करमचंद गांधी को दक्षिण अफ्रीका की यात्रा के दौरान प्रथम श्रेणी का टिकट होने के बावजूद ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया था। इस घटना के बाद वे उन नेताओं में शामिल हो गए, जिन्होंने भारतीय संविधान के प्रारूप की प्रक्रियाओं और विचार–विमर्श के दौरान मानवाधिकारों का उल्लेख किया।

राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत ऐसे शासी सिद्धांत हैं जिनका उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों का निर्माण करना है जिसके तहत नागरिक एक अच्छा जीवन जी सकते हैं, इसके अलावा एक कल्याणकारी राज्य की परिकल्पना सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना की दिशा में एक कदम है, जिसका फायदा आम आदमी को मिला है।

उन्होंने कहा कि राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत, एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसका उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक–न्याय को यथासंभव प्रभावी ढंग से सुरक्षित और संरक्षित करना है। उन्होंने कहा कि यह देश के शासन के लिए मौलिक हैं, और यह राज्य का कर्तव्य है कि वह कानून बनाने और लोगों के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए इन सिद्धांतों को लागू करे।

वेबिनार के दौरान पूर्वाह्न 11.00 बजे भारतीय संविधान की प्रस्तावना को हिंदी और अंग्रेजी में पढ़ा गया। वेबिनार का समापन कानून के सहायक प्रो. और गांधी पीस क्लब, एनयूएसआरएल, रांची के सदस्य डॉ. सत्यव्रत मिश्रा, द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। समिति के कार्यक्रम कार्यकारी श्री राजदीप पाठक ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

77वें निर्वाण दिवस पर याद की गई कस्तूरबा गांधी

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान हृदयरोग गांधी दर्शन में कस्तूरबा गांधी को उनके 77वें निर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि देते हुए दिखाई दे रहे हैं। 'बा' की पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित समिति के कर्मचारी।

समिति ने कस्तूरबा गांधी को उनकी 77वीं पुण्यतिथि पर याद किया। दिनांक 22 फरवरी, 2021 को गांधी दर्शन में आयोजित कस्तूरबा गांधी के श्रद्धांजलि समारोह में समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के नेतृत्व में कर्मचारियों ने 'बा' को श्रद्धासुमन अर्पित किये। कार्यक्रम का समापन राम धुन और दो मिनट की मौन श्रद्धांजलि के साथ हुआ।

वाराणसी में "बा" को श्रद्धांजलि

कस्तूरबा महिला विद्यापीठ इंटरमीडिएट कॉलिज, सेवापुरी, वाराणसी के शिक्षक और स्टाफ सदस्य कस्तूरबा गांधी की 77वीं पुण्यतिथि पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए।

कस्तूरबा महिला विद्यापीठ इंटरमीडिएट कॉलेज, सेवापुरी, वाराणसी ने गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली के सहयोग से 22 फरवरी, 2021 को वाराणसी में कस्तूरबा गांधी की 77वीं पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि दी। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अनीता सिंह सहित अनेक शिक्षक और छात्र बा को उनके निर्वाण दिवस पर याद करने में शामिल हुए। इस मौके पर छात्राओं द्वारा गीत और प्रार्थना प्रस्तुत किये गये।

शांति प्रार्थना का आयोजन

समिति के सहयोग से गिल्ड ऑफ सर्विसेज द्वारा आयोजित सर्व धर्म प्रार्थना सभा में भाग लेते डॉ. ए. के. मर्चेंट।

गिल्ड ऑफ सर्विसेज, वॉर रिव्होज एसोसिएशन और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने संयुक्त रूप से 10 मार्च, 2021 को गांधी स्मृति में शांति प्रार्थना का आयोजन किया। शहीद स्तम्भ पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर अंतरधार्मिक प्रार्थना का आयोजन किया गया। इस मौके पर महिलाओं के खिलाफ हिंसा रोकने का संकल्प भी लिया गया। शपथ का वाचन डॉ. वंदना शिवा ने किया।

गिल्ड ऑफ सर्विसेज द्वारा मानसिकता में बदलाव लाने में मदद करने के लिए एक अभियान "नो साइलेंस फॉर वायलेंस" का प्रस्ताव रखा गया था। इस अवसर पर उपस्थित सदस्यों द्वारा मानवीय गरिमा, स्वतंत्रता, समानता और एकता के सार्वभौमिक आदर्शों की अवधारणाओं को दोहराया गया। महिला सशक्तिकरण पर गीत और भजनों ने इस कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को भाव विभोर कर दिया।

सृजन और कोविड–19 पहल

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना डीडीयू–जीकेवाई पर बैठक

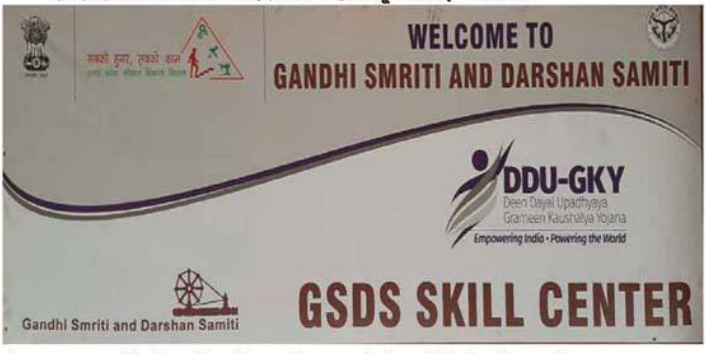

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना के द्वारा स्वीकृत एक परियोजना के संचालन को लेकर ऑनलाइन बैठक 13 जून, 2020 को आयोजित की गई। इस परियोजना को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा संचालित किया जाएगा। इस वर्चुअल मीटिंग में कारीगर पंचायत के श्री बसंत सिंह, डॉ. वेदान्यास कुण्डू, कार्यक्रम अधिकारी, समिति, श्री एस. ए. जमाल, पूर्व प्रशासनिक अधिकारी, समिति, श्री राजदीप पाठक, कार्यक्रम कार्यकारी, श्रीमती पूजा सिंह, श्री चंदन गुप्ता, श्री मुकुंद गिलिंद, सुश्री रूबी मिश्रा, श्री बिश्वजीत सिंह, परियोजना प्रमुख, सुश्री कनक कौशिक और श्रीमती प्रेरणा जिंदल ने भाग लिया।

यह बैठक श्री बिश्वजीत की एक प्रस्तुति के साथ शुरू हुई। उन्होंने प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) की सफलता की कहानी पर विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि समिति द्वारा दिल्ली में काम कर रहे चम्पारण बिहार के लगभग 2000 ऑटो चालकों के कौशल का विकास किया गया। इन्हें 2018–19 में प्रशिक्षित किया गया था। उन्होंने उल्लेख किया कि यह केवल एक प्रशिक्षण नहीं था जो उनका प्रमाणन और मूल्यांकन (आरपीएल कार्यक्रम के अनुसार) करता था, बल्कि इसके जरिये ऑटो चालकों की शिक्षा, स्वास्थ्य और वित्त प्रबंधन के मामले में समग्र विकास का भी ध्यान रखा गया था। उन्होंने उल्लेख किया कि पहली बार ऑटो चालकों ने स्वयं को सशक्त महसूस किया और जब उनके बच्चों को विभिन्न पत्राचार पाठ्यक्रमों के लिए इग्नू में नामांकित किया गया, तो वे अधिक खुश और आशान्वित महसूस कर रहे थे।

डीडीयू–जीकेवाई परियोजना की आगामी स्वीकृत परियोजना की रूपरेखा को प्रस्तुत करते हुए श्री बिश्वजीत ने कहा कि डीडीयू–जीकेवाई ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के तहत प्रमुख कौशल कार्यक्रम है, जिसे विशेष रूप से और व्यापक रूप से भारत के ग्रामीण युवाओं के रोजगार के लिए तैयार किया गया है।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण यह है कि यह ग्रामीण युवाओं की यात्रा से लेकर आवास और भोजन, ब्रेस अप से लेकर स्किलिंग और प्लेसमेंट तक पूरी तरह से हाथ बंटाने पर केन्द्रित है। इतना प्रयास देखने लायक है कि आर्थिक रूप से वंचित ग्रामीण युवाओं को किसी भी रसद की चिंता नहीं करनी चाहिए और उन्हें जीवन में कौशल और उत्कृष्टता पर ध्यान देना चाहिए।

परियोजना का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा यह है कि यह केवल प्लेसमेंट पर ध्यान केन्द्रित नहीं करता है। यह वास्तव में ग्रामीण युवाओं को सशक्त बनाने के लिए निरंतर, निर्बाध और प्रगतिशील प्लेसमेंट पर केन्द्रित है, जिसे प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर भारत पर राष्ट्र के नाम अपने सम्बोधन में भी कहा था।

उन्होंने आगे उल्लेख किया कि डीडीयू–जीकेवाई के तहत स्वीकृत परियोजनाएं वर्तमान में लखनऊ और सोनभद्र जिलों में उत्तर प्रदेश के लिए हैं जिसका उद्देश्य है अ) सिलाई और कढ़ाई में लोगों को पारंगत बनाना और ब) जीएसटी में प्रशिक्षण प्रदान करना। रोजगार पर पड़ने वाले प्रभाव पर जोर देते हुए श्री बिश्वजीत ने यह भी उल्लेख किया कि इस परियोजना के हिस्से के रूप में प्रदान किए जाने वाले सभी प्रशिक्षणों के लिए मूल्यवर्धन पर और अधिक प्रोत्साहन प्रदान किया जाएगा।

उन्होंने डीडीयू–जीकेवाई परियोजना के तौर–तरीकों पर भी बात की, जिसमें प्रति प्रशिक्षण उम्मीदवारों की संख्या, पूरी परियोजना के मौद्रिक पहलू, उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन, राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन, ग्रामीण विकास मंत्रालय इत्यादि के बीच सम्बन्धों को बताया गया।

इस अवसर पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने परियोजना के विभिन्न मुद्दों, जैसे परियोजना को समय पर पूरा करने की चुनौतियां, चार किस्तों में स्वीकृत बजट के वितरण, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, छात्रावास प्रबंधन (विशिष्ट क्षेत्रों में) पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने समिति द्वारा प्रदान किए जाने वाले मूल्यवर्धन प्रशिक्षण पर भी जोर दिया। जिसे उन्होंने उत्कृष्टता का केंद्र बताते हुए कार्यान्वयन के लिए राज्यों को दिशानिर्देशों के रूप में भेजे जाने की वकालत की।

श्री बसंतजी ने परियोजना की स्वीकृति के लिए टीम को बधाई देते हुए कहा कि इस परियोजना से कई गांधीवादी संगठन एक बार फिर से जीवंत हो सकते हैं, क्योंकि ये संगठन प्रशिक्षण प्रदान कर सकते हैं, लेकिन प्लेसमेंट नहीं। अब प्लेसमेंट की कमी को ये परियोजना पूरी करेगी। उन्होंने दूरी और पेशेवर प्रशिक्षण के बीच की चुनौतियों पर भी अपनी चिंता साझा की, जिन्हें कवर किया जाना है और स्थानीय विशेषज्ञों और संसाधनों के लिए खानपान की सुविधा का भी जायजा लिया। उन्होंने आउटसोर्सिंग के अपने विचार पर भी चर्चा की और यह स्पष्ट किया कि जो कोई भी परियोजना के लिए काम करता है, उसे शुरू में इसके बारे में स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए।

परियोजना के चुने हुए स्थान और नौकरी की भूमिका पूरी तरह से ग्रामीण आबादी के लिए आजीविका सृजन के उद्देश्य से है, जो स्थानीय समाज पर कोविड प्रभाव के कारण सरकार के लिए एक प्रमुख आकर्षण वाला क्षेत्र रहा है।

इसलिए, सोनभद्र के आदिवासी क्षेत्र और लखनऊ के कपड़ा कारीगर आबादी वाले क्षेत्र बहुत प्रासंगिक हैं और इसलिए स्विंग मशीन ऑपरेटर और जीएसटी कार्यकारी की नौकरी की इस क्षेत्र में सम्भावनाऐ भी है। इसके अलावा, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ग्रामीण युवाओं को सशक्त बनाने के लिए सतत निरन्तर और प्रगतिशील प्लेसमेंट सुनिश्चित करने के लिए पूरक नौकरी की सम्भावनाओं को जोड़ा गया है, जो कि महात्मा गांधी के सर्वोदय और और पं दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय के सपनों को साकार करने के लिए डीडीयू–जीकेवाई का मुख्य फोकस है।

समिति निदेशक ने श्री विश्वजीत को परियोजना में आवश्यक परिवर्तन करने के लिए अधिकृत करते हुए बैठक का समापन किया। कार्यान्वयन रणनीतियों और परियोजना से सम्बन्धित अन्य आवश्यक विवरणों पर चर्चा के लिए अगली बैठक 28 जून को निर्धारित है।

कोविड–19 पहल

निर्माण मजदूरों को भोजन का वितरण

समिति ने 28 अप्रैल, 2020 को गाँधी दर्शन परिसर में काम कर रहे निर्माण मजदूरों को बिस्कुट और स्नैक्स के पैकेट वितरित किए। इन पैकेटों को श्री विवेक, श्री राकेश, श्री पंकज चौबे, श्री धर्मराज ने वितरित किया। इन पैकेटों को केन्द्रीय कारागार तिहाड़ में तैयार किया गया था।

कोविड योद्धाओं का आभार

समिति ने मई में सोशल मीडिया के माध्यम से कोविड काल में की गयी गतिविधियों का प्रसार किया। अपने ट्वीटर हैंडल के साथ–साथ समिति के यू–ट्यूब चौनल के माध्यम से कोविड योद्धाओं का आभार व्यक्त किया गया।

इस प्रयास में समिति ने जीएसडीएस सदस्यों द्वारा मास्क बनाने, जरूरतमंद लोगों को भोजन वितरित करने में किए गए कार्यों को भी प्रदर्शित किया। श्रीमती मधु, सुश्री सिमरन द्वारा बनाए गए खादी के मास्क जिन्हें समिति कर्मचारियों और अन्य लोगों को वितरित किया गया था। इसे वीडियो के माध्यम से दिखाया गया। सुश्री प्रेरणा जिंदल द्वारा जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराने और जानवरों को खिलाने की पहल, श्रीमती रिमता भान द्वारा जरूरतमंदों के वितरण के लिए बनाए गए होम मेड मास्क को भी प्रदर्शित किया गया।

गाँधी स्मृति द्वारा की गयी अन्य गतिविधियों में हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में हिमालयन बौद्ध स्कूल के शिक्षकों और स्वयंसेवकों द्वारा स्कूल की प्रिंसिपल सुश्री पालकी ठाकुर के नेतृत्व में लगभग 500 मास्क बनाए गए। जिसे बाद में जरूरतमंदों के वितरण के लिए नैनाली के एसडीएम को सौंप दिया गया।

दिल्ली में पांच जगहों पर मास्क बनाने की प्रक्रिया

सृजन केंर्न की श्रीमती मधु शर्मा और कार्यालय पर्यवेक्षक श्री मोहित मोहन ने हेल्थी एजिंग इंडिया के सदस्य को खादी और सूती कपड़े के रोल सौंपे।

एम्स और सीआरपीएफ के डॉक्टरों द्वारा संचालित हेल्दी एजिंग इंडिया (एचएआई) के सहयोग से समिति ने दिल्ली में पांच अलग–अलग जगहों पर मुफ्त वितरण के लिए मास्क बनाना शुरू किया। इसके लिए समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के नेतृत्व में स्टाफ के कुछ सदस्यों ने 6 मई, 2020 को गांधी दर्शन में खादी और सूती कपड़े के रोल सम्बन्धित लोगों को सौंपे।

जिला प्रशासन धौलपुर को जीएसडीएस–लुपिन सृजन केंर्न से मिले 70000 मास्क

कोविड–19 महामारी के इस समय में मास्क बनाने की समिति की पहल के तहत जिला प्रशासन धौलपुर को जीएसडीएस–ल्यूपिन सृजन प्रशिक्षण–सह–उत्पादन केन्द्र से 70000 मास्क प्राप्त हुए। गरीबों और जरूरतमंदों को मुफ्त वितरण के लिए मई 2020 के दौरान धौलपुर के डीएम को यह मास्क सौंपे गए। यह कार्य ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर फाउण्डेशन के कार्यकारी निदेशक श्री सीता राम गुप्ता की देखरेख में किया गया है। महामारी और तालाबंदी के प्रकोप के बाद से केन्द्र मास्क का उत्पादन कर रहा है, और इसे आसपास के इलाकों, टाउनशिप, आंगनवाड़ियों, स्कूलों आदि में जरूरतमंदों को वितरित कर रहा है।

उल्लेखनीय है कि समिति द्वारा महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर राजस्थान के भरतपुर स्थित ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर फाउण्डेशन के सहयोग से धौलपुर में सृजन परिधान उत्पादन सिलाई और प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गई थी।

सचिव ग्रामीण विकास, भारत सरकार श्री एन. एन. सिन्हा ने झारखंड प्रद्यासन को कोविड–19 किट को झंडी दिखाकर रवाना किया

कोरोना काल में गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति नई दिल्ली और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर एसोसिएशन, राजस्थान ने 29 मई, 2020 को निःशुल्क झारखण्ड के आदिवासी जिले खूंटी को 200 पीपीई किट, 50 थर्मामीटर, 10,000 दस्ताने, 11000 मास्क और 500 फेसशील्ड भेजे। झारखण्ड जिला प्रशासन के उपयोग हेतु इस खेप को श्री एन. एन. सिन्हा, सचिव, ग्रामीण विकास, भारत सरकार ने कृषि भवन में हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर संगठन के सीईओ श्री सीता राम गुप्ता भी उपस्थित थे।

ग्रामीण विकास मंत्रालय के माननीय सचिव, श्री एन. एन. सिन्हा ने झारखण्ड प्रद्यासन को कोविड–19 सुरक्षा किट को झण्डी दिखाकर रवाना किया। श्री सीता राम गुप्ता, सीईओ ल्यूपिन वेलफेयर और श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक समिति सगारोह में शामिल हुए।

नीचेः समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कंटेनमेंट किट की जांच की।

उल्लेखनीय है कि समिति कोरोना के समय में नियमित रूप से विभिन्न संगठनों, सरकारी विभागों और गरीब और जरूरतमंद लोगों को मुफ्त में मास्क और उपरोक्त सामग्री की आपूर्ति कर रही है।

गांधी दर्शन से कोविड–19 सुरक्षा किट को झण्डी दिखाकर रवाना किया गया

1. गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन ने संयुक्त रूप से गांधी दर्शन में 26 जून, 2020 को बेगूसराय और बेतिया में कोविड–19 सेफ्टी किट भेजी। इस किट में 250 पीपीई किट, 50 थर्मामीटर, 1000 फेस शील्ड, 200 एन–95 मास्क, 6000 सूती मास्क और 4000 दस्ताने शामिल थे।
2. इन्हें गाँधी दर्शन में आयोजित एक कार्यक्रम में ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन (एलएचडब्ल्यूओ) के सीईओ श्री सीता

सीता राम गुप्ता, सीईओ ल्यूपिन वेलफेयर ऑर्गेनाईजेशन, श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक समिति और अन्य सदस्यों ने बेगूसराय, बिहार के लिए कोविड–19 सुरक्षा किट वाले वाहन को झण्डी दिखाकर रवाना किया।

राम गुप्ता और समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।

3. इससे पहले भी गरीबों और जरूरतमंदों को राहत प्रदान करने के अपने प्रयासों में समिति और एलएचडब्ल्यूओ ने 29 मई, 2020 को झारखण्ड में भी इसी तरह की किट भेजी थी, जिसे श्री एन. एन. सिन्हा, सचिव, ग्रामीण विकास, भारत सरकार ने कृषि भवन से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया था।

4. समिति ने ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन, भरतपुर के सहयोग से जुलाई 2020 के दौरान निम्नलिखित पहल की:

5. 8 जुलाई, 2020 को 300 पीपीई किट, 7500 कॉटन मास्क, 300 फेसशील्ड, 3000 जोड़ी दस्ताने, 250 चश्में, 30 आईआर थर्मामीटर और 15 ऑक्सीमीटर से युक्त सेफ्टी किट क्रमशः रायपुर और छत्तीसगढ़ के महासमुंद में भेजी गई।

रायपुर, छत्तीसगढ़ के अधिकारी समिति नई दिल्ली और ल्यूपिन वेलफेयर ओर्गेनाईजेशन, भरतपुर से कोविड–19 सुरक्षा किट प्राप्त करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

6. 17 जुलाई, 2020 को 50 वॉशेबल पीपीई किट, 10 डिस्पोजेबल पीपीई किट, 200 फेस शील्ड, 20 एन–95 मास्क, 2000 जोड़ी दस्ताने और 3000 सूती मास्क दमोह, मध्य प्रदेश भेजे गए।

7. 21 जुलाई, 2020 को धोने योग्य 16 पीपीई किट, 20 डिस्पोजेबल पीपीई किट, 50 फेस शील्ड, 30 एन–95 मास्क, 1000 जोड़ी दस्ताने, 1000 सूती मास्क, 10 आईआर थर्मामीटर, 15 ऑक्सीमीटर और 50 काले चश्मे, उत्तर प्रदेश के सोनभद्र में भेजे गए।

8. इसके अलावा 22 और 24 जुलाई, 2020 को समिति ने दक्षिणी दिल्ली नगर निगम (एसडीएमसी) के सहयोग से कोविड–19 रैपिड एंटीजन परीक्षण किया। इन दो दिनों में गाँधी दर्शन परिसर, खादी और ग्रामोद्योग आयोग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) के कर्मचारियों, राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के निर्माण स्थल पर काम करने वालों और गांधी दर्शन के आसपास रहने वाले लोगों के लिए लगभग 345 परीक्षण किए गए।

समिति स्टाफ के लिए यूपीएचसी, दरियागंज के लैब तकनीशियन, श्री अशफाक, द्वारा रैपिड एंटीजन परीक्षण किए जा रहे हैं।

ऊपर और नीचेः समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, ने डॉ. सुनील मिंज, प्रभारी यूपीएचसी, दरियागंज और उनकी टीम को कोविड योद्धाओं के रूप में उनके नेक प्रयासों के लिए प्रशंसा पत्र प्रदान किया। इस अवसर पर डॉ. मंजू अग्रवाल सहित अन्य समिति कर्मचारी उपस्थित थे।

9. समिति और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ओर्गेनाइजेशन द्वारा 28 जुलाई, 2020 को कोविड–19 सुरक्षा किट श्री वी. एस. अय्यर, पूर्व वैज्ञानिक अधिकारी, परमाणु ऊर्जा नियामक बोर्ड, भारत सरकार, गोवंडी पूर्व, मुंबई, महाराष्ट्र को भेजी गयी। इस किट में 5 पीपीई किट, 50 फेसशील्ड, 50 जोड़ी दस्ताने, 50 सूती मास्क, एक ऑक्सीमीटर, 50 काले चश्मे, 5 एन–95 मास्क शामिल थे।

10. कोविड–19 सुरक्षा किट का एक और सेट जिसमें 276 पीपीई किट, 300 फेसशील्ड, 100 एन–95 मास्क, 8500 जोड़ी दस्ताने, 7800 कॉटन मास्क, 30 आईआर थर्मामीटर, 100 ऑक्सीमीटर और 225 काले चश्मे शामिल हैं। इस किट को 28 जुलाई, 2020 को बिहार के भागलपुर में भेजा गया।

11. 29 जुलाई 2020 को समिति ने दक्षिण दिल्ली नगर निगम के सहयोग से गांधी स्मृति स्टाफ के सदस्यों के लिए कोविड–19 रैपिड एंटीजन परीक्षण किया। परीक्षण के दौरान कुल 42 लोगों का परीक्षण नेगिटिव आया। डॉ. सुनील कुमार मिंज, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी यूपीएचसी दरिया गंज और उप केन्द्र विक्रम नगर, दक्षिण दिल्ली नगर निगम के नेतृत्व में श्री एमडी अशफाक (लैब तकनीशियन), सुश्री गीता (एएनएम) और सुश्री पार्टिमा (एएनएम) की टीम ने गांधी दर्शन में परीक्षण किया। इस अवसर पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कोविड–19 योद्धाओं को अंगवस्त्रम और चरखा भेंट कर सम्मानित किया।

आरटीपीसीआर परीक्षण आयोजित

कोविड–19 को देखते हुए स्टाफ सदस्यों के स्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने दक्षिण दिल्ली नगर निगम के डॉक्टरों की टीम के साथ मिलकर एंटीजन व एंटीबॉडी परीक्षण किया। 6 अगस्त, 2020 को आयोजित इस कार्यक्रम में समिति के स्टाफ सदस्यों व उनके परिजनों का परिक्षण किया गया। इनमें 05–18 वर्ष और 18–50 वर्ष और उससे अधिक की श्रेणी के 50 लोग शामिल थे।

इस परीक्षण कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुनील कुमार मिंज, चिकित्सा अधिकारी प्रभारी यूपीएचसी दरियागंज और उप केन्द्र विक्रम नगर, दक्षिण दिल्ली नगर निगम, श्री एम. डी. अशफाक, लैब तकनीशियन ने किया।

भागलपुर, बिहार के लिए कोविड सुरक्षा किट प्रदान

आवश्यकता के अनुसार देश के विभिन्न हिस्सों में कोविड सुरक्षा किट प्रदान करने की अपनी पहल के तहत समिति ने 22 अगस्त को 10000 सूती मास्क और 200 ऑक्सीमीटर से युक्त कोविड सुरक्षा किट भागलपुर, बिहार को भेजी। इसके अतिरिक्त मुंगेर, बाका, भागलपुर और जमुई में वितरण के लिए भी किट भेजी जानी प्रस्तावित हैं। इस वितरण कार्यक्रम का संचालन श्री मुकुंद मिलिंद ने किया है।

- समिति ने ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ओर्गेनाइजेशन, भरतपुर, राजस्थान के सहयोग से देश के विभिन्न हिस्सों में कोविड–19 सुरक्षा किट उपलब्ध कराने की अपनी पहल के तहत बिहार को वितरण के लिए किट भेजी। 23 अगस्त, 2020 को जमुई, बिहार में एक छोटे से समारोह में इन सुरक्षा किटों का वितरण किया गया। स्वास्थ्य और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए वितरण कार्यक्रम का नेतृत्व किसान और उर्वरक उत्पादन संगठन के वरिष्ठ सदस्य अर्जुन मंडल ने किया। इस अवसर पर प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ. डी. के धुसिया, स्वास्थ्य प्रबंधक श्री महेश रंजन सहित कई लोग उपस्थित थे।
- समिति और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन द्वारा कोविड–19 सुरक्षा किट 30 अगस्त को मुंगेर के हवेली खड़गपुर जिले में वितरित की गई। समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत सिंह ने इस पहल का समन्वय किया। तेलियादिया में ग्रामीणों और स्वास्थ्य देखभाल कर्मियों के बीच पीपीई किट, मास्क, ऑक्सीमीटर, दस्ताने, हैंड सैनिटाइजर, फेस शील्ड वितरित किए गए।
- समिति और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन ने कोविड–19 सुरक्षा किट का वितरण छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों जैसे दुर्ग, राजनांद गांव, महासमुंद और रायपुर में भी किया। बर्ड (बेलुगाम इंटीग्रेटेड रूरल डेवलपमेंट) फाउण्डेशन के राज्य समन्वयक श्री कल्याण श्री कृष्णन ने इन क्षेत्रों और विभिन्न अस्पतालों, पुलिस स्टेशनों, सरकारी स्कूलों, आंगनबाड़ी केन्द्रों और जरूरतमंदों को भी कोविड–19 सुरक्षा किट वितरित करने की पहल की। यह अगस्त के दौरान विभिन्न अवसरों पर किया गया था। पॉटरी समुदाय/परिसर के लगभग 700 बच्चों को कोविड–19 सुरक्षा किट प्राप्त हुई। समन्वयक श्री मदन लाल साहू ने बताया कि 'तुहर दुआर' अभियान के तहत सभी स्कूलों में जहां बच्चों को सामाजिक दूरी बनाए रखने, मास्क, सैनिटाइजर और साबुन का उपयोग करने के लिए कहा गया है।

2 अक्तूबर गांधी जयंती कार्यम के लिए कोविड–19 परीक्षण

महात्मा गांधी के 151वीं जयन्ती समारोह में आने वाले लोगों की कोविड से सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, समिति ने 28, 29 व 30 सितम्बर को गांधी दर्शन और गांधी स्मृति में सभी स्टाफ सदस्यों, संस्कृति

गांधी जयन्ती कार्यम की शुरुआत से पहले श्री अशफाक, लैब तकनीशियन, यूपीएचसी, दरियागंज द्वारा समिति द्वारा रैपिड एंटीजन के साथ–साथ आरटीपीसीआर परीक्षण किए जा रहे हैं।

मंत्रालय के अधिकारियों, धर्म गुरुओं और भक्ति संगीत कलाकारों के लिए कोविड–19 परीक्षण किया। ये परीक्षण क्रमशः गांधी दर्शन और गांधी स्मृति में आयोजित किए गए थे।

साथ ही गांधी समाधि राजघाट जहां इसी तरह की सर्वधर्म प्रार्थना का आयोजन किया जाता है और जिसमें वीवीआईपी शामिल होते हैं ने भी अपने कर्मचारियों के लिए कोविड–19 परीक्षण किया। में दिल्ली सरकार के डॉक्टरों की टीम द्वारा आरटीपीसीआर और रैपिड एंटीजन दोनों परीक्षण किए गए। डॉ. अशफाक और डॉ. निर्मला की टीम ने डॉ. सुनील मिंज के नेतृत्व में लगभग 150 सदस्यों का परीक्षण किया।

विजय घाट झुग्गी बस्तियों में कोविड–19 स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

5 दिसम्बर, 2020 को विजय घाट की झुग्गी में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। यूपीएचसी दरियागंज नई दिल्ली के डॉक्टरों की टीम द्वारा 100 रोगियों के लिए रैपिड एंटीजन और आरटीपीसीआर परीक्षण किए गए। समिति की प्रतिनिधि श्रीमती गीता शुक्ला, शोध अधिकारी, डॉ. मंजू रानी अग्रवाल, समन्वयक स्वास्थ्य कार्यक्रम समिति, श्री राजदीप पाठक, कार्यक्रम कार्यकारी, और श्री अरविंद यादव ने शिविर में भाग लिया। शिविर का संचालन डॉ. सुनील मिंज, प्रभारी चिकित्सा

समिति द्वारा विजय घाट मलिन बस्तियों में यूपीएचसी दरियागंज के डक्टिरों की टीम के माध्यम से रैपिड एंटीजन के साथ–साथ आरटीपीसीआर परीक्षण किए जा रहे हैं।

अधिकारी, यूपीएचसी दरियागंज, डॉ. शीतल, स्त्री रोग विशेषज्ञ, बहन प्रेम बाला और श्री अशफाक की टीम ने किया।

- बेला गांव और राजघाट पावर हाउस की मलिन बस्तियों के लिए 15 दिसम्बर को एक और स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया जहां लगभग 121 लोगों का आरटीपीसीआर परीक्षण किया गया।
- राजस्थानी बस्ती में 19 दिसम्बर, 2020 को आयोजित एक अन्य शिविर में एसडीएमसी यूपीएचसी दरियागंज के डॉक्टरों की टीम द्वारा 304 लोगों के लिए आरटीपीसीआर टेस्ट का आयोजन किया गया।

छपरा, बिहार में वितरित की गई कोविड सुरक्षा किट

समिति ने ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ओर्गेनाइजेशन, राजस्थान और महिला विकास संस्थान बसंतपुर, छपरा, बिहार के सहयोग से शहर के अस्पताल में डॉक्टरों को कोविड सुरक्षा किट वितरित किए। सामाजिक कार्यकर्ता श्री विश्वास गौतम ने समिति की ओर से वितरण कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर सिविल सर्जन डॉ. मदेश्वर झा ने पीपीई किट, फेसमास्क, दस्ताने और ऑक्सीमीटर प्राप्त किये।

गांधी दर्शन में किए गए रैपिड एंटीजन और आरटीपीसीआर परीक्षण

यूपीएचसी दरियागंज के प्रभारी डॉ. सुनील मिंज के नेतृत्व में डॉक्टरों की टीम ने धर्म गुरुओं और समिति के अधिकारियों के लिए रैपिड एंटीजन और आरटीपीसीआर परीक्षण किया। परीक्षण किए गए 20 व्यक्तियों के परिणाम नेगेटिव थे।

- गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने दक्षिण एमसीडी के सहयोग से उन्नति गर्ल्स रेनबो होम, तीस हजारी में कोविड–19 स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया। लैब टेक्निशियन श्री अशफाक ने घर से 36 बच्चों का आरटीपीसीआर परीक्षण किया और समिति–ल्यूपिन द्वारा निर्मित मास्क वितरित किए। 18 जनवरी, 2021 को आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. मंजू अग्रवाल ने किया।
- गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने 21 जनवरी, 2021 को दक्षिण एमसीडी के सहयोग से कई स्थानों पर कोविड–19 स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया। सोसायटी फॉर प्रमोशन ऑफ यूथ एंड मास (एसपीवाईएम) दरियागंज, सिविक सेंटर, दिल्ली अंसारी रोड, दरियागंज और परदा बाग में 101 लोगों का आरटीपीसीआर परीक्षण किया गया। समिति और परदा बाग के डीएम को समिति–ल्यूपिन फेस मास्क का वितरण किया गया। श्री अशफाक ने कोविड परीक्षण किया। कार्यक्रम का संचालन समिति की डॉ. मंजू अग्रवाल ने किया।
- गांधी स्मृति में 30 जनवरी 2021 की तैयारी के सिलसिले में यूपीएचसी दरियागंज के सहयोग से समिति द्वारा 27 जनवरी को 150 लोगों का कोविड–19 आरटीपीसीआर परीक्षण किया गया। इस परीक्षण का समन्वय डॉ. मंजू अग्रवाल ने किया।

कोविड–19 स्वास्थ्य शिविर आयोजित

गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने यूपीएचसी दरियागंज के डॉक्टरों की टीम के साथ मिलकर डीटीसी मैकेनिकों के लिए राजघाट बस डिपो नम्बर–1 पर स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया। 3 फरवरी, 2021 को 51 टेस्ट किए गए। समिति की ओर से डॉ. मंजू अग्रवाल ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया।

यूपीएचसी दरियागंज में बांटे मास्क

समिति व ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ओर्गेनाईजेशन ने 6 मार्च, 2021 को

दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर यूपीएचसी दरियागंज के डॉक्टरों की टीम के माध्यम से समिति द्वारा किए जा रहे कोविड परीक्षण।

यूपीएचसी दरियागंज में डॉक्टरों की टीम को मास्क बांटे। वितरण समारोह में श्री बसंत कुमार एवं डॉ. मंजू अग्रवाल उपस्थित थे। डॉ. सुनील मिंज, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, यूपीएचसी दरियागंज और उप केन्द्र विक्रम नगर, दक्षिणी दिल्ली नगर निगम, डॉ. शीतल, स्त्री रोग विशेषज्ञ की टीम ने मास्क प्राप्त किये।

वरिष्ठ गांधीवादी, श्री बसंत समिति से डॉ. मंजू अग्रवाल और श्री उमेदा त्यागी के साथ यूपीएचसी दरियागंज के डॉक्टरों की टीम को मास्क सौंपते हुए।

दिल्ली गेट पर स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन

गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति के स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम के तहत यूपीएचसी दरियागंज के डॉक्टरों की टीम द्वारा 10 मार्च, 2021 को दिल्ली गेट स्थित नशामुक्ति केन्द्र में 36 आरटीपीसीआर परीक्षण किये गए। समिति और ल्यूपिन ह्यूमन वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन द्वारा फेस मास्क का निःशुल्क वितरण भी किया गया। शिविर का संचालन डॉ. मंजू अग्रवाल ने किया।

श्री अदाफाक, लैब तकनीशियन यूपीएचसी दरियागंज बच्चों के लिए आरटीपीसीआर परीक्षण करते हुए दिखाई दे रहे हैं, डॉ. मंजू अग्रवाल ने बच्चों के लिए स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का समन्वय किया।

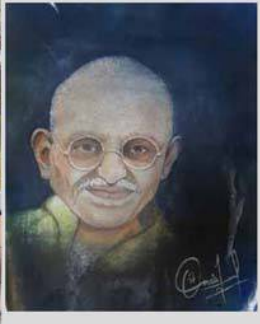

तिहाड़ में

केनीय कारागार तिहाड़ –4 में नी वस्त्रों का वितरण

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा इनर व्हील क्लब दिल्ली, सिविल लाइंस अचीवर्स, गाजियाबाद नॉर्थ के सहयोग से 23 दिसम्बर, 2020 को तिहाड़ जेल के सेंट्रल जेल नम्बर–4 में बंदियों को 350 वार्मर सेट प्रदान किए।

ह पर : निदेदाक समिति श्री दीपंकर श्री ज्ञान तिहाड़ जेल की डीजी डॉ. विमला मेहरा को चरखे से सम्मानित करते हुए।

हनीचे : सेंटल्ल जेल नम्बर–4 के कैदियों को नी कपड़े सौंपते समिति निदेदाक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

केनीय कारागार, तिहाड़ में कार्यम के दौरान निदेदाक समिति श्री दीपंकर श्री ज्ञान केनीय जेल संख्या–4 के अधिकारियों, पूर्व डीजी तिहाड़ जेल के अधिकारियों और दिल्ली के इनर व्हील क्लब की टीम के साथ दिखाई दे रहे हैं।

इस अवसर पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, पूर्व डी. जी. तिहाड़ जेल श्रीमती विमला मेहरा, इनर व्हील क्लब दिल्ली सिविल लाइंस अध्यक्ष सुश्री रेणु ग्रोवर, अचीवर्स अध्यक्ष श्रीमती बिंदु के संगल, सचिव सुश्री अनु नागपाल के साथ समिति तिहाड़ समन्वयक डॉ. मंजू अग्रवाल, कार्यक्रम कार्यकारी श्री राजदीप पाठक, श्री राज कुमार अधीक्षक सीजे–4 श्री राजेश चौहान, अधीक्षक सीजे–1 एवं 7, उपाधीक्षक श्री मनमोहन, कल्याण अधिकारी श्री पी. एल. मीणा और वार्डन श्री अमरजीत उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान फेस मास्क भी वितरित किये गए।

तिहाड़ में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यम आयोजित

ह पर : अधीक्षक सीजे–4 तिहाड़ जेल श्री राजकुमार एक कैदी को मास्क बांटते नजर आ रहे हैं।

हनीचे जीएसडीएस की ओर से वितरण कार्यम में शामिल डॉ. मंजू अग्रवाल।

समिति द्वारा 16 फरवरी, 2021 को केन्द्रीय जेल संख्या–4 में एक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. मंजू अग्रवाल ने कैदियों को ल्यूपिन द्वारा निर्मित मास्क भी वितरित किए।

इस अवसर पर अधीक्षक श्री राजकुमार, उपाधीक्षक श्री मनमोहन एवं वार्डन श्री अमरजीत उपस्थित थे। डॉ. मंजू रानी अग्रवाल ने कैदियों को स्वास्थ्य सम्बन्धी टिप्स भी दिये।

कला के माध्यम से तिहाड़ के कैदियों ने दी 'बा' को श्रद्धांजलि

गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा 22 फरवरी, 2021 को तिहाड़ जेल सीजे –4 और दिल्ली अचीवर्स के इनर व्हील क्लब के सहयोग से कस्तूरबा गांधी की 77 वीं पुण्यतिथि मनाई गयी, जिसमें शामिल कैदियों ने स्वतंत्रता संग्राम के दिग्गजों–महात्मा गांधी, कस्तूरबा गांधी और आचार्य विनोबा भावे को उनके चित्रों के माध्यम से श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम का संचालन सीजे–4 में डॉ. मंजू अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम में सीजे–4 स्कूल ऑफ आर्ट्स के 48 कैदियों ने भाग लिया।

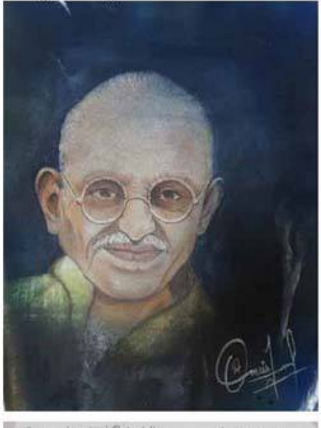

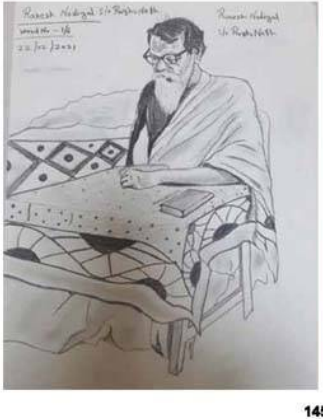

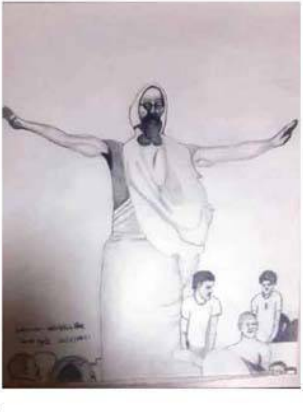

तिहाड़ सीजे–4 में निःशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन

24 मार्च, 2021 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) और अग्रवाल फाउण्डेशन के डॉ. राजेन्द्र प्रसाद नेत्र विज्ञान केन्द्र के सहयोग से तिहाड़ केन्द्रीय कारागार सीजे–4 में समिति द्वारा एक निःशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का समन्वय डॉ. मंजू अग्रवाल ने किया। इस शिविर में समिति की श्रीमती नीलम शर्मा एवं सुश्री आशा रानी ने भी भाग लिया। इस अवसर पर तिहाड़ कारागार अधीक्षक सीजे–4 श्री राजकुमार, उपाधीक्षक श्री मनमोहन एवं वार्डर श्री अमरजीत उपस्थित थे।

शिविर में एम्स के डॉक्टरों ने 204 मरीजों की जांच की। इनमें से 144 मरीजों को चश्मा दिया जाएगा। इस अवसर पर प्रभारी अधिकारी, सामुदायिक नेत्र विज्ञान, डॉ. आर. पी. सेंटर, एम्स डॉ. प्रवीण वशिष्ठ, मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम के दौरान डॉ. मंजू रानी अग्रवाल ने 'एफएम टीजे' में स्वास्थ्य और स्वच्छता पर स्वास्थ्य वार्ता प्रस्तुत की। एम्स की बहन कमलेश ने भी 'नेत्रदान' पर स्वास्थ्य वार्ता दी।

चित्रों में: अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान एम्स और अग्रवाल फाउण्डेशन के डॉक्टरों ने गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सहयोग से सीजे–4में निःशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन किया।

हिन्दी में कार्य□म

हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

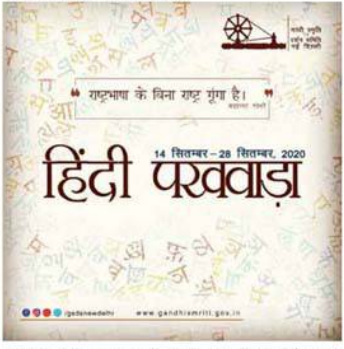

समिति ने गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति के दोनों परिसरों में 14–28 सितम्बर, 2020 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया। इस मौके पर "गांधी और हिंदी" पर निबंध लेखन और "राष्ट्रीय एकता का प्रतीक हिन्दी" कविता लेखन जैसी अनेक विधाओं में हिन्दी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी। कोविड के कारण सभी प्रतियोगिताएं ऑनलाइन आयोजित की गयी थी। जिसमें समिति के कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

स्वच्छता पखवाड़ा

स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान समिति के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक समिति परिसर की सफाई की।

स्वच्छता पखवाड़ा के हिस्से के रूप में स्वच्छता अभियान में उत्साहपूर्वक भाग लेने वाले समिति स्टाफ की झलक।

समिति ने 16–30 सितम्बर, 2020 तक "स्वच्छता पखवाड़ा" का आयोजन किया। इस अवधि के दौरान, समिति द्वारा अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से स्वच्छता के महत्व पर प्रकाश डाला गया। समिति के कर्मचारियों द्वारा गांधी स्मृति और गांधी दर्शन दोनों परिसरों में निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के नेतृत्व में 26 सितम्बर,

इस अवसर पर निदेशक समिति श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने स्वच्छता शपथ दिलाई।

2020 को स्वच्छता अभियान में भाग लिया। कर्मचारियों ने लॉन में गांधी दर्शन परिसर के कोने–कोने की की व्यापक सफाई की गयी। सभी ने अपने–अपने सम्बन्धित कार्यालयों की सफाई भी की।

आज के युग में गांधीजी के विचारों की प्रासंगिकता

महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती के मौके पर दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी (डीपीएल) और गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने 26 सितम्बर, 2020 को "आज के युग में गांधीजी के विचारों की प्रासंगिकता" विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया। इस वर्चुअल सेमिनार की अध्यक्षता दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. रामशरण गौड़ ने की। अन्य वक्ताओं में श्री सुभाष चंद्र कांखेरिया, अध्यक्ष, कार्यक्रम समिति और श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक, समिति शामिल थे।

अपने सम्बोधन में श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने महात्मा गांधी के अनुकरणीय जीवन पर बात की और कहा कि यह केवल एक जीवन नहीं है, बल्कि एक आदर्श सिद्धांत है जिसका लोगों को पालन करना चाहिए। अहिंसा की अवधारणा के बारे में बोलते हुए श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने ऐतिहासिक चम्पारण सत्याग्रह के बारे में जानकारी दी। जिसे उन्होंने किसानों के अधिकारों की वास्तविक लड़ाई बताया और कहा कि सभी समय की सरकारों ने किसानों के कल्याण को महत्व दिया है। उन्होंने नई शिक्षा नीति पर बात करते हुए आशा व्यक्त की कि विभिन्न हितधारक और शैक्षणिक संस्थान एक बार फिर बच्चों को सशक्त बनाने के लिए अलग–अलग व्यवसाय सिखाएंगे, जिसे उन्होंने "उद्यमिता के लिए गुंजाइश खोलना" की संज्ञा दी।

उन्होंने अपने विचार भी साझा किए कि कैसे प्रौद्योगिकी ने हम सभी को प्रभावित और लाभान्वित किया है और कोविड–19 के इस समय में स्थायी जीवन जीने का आह्वान किया। निदेशक ने गांधीजी द्वारा किए गए कार्यों में अपने दृढ़ विश्वास को दोहराते हुए मानव जाति के प्रति निःस्वार्थ सेवा को महत्व दिया और कहा कि कोविड–19 महामारी के दौरान मिशन "स्वच्छता" प्रत्येक मनुष्य का विवेक होना चाहिए।

विविध कार्य□म

लर्किडाउन के दौरान शुरू हो सकने वाले कार्य□मों पर चर्चा के लिए अर्निलाइन बैठक

समिति निदेशक, श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 14 अप्रैल, 2020 को एक ऑनलाइन बैठक आयोजित की, जिसमें महामारी कोविड–19 के कारण लगे लॉकडाउन के मद्देनजर ऑनलाइन कार्यक्रमों के आयोजन की संभावना पर चर्चा की गई। चम्पारण सत्याग्रह, मध्यस्थता आदि जैसे मुद्दों पर वेबिनार के माध्यम से वरिष्ठ संसाधन व्यक्तियों को शामिल करने पर चर्चा की गई। साथ ही व्यापक दर्शकों तक पहुंचने के लिए विभिन्न विषयों पर ऑडियो/वीडियो फाइलें अपलोड करने का सुझाव भी दिया गया।

गांधी स्मृति एवं गांधी दर्शन में स्वच्छता अभियान

गांधी स्मृति और गांधी दर्शन दोनों में लर्किडाउन के दौरान समिति कर्मचारियों द्वारा स्वयं कीटाणुशोधन और स्वच्छता अभियान चलाया गया।

लॉकडाउन के बावजूद, क्रमशः तीस जनवरी लेन स्थित गाँधी स्मृति और राजघाट स्थित गांधी दर्शन परिसर में रहने वाले स्टाफ सदस्यों ने 4–5 मई, 2020 को बड़े पैमाने पर सफाई अभियान शुरू किया। श्री नरेन्द्र के नेतृत्व में गांधी स्मृति में सदस्यों ने पूरे परिसर की सफाई की। गांधी दर्शन में इस पहल का नेतृत्व श्री मोहित मोहन ने किया। गांधी दर्शन में सदस्यों द्वारा सार्वजनिक स्थानों और वाहनों को सेनिटाइज और कीटाणुरहित करने का कार्य भी किया गया।

गा□धीस्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा लर्किडाउन के बाद की जाने वाली पहल पर बैठक

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 13 मई, 2020 को एक ऑनलाइन बैठक बुलाई, जिसमें समिति द्वारा तालाबंदी के बाद की जाने वाली पहल पर चर्चा की गई। उन्होंने कहा की भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 12 मई, 2020 को राष्ट्र के नाम अपने सम्बोधन में आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा का जिक्र किया था। यह वस्तुतः अर्थव्यवस्था के पुनरोद्धार की अवधारणा है, जिसका प्रतिपादन गांधीजी ने किया था। श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने जे. सी. कुमारप्पा की स्थायी अर्थव्यवस्था का उल्लेख करते हुए कहा कि इस पुस्तक में आत्मनिर्भरता के उत्तर मिल सकते हैं जिन्हें आज के सन्दर्भ में अच्छी तरह से संशोधित किया जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि लॉकडाउन के बाद एक संगठन के रूप में समिति को मौजूदा विरासत और अर्थव्यवस्था को समानांतर रूप से पूरा करना होगा।

चर्चा के दौरान जो अन्य बिंदु सामने आए, वे थे:

1. यह बताया गया कि जो वेबिनार शुरू किए गए हैं, उन्हें कोविड–19 के मद्देनजर जारी रखा जाना चाहिए, और इसी तरह के अन्य कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए। अहिंसक संचार पर पाठ्यक्रम का भी उल्लेख किया गया था और इस बारे में प्राप्त जबरदस्त प्रतिक्रिया के बारे में बताया गया था।

2. यह भी बताया गया कि कविता/पोस्टर/वीडियो/शांति संदेश/कहानी सुनाने आदि के लिए "प्रतिभा खोज" पहल की प्रविष्टियों का चयन करने के लिए एक समिति का गठन किया जाएगा और फिर इन्हें समिति यू–ट्यूब चौनल में अपलोड किया जा सकता है। साथ ही अन्तिम जन में समय–समय पर चयनित पोस्टर एवं शायरी का प्रकाशन किया जायेगा। चयनित अभ्यर्थियों को विशेष प्रमाण पत्र जारी किये जायेंगे तथा सभी भाग लेने वाले अभ्यर्थियों को प्रतिभागिता का प्रमाण पत्र दिया जायेगा।

3. बिहार और झारखण्ड की राज्य सरकारों ने मास्क के लिए समिति से सम्पर्क किया है।

समिति निदेशक ने बताया कि झारखण्ड सरकार ने 10 हजार मास्क का ऑर्डर दिया है। जिसे स्वीकृति मिलने के बाद आने वाले दिनों में अंतिम रूप दिया जाएगा। उन्होंने आगे बताया कि उन्होंने इस सम्बन्ध में भरतपुर के सृजन केन्द्र से बात की है और उनके जवाब का इंतजार कर रहे हैं।

इसलिए इस बात पर जोर दिया गया कि सृजन द्वारा मास्क उत्पादन तेज किया जाए और इस पहल को सृजन के विभिन्न केन्द्रों और तिहाड़ द्वारा भी किया जाए। डॉ. मंजू अग्रवाल ने कहा कि वह इस सम्बन्ध में जेल अधिकारियों से सम्पर्क करेंगी। सुश्री प्रेरणा ने बताया कि मास्क उत्पादन के लिए कई सृजन केन्द्रों को जोड़ा जा सकता है।

यह भी बताया गया कि जेल के साथ गतिविधियों को बढ़ाया जाए।

4. निदेशक ने गमछा/तौलिया बनाने की आवश्यकता के बारे में भी बताया क्योंकि इस मद की आवश्यकता भी बढ़ गई है। उन्होंने साथ–साथ अंगवस्त्रम (जिसका उपयोग मेहमानों का सम्मान/सम्मान करने के लिए किया जाता है) के उत्पादन में वृद्धि की भी आवश्यकता है।

5. शुक्रवार, 15 मई, 2020 को पूरे कार्यालय को सेनिटाइज किया जाएगा। यह भी बताया गया था कि सोमवार 18 मई, 2020 से कार्यालयों को फिर से शुरू किया जाना है।

6. यह बताया गया कि गांधी स्मृति और गांधी दर्शन दोनों संग्रहालय

सरकार के अगले निर्देश तक बन्द रहेंगे, आवश्यक कर्मचारी जिनके पास स्वयं का वाहन है वे कार्यालय आने के लिए पास के लिए आवेदन कर सकते हैं।

7. यह बताया गया कि गांधी के उद्धरणों के साथ 6X4 आकार के पोस्टर बनाए जाएं और उनकी सॉफ्ट कॉपी उन सहयोगी संगठनों को भेजी जा सकती है। जो इस समय राहत और पुनर्वास कार्य में लगे हुए हैं क्योंकि इससे लोगों तक संस्था की व्यापक पहुंच भी बनेगी। पोस्टर में समिति लोगो होगा। इस कार्य से सहयोगी संगठन समिति को उचित मान्यता देंगे।

8. श्री रिज़वान ने बताया कि वेतन में देरी हो रही है क्योंकि कार्यालय को अभी अनुदान प्राप्त नहीं हुआ है, जिसका समाधान एक सप्ताह के भीतर होने की उम्मीद है।

9. जैसा कि सोमवार, 18 मई, 2020 से कार्यालय को फिर से खोलने का प्रस्ताव था, इसके तहत गेट नम्बर–4 से प्रवेश किया जाएगा और कोविड–19 से सम्बन्धित स्वास्थ्य अपडेट की निगरानी के लिए आरोग्य सेतु ऐप का अद्यतन सुनिश्चित करना अनिवार्य था।

समिति के पूर्व कर्मचारी श्री ख्याली राम को श्रद्धांजलि

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के पूर्व कर्मचारी श्री ख्याली राम का 5 जून, 2020 को उत्तराखण्ड के हल्द्वानी में उनके गृहनगर में निधन हो गया। वह वर्ष 1969 में गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति में शामिल हुए और 1998 में एक वरिष्ठ परिचारक (चपरासी) के रूप में सेवानिवृत्त हुए। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के नेतृत्व में समिति ने दिवंगत आत्मा के सम्मान में आयोजित एक ऑनलाइन शोक सभा में स्वर्गीय श्री ख्याली राम को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला, और पूर्व लाइब्रेरियन श्रीमती शाश्वती झालानी ने श्री ख्याली राम की स्मृतियों को साझा किया।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री ख्याली राम की पुत्री श्रीमती सुनीता जोशी, सहायक लाइब्रेरियन रसमिति ने बहुत भावनात्मक रूप से इस समय अपने पिता के साथ न होने की निराशा व्यक्त की। बैठक का समापन दिवंगत आत्मा की याद में शांति मंत्र (शांति प्रार्थना) के साथ हुआ।

योग और ध्यान के माध्यम से प्रतिरक्षा में वृद्धि

समिति ने योग क्लब और पीजीडीएवी कॉलेज (शाम), दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से संयुक्त रूप से एक्यू योग पर डॉ. नवोदिता पांडे व श्वास विज्ञानी सुश्री अनुराधा मेहरा द्वारा एक ऑनलाइन व्याख्यान–सह–प्रदर्शन के माध्यम से छठा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया।

व्याख्यान की शुरुआत समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू के स्वागत भाषण से हुई, जहां उन्होंने व्यक्तियों के बीच आत्म अनुशासन बनाने में योग के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि योग एक ऐसा उपहार है, जिसे दुनिया आज तनाव के इस समय में स्वीकार कर रही है। इसके बाद डॉ. आर. के. गुप्ता, प्राचार्य, पीजीडीएवी कॉलेज, ने लोगों को सम्बोधित किया। सभा को सम्बोधित करने वाले अन्य लोगों में डॉ. श्रुति, संयोजक, योग क्लब, पीजीडीएवी कॉलेज, शामिल थे। श्री गुलशन गुप्ता, उत्तर पूर्व समन्वयक समिति ने डॉ. श्रुति के साथ सत्र का संचालन किया।

चित्रों में: समिति के पूर्वोत्तर समन्वयक श्री गुलशन गुप्ता और डॉ. नवोदिता पांडे 21 जून, 2020 को छठे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 'योग और ध्यान के माध्यम से प्रतिरक्षा' पर आयोजित कार्यशाला का संचालन करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

अपने सम्बोधन में डॉ. आर के गुप्ता ने छठे योग दिवस के विषय को दोहराते हुए कहा कि योग केवल एक शारीरिक व्यायाम नहीं है। यह एक अवधारणा है जो आध्यात्मिक स्तर पर शरीर और मन को ऊपर उठाती है। उन्होंने 'योग क्लब' की गतिविधियों के बारे में भी बताया। उन्होंने यह भी कहा कि इस महामारी में शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए योग को उत्प्रेरक के रूप में लिया जा रहा है।

सत्र में डॉ. नवोदिता पांडे का एक प्रदर्शनात्मक व्याख्यान देखा गया, जिन्होंने 'एक्यू योग' की अवधारणाओं को समझाने के अलावा यह भी बताया कि कैसे दबाव बिंदु शारीरिक बीमारियों को कम करने में मदद करते हैं। उन्होंने 'पांच आसनों के माध्यम से प्रतिरक्षा के लिए योग' पर भी बात की। उन्होंने कहा कि "योग मेरिडियन को उत्तेजित करता है जो शरीर को ठीक कर सकता है और जो उन मेरिडियन को सक्रिय करने में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं जो शरीर में ऊर्जा के प्रवाह में सहायता करते हैं।" एक्यूप्रेशर का उल्लेख करते हुए डॉ. नवोदिता ने कहा कि प्राचीन भारत में एक्यूप्रेशर का अभ्यास किया जाता था और आध्यात्मिक और शारीरिक परिवर्तन के लिए वैज्ञानिक तरीके से

संदेशों के लिए इसका उपयोग किया जाता है। विभिन्न अभ्यासों के माध्यम से डॉ. नवोदिता ने दिखाया कि कैसे इन योगासन के नियमित अभ्यास से लोगों को लाभ हो सकता है और वे विभिन्न बीमारियों से छुटकारा पा सकते हैं।

श्वास विज्ञान पर अपने सत्र में, चंडीगढ़ की सुश्री आराधना ने श्वास अभ्यास के माध्यम से उपचार की विभिन्न तकनीकों का प्रदर्शन किया और प्रतिभागियों को इन तकनीकों के माध्यम से मन की यात्रा में ले जाया गया। उन्होंने कहा कि आसान और चिंतनशील श्वास न केवल तनाव और चिंता को कम करने में मदद कर सकता है बल्कि लोगों को कठिन समय से उबरने में भी मदद कर सकता है।

आभासी माध्यम से सूर्य नमस्कार अभियान की पहल

आयुष मंत्रालय के स्वायत्त निकाय, अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) के तत्वावधान में हेल्थ फिटनेस ट्रस्ट के सहयोग से गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने विभिन्न राज्यों के प्रतिभागियों को 'सूर्य नमस्कार आभासी प्रशिक्षण श्रृंखला' में शामिल होने के लिए आमंत्रित करने का एक आभासी अभियान आयोजित किया। 21 जून को छठे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के

अवसर पर 1 जून से 21 जून, 2020 तक आयोजित इस अभियान में भारत के अलावा जर्मनी, दोहा, कतर, लंदन, यूके और फिलाडेल्फिया (यूएस) से भी प्रतिभागियों की जबरदस्त प्रतिक्रिया देखी गई। एशियाई मैराथन चैम्पियन, डॉ. सुनीता गोदारा ने अभियान की शुरुआत की जिसके माध्यम से 'सूर्य नमस्कार' करने वाले प्रतिभागियों की बड़ी संख्या में वीडियो और तस्वीरें साझा की गईं। इस वर्ष के अभियान की टैग लाइन 21 को 21 बार सूर्य नमस्कार **@home** थी।

इस कार्यक्रम में नई दिल्ली, जयपुर (राजस्थान), वडोदरा (गुजरात), चंडीगढ़ (पंजाब), अरुणाचल प्रदेश, केरल, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मुम्बई और तमिलनाडु के प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अभियान में "दिल्ली फिट यूथ विंग", योग पेशेवरों, योग प्रशिक्षकों, जिम प्रशिक्षकों और अन्य लोगों के कई एथलीट शामिल हुए। लोगों ने अपने परिवार के सदस्यों के 'सूर्य नमस्कार' करने का वीडियो भी शेयर किया गया।

संकल्प पर्व पर वृक्षारोपण का आयोजन

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दृष्टि के अनुरूप, पर्यावरण को स्वच्छ और स्वस्थ रखने के उद्देश्य से अधिक से अधिक पेड़ लगाने के लिए, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा "संकल्प पर्व" आयोजित करने का निर्णय लिया और लोगों से अपने आसपास पेड़ लगाने का आग्रह किया। इसी के मद्देनजर, निदेशक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 28 जून, 2020 को गांधी दर्शन में वृक्षारोपण का आयोजन किया, जिसमें गांधी दर्शन परिसर राजघाट के क्वार्टर में रहने वाले कर्मचारियों श्री राकेश, श्री रमन, श्री उमेश, श्री धर्मराज, श्री मोहन ने विभिन्न पेड़–पौधे लगाए।

निदेशक समिति श्री दीपंकर श्री ज्ञान हदाएं 'संकल्प पर्व'के अवसर पर गांधी दर्शन में अन्य कर्मचारियों के साथ पौधे लगाते हुए।

समिति के कर्मचारियों ने भी 29 जून, 2020 को अपने–अपने घर में वृक्षारोपण, पौधे लगाकर वृक्षारोपण अभियान में भाग लिया। समिति निदेशक ने 'एक पेड़ के मालिक' नारे का आह्वान किया। इस अवसर पर समिति की ओर से शपथ भी तैयार कर दिलाई गई।

इसके अलावा, जुलाई महीने में कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू और शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला ने गांधी दर्शन में बरगद और नीम के पेड़ लगाए। हाउसकीपिंग स्टाफ, स्वयंसेवकों ने भी अपने–अपने घरों में पौधे लगाए। समिति नियमित रूप से ट्विटर, फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया में संकल्प पर्व के दौरान गतिविधियों को अपडेट करती रही है।

संकल्प पर्व के तहत निदेशक समिति श्री दीपंकर श्री ज्ञान द्वारा कर्मचारियों द्वारा वृक्षारोपण ।।

साथ ही 'पेड पंचायत' के सहयोग से समिति ने 6 जुलाई, 2020 को पांच जीवनदायिनी पेड़ लगाए। श्री प्रबोध राज चंदोल ने बेल, नीम, आंवला, बरगद और पीपल भेंट की। इस अवसर पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने भी वृक्षारोपण किया। श्री चंदोल भी वृक्षारोपण अभियान में शामिल हुए। पौधरोपण अभियान के लिए पौधरोपण कराने में डॉ. मंजू अग्रवाल ने पेड़ पंचायत से समन्वय स्थापित किया। इस अवसर पर पेड़ पंचायत के सदस्य वरिष्ठ नागरिक भी समारोह में शामिल हुए और पौधे रोपे।

"स्ट्रोक रोगियों में फिजियोथेरेपी के माध्यम से न्यूरो पुनर्वास और कल्याण" पर वेबिनार

एक स्ट्रोक तब होता है जब आपके मस्तिष्क के हिस्से में रक्त की आपूर्ति बाधित या कम हो जाती है, जिससे मस्तिष्क के ऊतकों को ऑक्सीजन और पोषक तत्व नहीं मिल पाते हैं। मस्तिष्क की कोशिकाएं मिनटों में मरने लगती हैं। एक स्ट्रोक एक चिकित्सा आपात स्थिति है, और शीघ्र उपचार महत्वपूर्ण है। प्रारंभिक कार्रवाई मस्तिष्क क्षति और अन्य जटिलताओं को कम कर सकती है। जैसा कि हम सभी जानते हैं, फिजियोथेरेपिस्ट दवाओं के बिना समाज की सहायता को ठीक करने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है।

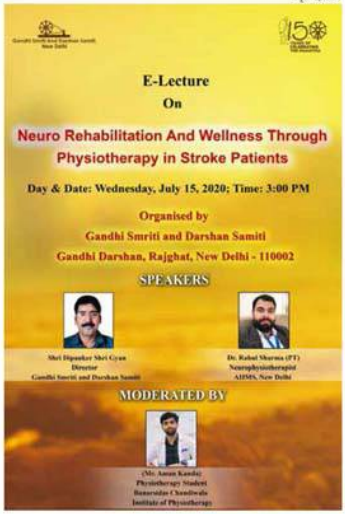

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा 15 जुलाई, 2020 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के न्यूरोलॉजी विभाग के फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. राहुल शर्मा के साथ "स्ट्रोक मरीजों में फिजियोथेरेपी के माध्यम से न्यूरो रिहैबिलिटेशन एंड वेलनेस" पर एक वेबिनार में अनेक मुद्दों पर चर्चा की गई। बनारसीदास चांदीवाला इंस्टीट्यूट ऑफ फिजियोथेरेपी के प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. अमन कांडा ने भी विस्तृत चर्चा की । वेबिनार में 67 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सोशल मीडिया के उपयोग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

समिति द्वारा 19 जुलाई, 2020 को अपने स्टाफ सदस्यों के लिए सोशल मीडिया के उपयोग पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन श्री पंकज शर्मा, तकनीकी सहयोगी समिति ने किया। इस अवसर पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नियमित रूप से ऑनलाइन कार्यक्रमों का आयोजन होने के कारण सोशल मीडिया साइटों के उपयोग का ज्ञान एक आवश्यकता बन गया है।

श्री पंकज ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले लगभग 30 सदस्यों को अपनी प्रस्तुति के दौरान व्यापक कवरेज और सोशल साइट्स का उपयोग करने के तरीकों के बारे में बताया। ट्विटर या फेसबुक

या यू–ट्यूब चैनलों के लिए हैश टैग और/प्रतीकों के अंतर और उपयोग की व्याख्या करते हुए, उन्होंने 'गूगल मीट' के माध्यम से एक वेबिनार में शामिल होने की प्रक्रियाओं की व्याख्या की, जिसका उपयोग समिति अपने सभी ऑनलाइन कार्यक्रमों/वेबिनार के लिए कर रहा है। उन्होंने आगे फेसबुक का उपयोग करने, तस्वीरों को टैग करने आदि की प्रक्रिया के बारे में बताया। उन्होंने **Google** टूल जैसे **Google** कैलेंडर, **Google** ड्राइव, **Google** क्लासरूम, **Google** डॉक्स, **Google** स्लाइड, **Google** शीट आदि का उपयोग करने के उदाहरण भी दिए।

श्री पी. एम. त्रिपाठी को श्रद्धांजलि

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के नेतृत्व में कर्मचारियों ने ग्रामीण विकास के लिए स्वैच्छिक एजेंसियों के संघ (एवार्ड) के पूर्व अध्यक्ष श्री पी. एम. त्रिपाठी को श्रद्धांजलि अर्पित की। जिनका 13 सितम्बर, 2020 को निधन हो गया। इसके अतिरिक्त समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू के पिता, श्री एम. एम. कुण्डू को भी श्रद्धांजलि दी गई। श्री एम. एम. कुण्डू का संक्षिप्त बीमारी के बाद 20 सितम्बर, 2020 को निधन हो गया। 22 सितम्बर, 2020 को दिवंगत आत्माओं के लिए आयोजित शोक सभा में समिति कर्मचारियों ने मौन श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री सुरेश अन्गाड़ी को श्रद्धांजलि

ह पर, दाएं :, श्री सुरेश अन्गाड़ी और डॉ एस. पी. बालासुब्रमण्यम को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान और कर्मचारीगण।

समिति ने रेल राज्य मंत्री श्री सुरेश अंगड़ी को श्रद्धांजलि अर्पित की, जिनका 23 सितम्बर, 2020 को कोविड–19 के कारण निधन हो गया। गायक पद्मश्री डॉ. एस. पी. बालासुब्रमण्यम को भी श्रद्धांजलि दी गई। जिनका 25 सितम्बर, 2020 को कोविड–19 के बाद निधन हो गया।

आचार्य विनोबा भावे की 125वीं जयन्ती मनाने के तौर–तरीकों पर चर्चा के लिए बैठक

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति (जीएसडीएस) ने नागरिक राष्ट्रीय समिति के सहयोग से आचार्य विनोबा भावे की 125वीं जयन्ती के अवसर पर समारोह के तौर–तरीकों पर चर्चा करने के लिए 27 अक्तूबर, 2020 को एक आभासी बैठक का आयोजन किया। बैठक का संचालन डॉ. संजीव कुमार ने किया।

चर्चा की शुरुआत करते हुए प्रोफेसर एन. राधाकृष्णन ने एक स्थायी ढांचे पर काम करने का आह्वान किया। जो महात्मा गांधी के दृष्टिकोण पर काम करने वाले अंतिम व्यक्ति को न्याय प्रदान करने के लिए मार्च करने वाले संत को उचित श्रद्धांजलि देगा।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुए, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने आचार्य विनोबा भावे की 125वीं जयन्ती समारोह के लिए दो चरणों का एजेंडा प्रस्तुत किया। ये हैं:

चरण 1: आचार्य विनोबा भावे के जीवन और दर्शन पर जन जागरूकता पैदा करने के लिए भारत में दूर–दूर तक सेमिनार और कार्यशालाओं के माध्यम से समारोह शामिल हैं।

चरण 2: उन्होंने प्रस्तावित किया कि भूमि सुधारों की दिशा में एक अधिक ठोस प्रयास किया जाना चाहिए। उनके अनुसार, 'भूदान और ग्रामदान आन्दोलन के अग्रदूत को हमारी श्रद्धांजलि तभी सफल होगी जब हम पंचायतों के माध्यम से विभिन्न राज्यों, जिलों और यहां तक कि गांवों तक पहुंच सकेंगे और भूमि से सम्बन्धित नीतियों को बढ़ावा देंगे। भूमि–संघर्ष मुक्त समाज बनाकर विनोबाजी के सपने को साकार करना हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी होनी चाहिए।

इस तथ्य पर शोक व्यक्त करते हुए कि आचार्य विनोबा भावे द्वारा शुरू किए गए पूरे आन्दोलन को नीति निर्माताओं द्वारा डंप कर दिया गया है। श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि "चकबंदी को कभी भी निहित समूहों द्वारा सफल होने की अनुमति नहीं दी गई थी"।

उन्होंने आगे हरिजन सेवक संघ को एक संगठन के रूप में सम्बोधित करते हुए कहा कि विभिन्न हितधारकों को शामिल करके भूमि सुधार के लिए एक रूपरेखा तैयार करने के विचार को आगे बढ़ाने के लिए पंचायत स्तर तक समर्थन के लिए पूरे देश में एक 'जीवंत उपस्थिति' है।

हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष श्री शंकर कुमार सान्याल ने आजादी के बाद से सामंतों के हाथों में केन्द्रित सत्ता की समस्या की बात की। उन्होंने महात्मा गांधी के अनुसरण में ग्राम स्वराज की अवधारणा

और सार को आगे बढ़ाने के लिए आचार्य विनोबा भावे द्वारा किए गए संघर्ष और बलिदान का उल्लेख किया। उन्होंने नए और ठोस विचारों का स्वागत किया, उन्होंने निम्नलिखित सुझावों को रेखांकित किया:

"नए युग में गांधी और विनोबा" श्रृंखला पर ऑनलाइन वेबिनार (कोविड–19 महामारी को देखते हुए) का आयोजन करें, जिसका उद्घाटन भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू करें।

1. विभिन्न भाषाओं में महात्मा गांधी और विनोबा भावे की सरल पुस्तकों और लेखों का चयन और उन्हें विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रसारित करना।
2. एक ही विषय पर राष्ट्रीय स्तर पर निबंध लेखन प्रतियोगिता होना, और गांधी और विनोबा पर बैठकों/प्रदर्शनियों/कार्यक्रमों में सहयोग करना।
3. श्री शंकर कुमार सान्याल ने हरिजन सेवक और सम्बन्धित संगठनों की ओर से इसी तरह के कार्यक्रमों की व्यवस्था में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।
4. डॉ. आकाश ओघी ने कहा कि आचार्य विनोबा भावे की दृष्टि सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से परिलक्षित होती है, जिसे नागरिक समाज, अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों और कई अन्य लोगों द्वारा लिया जाता है। उन्होंने लोगों को एसडीजी के आलोक में आचार्य विनोबा भावे के विचारों का अध्ययन करने और उसके अनुसार कार्य करने की सलाह दी।
5. अंत में, प्रो. राधाकृष्णन ने समय की आवश्यकता को समझाया और चर्चा की तालिकाओं से परे जाने की आवश्यकता पर बल दिया। आचार्य विनोबा भावे के बारे में बोलते हुए प्रो. राधाकृष्णन ने कहा कि संत दार्शनिक ने भारत नामक इस देश के हर हिस्से को ट्रैक किया और प्रेम, करुणा और देने का संदेश दिया। वह लगभग चार (04) मिलियन भूमि एकत्र करने और भूमिहीनों को वितरित करने में सक्षम था।
6. भूदान से ग्रामदान से जीवन दान तक आचार्य विनोबा भावे द्वारा शुरू किए गए अवधारणा आन्दोलनों को दोहराते हुए, प्रो. राधाकृष्णन ने कहा कि इसने पूरे देश को झकझोर दिया। उन्हें महात्मा गांधी का उत्तराधिकारी कहते हुए, प्रो. राधाकृष्णन ने आगे बताया कि कैसे आचार्य विनोबा भावे ने जय जगत की शुरुआत की और फिर शांति सेना की शुरुआत करके अपने गुरु, महात्मा गांधी के विचारों को लॉन्च किया, जहां शांति के सैनिक पूरे देश में आशा सद्भाव और विकास के लिए काम करेंगे।
7. प्रो. राधाकृष्णन ने आध्यात्मिक विकास और जड़ों को मजबूत करने का आह्वान किया और आचार्य विनोबा भावे को उनकी 125वीं जयन्ती पर उचित श्रद्धांजलि देने के लिए निम्नलिखित सात महत्वपूर्ण भूमिका की रूपरेखा तैयार की। उन्होंने जिन सात सूत्रीय एजेंडे को रेखांकित किया, ये हैं:
   - भूमि सुधार जिन पर विस्तार से चर्चा करने की आवश्यकता है और इसके कार्यान्वयन के लिए ठोस रूपरेखा को भारत सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
   - गरीबी के मुद्दे को सम्बोधित करना और सभी के लिए भोजन उपलब्ध कराना।
   - सभी के लिए नौकरियां।
   - सबके लिए घर।
   - सभी के लिए न्याय।
   - सभी के लिए शांति। और
   - 'शांति सेना' विकसित करें।
   - उन्होंने एक राष्ट्रीय प्रयास का आह्वान किया जहां राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सरकारी संगठन और अन्य निकाय सामूहिक रूप से इन मुद्दों के समाधान के लिए आगे आएं और परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करें।
   - बेलगाम कर्नाटक के श्री ए. आर. पाटिल ने 'जलवायु परिवर्तन' का महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया और इसने समाज को कैसे प्रभावित किया है पर चर्चा करते हुए कहा, "केवल अगर हम एक साथ मिलें और अपने ग्रह को बचाने के लिए आवश्यक समाधान खोजने के लिए अपनी मानव बुद्धि का उपयोग करें", और निम्नलिखित विचारों की पेशकश की जिन्हें आचार्य विनोबा भावे की 125वीं जयन्ती समारोह को चिह्नित करने की पहल के हिस्से के रूप में शामिल किया जा सकता है: हमें गरीबी को कम करने के लिए काम करना चाहिए जो पारिस्थितिक तंत्र पर दबाव को कम करने या समाप्त करने और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने के लिए दुनिया भर में कई लोगों की पहुंच को सीमित करता है।
   - जो सक्षम हैं उन्हें इस बारे में सोचना चाहिए कि हमारी अक्सर अस्थिर जीवन शैली और व्यक्तिगत क्रियाएं प्राकृतिक दुनिया और आने वाली पीढ़ियों को नकारात्मक रूप से कैसे प्रभावित कर सकती हैं।
   - हमें अधिक जनसंख्या की समस्या और औद्योगिक कृषि के आश्चर्यजनक प्रसार की समस्या से निपटना चाहिए। और
   - हमें आर्थिक विकास की अपनी जरूरत को इस अहसास के साथ संतुलित करना चाहिए कि दुनिया के पास सीमित संसाधन हैं। हम स्वच्छ हवा और पानी के लिए इन संसाधनों पर निर्भर हैं और लाखों लोग अपनी आजीविका के लिए इन पर निर्भर हैं। यदि हम अपने प्राकृतिक संसाधनों को अनंत मान लें और यदि मानव जनसंख्या में वृद्धि जारी रहे तो कोई आशा नहीं होगी। दरअसल, कुछ जगहों पर प्राकृतिक संसाधनों की खपत प्रकृति की तुलना में अधिक तेजी से हो रही है।
   - उन्होंने आगे कहा, "आचार्य विनोबा भावे की 125वीं जयन्ती मनाने पर मेरा अनुरोध है कि हम अपनी धरती मां को बचाने के लिए सोचें और कार्य करें।" बैठक का समापन हरिजन सेवक संघ के सचिव डॉ. रमेश कुमार के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

गांधी स्मृति संग्रहालय के लिए ऑडियो गाइड ऐप के लिए बैठक

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा हॉप ऑन इंडिया के साथ वहां के संग्रहालय के लिए गांधी स्मृति को 'ऑडियो गाइड ऐप' उपलब्ध कराने के लिए एक बैठक आयोजित की गई थी। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 28 अक्तूबर, 2020 को हॉप ऑन इंडिया के श्री आकाश गौतम और सुश्री शालिनी बंसल के साथ बैठक की कार्यवाही का संचालन किया। गांधी स्मृति संग्रहालय में इस परियोजना को शुरू करने का उद्देश्य आगंतुकों को समिति का एक ऐप डाउनलोड करने

में मदद प्रदान करना था जिससे संग्रहालय की यात्रा के दौरान उन्हें एक निर्देशित यात्रा का अनुभव मिल सके। इसके अलावा, आगंतुक डाउनलोड किए गए ऐप को यादगार के रूप में वापस घर ले जा सकते हैं। क्योंकि वे इसे ऑफलाइन मोड पर भी इस्तेमाल कर सकते हैं। यह आगे वैश्विक स्तर पर सम्बन्ध स्थापित करने की संभावना पैदा करेगा।

सुश्री शालिनी ने गांधी स्मृति के लिए ऐप में एक जीपीएस सिस्टम का प्रस्ताव रखा और सुझाव दिया कि ऐप में एक कथा यात्रा भी हो सकती है और यह कि ऐप को भी संचालित किया जा सकता है– ए) वर्चुअल मोड (जब कोई स्थिर हो) और नेविगेट मोड (जब कोई साइट पर मौजूद हो)

एक डेमो टूर की प्रस्तुति के माध्यम से, जो हॉप ऑन इंडिया ने छत्रपति शिवाजी महाराज अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे, मुंबई के लिए किया था। श्री आकाश गौतम द्वारा एक प्रस्तुति दी गई थी। सुश्री शालिनी ने कहा कि गांधी स्मृति यात्रा में यात्रा प्रवेश द्वार से शुरू हो सकती है, जहां आगंतुक द्वारा किसी विशेष भाषा को चुनने की संभावनाएं चुनी जा सकती हैं– शुरू करने के लिए यह हिंदी और अंग्रेजी हो सकती है। एक बार दौरा पूरा हो जाने पर, सोशल मीडिया के लिए एक 'PROMPT' दिया जाता है जिसे विभिन्न सोशल मीडिया साइटों में साझा किया जा सकता है।

ऐप को पर्सनल टच देने के सम्बन्ध में सुश्री शालिनी ने कहा कि एक स्टोरी लाइन बनानी होगी, जो गांधी स्मृति संग्रहालय में तस्वीरों और छवियों से सम्बन्धित सामग्री उपलब्ध कराने पर की जाएगी, जिसके बाद कहानी क्रिएटिव टीम द्वारा लिखी जाएगी। उन्होंने यह भी बताया कि ऐप में समिति का लोगो आदि शामिल होगा।

श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने बताया कि जीएसडीएस में पहले से ही सामग्री है, जिसे जीएफआर के माध्यम से निविदा के अनुसार चीजों को अंतिम रूप दिए जाने पर विशेषज्ञों के साथ साझा किया जा सकता है। बैठक के दौरान वाणिज्यिक इनपुट साझा किए गए जहां श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने क्लाउड स्पेस और साइबर सुरक्षा प्रदान करने के लिए ऐप में इन–बिल्ट एआरपीआर प्रदान करने का प्रस्ताव दिया।

हॉप ऑन इंडिया द्वारा राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली के लिए शुरू की गई परियोजना के बारे में पूछे जाने पर, सुश्री शालिनी बंसल ने उल्लेख किया कि यह काम एक पायलट परियोजना के रूप में था, जिसे राष्ट्रीय संग्रहालय के अधिकारियों ने सराहा और वे इसे आगे बढ़ाने की योजना बना रहे हैं।

बैठक का समापन परियोजना को पूरा करने के लिए एक समय–सीमा तय करके किया गया, जिसके बारे में सुश्री बंसल ने बताया कि पूर्ण डेटा उपलब्धता के साथ अधिकतम तीन महीने की आवश्यकता होगी, जिसके लिए श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने जीएसडीएस ऑडियो गाइड के शुभारम्भ का लक्ष्य निर्धारित किया। 30 जनवरी, 2021 तक टूर ऐप और कार्यक्रम अधिकारी, अनुसंधान अधिकारी और अनुसंधान सहयोगी इसे अंतिम रूप देने में मदद करेंगे। जीएसडीएस में शीघ्र ही हॉप ऑन इंडिया की तकनीकी टीम के साथ एक बैठक भी निर्धारित की गई है।

ईमानदारी और पारदर्शिता की शपथ दिलाई

निदेशक समिति श्री दीपंकर श्री ज्ञान, स्टाफ सदस्यों को सतर्कता सप्ताह के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में शपथ दिलाते हुए।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह (27 अक्तूबर से 2 नवम्बर) के हिस्से के रूप में, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 29 अक्तूबर, 2020 को जीएसडीएस स्टाफ सदस्यों को सतर्कता जागरूकता प्रतिज्ञा दिलाई। इस वर्ष की थीम "सतर्क भारत, समृद्ध भारत" थी । हर साल अक्तूबर के अंतिम सप्ताह के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन सभी हितधारकों को सामूहिक रूप से भ्रष्टाचार की रोकथाम और इसके खिलाफ लड़ाई में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने और अस्तित्व, कारणों और गंभीरता और खतरे के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने के लिए किया जाता है।

राष्ट्रीय एकता दिवस मनाने की शपथ

राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर गांधी दर्शन में कल्पना चावला जागृति पार्क में 31 अक्तूबर, 2020 को शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान द्वारा स्टाफ सदस्यों को शपथ दिलाई गई। 31 अक्तूबर, देश भर में राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है, न केवल स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय एकता के वास्तुकार, सरदार वल्लभभाई पटेल की जयन्ती मनाने के लिए, बल्कि देश की एकता और अखण्डता व सुरक्षा को बनाए रखने के लिए भारत के नागरिक की प्रतिबद्धता की पुष्टि करने के लिए भी। इस अवसर पर प्रतिज्ञा पढ़ी गई: मैं सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं राष्ट्र की एकता, अखण्डता और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए खुद को समर्पित करता हूं और इस संदेश को अपने साथी देशवासियों के बीच फैलाने का भी प्रयास करता हूं। मैं यह शपथ अपने देश के एकीकरण की भावना से लेता हूं जो सरदार वल्लभ भाई पटेल की दूरदृष्टि और कार्यों से सम्भव हुई है। मैं अपने देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपना योगदान देने का भी सत्यनिष्ठा से संकल्प लेता हूं।

दीवाली मिलन समारोह

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के नेतृत्व में जीएसडीएस स्टाफ ने दिवाली मिलन समारोह आयोजित किया 13 नवम्बर, 2020 को गांधी दर्शन परिसर राजघाट में आयोजित इस समारोह में विशिष्ट अतिथि श्रीमती संगीता वर्मा शामिल हुईं। सुश्री शुभांगी गिरधर ने पत्तियों और मिट्टी के दीयों से पारम्परिक सजावट की।

गांधी दर्शन, राजघाट में समिति के कर्मचारियों के साथ दिवाली मनाते समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

पेंशन अदालत का आयोजन

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 18 दिसम्बर, 2020 को गांधी दर्शन में एक "पेंशन अदालत" बुलाई, जिसमें पेंशनभोगियों की उनकी विभिन्न शिकायतों का समाधान किया गया, जिसमें सातवें वेतन आयोग और अन्य सम्बन्धित मुद्दे शामिल थे। समिति के पेंशनभोगी वर्चुअली और शारीरिक रूप से बैठक में शामिल हुए। बैठक

गांधी दर्शन में आयोजित 'पेंडिंग अदालत' में उपस्थित समिति के सेवानिवृत्त कर्मचारी।

में बताया गया कि शिकायत मंत्रालय को पहले ही भेजी जा चुकी है। निदेशक ने आगे बताया कि समिति के पास आय के साधन नहीं हैं और समिति संग्रहालय का कोई टिकट भी नहीं लेती है। उन्होंने यह भी ध्यान में लाया कि चिकित्सा बिलों की प्रतिपूर्ति के लिए पर्याप्त धन नहीं है। बैठक के दौरान कई अन्य शिकायतों का समाधान किया गया।

न्यायमूर्ति विनोदादित्य प्रसाद को श्रद्धांजलि

गांधी दर्शन, राजघाट में आयोजित श्रद्धांजलि सभारोह में न्यायमूर्ति विनोदादित्य प्रसाद को भावभीनी श्रद्धांजलि देते कर्मचारीगण।

समिति कर्मचारियों ने 28 दिसम्बर, 2020 को गांधी दर्शन में आयोजित शोक सभा में झारखण्ड उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश माननीय विक्रमादित्य प्रसाद के निधन पर संवेदना व्यक्त की। जस्टिस विक्रमादित्य का 78 साल की उम्र में 28 दिसम्बर को रांची में निधन हो गया था। अपने वकृत्व कौशल के लिए प्रसिद्ध, न्यायमूर्ति विक्रमादित्य प्रसाद ने हाल ही में राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के सहयोग से समिति द्वारा आयोजित "भारत के संविधान पर महात्मा गांधी के प्रभाव" पर भारत के संविधान की 71वीं वर्षगांठ पर एक वेबिनार में मुख्य भाषण दिया। 26 नवम्बर, 2020 को रांची में अध्ययन और अनुसंधान विभाग में दिवंगत आत्मा के सम्मान में दो मिनट का मौन भी रखा गया। इस मौके पर समिति निदेशक और न्यायमूर्ति विक्रमादित्य प्रसाद के पुत्र श्री दीपंकर श्री ज्ञान व अन्य पारिवारिक सदस्य भी रांची से वर्चुअल बैठक में शामिल हुए।

शोक सभा का आयोजन

समिति कर्मचारियों ने 29 दिसम्बर, 2020 को समिति की शोध सहयोगी डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली के पिता श्री राम शास्त्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। डॉ. शैलजा के पिता का आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले में उनके पैतृक घर में निधन हो गया। वह 80 वर्ष के थे। समिति की पूर्व कार्यकर्ता श्रीमती रीता कुमारी के ससुर श्री प्रयाग महतो को भी श्रद्धांजलि दी गई। 24 दिसम्बर, 2020

को श्री महतो का निधन हो गया। इसके अलावा समिति ने श्रीमती सावित्री और श्री विनोद कुमार यादव जिनका क्रमशः 21 और 23 नवम्बर को निधन हो गया, को अपनी श्रद्धांजलि भी अर्पित की।

गांधी दर्शन में 72वां गणतंत्र दिवस समारोह

निदेशक समिति श्री दीपंकर श्री ज्ञान 72वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में गांधी दर्शन में तिरंगा फहराते हुए, और इस कार्यक्रम में उपस्थित कर्मचारीगण।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने 26 जनवरी, 2021 को गांधी दर्शन, राजघाट में 72वां गणतंत्र दिवस समारोह मनाया। समिति निदेशक, श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने तिरंगा फहराया और कार्यक्रम में भाग लेने वाले कर्मचारियों को सम्बोधित किया। उन्होंने अहिंसा और सत्य की अवधारणा को दोहराया और लोगों से दूसरों की भलाई को बढ़ावा देने की दिशा में काम करने और आत्मनिर्भरता की दिशा में सक्रिय होने का आह्वान किया।

पद्मश्री डॉ. कैलाश मड़बैया का अभिनंदन

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने गांधी दर्शन, राजघाट में 27 फरवरी, 2021 को पद्म श्री पुरस्कार विजेता डॉ. कैलाश मड़बैया को सम्मानित करने के लिए गांधी ग्लोबल फाउण्डेशन के साथ कार्यक्रम आयोजित किया। समिति के पूर्वोत्तर समन्वयक श्री गुलशन गुप्ता ने एक समारोह में डॉ. कैलाश मड़बैया का अभिनंदन किया, जिसमें गांधी ग्लोबल फाउण्डेशन के महासचिव श्री हरदयाल कुशवाहा, वरिष्ठ पत्रकार महेन्द्र यादव और अन्य भी उपस्थित थे।

ह पर : श्री हरदयाल कुशवाहा कार्यक्रम के दौरान सभा को सम्बोधित करते हुए दिखाई दे रहे हैं।
नीचे : डॉ. कैलाश मड़बैया की स्मृति में गणमान्य व्यक्तियों द्वारा वृक्षारोपण किया गया।

समारोह में वक्ताओं ने डॉ. कैलाश मड़बैया के बारे में बात करते हुए उल्लेख किया कि उन्होंने अपनी सभी प्रशासनिक व्यस्तताओं के बावजूद बुंदेली साहित्य को कैसे पुनर्जीवित किया, जो हिन्दी बोलियों के प्रेमियों के लिए प्रेरणा का स्रोत था।

इस अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया जहां श्री मदबैया ने स्वतंत्रता सेनानियों चंद्रशेखर आजाद और संत रविदास जी की स्मृति में एक पौधा लगाया।

इस अवसर पर समाजसेवी एवं बुन्देलखण्ड विकास परिषद के संयोजक श्री आदिश कुमार जैन, कार्यक्रम संचालक श्री राशिद अहमद मंसूरी, श्री संदीप मण्डवागढ़ी एवं श्री राहुल सिंह उपस्थित थे। पाली कल्चर फाउण्डेशन के अध्यक्ष नरोत्तम रणसिद्ध कुशवाहा भी मौजूद थे।

गांधी हाट में फिर से खोली गई बा की रसोई

श्री लक्ष्मी दास, उपाध्यक्ष, हरिजन सेवक संघ और समिति के कार्यसमिति सदस्य द्वारा 1 मार्च, 2021 को गांधी दर्शन, राजघाट में गांधी हाट में बा की रसोई का पुनः उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान भी उपस्थित थे। उद्घाटन समारोह में डॉ. मंजू अग्रवाल भी शामिल हुईं।

बा की रसोई, जिसे 22 फरवरी, 2020 को गांधी दर्शन में डॉ. कर्ण सिंह द्वारा गांधी हाट के उद्घाटन के दौरान खोला गया था। यह फिर से पूरे जोरों पर फिर से खोला गया और इसका प्रबंधन सृजन, समिति के कर्मचारियों द्वारा किया जा रहा है।

आर ओ वाटर प्यूरीफायर प्रदान की

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सहयोग से इनर व्हील क्लब ऑफ दिल्ली अचीवर्स द्वारा दान की गई आरओ वाटर प्यूरीफायर मशीन का उद्घाटन करते समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने इनर व्हील क्लब ऑफ दिल्ली अचीवर्स के सहयोग से यूपीएचसी डिस्पेंसरी दरियागंज नई दिल्ली में आरओ वाटर प्यूरीफायर मशीन प्रदान की। इसका उद्घाटन 10 मार्च, 2021 को समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने किया। इस अवसर पर आयोजित समारोह में श्रीमती बिंदू सिंघल, श्रीमती गीता शुक्ला शोध अधिकारी समिति, डॉ. मंजू अग्रवाल, डॉ. सुनील मिंज और अनेक डॉक्टर उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. मंजू अग्रवाल ने किया।

गांधी दर्शन में पदयात्रियों का अभिनंदन

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने साबरमती आश्रम गुजरात में सफल पदयात्रा के लिए समिति की टीम और 'पदयात्रियों' को बधाई दी। इस पदयात्रा को 12 मार्च, 2021 को 'आजादी के अमृत महोत्सव का शुभारम्भ करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया था।

समिति के प्रशासनिक अधिकारी श्री अंशुमन भार्गव, सम्मान समारोह के दौरान यात्रियों में शामिल श्री महेंर्न सिंह का अभिनंदन करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

गाँधी दर्शन द्वारा 12 मार्च से 15 मार्च, 2021 तक साबरमती से नडियाद तक दांडी पदयात्रा निकाली गयी। इसमें भाग लेने वाले समिति कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन सम्मारोह 23 मार्च, 2021 को गांधी दर्शन, राजघाट में किया गया। इस अवसर पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्रीज्ञान और प्रशासनिक अधिकारी श्री अंशुमन भार्गव ने यात्रियों का अभिनंदन किया।

उल्लेखनीय है कि 'आजादी के अमृत महोत्सव' का शुभारम्भ करते हुए और ऐतिहासिक दांडी मार्च की 91वीं वर्षगांठ के अवसर पर समिति के उपाध्यक्ष और माननीय संस्कृति मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल के नेतृत्व में आयोजित इस यात्रा को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया था।

कार्यक्रम में समिति कर्मचारियों का परिचय नवनियुक्त प्रशासनिक अधिकारी श्री अंशुमान भार्गव से करवाया गया।

जीएसडीएस के पेंद्यनभोगियों के साथ बैठक

निदेशक, श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने 31 मार्च, 2021 को समिति के पेंशनभोगियों के साथ एक बैठक की। इस बैठक में पूर्व कर्मचारियों के विभिन्न मुद्दों जैसे सीजीएचएस, सातवें वेतन आयोग आदि से संबंधित चर्चा की गयी। इस बैठक में 20 पेंशनभोगी शामिल हुए।

समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान गांधी दर्शन में पेंद्यनभोगियों के साथ बैठक के दौरान समिति के सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

पुस्तकालय, प्रकाद्दान और प्रलेखन

पुस्तकालय

समिति के उद्देश्य के अनुरूप पुस्तकों, तस्वीरों, फिल्मों, दस्तावेजों को व्यवस्थित और संरक्षित करने के लिए और महात्मा गांधी के कार्यों और विचारों की बेहतर समझ के लिए, एक पुस्तकालय और प्रलेखन केन्द्र कार्य करता है। पुस्तकालय में गांधीजी के जीवन और विचार, कला, संस्कृति, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति, धर्म, पुरातत्व पर लगभग 10,650 पुस्तकों का संग्रह है, जिनमें संन्दर्भ पुस्तकें, अर्थात् विश्व एटलस, विश्वकोश और शब्दकोश शामिल हैं। इसमें बच्चों के लिए भी एक विशेष खण्ड है। यह नियमित आधार पर विभिन्न पत्रिकाओं और जर्नल्स की सदस्यता भी लेता है और विद्वानों, शोध अध्येताओं और छात्रों की जरूरतों को पूरा करता है। वर्ष के दौरान अनेक नई पुस्तकें जोड़ी गईं।

प्रलेखन केन्द्र यह पुस्तकालय का ही एक भाग है। इसमें गांधी, महिला, बच्चे, युवा, महिलाओं के खिलाफ अपराध, पर्यावरण, भारत–पाक सम्बन्ध, सांप्रदायिकता, अंतरराष्ट्रीय मामलों जैसे विभिन्न विषयों पर प्रेस–क्लिपिंग को फाइलों में संरक्षित किया जाता है। समय–समय पर नए प्रकाशन प्राप्त होने से इसमें अन्य नये विषय नियमित रूप से जोड़े जाते हैं। पुस्तकालय के डिजिटलीकरण की प्रक्रिया लगभग समाप्त हो चुकी है।

5, तीस जनवरी मार्ग पर गांधी स्मृति पुस्तकालय–सह–पुस्तक बिक्री काउंटर का एक दृश्य।

गांधी दर्शन परिसर, राजघाट में गांधी दर्शन पुस्तकालय का एक दृश्य।

पुस्तक मेकिंग अफिं ए हिन्दू पैटिऑट का श्री मोहन भागवत द्वारा विमोचन

माननीय संस्कृति मंत्री और समिति के उपाध्यक्ष श्री प्र लाद सिंह पटेल, गांध ी दर्शन में "मेकिंग अफि ए हिंदू पैटिअट" पुस्तक के विमोचन के दौरान माननीय सरसंघचालक डॉ मोहन भागवत को विशिष्ट अतिथि के रूप में चरखा प्रदान करते हुए।

सब धर्मों का धर्म है, अर्थात ऐसा धर्म जो सब धर्मों को साथ लेकर चले, वह मेरा धर्म है। आदरणीय सरसंघचालक ने कहा कि गांधीजी ने काफी कुछ लिखा है, उन्होंने जो लिखा, उसका उदाहरण वे स्वयं बने। वास्तव में आदर्श लोग ऐसे ही होते हैं, जो दूसरों को कोरे उपदेश देने की बजाय स्वयं लोगों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करे। उन्होंने कहा कि गांधीजी के लिए स्वतंत्रता की लड़ाई राज्य में बैठी सत्ता को बदलने की लड़ाई मात्र नहीं थी, अपितु यह भारत के पुनर्निर्माण की लड़ाई थी। गांधीजी ने इसे सभ्यताओं का संघर्ष कहा है। उन्होंने कहा कि स्वराज क्या है, इसको समझने के लिए हमें स्वधर्म को समझना होगा। जब तक हम स्वधर्म को नहीं समझेंगे, तब तक गांधीजी के स्वराज के बारे में नहीं समझ सकते।

श्री भागवत ने कहा कि गांधी के मूल्य और विचार आज ज्यादा, विचारणीय व अनुकरणीय है। लेकिन प्रत्यक्ष में हम उनका अनुकरण नहीं कर पा रहे हैं। हमें उनके जीवन और विचारों का अनुसरण करना

माननीय डॉ मोहन भागवत बीच में गांधी दर्शन में पुस्तक का विमोचन करते हुए "मेकिंग अफि ए हिंदू पैटिअट" पुस्तक के लेखक डॉ जितेंद्र कुमार बजाज बाएं और श्री नरेंद्र कुमार बाएं से दूसरे के साथ माननीय श्री प्रहलाद सिंह पटेल दाएं ।

"गांधीजी ने कहा था कि मेरी देशभक्ति मेरे धर्म से निकलती है। मैं अपने धर्म को समझकर अच्छा देशभक्त बनूंगा और अन्य लोगों को भी ऐसा करने की लिए बाध्य करूंगा।" यह उद्गार सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ने व्यक्त किए। श्री भागवत राजघाट स्थित गांधी दर्शन में आयोजित पुस्तक' मेकिंग ऑफ ए हिन्दू पैट्रिऑट' के विमोचन अवसर पर बोल रहे थे। लेखक डॉ. जे.के. बजाज और प्रो. एम. डी. श्रीनिवास द्वारा लिखित यह पुस्तक सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज व हरआनंद प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की गई है।

श्री भागवत ने उपस्थित जनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि गांधीजी ने धर्म के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि मेरा धर्म तो चाहिए। उन्होंने उपस्थित जनों से आहवान किया कि समाज के सभी लोगों को जोड़कर धर्म सम्मत आचरण सिखाएं व लोगों में सभी धर्मों के प्रति आत्मीयता का भाव उत्पन्न करें। तभी गांधीजी के स्वराज का सपना साकार होगा। विमोचित पुस्तक ' मेकिंग ऑफ द हिन्दू पैट्रिऑट' के बारे में उन्होंने कहा कि यह पुस्तक एक प्रमाणित शोध ग्रंथ है। गांधीजी को समझना है, तो इस पुस्तक को पढ़ना आवश्यक है।

अपने सम्बोधन में माननीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री व गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के उपाध्यक्ष श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि मैंने अपनी क्षमता अनुसार गांधीजी को पढ़ने व उन्हें जीने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक का संदर्भ और समय महत्वपूर्ण है।

गांधी दर्शन में "मेकिंग ऑफ ए हिंदू पैट्रिआट" पुस्तक के विमोचन के अवसर पर एक विशिष्ट सभा को संबोधित करते हुए माननीय सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत।

उन्होंने लेखक द्वय को इस पुस्तक के विमोचन के लिए बधाई दी।

कार्यक्रम में आभासी माध्यम से उपस्थित कांची कामकोटि पीठम् के शंकराचार्य परम पूज्य श्री विजयेंद्र सरस्वती ने कहा कि गांधीजी धर्म के साथ जुड़े थे। 15 अक्तूबर 1927 को उन्होंने केरल में श्री चंद्रशेखरन सरस्वती के साथ अनेक विषयों पर चर्चा की थी। उन्होंने कहा कि देशभक्ति और देवभक्ति एक साथ चलनी चाहिए। गांधीजी सामाजिक और धार्मिक व्यक्ति थे। उनके बारे में प्रमाणिक पुस्तक का प्रकाशन होना एक सराहनीय कार्य है।

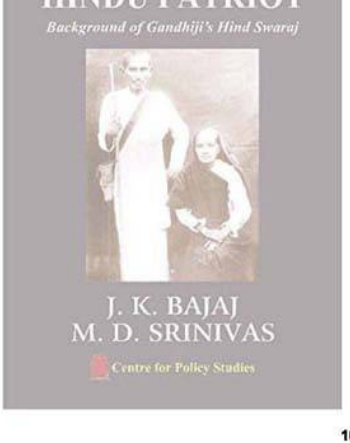

समारोह में लेखक डॉ. जे. के बजाज ने विस्तार से पुस्तक के सम्बन्ध में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि गांधीजी के अध्ययन से उन्होंने पाया कि गांधी अपने हर कर्म में धर्म देखते हैं।

इससे पूर्व माननीय सरसंघचालक जी के गांधी दर्शन परिसर में पहुँचने पर गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के उपाध्यक्ष व माननीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री प्रहलाद पटेल ने उनका अभिनंदन किया। कार्यक्रम में पं. दत्तात्रेय विष्णु पालेसकर द्वारा गाई रामधुन का प्रसारण भी किया गया, साथ ही गांधीजी के प्रिय भजन 'वैष्णव जन' का भी प्रसारण हुआ।

इस मौके पर पुस्तक के दूसरे लेखक प्रो. एम. डी श्रीनिवास ने भी आभासी माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। विमोचन समारोह में केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति श्री महेश शर्मा, हर आनंद प्रकाशन के श्री नरेन्द्र कुमार, समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत, समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम का आयोजन

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा 24 मार्च 2021 को दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज के सभागार में 'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. के. एन. तिवारी की पुस्तक 'उत्तर कबीर–नंगा फकीर' पर चर्चा की गयी। यह पुस्तक गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा प्रकाशित की गई है।

कार्यक्रम में जवाहर लाल नेहरु यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डॉ. ओमप्रकाश सिंह, मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। इस मौके पर अपने भाषण में डॉ. ओमप्रकाश ने कहा कि साहित्य समाज के लिए प्रेरणा का काम करता है। इस पुस्तक में लेखक ने कबीर और गांधी के काल्पनिक संवाद के माध्यम से देश और समाज की विसंगतियों को उजागर किया है।

कार्यक्रम में हंसराज कॉलेज की प्राचार्य डॉ. रमा, पुस्तक के लेखक प्रो. के. एन. तिवारी, समिति की ओर से सम्पादक श्री प्रवीण दत्त शर्मा व सह सम्पादक श्री पंकज चौबे भी उपस्थित थे।

प्रकाशन

समिति ने वित्तीय वर्ष 2020–21 के दौरान महात्मा गांधी के संदेश और दर्शन को समाज में ले जाने के लिए एक विनम्र कदम के रूप में निम्नलिखित प्रकाशनों को शुरू किया और विभिन्न अवधारणाओं और विषयों को भी पेश किया जो मानव जाति के शांतिपूर्ण अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण हैं। अब तक प्रकाशित पुस्तकों की सूची इस प्रकार है:

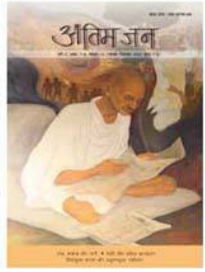

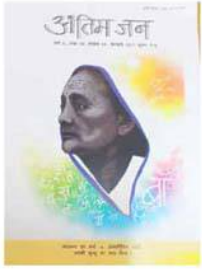

1. महात्मा गांधी और गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर पर ध्यान केन्द्रित करते हुए जुलाई 2019 से अगस्त 2020 तक समिति ने ई–प्रकाशन–अनाशक्ति दर्शन (हिन्दी) को सितम्बर 2020 के दौरान महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित किया।

2. मई–अगस्त 2020 की अवधि के लिए समिति का मासिक प्रकाशन अन्तिम जन (वर्ष 3, अंक 1, क्रमांक 11) भी सितम्बर 2020 के दौरान ई–प्रकाशित किया गया था।

3. अक्तूबर 2020 के दौरान राम लाल आनंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय और समिति के गांधी स्टडी सर्कल द्वारा "सीमाओं के पार गांधी" विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। राम लाल आनंद कॉलेज के डॉ. देवेंद्र कुमार द्वारा सम्पादित "सीमाओं के पार गांधी" को गांधीजी की 150वीं जयंती के अवसर पर समिति और राम लाल आनंद कॉलेज द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित किया गया था।

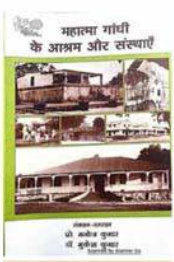

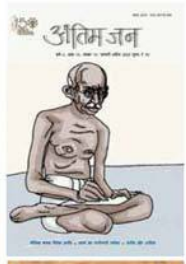

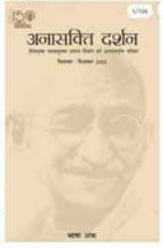

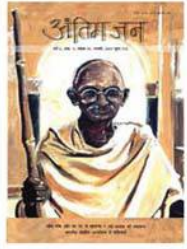

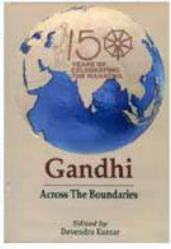

आगंतुक

संस्कृति मन्त्रालय के संयु७ सचिव ने गा□धीस्मृति का दौरा किया

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त सचिव श्रीमती निरुपमा कोटरू ने 27 मई, 2020 को गांधी स्मृति संग्रहालय का दौरा किया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने संयुक्त सचिव को गांधी स्मृति में डिजिटल इंस्टॉलेशन के बारे में जानकारी दी।

ह पर से नीचे तक : संस्कृति मंत्रालय की संयु७ सचिव श्रीमती निरुपमा कोटरू 27 मई, 2020 को गांधी दर्शन की अपनी यात्रा के दौरान समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के साथ।

श्रीमती निरुपमा कोटरू को 29 मई, 2021 को गांधी स्मृति की डिजिटल प्रदर्शनी का अवलोकन करवाते समिति के निदेशक।

श्रीमती कोटरू ने 29 मई, 2020 को गांधी दर्शन में स्थापित प्रदर्शनी "मेरा जीवन ही मेरा संदेश है" के साथ गाँधी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर डीएसटी द्वारा स्थापित डिजिटल डोम का दौरा किया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने उन्हें डिजिटल इंस्टॉलेशन और फोटोग्राफिक प्रदर्शनी के बारे में बताया। संयुक्त सचिव ने प्रदर्शनी की सराहना की। दौरे के दौरान समिति स्टाफ सहित डीएसटी के अधिकारी मौजूद थे।

सचिव ने शहीद स्तम्भ पर महात्मा गांधी को दी श्रद्धांजलि

संस्कृति मंत्रालय के सचिव श्री आनंद कुमार, संयु७ सचिव, निरुपमा कोटरू शहीद स्तंभ पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, साथ हैं समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

संस्कृति मंत्रालय के सचिव श्री आनंद कुमार अपने दौरे के दौरान निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के साथ गांधी स्मृति में गल्टी मीडिया प्रदर्शनी के बच्चों के अनुभाग का दौरा करते हुए।

सचिव संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार श्री आनंद कुमार, आईएएस ने 22 जून, 2020 को गाँधी स्मृति का दौरा किया। इस मौके पर उन्होंने शहीद स्तम्भ पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री आनंद कुमार ने गांधी स्मृति संग्रहालय और डिजिटल प्रदर्शनी का भी दौरा किया। इस अवसर पर संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त सचिव श्रीमती निरुपमा कोटरू भी उपस्थित थीं। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने उन्हें समिति और संग्रहालय के कामकाज के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के सदस्य भी उपस्थित थे।

संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त सचिव श्रीमती निरुपमा कोटरू ने भी 27

जनवरी, 2021 को गांधी स्मृति में 30 जनवरी के कार्यक्रम की तैयारी का जायजा लेने के लिए गांधी दर्शन का दौरा किया। निदेशक ने उन्हें स्मारक कार्यक्रम की तैयारी के बारे में जानकारी दी।

माननीय संस्कृति मंत्री और समिति के उपाध्यक्ष श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने 27 जनवरी, 2021 को गांधी दर्शन का दौरा किया और 72वें गणतंत्र दिवस कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों के साथ बातचीत की। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने विशिष्ट अतिथि का स्वागत किया।

श्री राम निवास गोयल, माननीय अध्यक्ष दिल्ली विधान सभा ने 27 जनवरी, 2021 को गांधी दर्शन का दौरा किया और डिजिटल प्रदर्शनी देखी। निदेशक ने विशिष्ट अतिथि का स्वागत किया और उनका अभिनंदन भी किया।

पेसिफिक एयर फोर्स के कमांडर की पत्नी ने गांधी स्मृति का किया दौरा

ह पर : श्री सच्चिदानंद स्वामी महात्मा गांधी पर डिजिटल प्रदर्शनी के बारे में माननीय श्री राम निवास गोयल को बताते हुए।

ह-नीचे : समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, श्री राम निवास गोयल को समिति की सृजन इकाई द्वारा तैयार अंगवस्त्रम, चरखा और खादी गास्क के साथ सम्मानित करते हुए।

पेसिफिक एयर फोर्स के कमांडर की पत्नी श्रीमती सिंडी विल्सबैकने अपनी टीम के साथ 2 मार्च, 2021 को गांधी स्मृति का दौरा किया।

प्रशांत वायु सेना के कमांडर की पत्नी, सुश्री सिंडी विल्सबैक हवाएं से तीसरी गांधी स्मृति में विश्व शांति गॉग का दौरा करती हुईं।

समिति की शोध सहयोगी डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली ने आगंतुकों का स्वागत किया और गांधी स्मृति संग्रहालय का दौरा करवाया।

महापौर, दक्षिण दिल्ली नगर निगम ने गांधी दर्शन का दौरा किया

समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, ने गांधी दर्शन के दौरे के दौरान मेयर सुश्री अनामिका मिथिलेश को महात्मा गांधी पर आधारित डिजिटल प्रदर्शनी के बारे में बताते हुए।

दक्षिण दिल्ली नगर निगम की महापौर सुश्री अनामिका मिथिलेश ने 4 मार्च, 2021 को गांधी दर्शन, राजघाट का दौरा किया। उन्होंने विशाल परिसर में प्रदर्शित प्रदर्शनियों में गहरी रुचि ली। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान द्वारा उन्हें सम्मानित किया

गया। कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू, दिल्ली पत्रकार संघ के महासचिव श्री अमलेश राजू के साथ जनसत्ता के पत्रकार श्री प्रिय रंजन भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

इस पर: मेगर सुश्री अनामिका मिथिलेश, गांधी दर्शन संग्रहालय में रखी महात्मा गांधी द्वारा 1930 के दांडी मार्च के दौरान इस्तेमाल की गई बैग को देखती हुई।

श्रीमती अनामिका मिथिलेश की गांधी दर्शन यात्रा के दौरान खादी अंगवस्त्रम से उनका अभिनंदन करते समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ।

दक्षिण कोरिया गणराज्य के माननीय रक्षा मंत्री, श्री सुह वूक का दौरा

दक्षिण कोरिया गणराज्य के माननीय रक्षा मंत्री, श्री सुह वूक गांधी स्मृति में डिजिटल प्रदर्शनी को देखते हुए।

श्री सुह वूक गांधी स्मृति की अपनी यात्रा के दौरान आगंतुक पुस्तिका पर हस्ताक्षर करते हुए।

दक्षिण कोरिया गणराज्य के माननीय रक्षा मंत्री, श्री सुह वूक ने अन्य अधिकारियों के साथ 26 मार्च, 2021 को गांधी स्मृति का दौरा किया और महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रतिनिधिमंडल को समिति की शोध सहयोगी डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली ने संग्रहालय का अवलोकन करवाया। उन्होंने महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर भारत सरकार की पहल के हिस्से के रूप में दुनिया भर के 155 देशों के गायकों द्वारा हिन्दी में गाए गए 'वैष्णव जन तो' की डिजिटल प्रदर्शनी को देखने में भी विशेष रुचि ली।

राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय के अधिकारियों ने गांधी स्मृति का दौरा किया

नेशनल डिफेंस कॉलेज के वरिष्ठ अधिकारियों ने 30 मार्च और 1 अप्रैल, 2021 को गांधी स्मृति में शहीद स्तम्भ पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। समिति की शोध सहयोगी डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली ने प्रतिनिधिमंडल का मार्गदर्शन किया।

गगनव गीता के शिलालेखों के साथ गांधी स्मृति संग्रहालय के प्रवेश द्वार का स्तम्भ।

मीडिया में

नगर निगम कोरोना टीकाकरण अभियान की तैयारी में सक्रिय : जय प्रकाश

नगर निगम कोरोना टीकाकरण अभियान की तैयारी में सक्रिय-जय प्रकाश

Importance of non-violent communication through mother tongue

GUEST COLUMN

अहिंसात्मक संचार संबंधों की खुशहाली और मजबूती के लिए क्यों महत्वपूर्ण है

ऐसी समय में जब मतभेदों और विवादों के कारण बड़ी संख्या में लोग संबंधों के टूटने के प्रसंगों से परेशान हैं, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार रिश्तों को मजबूत करने के लिए अहिंसक संचार को प्रोत्साहित करने और बढ़ावा देने की कोशिश कर रही है।

राष्ट्रीय चेतना जगाने वाला दांडी मार्च

अहिंसात्मक संचार, संबंधों की खुशहाली और मजबूती के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

How non-violent communication helps us to remain focused

GUEST COLUMN

Online course to mark 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi

■ Staff Reporter

IN PRESENT time when relation in the society and family are in stress and getting affected due to difference of opinion and disputes Gandhi Smiriti Evam Darshan Samiti, Ministry of Culture, Government of India to start an online course for free in series of works to be observed to mark the 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi.

Dr Vedabhyaas Kundu, Gandhi Smriti Evam Darshan Samiti informed that in present time initiative of starting education of masses on importance of Non-Violence Communication in Strengthening and Happiness in Relationship has been taken up by the Samiti. The online course will be available in Hindi, English and Tamil languages. Earlier, pan India around 10,000 people already got bene... progr... able ... to ens... Cours... Princip... Parents... with thei... Through... 70000 peo... course. No... cation is an... munication... necting peop... ilies, friend... connecting wi... ple. The course... ciples of Gand... Thoughts that mutual respect. understand... ceptance, ...pathy. It ... between ... while ... portant ... Advocate ... Kumar ... course ... in ... if ... saying the ... in understanding ... language helps in developing healthy relationship and in resolving major issues.

प्रहलाद सिंह पटेल ने नाडियाद में पूरी की दांडी यात्रा

Prahlad Patel begins *Padyatra* from Sabarmati to Nadiad

कोरोना योद्धाओं को श्रद्धांजलि

मेरा जीवन ही मेरा संदेश है...

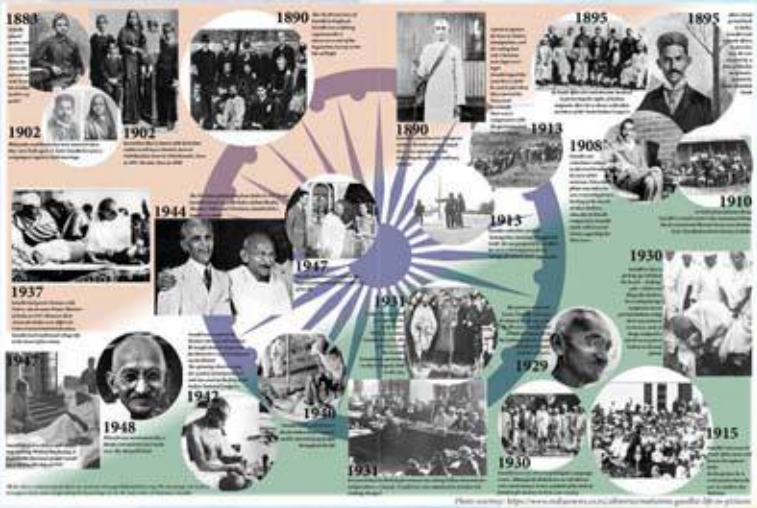

प्रकाशन
निदेशक, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति
गांधी स्मृति, 5 तीस जनवरी मार्ग, नई दिल्ली - 110011
गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली - 110002
फोन : 011-2339270710, 23012843, 23722020
फैक्स : 011-23392706
ई-मेल : 2010gsds@gmail.com
वेबसाइट : www.gandhismriti.gov.in
डिज़ाइन : श्री राजदीप पाठक, श्री जीम एन्ड्रूज
अनुवाद : श्री प्रवीण दत्त शर्मा; टंकण : श्री समीर बनर्जी; रिपोर्ट : श्री राजदीप पाठक
फोटो : श्री पंकज शर्मा, श्री राकेश शर्मा, श्री अरुण सैनी

©GANDHI SMRITI AND DARSHAN SAMITI

Printed at : Bosco Society for Printing & Graphic Training • E-mail : boscopress@gmail.com

/gsdsnewdelhi